जाट इतिहास

लेखक

लेफ्टीनेन्ट रामस्वरूप जून शौलंखो

जाट इतिहास

संक्षेप्त

लेखक

लैफटिनैन्ट राम स्वरूप जून शौलंखी
नूना माजरा, जिला रोहतक
हरियाणा

भूमिका लेखक

श्री
राजा महेन्द्र प्रताप आर्या पेश्वा
देहरादून

1963 ई०

पता : बाई डाक : नूनामाजरा, जिला रोहतक

मूल्य : रु० [illegible]/-30/-

प्रस्तावना

श्री राजा महेन्द्रप्रताप M.P.
आर्य पेशवा
राजपुर देहरादून U.P.

इस पुस्तक में श्री रामस्वरूप जी ने भूले हुए और पुस्तकों में बिखरे हुए जाट इतिहास पर पूरा प्रकाश डाला हैं। इसमें भारतवर्ष और आर्यावर्त की घनिष्ट जातियों की एकता को दर्शाया है। यह सराहनीय है आपने एक प्रकार जाट इतिहास लिखा है। आपका उद्देश्य जाट जाति की वास्वता दर्शाना और जाट जाति को दूसरी जातियों के निकट लाना है। यह आपका ऊँचा उद्देश्य है। मैं अखिल जाट महासभा का प्रधान हूँ इसलिए मेरा कर्त्तव्य जाट जाति के शुभचिन्तकों के मन को बढ़ावा देना है। मैं संसार संस्था का भी प्रधान हूँ। प्रेम धर्म का संदेश मेरे द्वारा पहुँचना ईश्वर इच्छा अनुसार है। मैं स्वयं को सर्व सेवक जन सेवक और आर्य पेशवा मानता हूँ इसलिए दलों को मिलाने वाले विचारों का स्वागत करता हूँ।

प्रेमी म × प्रताप

निर्माण विषय

जाट इतिहास को पढ़ने वाले महोदय पुस्तक के इस संसकर्ण को देख कर इस सन्देह में न पड़ें कि यह पुस्तक लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ी। अतः यह महत्वपूर्ण पुस्तक लुप्त इतिहास पर रोचक प्रकाश है। इसमें अप्रमाणिक मिथ्या कथा-कहानियों का खुलासा खण्डन है। भारत के लुप्त इतिहास और बिखरे हुये इतिहास के विदेशी सुधारकों यानी अंग्रेज लेखकों ने राजपूतों की अमान्य वंशावलियों को बनावटी सिद्ध करके उनमान को बीच में रखते हुए राजपूत जांट गूजर अहीर आदि तत्कालीन क्षत्री सैनिक जातियों को साका, सिथियन, हुण आदि ईरानी तुर्की कबीलों की सन्तान निश्चित मान लिया और उनमें भी ऊँच-नीच स्वदेशी, विदेशी का आपस में लड़ते रहने का प्रश्न उत्पन्न हो गया। भारतीय इतिहासकारों ने भी जातियों की मूल उत्पती की और ध्यान न देकर पुराणों की कथाओं का उलंघन करते हुए अंग्रेज बचन प्रमाण मान लिया उनकी नकल उतारते रहे यह मिथ्या सिधान्त सैनिक जातियों का साहस भंग करने वाला और परस्पर लड़ाने का और अशान्ती का कारण बना हुआ था।

इस इतिहास के लिखने की मेरे चित्त पर प्रेरणा कैसे हुई सो मैं इसका पूर्णरूप पेश कर रहा हूँ।

पहले तो मैं इस तथ्य को खुले रूप में मानता हूँ कि मैं उन विख्यात इतिहास-कारों में नहीं हूँ जो इस विषय में प्रवीण होते हैं फिर भी मैंने एक रिटायर्ड सैनिक होते हुये उजल इतिहास की दुरदशा अनुभव करते हुए कुछ तथ्यों को एकत्र करने और सामूहिक रूप देने का प्रयत्न किया है। विशेषतया आज के सविकसित विज्ञान शिक्षा के युग में मैं विचार में हूँ। कि मैं इतने बड़े कार्य के योग्य भी हूँ। परन्तु कुछ परिस्तिथ्यों ने मेरे मन में इस कार्य को उठाने की इच्छा पैदा कर दी है। हालांकि कार्य बहुत बड़ा है।

सन् 1903 ई० मैंने जिस समय मेरी आयु 14 वर्ष से नीचे ही थी। अपने गांव के एक ब्राह्मण को यह कहते हुए सुना कि जाट योद्धा अवश्य हैं, परन्तु क्षत्री नहीं हैं। उस समय मुझे इस वर्ण प्रणाली का कोई ज्ञान नहीं था।

सन 1910 ईसवी में जिस समय मैं पांचवे रिसाले में लान्स दफेदार था एक अंग्रेज मेजर श्री वेर जो राजपूत सकवाडर्न के कमान्डर थे ने एक आश्चर्य जनक प्रश्न किया कि जाट कौन हैं ? मैंने साधारण उत्तर दिया कि क्षत्री हैं। परन्तु मैं एक बहुत बड़ी उलझन में पड़ गया जब कि मेजर साहिब ने यह कहा कि जाट

क्षत्री नहीं हैं। बल्कि राजपूतों की वह निची नसल है, जिन्होंने विधवा विवाह शुरू किया।

एक पत्र में उत्तर प्रदेश (UP) के उच्च न्यायालय का एक निर्णय पढ़ा जिसमें लिखा था कि जाट नीच जाति से हैं क्योंकि वह जनेऊ नहीं पहनते और विधवा विवाह करते हैं। मेरा विचार हुआ कि उच्च न्यायालय ने निर्णय देते समय मनुस्मृति अध्याय ९ को ध्यान में नहीं रखा।

इन सब घटनाओं से मुझे यह विश्वास हो गया कि यह धर्म शास्त्रों का प्रश्न नहीं बल्कि बौद्धमत और पौराणिक मत का परस्पर विरोध था। सन 1927 में जिस समय मैं रिसालदार था एक शिक्षा विभाग से सम्बन्धित दफेदार श्री शेरसिंह जो कि अहमदनगर से आया था इस विषय पर कुछ आवश्यक सामग्री लाया जिससे यह प्रतीत होता था कि जाट अहीर गूजर और राजपूत तुर्क सीथियन (Turk Sheethcan) के वशज हैं वास्तविक क्षत्री नहीं हैं।

जब मैंने श्री उफक द्वारा लिखा 'टाड राजस्थान इतिहास 152 से 200 और 252 पृष्ठ पर पढ़ा तो जनरल सर ए किघम श्री पिल्नी तथा श्री हैरीडोटस के हवालों से पता चला कि 'तक्षक, शवी, कबीले ययाति वंश के जाट थे जो ईरान तुर्किस्तान तथा डैनमार्क आदि चले गये थे। और उनमें से कुछ बाद में भारत वापिस आ गये थे। एक जाति जिसका इतिहास इतना शानदार हो और जिसने समय-समय पर लड़े युद्धों में इतनी वीरता दिखाई हो वह इतिहास के पन्नों में अपना उचित स्थान पाकर प्रोत्साहन तथा मान्यता प्राप्त करने के योग्य हैं इन बातों ने मुझे इस कार्य के लिए बाध्य कर दिया कि मैं प्रतेक इस जाति की विशेषताओं, उत्पति तथा आंतरिक शक्तियों की खोज करना।

इस विचार से मेरी रुचि खोज की ओर बढ़ी और जब मैंने शिव पुराण विष्णु पुराण और महाभारत आदि में ययाति वंश की कथाएं पढ़ी तो मेरा अज्ञान दूर हो गया। जब मैंने महाभारत की सभा, यज्ञ और युद्ध में भाग लेने वाले योद्धाओं के दलों में वीरियों नाम वह पाये जो वर्तमान काल तक केवल जाटों के गोत्र चले आ रहे हैं। यह ज्ञान प्राप्त होने पर मैंने जाट गोत्रों के विस्तार की ओर ध्यान दिया तो जाट गोत्रों का मिश्रण सभी जातियों और उपजातियों में पाया। मुझे यह निश्चय हो गया कि जाट जाति दूसरी बड़ी जातियों की तरह एक महान जाति है इस प्रकार के ज्ञान ने मुझे लेखनी उठाने पर विवश कर दिया ताकि मैं इस ज्ञान को पुस्तक रूप में एकत्र कर सकूं।

प्राक्थन

यह जाट इतिहास संक्षेप में लिखा गया है। इसमें जो कुछ लिखा गया है। सर्वथा यथार्थ यथार्थ है। इसके लिखे जाने का उद्देश्य यह है कि जाट इतिहास लोप दिशा में है। और जाट जाति की उतप्ती और शुद्धता पर बेजोड़ कहावतें थोपी जा रही है। और एक शूध आर्य क्षत्री जाती को गई गुजरी आई गई बताया जा रहा है। उतप्ती के यथार्थ रूपको पुरी खोज के साथ प्रमाणों सहीत प्रकाश में लाया गया है। शक्ती प्रापत किये राजपुत दलने यह प्रचार जारी रखा की जाट जाती विधवा विवाह प्रचलित करने वाले नेम भ्रष्ठ राजपूतों की सन्तान हैं। इसलिए उपजाती है। इस पुस्तक में प्रमाणों के साथ इस धोषणा का खन्डन किया गया है। यह सिद्ध किया है कि विधवा विवाह शास्त्रों की आज्ञानुसार परम्मपरा की प्रथा है। और जाट जाती घनिष्ठ राजपुत्रों की मात्र जाति है। जातियों की उतप्ती खोज में असफल विदेशी इतिहासकारों ने यह अनुमान लेखबध कर दिया है कि पुरी जाट जाति सीथीयन तुर्क कबिलों हिन्गस नेगनू आदि की सन्तान है। जिनका दो सौ वर्ष इसा पुर्व के करीब पन्जाब में आवसने का पता चलता है। इस पुस्तक में जन रल कघम हिसट्री आफ दी टाड तथा अबुल गाजी हारी डोटस आदि के लेखों से सिद्ध किया गया है। कि शिवितकशक, नामों के तुर्क सिथियन आदि कबिले जो भारत में वापिस धकेले गये थे ययाति बन्शी जाट भरती ही थे। इसी कारण यहाँ की जाट जाति में समाकर बेपता हो गये। जैसा कि प्राचीन कथावों और घटनाओं से पाया जाता है कि सिथियन के वापीस आने से पूर्व पन्जाब आदि भारती प्रान्तों मे जाट जाति बड़ी संख्या में विद्मान थी इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ब्यात जाट शब्द में परिवर्तन हुआ है। चन्द्र बन्श भी इसी को कहा जाने लगा महा भारत युद्ध की घटना से हजारों साल पूर्व से जाट नाम प्रयोग में आता रहा है। भार्दवाज कौशक मुदगिल किरायण आदि ब्राह्मण गोत्र और गुप्त सिंह गिल (संगल) डाड देवपुरा अमरान्स ओसवाल कटारिया चोचानी आदि वैश ययाति बंशी है। अहीर जाति पूरी जाट जाती है। और बड़ी संख्या में गुजरों में जाट गोत्र शामील है। इसी भांति राजपुत्र दल में भी जाट गोत्र मिले पाये जाते हैं। जो गोत्र जाट निकट समय तक राजपुत दल में विलीन होते रहे है उनके नाम ये हैं।

चन्देल दहिया महिल मिल्ही जाखड़ भटी कछवांसरा छोकर जोहिया शयाल डिवाण जनजोहा डागर झमट गोदल राझा नुन खोंखर आदि है। जाट प्रदेश मे पगे हुए चमार नाई बैरागी आदि जातियों में 75 प्रतिशत जाट गोत्रों के लोग

हैं। जाट संघ ने भारत के उत्तर पश्चिमी देश भाग में फैलकर सिन्ध से गंगा नदी तक सबसे अच्छी उपजाऊ और सुचारू भूमि पर अधिकार कर लिया था मध्य भारत के कम उपजाऊ देश की ओर बढ़ने की आवश्यकता नहीं रही कोल भी लदरावड़ आदि जातियाँ जाट संघ में बिलिन न हुईं वे जाट देश में टिकीन रह सकी इसलिए जाट संघ खालिस आर्य नसल एक नाम था नसल का इकट्ठा बसा हुआ है। यहाँ ब्राह्मण बणियां बढई लुहार सुनार सब कम से कम संख्या में है। और जाट दल के लोग ही हैं। जो इक्का दुक्का जातियाँ शकल रंग और चेहरे की बनावट में ययात बल से भिन्य पाई जाती हैं वे बाद की आबसी हुई हैं। और अलग पहचानी जाती हैं। जो ययाती बन्शी अहीर गुजर बणंया निकटत्म समय में पूर्व दक्षिण के देशों में जाबसी है। वे भी वहां अलग पहुँचाने जाते हैं। ययाती बन्स का दुसरा साथी इक्षवा दल यानी सूर्यबन्श पूर्व और मध्य भारत में फैला और अनार्य जातियों में बिलीन हो गया वहां ऊँच नीच छुत छात का भेद भाव अधिकाधिक है। जातियाँ बे सुमार हैं। और सब जातियों में नसली मिलावट पहचानी जाती है। इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं कि पुरी जाट जाति ययात वन्श है और भारत की प्राचीन जाति है महाभारत सभापर्व के लेख अनुसार जाट जाति के अकसर मूल गोत्र सैनिक दल थे। शवी तक शक वरिक मीड योध्या मल्ह मद्रक कठ मल्क जट्रक पोनियाँ मान सिन्धु चीमा दर्द राष्ट्री के कय अड़ गान्धार उठीराय आदि श्यौ विष्णु वायु पोराणों की कथाओं में राजा उशीनर और वीर भद्र को याट वाजाट लिखा है। राजा वीर भद्र के पाँच पुत्रों और दो पोत्रों से 7 जाट गोत्र चले जाटों के अकसर गोत्र ययाति जी के पाँच जत्थों की सन्तान हैं जिनकी शाखें फैलकर मध्य एशिया और यूरुप के देशों तक पहुंची और घटनाओ विवश्य वापीस भी लौटती रही। विदेशों के उचार्ण अनुसार वहाँ याट को याट यटि युटी युची जटी जीटी जूट टियुटन जाट गाथ शब्दों में पुकारा जाता रहा तथा लिखा जाता रहा। महा भारत काल में पुरी जाती का नाम लेने की कम आवश्यकता थी। दलों के मुकाबले थे और दलों के नाम अक्सर गोतों पर थे महा भारत काल में ऐसे नामों के वहुत दल थे जो परम्परा से जाट गोत्र चले आ रहे हैं।

इस इतिहास में अनेक तथा घनिष्ट जातियों का इतिहास समविष्ट है। इसलिए यह एकता और प्रियता को दर्शाता है। जो जातियाँ खिजर समुन्द्र और बाकू तक के देश में जाबसी हुई हैं। उनको मुड़कर पीछे देखने और पुनः मिलन के लिये उत्साहित करेगा बिलहन कबीसर वा विक्रमान्क की कविताओं में कलूतुङ्ग चालोक्य और राज राजा राजेन्द्र चोल के विषय में रचना हैं। जाट इतिहास के खोज के लिये घनिष्ट इतिहासों से सहायता मिलने के सिवा सर्वथा जाट देश में भी घुमना पड़ा है। जिन इतिहासों और इतिहासकारों के लेखों से सहायता प्राप्त हुई है। उन

सब का मैं कृतिज्ञ तथा आभारी हूँ विष्णु, पुराण, मतस्य पुराण, पुस्तक महाभारत मजमल अल त्वारीख, एरियन, हरिडोटस, डाक्टर, काशी प्रसाद जैसवार, सरजेमस कर्नल टाड, सरजनरल मिस्टर कंघम, टालवी, विलहण कवीसर, बाना कवीशर, तारीख तिब्री सुलेमान नदवी, हिस्ट्री जाट बाई कालका रंजन कानूगो, ठाकर देशराज जी का इतिहास महाभरत सभापर्व भीशम पर्व उद्योक पर्व दरोणा पर्व और कर्ण पर्व में बीसीयों जाट गोत्र नाम वाले दलों का वर्णन है जिनका जीक्र इस पुस्तक में किया गया है कर्ण पर्व में राजा शल्य और पन्जाब के 12 जाट दलो को जटिका कहा गया है वाकआत 5000 सालामें मीढ जाटों की कथा है। युद्ध महाभारत के बाद 2200 वर्षों का इतिहास लोप हैं। मजमल अलतवारीख वाकआत 5000 साला में दिल्ली राजधानी पर 800 वर्ष इसा पूर्व से 350 इसा पूर्व तक ढिल्लों गोत्र के 14 जाट राजाओं का वर्णन हैं 800 वर्ष इसा पूर्व से महाराजा हर्षवर्धन के समय तक जाट जाति का सोर्ण युग और कमो वेश सिल सिले वार इतिहास मिलता है मोर्यावन्स सिकन्द्र महान से लड़ने भीड़ने वाले पन्जाब के 7 गण राज्य सिन्धु और दहिया दलों की सेनायें गुप्त राज वन्श विर्क भटी और चोल भारशौ चालो किया सब जाट राज्य बन्स थे वही जाट गोत्र भी हैं। जाट राज्य शक्ती के हास और पत्न का कार्ण अग्नी कुल राजपुत दल और पौराणिक मत का जन्म हुआ। बुद्ध धर्म पर डटे रहने वाले अक्सर जाट अहीर और गुजरों ने पुराणिक मत को स्वीकार नहीं किया और न अग्नी कुल राजपुतों को शूद्धक्षत्री माना पन्जाब में पुराणिक मत स्वीकार नहीं हुआ विधवा विवाह को प्रचलित रखा आखिर राजपुत शक्ति बढ़ती गई पुराणिक मत मुर्ती पुजापर विश्वाश बढ़ता गया बोद्ध धर्म अपनी मौत मरता गया बोद्ध धर्मियों को राजपूतों और पन्डितों ने धर्म भ्रष्ट वर्ण शंकर कहने का प्रचार जारी रखा यही धर्म मत भेद जाट राजपूत अहिर गूजर ब्राह्मण आदि जातियों में ऊँच-नीच का भेद हैं। इस कहनाद में पुष्टि दिखाने के लिये विधवा विवाह को मस्तौल का रूप दिया रखा। इस पुस्तक में संक्षेप रूप में दरशाया गया है कि जाटों की राज्य शक्ता का हास होता रहने पर राजपुत दौर इसलाम और ब्रीटिस शासन काल में जाट किस अवस्था में रहते रहे।

चीफ आफ दी पंजाब, सिखाँ दियाँ 12 मिसलां, अंग्रेज वा सिखांदि लड़ाई याँ, आवी ब्रिगेडीयर हुश्यार सिंह राठी जिन्होंने अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन कराने का भार अपने उपर लिया था हैडमास्टर चौधरी हुकमा सिंह जी ने भूमकिा का इंगलिश उथल किया, प्रोफसर मूलचन्द जी का खास अभारी हैं। आपने अंग्रेजी लागवेज (भाषा) का सुधार किया। लफटन्ट रामस्वरूप जून चलोक्या।

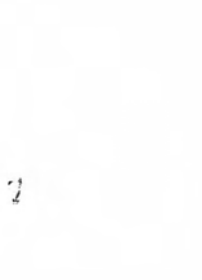

विषय सूची

	विषय			पृष्ठ
	प्रथम अध्याय			
1.	जाट संघ से परिचय	...	...	1
2.	खाप तथा जत्थाबन्दी	...	...	4
3.	सहन शक्ति	...	...	6
4.	धर्म	...	...	7
	द्वितीय अध्याय			
5.	जाटो की वासविक्ता	...	...	10
6.	जाट नाम पर कहावतें	...	...	15
	तृतीय अध्याय			
7.	जाट कथा सार-संग्रह	...	...	21
	चतुर्थ अध्याय			
8.	प्राचीन कथायें और ग्यात वंश	...	...	31
9.	तोफान नुह तथा मनू की जल प्रलय	...	...	31
10.	वेदकाल कब बीता	...	...	32
11.	रामायण और महाभारत काल का अन्तर	...	...	33
12.	ग्यात वंश	...	...	35
13.	अहीर यदु वंश	...	...	42
14.	ग्यात वंश की जातियां	...	...	44
15.	वर्ण परिवर्तन होते रहने के प्रमाण	...	...	45
	पंचम अध्याय			
	जाट इतिहास का तिथि वार दौर	...	...	47
16.	दिल्ली राजधानी पर ढिल्लों जाट राज्य 800 ई० पूर्व से 3 पूर्व ई० तक	...	...	47
17.	बौद्धमत का जन्म तथा प्रभाव	...	...	48
18.	नन्द राज्य वंश	...	...	49
19.	सिकन्दर और दारा की सेनाओं में जाट	...	...	49
	दहीया व सिन्धू	...	...	
	सिकन्दर महान की सेना से पंजाबी 7 गण जाट राज्यों के युद्ध		...	

	विषय			पृष्ठ
20.	मोर्या जाट राजवंश महाराजा चन्द्रगुप्त व अशोकवर्धन	...		51
21.	भारत की दक्षिणी व उत्तरी सीमा के ब्राह्मण तथा यूनानी राज्य			
22.	महाराजा कन्शक युटी विदेशी जाट भारशव लछवी जाट	...		54
23.	गुप्त कार्शकर गोत्री जाट राज्यवंश वा भारश्यो	...	...	
24.	मालवा का विक्रं राजवंश राजा यशोधर्मन	...	...	
25.	महाराजा हर्षवर्धन भठी जाट गोत्री	...	...	
26.	जाट राज्यों का पतन काल	...	...	59
	षष्टम अध्याय			
27.	गुर्ज र राजपूत और जाट	...	...	60
28.	राजपूत संघ का जन्म शुद्धीयज्ञ	...	...	
29.	राजपूत और जाट	...	...	
	सप्तम अध्याय			
30.	मूल जाट गोत्रों की वंशावलियां जाट गोत्रों की नाम आवली	...	...	71
31.	यदुवंशी गोत्र	...	...	72
32.	मद्रक	...	...	72
33.	भठी	...	...	72
34.	हाला	...	...	73
35.	सार्ण	...	...	73
36.	सिद्धू	...	...	73
37.	टिवाणा जंजोहा शाल	...	...	73
38.	सिहाग मान दलाल देशवाल	...	...	74
39.	छीलर छिकारा साज साण्ड	...	...	74
40.	हेर भंगु	...	...	75
41.	भल्लर	...	...	75
42.	शोराण	...	...	75
43.	कुहाड़ खेलड़ी खलु	...	...	75
44.	गोंदल	...	...	75
45.	डागर	...	...	76
46.	राष्टी रुहल धन्खड	...	...	76

अध्याय	विषय			पृष्ठ
47.	आदराण अधरा	...	...	76
48.	छोंकर सन्सनी वाल	....	...	77
49.	ठुलकरीला	...	...	77
50.	योध्या ढाका वाठ	...	...	77
51.	लोहाण लोहर	...	...	78
52.	नुहवाल	...	...	78
53.	श्वी	...	...	78
54.	तक्षक	...	...	79
55.	वाछिक नाग	...	...	79
56.	बैस वाछ बैछला	...	...	79
57.	किल खिल भिन्ड	...	...	79
58.	कक्क काक्कड़ खोखर	...	...	79
59.	बैनी वाल	...	...	80
60.	भड़ा इच	...	...	80
61.	तेवथया	...	...	80
62.	चोहाण तक्षक	...	...	80
63.	फौगाट	...	...	81
64.	तुषार तुशार	...	...	81
65.	लल्ल सरोहा मल्क	...	...	81
66.	टांक	...	...	82
67.	सरोहा सग रोहा	...	...	82
68.	कसवा कुशाण शाह	...	...	82
69.	हंगा चौधरी	...	...	83
70.	पुरु वंश	...	...	83
71.	पोनिया	...	...	84
72.	अंजना	...	...	84
73.	जाखड कादियान सांग बाण	...	...	84
74.	दहिया	...	...	84
75.	कड़ वासरा	...	...	85
76.	हुडा डबास	...	...	35
77.	भिम भरोलिया	...	...	85

	विषय	पृष्ठ
78.	शौलंकी चलोकिया	86
79.	अहलावत उल्हा बहमान	86
80.	जुण माड़े	87
81.	चंदेला गण्ड भगोर	87
82.	गहरवार ग्रेवाल राठौर	87
83.	बुधवार	87
84.	गिल मुदगिल सिहगिल	88
85.	धार्ण धारीवाल	88
86.	महे माहे महित मेही वाल	88
87.	विर्क मिनहास	88
88.	भरयार ढल ढाली	89
89.	मीढ मिढाए मील अजमील	89
90.	तंवर तुषार	89
91.	ठेनवा थनेवार	90
92.	राव रावत सहराबत	90
93.	भिड तंवर	90
94.	ताखर	91
95.	आतिल	91
96.	सिन्धू सिन्धड	91
97.	गांनधार गैन्धु	91
98.	चीमा	92
99.	दर्द	92
100.	बल	92
101.	बलहारा	93
102.	गहलोत	93
103.	गोदारा	94
104.	लांबा सिकर बाल	94
105.	गौर जुडेल	94
106.	चाहार चाहर चोल	95
107.	बाहिक बाही बहेला	95
108.	सोहल सोहु सोहड़	95

विषय			पृष्ठ
109. उठीराय उठवाल	...	...	95
110. बंगड बंगा बांगड	...	...	95
111. नहरा नाडा नाहर	...	...	95
112. गुलया	...	...	96
अष्टम अध्याय			
38. इसलाम धर्म का जन्म और प्रसार	...	...	104
39. सुलतान महमूद गजनवी और जाट	...	...	105
40. कुतुबदीन एबक और जाट	...	...	107
41. इलाऊदीन खिलजी और जाट	...	...	107
42. तेमूर बाबर और जाट	...	...	107
43. शहनशाह औरंगजेब और जाट	...	...	104
नवम अध्याय			
44. मुगल शक्ति का पतन	...	...	110
45. तिलपत का संग्राम सरदार राजाराम	...	...	110
46. सरदार भजा सिंह	...	...	111
47. सरदार चूड़ामन	...	...	112
48. ठाकुर बदन सिंह	...	...	114
49. राजा सूरज मल	...	...	114
50. सवाई राजा जवाहरसिंह भारत इन्दरा राजा रतनसिंह व केहरी सिंह	...	...	119
51. राजा रणजीत सिंह और उसके बाद के ताजदार	...	...	122
52. राजा श्री कृष्ण सिंह	...	...	
53. राजा ब्रजेन्द्र सिंह	...	...	
54. राणा धोलपुर राज्य वंश	...	...	126
55. तेवथ्या राज्य बल्लगढ़	...	...	126
56. ठेनवा राज्य मुड़सान	...	...	127
57. दलाल राज्य कुचेसर	...	...	127
दशम अध्याय			
58. सिख धर्म का प्रचार और 10 गुरु	...	...	128

	विषय			पृष्ठ
59.	सिक्खों की 12 मिसले	...	...	130
60.	महाराजा रणजीत सिंह शेर पंजाब	...	...	131
61.	फुलकिया राज्य वंश	...	...	133
62.	महाराज गान पटियाला	...	...	134
63.	राजगान जीद	...	...	135
64.	राजगान नाभा	...	...	135
65.	राजगान फरीद कोट	...	...	136
66.	रणधावा रईस तलवन्डी	...	...	136
67.	रईस पंज हृता	...	...	
68.	मान रईस मुगल चक वा भागा	...	...	136
69.	रणधाना रईस खुढा	...	...	137
70.	संधू रईस सरांवाली	...	...	137
71.	रईस कलास बाजवा	...	...	
72.	रईस रड याला	...	...	
73.	रईस कललास बाजवा	...	...	

इकादश अध्याय

74.	ब्रिटिश शासन में जाट	...	...	138
75.	विद्रोह सन् 1857	...	...	138
76.	आर्य समाज	...	...	139
77.	सरदार अजीत सिंह सिन्धु	...	...	143

द्वादश अध्याय

78.	योरुप महायुद्ध 1914 से 1919 तक	...	...	144
79.	राजा महेन्द्र प्रताप	...	...	144
80.	रोल्ट एक्ट	...	...	145
81.	सरदार भगतसिंह	...	...	146
82.	अकाली तथा बबर अकाली	....	...	146

त्रोदश अध्याय

83.	सन्सार का दूसरा महायुद्ध 1939 से 1946 तक शिविल वार	...	...	148

	विषय			पृष्ठ
84.	आई० एन० ए०	...	...	148
85.	रहबरे आजम सर छोटू राम मिस्टर जिना को पंजाब से लताड़	...	...	150
86.	महात्मा गाँधी जी को इतिहासिक पत्र	...	...	
87.	ब्रिटिश फुट पालिसी का नग्न रूप	...	...	

चतुरदश अध्याय

88.	सैनिक जातियां और जाट		...	157

प्रथम अध्याय

१. जाट संघ से परिचय

जाट जाति संसार की महान प्राचीन जाति है। चोटी की कृषक है। शूरवीर सैनिक-पन जाट जाति में स्वभाविक हैं। उनका घरेलू जीवन सैनिकों जैसा है। खेती करना पशु पालना आत्म रक्षा तथा देश रक्षा हेतु फौजी बना रहना इनमें प्रमपरा से चले आये हैं। यह उनके पूर्वजों की देन है। वर्तमान काल में जाट नाम का एक बड़ा दल उत्तर पश्चिमी भारतवर्ष में बसा हुआ है। और मध्य ऐशिया और यूरूप की बहुत सी जातियों के इतिहास उनको ययाती वन्शी यटी युटी जटी जीटस ग्येटिक आदि नामों से जाट सिद्ध कर रहे हैं। या उनका तक्षयक स्वी मिढ जाट गोत्र लिखा गया है। इतिहासों में इरान और सिकन्डेनेविया (सिकन्दनाव) में शवी वन्शी तुरकिस्थानी तथा तुर्कों को तकशक और सिन्ध देशवासी जातियों को मिढ वन्शी माना जाता है। यदु वन्श की कृष्ण और संसत जीत शाखाओं में से अहिर जाति शतजीत की सन्तान है। दूसरी शाखा में सैंकडों जाट गोत्र है जाट जाति का प्रसार दूर देशों तक है जाट देश में बसे हुये वैश्य चमार नाई वैरागी आदि जातियों की संख्या जाट गोत्रों की पाई जाती है। मानो सब जाट ही हैं।

जाट जाति समस्त उत्तरी भारत में हिन्दुकुश पर्वत से आरम्भ होकर दक्षिण में प्रयाग बुन्देलखन्ड तक बसी हुई है। और पश्चिम में सिन्धनदी के दोनों किनारों का देश इसमें पंजाब, राजस्थान उत्तरप्रदेश, मेवात, ब्रज, हरियाणा और कुछ हिमाचल प्रदेश शामिल हैं। जाट कम उपजाऊ भूमि पर कम बसे हैं। पर्वतों की तलहटी के साथ साथही बसे हुये हैं। जाटों की बस्तियां भारतवर्ष के सबसे अधिक उपजाऊ भूमि पर मैदानों पर हैं जो स्वस्थ्य प्रद भी हैं मानों भारतवर्ष की अधिक उपजाऊ भूमि का ⅔ भाग जाटों के ही अधिकार में है। अहीर, गुर्जर, और जाट देश में घुल मिलकर बसे हुए हैं। जिन जातियों को वर्तमान काल में हरीजन बोला जाने लगा है। जाट प्रदेशों में उनके पास उपजाऊ भूमि नाम को भी नहीं है।

वैणिजय अथवा व्यवसायक तिजारत पेशे की जातियों के पास जो भूमि है वह कर्ज (ऋण) के बदले ली हुई है।

ब्राह्मणों के पास जो भूमि है वह दान दहेली में मिली हुई है। कुछ ऐसे ब्राह्मण ग्राम या परिवार पाये जाते हैं। जिन्होंने पुरोहित व्यवसाय को त्याग दिया था और जीविका के साधनार्थ उपजाऊ भूमि प्राप्त कर सके थे। जैसे कि जाट जाति एकत्र बसी हुई है ऐसी भारतवासी कोई दूसरी जाति बसी हुई नहीं है। जाट देश में दूसरे प्रदेशों की अपेक्षा ब्राह्मण और हरीजन बहुत कम हैं। चमार और नाई अकसर जाट अहीर गुर्जर राजपूत गोत्रों के लोग हैं। वे अनेक कारणों से जाति बदले हुए लोग हैं। चमारों की जीविका का साधन खेती की पैदावार में साझा और कपड़ा बुनना रहा है। चमड़े का सारा कार्य वही करते आये हैं। दूसरे शिल्पकार थोड़ी संख्या में पाए जाते हैं जिनको आवश्यकता अनुसार बसाया हुआ जाना जाता है। उनमें कुछ की आकृति पंजाबियों जैसी नहीं कुछ ब्राह्मण वे हैं। जो विष्णु (पौराणिक) धर्म के प्रचार के लिए मध्य भारत से बहुधा जाट प्रदेशों में प्रवेश करते रहे। और जो पुरोहित स्वीकार होने में सफल होते गये बसते गये।

इसका कारण यही माना जा सकता है कि आबू पर्वत पर अग्नि कुण्ड के शुद्धी यज्ञ के बाद बुद्ध धर्म के मुकाबले पर पौराणिक धर्म स्थापित हुआ। ब्राह्मणों ने इस धर्म को स्वीकार कराने में पूरा बल लगाया। बौद्धधर्म के त्यागने और अन्त कराने में शस्त्र बल का प्रयोग किया गया। जिससे बौद्ध जनता में अशान्ती फैल गई। जाट संघ ने नए धर्म को स्वीकार किया वे राजपूत दल में मिलते रहे। जाट व राजपूत नाम के दो विरोधी दल बने रहे। नए धर्म के पक्ष वाली जातियों ने जाट देश में रहना निष्फल समझा अथवा उनका वहां ठहरना कष्टजनक बन गया। और राजपूत शासित देशों की और प्रस्थान करते गए। चाहे वे ब्याती वन्शी भी थे।

देहली से ज्यों ज्यों उत्तर पश्चिम की ओर जायें हिन्दूकुश पर्वत तक जाटों की आबादी घनी होती जाएगी। और दिल्ली से दक्षिण पूर्व की ओर कम होती चली जाएगी।

जाट जाति के एकत्र बसा होने के अनेक इतिहासकारों ने ये भी मत प्रकट किया है जिसका वे कोई प्रामाणिक सिद्धान्त सम्मुख नहीं रख सके कि जाट जाति एक विदेशी दल है जो नामालूम प्राचीन काल में ईरान, तुर्किस्तान के सीथीयन देशों

से बढ़कर भारत देश पर छा गया। और अपना शासन कायम करके यमुना, गंगा नदी तक बस गया और इस देश की प्राचीन बसी हुई जातियों को नीचे को और धकेल दिया ऐसा भी लिखते हैं कि वे तुर्की जातियां स्वी और तक्षक दो ही थी वे भारतवर्ष से ही उन देशों में जाकर बसी थीं जिनको वहां से वापिस धकेला गया वे अपने भाई चारे में आ मिलीं। उनके भारत से चले जाने से पहले से बड़ी संख्या में जाट पंजाब में मालिक और शासिक थे वे सब ग्याती वंशी थे पुराणों की कथाओं से यह सिद्ध होता है कि ग्याती जी की जन्मभूमि और ग्याती वंश का प्रसार भारतवर्ष ही है। सीथियन जाति के इतिहास का लेखक अबुलगाजी सीथियन इतिहास में सिद्ध करता है कि सीथियन जाति डंके की चोट कहती है। कि सीथियन चन्द्रवंशी जाट जाति से हैं। और सीथियन की महादादी अहल्या की पुत्री थी। प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि ग्याती वंशी यटि (जाट) जाति के भारतीय आर्य जत्थों का फैलाव सीथियन कहलाने वाले देश तक था। साथियन देश जग क्रॉ जाटस के नाम से भी प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में ईरान शवी देश कहलाता था। वहां के एक प्रान्त का नाम जटाली भी है शवी गोत्र यदु वंशी हैं। और भारती है। तुर्कलोग तकशक वंशी हैं सट्रेबु के हवाले से टाड राजिस्थान उर्दू पृष्ठ 178 एशिया की एक बड़ी अच्छी प्रर्वध है कि कुर्दस्तान तकशक स्थान कहलाया। यह तुर्क तकारी तकशक ही हैं। और 252 पृष्ठ पर भी तुर्कों को तकशक ही लिखा है। जाट भारती आर्य कबीला है। जाट देश उनका अपना पुराना दादलहेत देश है। और भारतवर्ष से ही जाट मध्य एशिया और योरुप के देशों तक पहुँचे हैं। और नई बस्तियां बसाते रहे हैं। प्रमाणों से यह सिद्ध है कि भारती आर्यों की शुद्ध नसल और असली रूप जाट जाति है। और बहुत सी साथी जातियों की मात्र जाति भी है। जहां भूमि रेतीली बंजर है। जाट गऊ, ऊँट भेड़ बकरियों के गल्ले अर्थात् रेवड़ रखते हैं। और इसी व्यवस्था पर उनकी जीविका है। जहाँ सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं। वर्षा पर्याप्त होती है वहाँ चोटी के कृषक हैं। और हर हालत में स्वाभाविक शूरवीर, सैनिक और लड़ाके हैं। प्रत्येक जाट युवक सेना में भर्ती होने की अपनी रुचि प्रकट करता है। भर्ती होने को अवश्य जाता है। ना मन्जूर या अनफिट होने पर कृषि कार्य में जुट जाता है। भारतवर्ष स्वतन्त्र होने के पश्चात जाटों ने भी औद्योगिक धन्धों में प्रवेश किया है।

जाट जाति का दूसरी जातियों की मिलावट के बिना इकट्ठा बसा होने का सब से बड़ा कारण यह पाया गया कि जाट 95 प्रतिशत ग्याती वंशी हैं। ग्याती दल आदिकाल से ही उत्तर पश्चिमी भारत में बसा रहा। अनार्य यानी

भारत की दरावड़ कोल भील आदि जातियां जाट देश में नहीं ठहर सकीं। इसलिए जाट जाति में गैर नसल जाति की मिलावट नहीं पाई जाती। ख्याती दल में वर्ण और जातियां कम संख्या में बनी और वे भी बहुत समय पश्चात बनी क्योंकि यटी दल सारे बन्दे एक बना रहकर करता रहा इस बात का सबूत यह है क जाट जाति खालिस एकत्र बसी हुई है और जाट देश की अकसर जातियां जाटों में से बनी हुई हैं।

२ संघटन

खाप तथा जत्था बन्दी

जाटों में जत्थाबन्दी वर्तमानकाल में भी बिल्कुल आर्यों जैसी है। जाटों जैसी जत्थाबन्दी केवल पश्चिमी सीमा के स्वतन्त्र पठान दलों में देखी जाती है। आज भी वे आपसी झगड़ों को पंच फैसले से निपटाते हैं। और हर भय और लड़ाई झगड़े के मुकाबले के लिए आपस के सब भेद भावों को भुलाकर अपने कबीले की मातहती में इकट्ठे हो जाते हैं। जाट प्रान्तों में ग्राम पंचायत, गोहांड पंचायत छोटी खाप पंचायत, बड़ी खाप पंचायत, सर्वखाप पंचायतें स्थापित हैं। और उनकी पंचायतों का यह संचालन प्राचीन से चला आ रहा है। चौधरी कबूलसिंह जी शोरम निवासी जिला मुजफ्फर नगर के पूर्वज सर्वखाप पंचायत के नेता रह चुके हैं। उनके पास ऐसे तांबे, पलेट और कागज मौजूद हैं जो बादशाहों से अहद-नामों (प्रतिज्ञा पत्र) जाट खापों के साथ होते रहे थे। आपत्तिकाल में देश के राजाओं ने भी सर्वखाप पंचायत की सहायता ली हैं।

उदाहरणार्थ—जब विक्रमी सम्वत् 564 में एक विदेशी हूण नाम की जाति ने उसके नेता तुरमन के नेतृत्व में पंजाब देश को तहस नहस कर डाला था। सियालकोट में राजस्थापन कर लिया था और राजा वीरचन्द जान बचाकर मालवा देश के जाट राजा यशोधर्मन की शरण में पहुँचा जोकि शूरवीर विद्वान और बुद्धिमान था। परन्तु राजा यशोधर्म के पास हुणों को पराज्य करने योग्य सेना और सामग्री न थी। उसने देश और धर्म की रक्षा के हेतु मालवा और हरियाणा आदि देशों की सर्वखाप पंचायतें बुलाईं जिसमे उत्तरी भारत की सब जातियां शामिल थीं। और देश की निर्बल दशा से सूचित किया। उसकी रानी सेवना देवी ने भी ऐसा भाषण किया कि दिल फड़क गए। देश की देवियों ने 100 मन आभूषण

उतार कर रख दिए और जनता के 500 हाथी, 20000 घोड़े, 15000 ऊँट 3000 रथ, 10000 बैलगाड़ी, 200000 योद्धा जमा हो गए। मुलतान के निकट तीन दिन घोर युद्ध जारी रहने के पश्चात हूण सैना भाग निकली। देश से उनको ऐसा भगाया कि मुड़कर नहीं देखा। इस वीरता के विषय में मिसटर एलन भादों राज तिरंगणी के हवाले से और मिस्टर वैन्सट अर्ली हिस्ट्री में जाट वीरता के विषय में ऐसा ही लिखते हैं।

2 बारहवीं शताब्दी (ईसा) में जब मौहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज के देश पर आक्रमरण किया तो उसने सर्वखाप पंचायतों से याचना की जाट पंचायत ने 22000 सैनिक दिए। और दूसरी बार के युद्ध में 18000 जाट सैनिकों ने गौरी की सैना को 15 मील धकेला। परन्तु राज सैना साहस छोड़ चुकी थी। हार हो गई। जब गौरी वापिस गजनी को जा रहा था तो सिन्ध देश के 1८0000 खोखर जाटों ने छापा मारकर सिर काट लिया। वह भी पंचायत की रामोडी सैना थी।

3 अलाउद्दीन खिलजी ने हिन्दू जनता पर जजिया (कर) लगाया। और विवाहों पर सरकार की मन्जूरी लागू की गई इस अन्याय के विरोध स्थान खानपुर जिला मेरठ में सर्वखाप पंचायत का अधिवेशन हुआ। सर्व सम्मति से पास हुआ कि 18 से 40 साल की आयु वाले मर्द सिर पर लफन बांध कर रणभूमि में आ जाएँ और सब जनता दिल से लड़े। बादशाह को रण निमन्त्रण भेज दिया गया। सेंनापति मलिककाफर जो जाति से पतित हुआ सैनी था। हीडन और काली नदियों के संगम पर बरनावे के पास मुकाबले पर आया। घोर युद्ध होने के पश्चात शाही सैना भाग निकली। उन्हीं दिनों मुगल पंजाब पर हमला कर रहे थे अलाउद्दीन ने जाटों से माफी मांगी। लड़ाई का खर्च दे दिया। जजिया कर मुक्त कर दिया। और कहा कि आप हमारे भाई हैं। मुगल विदेशियों के विरुद्ध हमारी सहायता करो पंचायत ने सन्धि स्वीकार कर ली। पंचायत का साहस और बढ़ा।

4 जब राजपूत राज्यों पर मुसलमानों का दबाव बढ़ा तो राणा कुम्भा और राणा संग्राम सिंह ने जाट सर्वखाप पंचायतों से सहायता मांगी। सभा में कहा कि जाट राजपूत भाई हैं। आपस में नाते होने चाहियें। हमको पौराणिक पंडितों ने लड़ा रखा है।

सर्वखाप पंचायत ने जो जाट देश की थी राणा राज्य को प्रत्येक आवश्यकता के समय पर सहायता देना स्वीकार किया और उनका साहस बढ़ाया अन्त युद्ध टल गया सहायता की आवश्यकता नहीं हुई।

३. सहन शक्ति

जाट उच्च कोटि के शूरवीर होते हुए भी अत्यन्त सहनशील हैं। जाट शत्रुता और मित्रता को पीढ़ीयों तक निभाता है एक बूढ़ा जाट शान्ती से नहीं मरेगा। जब तक वह अपनी सन्तान को भलाई बुराई न सिखा सके। जो उस के पड़ौसियों ने की हुई है। उन सब का बदला लेने और बदला चुकाने की अपनी अभीलाषा प्रकट करेगा। जाट प्रथम श्रेणी का परीश्रमी है। वह भूख, प्यास, कंगाली, हर प्रकार की आपत्ति और मौत तक का सामना बड़े साहस और धैर्य से करता है। वह आपत्ति से घबरा कर हा हा कार नहीं मचाता। इश्वरइछया कह कर धैर्य धारण कर लेता है। क्षमा मांगने पर खूनी हत्यारे को भी क्षमा कर देता है। परन्तु यदि उस के कार्य में अनुचित हस्ताक्षेप करे तो बिगड़ बैठता है। अंग्रेज रैकरूटिंग अफसर मेजर बेंगली जाट जाति की आदत के विषय में लिखता है, जाट अत्यन्त अच्छे सैनिक सिद्ध हुए हैं। किन्तु यदि देवयोग से जाट सैनिक से कोई अन्याय का व्यवहार करे तो प्रथम श्रेणी का हट्ठी है। बिगड़ बैठता है। आपत्ति और अच्छे रोजगार, बड़े पद की परवाह न करते हुए नौकरी छोड़ देता है। जाट अपनी कमाई पर संतोष रखता है। जाटों ने पौराणिक धर्मी राजपूतों और इस्लामी शासकों की ब्रत्रता को लम्बे समय तक झेला ज्यों-ज्यों ताव दिए गए निखरते गए। भरतपुर के घेरे में अंग्रेजों को शक्ति मनवाई भयानक दुभिक्षों में वृक्ष की छाल और जंगली गोखरु टीट, सागर खाकर शान्ति से परिवार पालन किये। जाट दल ५०० वर्षों तक राजपूत शक्ति के मुकाबिले पर हर अवस्था में डटा रहा। हर कसौटी में शुद्ध पाया गया।

४ (सात्विक भोजन) (Food)

जाट अपने खेत में पैदा हुआ अन्न, साग, सबजी, घी, दूध, छाछ आदि सादा पौष्टिक भोजन खाता है। इसी कारण वह हृष्ट पुष्ट बना रहता है। इस का सब से पौष्टिक और रोचक भोजन घी और खीर है। संध्या समय दलिया, खिचड़ी, राबड़ी आदि भोजन गरम दूध के साथ खाता है। इस्लाम और सिख धर्म में जाने के पश्चात् उन में मांस भक्षण भी किया जाने लगा है। मुट्ठी भर चने खाकर महीनों तक शत्रु का सामना कर सकता है। खेत में से बिना पका अन्न बड़ी रुचि से खाता है। चने के छोले या होले, बाजरा, चना या मकई के भुट्टे, मूंग मटर की फलीयाँ और जौ गेहूँ की भुनी हुई बाल खाता है। बाजरा, जवार, चना, मटर, जौ आदि मोटे अनाज भी रुचि से खाता है। पाकिस्तानी मध्य एशियाई यूरोपियन जाट नए धर्मों के प्रभाव वश मांश भक्षी होते गए हैं।

४. धर्म

संसार में केवल एक जाट जाति ही ऐसी है जो कभी पाखंण्डी पोप लीलाओं से प्रभावित नहीं हुई। वर्तमान काल में हिन्दू, सिख, इस्लाम तीनों ही धर्मों के अनुयायी बड़ी बड़ी संख्याओं में हैं। परन्तु हिन्दू धर्मी सब से बड़ी संख्या में हैं। हर धर्म में सम्मिलित होकर जाट-जाट ही बना रहता है गोत्र और जाति का नाम नहीं बदलता। केवल एक ईश्वर को मानता है। और उसी की उपासना करता है। किसी भी धर्म की अंधविश्वासी बातों और पाखण्डों को नहीं मानता। और न ही देवी, देवताओं और भूत प्रेत आदि के चक्कर में पड़ता है। प्राचीन काल में वैदिक धर्म अस्त दशा में पहुंचा, जब धर्म के ठेकेदारों द्वारा स्वार्थ बढ़गया, अधर्म फैल गया, तो बौद्ध धर्म ने देश धर्म का स्थान ले लिया और जाट भी बौद्ध धर्मी बन गए। और शेष सारी जातियों के बाद तक बुद्ध धर्म के विश्वासी, श्रद्धालु अनुयायी रहे। इसी कारण वर्तमान काल के जाटों में बौद्ध धर्म के नियमों का प्रभाव विद्यमान है। अर्थात जनेऊ न पहनना, छूआछूत को और जातियों की अपेक्षा बहुत कम मानना, ब्राह्मण पंडितों से साधुओं का अधिक मान करना, मांस से घृणा करना। जब बौध धर्म भारत से लगभग समाप्त हो गया पौराणिक मत ने उस का स्थान ले लिया तो जाट साधु पंथी बने यथा धन्ना भगत, हरीदास गरीबदास, निश्चलदास आदि उन में अनेक पहुँचे हुए साधु हुए। सन् 1911 की मनुष्य गणना में पंजाब के जाट साधुओं की संख्या (37000) सैंतीस हजार थी। विश्नोई मत में भी जाट बहुत हैं। सिख धर्म केवल ईश्वर को मानता है। सिख जाटों की पंजाब में बड़ी संख्या है। जब बौधमत का भारत से अन्त हो गया तो जाट भी ब्राह्मणी मत के अनुयायी बन गए। परन्तु पौराणक मत के श्रद्धालु नहीं बन सके पंडितों और पुरोहितों की पाखंण्डी बातों को नहीं माना। इस कारण ब्राह्मणी मत के पंडित उनको नास्तिक ब्रह्मण का अपमान करने वाला राक्षस, बे धर्मी क्षुद्र बता कर दिल को शान्त करते रहे। और ब्रह्मण तथा जाट में यह मत भेद चलता ही रहा। जब साधुओं के मतों में निबलता आ चूकी थी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज स्थापित किया। आर्य समाज के नियम जाटों के बहुत अनुकूल थे। इस लिए सब हिन्दू जाट आर्य समाज को ही अपना धर्म मानते हैं। जो शुद्ध वैदिक धर्म है। सिक्ख धर्म भी शुद्ध वेदक धर्म है। सिक्ख धर्म भी पाखडों से बेलाग है। केवल एक ईश्वर को ही मानता है। हरियाणा को छोड़कर पंजाब के समस्त जाट सिख धर्म के अनुयायी हैं। आर्य समाज के अस्तित्व में आने से पहले भी जाटों का धर्म वेदक ही रहा है। राजस्थान, बृज, उत्तरप्रदेश तथा पंजाब प्रान्तों में अधिक संख्या जाटों की ही है। उनका धर्म हिन्दूओं की दूसरी

जातियों से निराला है। वह केवल एक ईश्वर पर विश्वास करता है और किसी बंधन में जकड़ा हुआ नहीं है। वर्तमान समय में जनता राज्य स्थापित हो जाने के पश्चात् दूसरी ब्राह्मण धर्म की कट्टर पाबन्द जातियाँ भी हिन्दू धर्म के संकुचित घेरे का उल्लंघन करती हुई जाटों के समान पाखण्ड से बेलाग धर्म को स्वीकार करती जा रही हैं। और ठीक उसी ओर आ रही है, जाटों को ब्राह्मणी धर्म की रोचक और भयानक कथाएं आकर्षित न कर सकी। उन का निश्चय यथार्थ ज्ञान पर रहा। और वह बेलाग साधुओं से प्राप्त हो सकता था। आर्य समाज ने जाट जाति को सच्चे उपदेशों द्वारा संतुष्ट किया। मध्य एशिया के जाट इस्लाम धर्मी और यूरापियन देशों के ईसाई धर्मी हैं।

द्वितीय अध्याय

५. जाटों की वास्तविकता

7. भारतवर्ष का पुराना इतिहास लोप हो जाने के कारण इतिहास के विषय में मिथ्या कहानियां चलती रहीं। राजपूती राज्य के समय में मुस्लिम राज्य के अन्त तक पंडितों की ओर से प्रचार जारी रहा-कि आर्य क्षत्रियों की सन्तान केवल राजपूत हैं। और जाट गूजर अहिर आदि जातियां उन धर्म भ्रष्ट राजपूतों की सन्तान हैं। जिन्होंने विधवा विवाह अपने परिवारों में प्रचलित कर लिया। अँग्रेजी राज्य के दौरान में इस कहनाद की पोल खुल गई गहरी खोज के आधार पर नए इतिहास की रचना हुई। उसमें राजपूत जाट गूजरों में उन विदेशी कीबलों की मिलावट पाई गई। जो भारतवर्ष में दाखिल होते रहे और उनका वापिस लौटे जाने का भेद नहीं चलता। इस बात को सामने रखते हुए विदेशी इतिहास-कारों ने अपना अन्दाजा शामिल करके यह निश्चित कर लिया कि समस्त राजपूत जाति साका और गूजर हैं और गूजर जाति कुशाण-युची हुण कबिलों से बनी है और सारी जाति सिथियन कबिलों की सन्तान हैं। और ऐसा ही वर्तमान काल के इतिहासों में लिखकर कालेजों और स्कूलों में पढ़ाया जाता है। परन्तु संस्कृत के रिकार्ड भाटों की लिखी वन्शा वलियों से ये सिद्ध होता है कि सारी की सारी जातियां विदेशी कबिलों की सन्तान नहीं हैं। जैसाकि सर ऐ जनरल कनघम, सर जैम्स, करनल टाड मिस्टर पिलनी हरि डोटिस आदि के लेखों से सिद्ध होता है कि ईरान तुर्किस्तान और उससे भी आगे बढ़ कर जो बसे हुए सिथियन नाम धारण कर लेने वाले कबिले शवी तक्षक प्रादि गोत्रों के ययाती वन्शी भारतीय जाट थे। जो न मालूम कितने लम्बे समय के बाद भारतवर्ष की ओर वापस धकेल दिए गए। और वे भारत में आकर अपनी जाट जाति में विलीन हो गए ऐसे बहुत से प्रमाण इस विषय में नीचे लिखे जाते हैं कि सारी की सारी जाट जाति भारतीय आर्यों की सन्तान हैं।

एक इतिहासिक लेख

इसवी मसी से करीब 200 साल पूर्व मध्य ऐशिया के तुर्क कबीलों में युद्ध जारी हुआ चीन के इतिहास की भाष्या के नेगुन नाम के सुदढय कबीले ने युची (युटी यटी) नाम के कबीले को देशसे निकाल दिया जो चीन के उत्तर पश्चिम

देश में बसा हुआ था जब वह पीछे हटा तो दोसन नाम के कबीले से मुठ भेड़ हो गई और युची दो भागों में बट गए एक भाग तिब्बत की सीमा पर बस गया और दूसरा सिन्धु नदी के देश में बस गया यहां यह सीथियन कहलाने लगा। इस नाम के दो कारण हो सकते हैं ? यह कि वह देश शवीस्थान नाम से प्रसिद्ध था जैसाकि हैवसांग और फाहियान ने इसको शवी देश लिखा है दूसरा कारण यह कि सिन्ध नदी के देश में बसी रहने से सिथियन जाति कहाई, नहीं मालूम कितने समय पश्चात सीथियन ने देश बदली करने की अभिलाषा से साका जाति पर आक्रमण करके हराया और पूर्व दक्षिण अफगानिस्तान की बोलान घाटी और सिन्ध नदी को पार करके पंजाब पर और गंगा नदी तक अधिकार जमा लिया इतिहासकारों का अनुमान है कि सिथियन जाति वर्तमान जाट जाति के रूप में हो सकती है मेजर बेंगुली हैंडबुक आफदी जट गूजर अहीर का लेखक साफ शब्दों में लिखता है कि यह सब सिथियन की सन्तान हैं।

सिथियन कबीले जाट सिद्ध होने के प्रमाण

सीहु नदी के सीथियन देश का नाम जगजाट और उस देश की सीमा से मिले हुए ईरान के सूबे का नाम जटाली है टाड राजस्तान उर्दू 252 में लिखा है कि तुर्क शब्द तकशक का ही बदल है सट्रेबु ने लिखा है एशिया का बड़ा अच्छा भाग है जो कुरदस्तान तुर्किस्तान (तकशकतान) कहलाया और शवी तकश्क जटी बहुत प्राचीन जाति हैं चुगताया सकटाइया साका दीप है। (टाड 178)

तातारी लोग डंके की चोट स्वयं को चन्द्र वंशी जटी या जाट कहते हैं, सिथियन इतिहास का लेखक अबुलगाजी लिखता है कि सिथियन तुर्कों का पूर्वज तार जटाई का बेटा था, उनकी माता अहिल्या की पुत्री थी। पृष्ठ 53 में लिखा है कि खुवारजम के किसान प्राचीन में तकश्क और जटी कहाते थे, चंगेजखां का शत्रु जलाल तकश्क जटी था और तुर्किस्तान की राजधानी ताशकन्द (तकशखण्ड) थी। पृष्ठ 198 में लिखा है कि जब साका लोगों ने बाल्टक समुद्र की ओर से ईरान पर हमला करके लूट लिया और रात होने पर लूट का माल बांट रहे थे तो ईरानी जाटों ने छापा मारकर उनके धुरें उड़ा दिए सब माल छीन लिया और इस बड़ी विजय की यादगार में उस स्थान पर मावश्या देवी और उनीयन देवी के दो मन्दिर बनवाए जिन पर वर्तमान काल में भी जिले के हाकिम के प्रबन्ध में सालान मेला लगता है।

भारतीय प्राचीन जाटों के विदेशों में प्रसार के विषय में मिस्टर गिलडोन और मिस्टर नील लिखते हैं कि लोमरी बिलाचों के पूर्वज जाट थे अबुलफजल लिखता है कि वे युद्ध में 300 सवार और 700 प्यादे शरीक करते थे बिलोचिस्ताना के जुगराफिया में भी लोमरी बिलाचों को जाट वन्शी लिखा है पिलनी लिखता है कि जब खानकेस सूबा टर्की और बिबेलोनिया के मध्य में युद्ध हुआ तो सिन्धु सैना शरीक हुई थी उनकी वर्दी मूती थी उन्होंने खानकेस से लौट कर शेरया देश को बसाया जो बड़ा उपजाऊ था शेरया में उनको बड़ा मान प्राप्त हुआ उन दिनों इटली की रोमा राजधानी पर जाट शासन था शेरया में बसने वाले जाट सिन्ध के मीढ थे जो राजा हस्ती की सन्तान थे शाम देश को कृष्ण वंशियों ने बसाया था टाड उर्दु 181 के हाशिये पर टरनेर ने लिखा हैं कि ईंगलो सकशन ब्रिटिश जातियां शेषनाग वंशी हैं इनके पूर्वज युट (जटी) थे जब उन्होंने सिकन्डे नेविया (सिकन्ध नाभ) पर धावा किया तो युट लेंड (जट लेंड) देश को बसाया पृष्ठ 191 में लिखा है कि सिकन्डेनेविया की सबसे बलवान जाति जाट थी वह शवी नाम की थी 198 में लेख है कि उनमें जौहर और सती प्रथा थी इन रस्मों को गैर जाट लोग निर्दयाता कहते थे, ये इन रस्मों को अपने साथ लाए थे। 203 में लिखा है कि उनके नेता बलदीर की मृत्यु पर उसकी बड़ी स्त्री नन्ना सती हुई छोटी स्त्री उदन को यह हक नहीं मिल सका। पृष्ठ 207 पर टरनेर के हवाले से लेख है कि लोग भारतवर्ष की रस्म की भांति त्यौहारों पर शस्त्र पूजा करते थे शस्त्रों की सौगन्ध खाते थे और पखेरुओं से शगुन लेते थे, उन्होंने अपनी राजधानी का नाम आसगढ़ रखा था जसटस हरी डोटस सट्रेबु एक ही बात लिखते हैं कि 2000 साल पूर्व जटलेंड में कुल छः जातियां थीं उनमें एक जटी जाति थी उन्होंने वहां एक प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया उनकी देवी का नाम अहिल्या था उसका स्थान बाग में था उसके रथ को गाय खींचती थी टाड 189 योची (यटी) जाति का एक दल शिवी नाम का सीथियन योरूप की ओर बड़ा तो उसने यटलेंड (जटलेंड) देश को बसाया और जवार स्थान में सेवल नाम का मन्दिर बनवाया जो सेवल मिनार कहलाता है।

इन लेखों से पता चलता है शवी यटीज भारतीय शवी गोत्र के थे जरनल कंघम लिखता है कि इरान के जट्टाली सुबे की जटि (जाट) जाति ययाती वंशी हैं वह शव गोत्री और राजा दक्ष की पुत्रियों की संतान हैं ये लोग बहुत आगे तक बढ़ गऐ थे और हर युद्ध में इरानी जाट सिंध के जाटों से मिल जाते थे। हरि डोटस यूनानी लिखता है कि जब सिकन्दर महान ने ईरान पर चढ़ाई की

ता इरानी सैना में बड़ी संख्या जाट सैनिकों की थी, टाड उर्दू 196 में अरबेला की जाट सैना में 15 हाथी 200 रथ थे और जाट सैना दहने बाजु पर लगाई जाती रही इसी सैना के घमंड पर दाराने सिकंदर से भिड़ने का साहस किया था, रथों के हमले ने सिकंदर की सैना को बखेर दिया युनानीयों ने जाट सैना की बड़ी प्रशंशा लिखी है, सिकंदर महान ने सहायता के लिये सिथियन फौज मंगाई उसमें बड़ी संख्या दहिया जाटों की थी जो बर्छियों से सुसजित थी और विजय भी सिकन्दर की हुई, टाड 181 में सट्रैबु के हवाले से लिखा है कि झील कैसपीन से पूर्व की ओर की सेनायें सीथियन कहलाती हैं और दहिया महाजटी इसके और पूरब में बसी हुई जाति है, इनमें तकशक कबीले भी शामिल हैं यह कथा पुराणों में भी है :—

ऊपर लिखे लेखों से यह सिद्ध होता है कि सीथियन शवी तकशक मीढ जाट गोत्रों के लोग थे और उनका निकास भारतवर्ष से था, उन कबीलों को लेखक जटी, गाट, गाथ गेटक यटी युटी युची लिखते हैं। सीथियन के भारतवर्ष में प्रवेश से पूर्व जाट जातियाँ विद्यमान थी।

सिथियन के प्रवेश से पूर्व भारत में जाट थे—

हरी डोटस यूनानी लिखता है कि जब दारा बादशाह को सिकन्दर महान की ईरान पर चढ़ाई की खबर मिली तो उसने सिन्ध देश के सिन्धु जाट राजा से सहायता के लिये सेना मंगाई थी सिन्धु सेना के पास तीर कमान थे वे कमान को कान के बराबर तक तान कर तीर छोड़ते थे और सिकन्दर की सेना के जिस भाग पर झपटते थे निर्बल कर देते थे। बंगला विश्वकोश में निगन्दर नाथ बैनर्जी ने लिखा है कि राजा जैदर्थ लंका का राजा और दुर्योधन का बहनोई था। दुर्योधन ने सिन्ध देश का राज्य उसको सौंपा था इसकी सन्तान ने चच के समय तक सिन्ध में राज्य किया और सिन्धु कहलाए वहां से निकाले जाने पर सिन्धु पंजाब में आ बसे सिख जाटों का सिन्धु गोत्र बहुत बड़ा और पुराना है।

सिकन्दर महान के साथी लेखक एरियन ने लिखा है कि सिन्ध नदी को पार करने के पश्चात सतलुज नदी तक पहुंचने में १९ महीने लगे थे, पंजाब में कदम कदम पर जाट गणराज्यों से मुठभेड़ होती रही उन राज्यों के नाम मलक, मद्रक, मल्ह, कठ, जट्रक, सुभरावों, योध्या, कुशान आदि थे, वापसी पर जेहलम नदी में गाट (जाट) जाति के जहाज मिले जिन्होंने आधीनता स्वीकार कर ली।

टाड उर्दू 1419 में लिखा है कि 400 साल ईसा पूर्व पंजाब पर जाटों का राज्य था, एरियन यह भी लिखता है कि टेकसला के पास तकी (तकशक)

जाति से भेड़ हुआ था, 'ए गाइड टू टेकसला' पुस्तक में लिखा है कि टेकस्ला को महाभारत के समय में बसाया गया था, एक दन्त कथा है कि पुरानी दिल्ली इन्द्रप्रस्थ कहलाने से पूर्व खांडप्रस्थ कहलाती थी जिस के शासक तकशक थे, पाण्डवों ने उनको नष्ट कर दिया तथा निकाल दिया, उन्होंने टेकस्ला को अपनी राजधानी बनाया। युद्ध महाभारत में पाण्डवों के साथ क्रोध लड़े, एक तकशक नेता ने ही राजा परीक्षत को बद्ध किया था, वर्तमानकाल तक विनय नगर (मोडल टाक्स) के साथ 5 ग्राम तकशक जाटों के हैं जिनको टोकस भी कहा जाने लगा है। पूरे उत्तरी भारत में तकश गोत्र फैला हुआ मिलता है। मद्रक गणराज्य की सेना से सिकन्दर की सेना की लड़ाई हुई थी, सियालकोट के देश को मद्रक देश बोला जाता रहा, मद्रक राजा शल्य पाण्डुवों का मामा युद्ध महाभारत में शरीक था, अलबेरूनी अबी लिखता है चित्तौड़ का प्राचीन नाम जट्टोड़ था, विष्णु पुराण में कथा है कि दहीया भारत की प्राचीन जाति है, श्री श्योचन्द कपूर रचित दुनिया की कहानी पुस्तक में लेख है कि 2000 ईसा पूर्व मीढ लोगों ने ईरान में प्रवेश किया था, हिस्ट्री आफ दी टाड VI 74–76 राजा हस्ती की मीढ शाखा अशो और यजो नामी सिन्ध नदी के साथ साथ बढ़कर दोनों किनारों के देशों में फैल कर बस गई थी, मजमल अलतवारीख फारसी और उसके उर्दू तरजमा वाकिआत 5000 साला में लिखा है कि सिंध देश के मीढ जाट दलों के नेता जो परस्पर शत्रु थे एकत्र होकर राजा दर्योधन के दरबार में पहुंचे थे कि शान्ती स्थापना के लिये सिन्ध पर विदेशी राजा नियत करें, इसी पुस्तक में लिखा है कि 800 वर्ष ईसा से पूर्व तक दिल्ली पर ढिल्लों वंशी 13 राजाओं ने राज्य किया, ढिल्लों गोत्र केवल सिख जाटों का ही है, जिन राज दलों का वृतान्त महाभारत सभा पर्व में है उन नामों के निम्न जाट गोत्र हैं। मल्ह (मल्ही) मालो (माला) गान्धार सन्धु माही (महे) शवी बाठ ब्रिक दार्द शालो (शाल) कुकर (खोखर) काक (काग) तकशक शन्ड (सांड संडरारण) अड़ बाहिक (बाही बहेले) बिजे (बिजेरनया) शौरा शद्रा (राठी) मान सोहद (सोहु सोहड़े) उठीराए (उठवाल) आदि।

भीष्मपर्व शलोक 113-117 में लिखा है कि द्ररदोंने पांण्डुसेना में शरीक होकर घोर युद्ध किया, द्रोणपर्व शलोक 27-28 में लेख है कि राजा द्रोपद ने यही कहा था कि दर्दो को जीतकर यज्ञ में शरीक करो जो चीमा और तुशारों के पड़ोसी हैं, चीमा दर्द तुशार बड़े बड़े जाट गोत्र हैं पाननीजी ने अष्टा अध्याई दीर्दी संन्धु लिखा है यानी संन्धु नदी दर्दो के देश में है, मिसट्र टालबी लिखता है कि अफगानिस्तानी दर्द युद्ध महाभारत में शरीक थे महाभारत के कर्ण पर्व में सेनापती और उसके स्वार्थी राजा शिल्य के मध्य एक वार्ता की कथा में कर्ण ने शल्य की जटिला

(जाट) जाति और जटित्का जाति के 12 गोत्रों का मजाक उड़ाया है कि आप पंजाबी हैं और प्याज लहसन भी खा लेते हैं इस पर्ख को क्या जाने कि कर्ण वा अरजुन में कौन बड़ा शूरवीर है जिन पंजाबी जटी गोत्रों के नाम लिए वे मल्ह मर्दक सिन्धु तुशार राशट्री केक्य आदि थे और आज भी वहां हैं, यूनानी हाकिम सलोक्स राजा चंद्रगुप्त मौर्या वंशी से हार खा जाने और मित्रता हो जाने के पश्चात एक भारती सैनिक दस्ता युनान में बसाने के लिये साथ ले गया था, उन्होंने वहां एक आबादी का नाम मोर्या रखा और एक टापू का नाम जटौती रखा था, उनके वही नाम चले आ रहे हैं, योध्या पुराणा जाट गोत्र है, जिसका जिक्र ऐरियन ने भी किया है, उन की मुद्रा (सिक्के) सारी पंजाब और हरयाणा के उजड़ों से मिलते हैं, टाड उर्दू पृष्ट 175 में लेख है कि 600 ईसा पूर्व मगध राजधानी पर तकशक सेष नाग शाषक थे, ऊपर दिए प्रमाणों को दृष्टी में रखते हुए संदेह नहीं कि जाट भारती हैं, लेख सिद्ध करते हैं कि ययाती वंशी पांचों कबीलों के जाट पूरे आर्यावंत यानी बालटक समुद्र और बाकत फैले हुए थे जो रूस की दक्षण पस्चमी सीमा पर हैं।

जाट नाम का प्राचीनतत्व और प्रयोग

इतिहास यह सिद्ध करता है कि जाट चाहे प्राचीन से भारतवर्ष के बाशी हों या सीथियन हर हालत में ययाती वंशी हैं, इसी कार्ण ययात याट जाट नाम का प्रयोग इस वंश के साथ प्रचलित रहा है, परन्तु भारत वर्ष में सिवाय बंशावलियों में ययाती बंशी लिखते रहने के चन्द्रवंशी क्षत्री ही बोला जाता रहा ययाती यटी युची जटी नामों का प्रयोग भारतवर्ष से बाहर बिदेशों में जा बसने वाले जाट कबीलों के साथ विशेष हुआ, क्योंकि बिदेशी जातियों को परिचय कराने के लिये शिवी तकशक-मीढ गोत्र बतलाते हुए भी जाती का नाम यटी जटी बताना आवश्क हुआ इसी कारण प्रत्येक वाकिआत के साथ उन कबीलों के नाम जटी यटी मुची आदी लिखे मिलते हैं। राजा हर्ष वर्धन के शासन काल तक की घटनाओं में गोत्र दलों के नाम ही अकसर मिलते हैं जातियों के नाम कम से कम मिलते हैं गुजर तथा राजपूत नामों की नई शक्तियां मैदान में आजाने के पश्चात उनकी टक्कर झेलने वाले विरोधी दलों ने बड़ी संख्या में एक झन्डे के नीचे जमा होकर संघ बनाने पड़े आगे चलकर वही संघ जातियां कहलाने लगे राजपूत शक्ति प्रबल होजाने पर शक्ति अनुसार ऊंचनीच का सवाल पैदा होता गया प्राचीन लेखों के अनुसार ययात शब्द जाट में बदल चुका था परन्तु जाट नामकी जाति राजा हर्षवर्धन काल के पश्चात विशेष प्रसिद्ध हुई जब कई सो वर्ष तक राजपूत नाम के संघ के साथ मुकाबिले में सबसे बड़ा दल जाट नाम की जाति रही।

जाट नाम पर कहावते

एक संघ का अथवा जाति का नाम जाट और जट क्यों प्रसिद्ध हुआ। और कब से ?

पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान में जट बोला जाता है और अन्य प्रान्तों में जाट बोला जाता है। पाठकों को यह जानने की इच्छा होगी इनमें शुद्ध नाम कौनसा है। जाट अथवा जट विषय में लोकक्तियां विचार और लोगों की सम्मितियां क्या हैं।

1. कुछ लोग यह समझे हुए हैं कि जट किसान को कहते हैं जिन जिन परिवारों ने कृषि का कार्य अपनाया वह जट नाम से पुकारे जाने लगे। इस प्रकार कृषकों की भिन्न जाति बन गई वह जाट कहलाने लगे।

समोक्षा—जट शब्द का अर्थ किसी भाषा में कृषक का नहीं और भारतवर्ष में अनेक जातियां प्राचीन काल से कृषि का कार्य करती आ रही हैं परन्तु वे सब जट नहीं कहलातीं इसलिए यह कहना ठीक नहीं।

2. जाट जाति के पूर्वज सिर पर जटा रखते थे। अत: उनकी सन्तान जाट नाम से प्रसिद्ध हो गई।

खण्डन—प्राचीन काल की कथाओं और खण्डरों से निकली मूर्तियों को देखने से पता चलता है कि प्राचीनकाल में सब लोग सिर पर जटा रखते थे क्योंकि भारतीय आर्यों मध्य एशिया के शीत देशों से आए थे। ज्यों ज्यों वह उष्ण देशों में आकर निवास करते गए सिर के बाल कम तथा छोटे करते गए यहां तक कि मस्तिष्क पर ही बाल रखे जाने लगे और चोटी गऊ के खुर के समान रखी जाने लगी अर्थात अब सिर की चोटी ही प्राचीन जटाओं की याद और निशानी है। रामायण अररण्य काण्ड में लिखा है कि जब रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी बनवास को जाने लगे तो अपने सिर के बालों में बड़ के पेड़ का दूध लगाकर जटाएँ बनाईं। श्रीकृष्ण जी ने राजा कंश को लम्बे बालों को पकड़ कर पछाड़ा था। जब सब आर्य संघ प्राचीन काल में सिर पर जटा रखते थे तब एक ही संघ जाट क्यों प्रसिद्ध हुआ इसलिए यह कहावत भी मिथ्या है।

3. बौद्धधर्मी जाट जाति से घृणा और द्वेष रखने वाले पौराणिक धर्मी पंडितों ने यह कथा भी बनाली कि ब्राह्मण वर्ण के शूरवीर नेता परशुराम जी ने 21 बार क्षत्रियों को पराज्य करके भारत भूमि से निर्बीज कर दिया था। जब क्षत्री शेष न रहा तो क्षत्राणियों ने ब्राह्मणों से व्यभिचार करके गर्भ धारण किए। अधर्म से उत्पन्न किए हुए जटरा कहलाए और वह जाट नाम से प्रसिद्ध हुए।

खण्डन—ब्राह्मणी मत मध्य भारत में बहुत फैल जाने पर भी जाट बुद्धधर्मी ही बने रहे ब्राह्मणी मत के पंडितों और प्रचारकों को जाट प्रान्तों से खदेड़ा जाता रहा। द्वेष के कारण पौराणों की कई कथाओं में दर्द आदि जाटों को ब्राह्मण के दर्शन से मुँह मोड़ने वाला राक्षस लिखा है। ब्राह्मण मत, के उन्नतिकाल में लिखी हुई कथा कहानियों में जाटों का वर्णन शून्य के समान है। यदि कहीं है भी तो अच्छे शब्दों में नहीं। परपुराम जी रामायण काल में हुए। उस समय क्षत्रिय राजाओं के राजदरबार में क्षत्री राजे महाराजे ऋषि मुनि और ब्राह्मणों का बड़ा आदर मान करते थे। उनके चरणों में मस्तिष्क टेकते थे। राजनीति की बागडोर ब्राह्मणों के हाथों में थी। वह राजा तथा जनता दोनों के गुरु थे। ब्राह्मणों का तप, तेज, बुद्धि, बल और आचार बहुत ऊँचा था। राजा दशरथ और विदेही राजा जनक के दरबार में ऋषि मुनियों का आगमन सदा बना रहता था। यह कथा मिथ्या तथा बनावटी है कि परसुराम जी समस्त क्षत्रियों को भारत भूमि से नर्बीज कर दिया था। परसुराम ने राजा सहस्राबाहु से अनेक बार युद्ध किया और उसको पराज्य भी किया सहस्राबाहु ने परसुराम के पिता जानदाग्नी ऋषि का अपमान किया था। और वह अहंकारी भी था। सहस्राबाहु को पराज्य करने के पश्चात परसुराम भी अभिमानी हो गए थे। राजा जनक जी की मिथिलापुरी में सीता स्वयंवर में रामचन्द्र जी ने उसको नीचा दिखाकर अभिमान भंग कर दिया था। न तो रामायण के ब्राह्मण धर्मभ्रष्ट और व्यभिचारी थे और न ही ऐसी घटनाएँ हुईं।

4 अजात शब्द जाट कहा जाने लगा। क्योंकि जाट विदेशी सिथियन की सन्तान हैं। सिथियन में कोई जात-पात नहीं थी। सब व्यवसाय पूरा दल स्वयं करता था।

खण्डन—अनेक इतिहासज्ञों की यह सम्मति है कि जाट राजपूत, गुर्जर, अहीर आदि जातियां जो नई शूरवीर प्रकट होती रहीं हैं अवश्य शाका सिथियन हुण आदि आक्रमणकारिकों के लोग होंगे जिनका भारत में प्रवेश होते रहने के लेख तो

मिलते हैं वापिस जाने का वृतान्त नहीं मिलता। परन्तु इस विचार की पुष्टि के लिए उनके पास कोई प्रमाण नहीं। पुरी खोज के पश्चात यह सिद्ध हो चुका है कि राजपुत्र और गुजरों में साका और हुण कबीले शरीक पाए जाते हैं और जाट जाति में शवी और तकशक गोत्रों में कुछ संख्या उन लोगों की है जो भारत से बढ़कर तुर्किस्तान और ईरान देशों में गए थे और उनको वापिस वहां से भारत की ओर धकेल दिया गया और जाट जाति में आ मिले उनका प्रवेश छटी ईसा तक माना जाता है। परन्तु जाट जाति में 95 प्रतिशत गोत्र ग्याती वंशी ही हैं कुछ सूर्य वंशी भी ग्याती वंश का हरिद्वार से बिस्तार होना कथाओं से सिद्ध होता है। रामायण में ग्याती दलों का वृतान्त है महाभारत में जाट गोत्रों और दलों के नामों का वृतान्त है इसलिए पुरी जाट जाति या उसमें बड़ी संख्या सिथियन शरीक हो जाने के विचार में कोई पुष्टी नहीं मिलती।

5 जाट भ्रष्ट राजपूतों की सन्तान हैं। जिन्होंने पौराणिक नियम को भंग करके अपने परिवार में विधवा विवाह प्रचलित कर लिए।

खण्डन--कुछ न्यून संख्या जाट जाति में ऐसे राजपूत वंशी गोत्रों की अवश्य है जो आ मिले हैं परन्तु जाट जाति राजपूत जाति से बहुत पुरानी है और विधवा विवाह की प्रथा बहुत प्राचीन है जो प्रमाणित भी है।

जाटों में विधवा विवाह नियोग करेवा की प्रथा है। यह वेद शास्त्रों के अनुसार प्राचीन काल से प्रचलित है।

प्रमाण

1 ऐ वीर्यवान पुरुष तू इस विधवा स्त्री से अथवा विधवा स्त्री को सुसन्तान कर। अच्छी प्रारब्ध वाली बना इससे दस सन्तान पैदा कर।

ऋग वेद सर्ग 5 मन्त्र 10

2 देवर उसको कहते हैं, जो विधवा स्त्री का दूसरा पति बनता है जो मृतक पति का छोटा या बड़ा भाई हो, या मृतक पति से ऊँचे वर्ण वाला हो।

अथं वेद अ० 3 सं 1.

3 ऐ विधवा स्त्री तू मृतक पति का ध्यान छोड़कर जीवित पति का हाथ ग्रहण कर, जो पुनरविवाह का अभिलाषा हो।

यजुर्वेद अ: 14-1-6

4 मृतिक पति की 6 पीढ़ियों में मृतक पति से छोटा या बड़ा भाई अथवा दूसरे ऊँचे वर्ण का कोई मनुष्य विधवा से नियोग करके सन्तान उत्पन्न करे।

मनुष्यस्मृति अध्या 9 श्लोक 54-58-59

5 स्त्री विधवा होने पर पुरुषों की भांति दूसरा विवाह कर सकती है।

ऋषि वैठयस्यापन का वचन

6 16 वर्षीय विधवा तो अवश्य ही दूसरा विवाह करे। उसको अधिकार भी है। ऋषि कश्यप का वचन

7 चारों वर्णों के स्त्री पुरुष अपने अपने वर्णों में विधवा विवाह करे। अन्यथा पाप बढ़ जायेगा। ऋषि जाबाली का वचन

8 श्रीरामचन्द्र जी ने कहा कि हे बाली सुग्रीव ने तो तुम्हें मारा गया समझ कर तुम्हारी स्त्री तारा से अपना विवाह कर लिया था और वह तुम्हारे मरने पर ऐसा कर सकता था। बाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग 18

9 राजा पाण्डव के रोगी होने पर उसको रानी कुन्ती और मादरी ने राजा पाण्डव के नाम पर नियोग से पांच पुत्र पैदा किए। महाभारत में लेख है कि दुर्योधन ने एक समय पर युधिष्ठिर को ताना दिया। कि तुम राजा पाण्डव के वीर्य से नहीं हो।

10 राजा धृतराष्ट्र, पाण्डव और विदुर तीनों नियोग से पैदा किए गए थे। वे वेदव्यास के वीर्य से थे।

एक कथा

11 जब राजा नल बहुत समय तक अज्ञात हो गए तो उसकी रानी के पिता ने स्वयंवर मण्डल रचाया। उससे विवाह करने के अभिलाषी ऋतुपर्ण जैसे अनेक राजा विधवा विवाह की इच्छा से स्वयम्वर में शामिल हुए।

महाभारत बनपर्व अ. 7 श्लों 23-24.

12. एक नाग राजा ने अपनी बिधवा राजकुमारी का पति [सुर्योध] नामी मर जाने पर राजा अर्जुन से विवाह किया था। महाभारत भीष्म पर्व अध्या. 91 श्लो. 78

13. राजा देवदास ने अपनी विधवा राजकुमारी का पुनविवाह किया पदम पुराण भूमि खण्ड अध्याय 8

14. राजा चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने कायर भाई रामगुप्त को मार कर उस की विधवा रानी ध्रुव देवी से विवाह किया। और उसकी जनता ने इस को अच्छा माना। वर्तमान् काल में भारत का इतिहास

15. सन् 120. में चित्तौड के राजा हम्मीरसिंह से जो प्रसिद्ध रानी पदमिनी और भीमसिंह का पुत्र था। राजा मालदेव ने अपनी विधवा लड़की का विवाह किया। राजा मालदेव राठौर वंशी को अलाऊदीन खिलजी ने चित्तौड़ की गद्दी पर बैठा रखा था। और हम्मीरसिंह खिलवाड़ नामी एक पहाड़ी स्थान में

चित्तौड़ की गद्दी प्राप्त करने की सोच रहा था। इसी विधवा रानी की सहायता और कार्य कुशलता से हम्मीर को चित्तौड़ की गद्दी प्राप्त की हुई। टाड राजस्थान उर्दू उफक लि० पृ 5120

16. कनपुरिया गोत्र के राजपूत विधवा ब्राह्मणी की सन्तान है। ठाकुर बहादुरसिंह पटावेदासर बीकानेर का ज्ञान सागर गुटका

रावण की बिध्वा राणी मन्दोदरी ने भभीषण और सुग्रीव ने बाली की बिध्वा राणी तारा से बिवाह किया तुलसीकृत रामायण बाल काण्ड चौपाई 4. 5. 6. 7

6 जाट शिव की जटा से उत्पन हुए इस कारण जाट प्रसिद्ध हुए जाटों में भी यह कहावत है कि जाटों के आठ पुराणे गोत्र बीर भद्रजी से चले जिसको शिव महाराज ने अपनी जटा से उत्पन किया था।

शिव पुराण की 25 बी अध्या तक एक कथा निम्नलिखत है कि कंखल के राजा दक्ष ने एक यज्ञ में अपनी पुत्री सती और जवाई शिव को नहीं बुलाया सतिजी बिन बुलाई ही चली गई तो उसका निरादर किया यज्ञ की दान बक्षिणा में उनका भाग नहीं निकाला तो सतिजी ने यज्ञ की अग्नी में कूद कर आत्म हत्या करली शिवजी इस अपमान का बदला लेने पर उतारु हुए उसने अपनी जटा में से एक लटा उखाड़कर पर्वत पर दे मारी जिसके दो टुकड़े होकर जड़की और के भाग से वीरभद्र पैदा हुए और ऊपर भाग से सैना उत्पन्न हो गई वीरभद्र जी ने आज्ञा मिलने पर राजा दक्ष पर चढाई की और उसका सर काट दिया।

सार अंश—बीर भद्र जी पुर वंशी राजा था जो पर्वत भोमी का राजा था और शिव महाराज भद्र वंशी थे कुछ पीढियों के अन्त्र से एक परिवार से थे शिव महाराज ने जो सतिजी की भृत्यु और अपमान से आतुर और क्रोध में थे राजा बीर भद्र के सनमुख अपनी जटा खसोट डाली और दक्ष को दन्ड देने के लिये त्यार कर लिये और उस देश की जन्ता को भी भड़काकर सैना में शामिल कर दिया गंगोत्री पर्वत शिव जी का तप स्थान था जो शिव की जटा कहलाता है इसी भेद को रखते हुए पुराण को ने गंगा को शिव की जटा से बहता दिखाया है ययाती जी की जन्म भूमी और जाटों की जन्म भूमि भी वही देश था जाटों में एक पुराणी कहावत चल आ रही है।

जाट जटा से नी कसो गंगाजी का भ्रात
यातें या को चाहिये हरी सुमरणं दिन रात

सब जाट शिव वंशी हैं या शिव के भाई चारों में ययाती जी के पांचों पुत्रों

की सन्तान है जाट गोत्रों की वंशा वलयां देखने से यही सिद्ध होता है कि बड़ी संख्या में जाट ययात-वंशी हैं।

जाट नाम ययात का ही बदल है

95 प्रति शत जाट गोत्र ययाती वंशी हैं इस विषय में इस पुस्तक में प्रयाप्त प्रमाणों से यह सिद्ध किया गया है कि ययाती वंशी 5 प्राक्रमी जत्थे पंजाब और मध्य एश्याई देशों में फैले और ययात से संबंध रखने वाले नामों से प्रसिद्ध रहे।

ययात शब्द का जाट शब्द में बदल जाना आम बात थी देश भाषा के उच्चारण में परिवर्तन होता रहा है प्राचीन में जिन शब्दों का उच्चारण याःसे होता था आधुनिक युग में जःसे होने लगा है।

प्राचीन शब्द	वर्तमान शब्द	प्रमाण
यश	जस	
यज्ञ	जज्ञ	या धातु से याट शब्द पदती-
यत्न	जत्न	याट शब्द सस्कृत या धातु से बनता है
योग	जोग	थाट का अर्थ यज्ञ करने वाला यज्ञ का रक्षा
योगी	जोगी	करने वाला सीधे मार्ग पर चलने वाला शत्रु
यौ	जौ	से बदला लेने वाला वार करने वाले पर
यमुन	जमना	प्रतिहार करने वाला: मतश्य पुराण
यूनी	जूनी	भोमी खंड मंत्र 18 के लेख अनुसार
योग्य	जोग्य	ययाती वंशी राजाउशीअ को 100 यज्ञ।
योबन	जोबन	करने पर याट कीं पट्टी प्राप्त हुई थी
यम	जम	उसकी सन्तान श्वितकश्क याट नामों से
युग्ती	जुग्तो	जानी गई इन गोत्रों की शाखा गोत्र
यटी	जटी	भी घनिष्ट है वे ययात होते
याट	जाट	हुए याट (जाट) प्रसिद्ध रहे
कुत्र यासी	कित जासो	

जट

जट संस्कृत की धातु है जिस का अर्थ जत्था है पापन्नी जी के व्याकर्ण अष्टा अध्याई में जट झट संघाते अर्थ है यानी जट का अर्थ संघ (जथ्था) है यानी जट जाति एक संघ है पंजाब में जाट को जट बोला जाता है बाकी सब देशों में जाट ही उच्चारण होता है पंजाबी भाषा का उच्चारण आ मात्रा को छोड़कर है। उदाहंण : जट हट खट छत हथ कम दंत अंत आदी

जाट दलमें गैर ग्याती वंशी परिवार भी कुछ ना कुछ शामिल हैं इसलिए जाट जाति को संघ मानना भी यथा योग्य है।

तृतीय अध्याय

७ जाट कथा सार संग्रह जाट संघ प्राचीन है

राजा याट यज्ञी पूर्वज शंवीतक शक बाछिक आदी जाट गोत्र की कथा विषणु पुराण अध्या 10 से 19 तक और वायु पुराण अध्या 10 में एक कथा है कि शशुबंध के प्रपौत्र राजा उशीन् ने 1०० यज्ञ किये उसका नाम याट यज्ञी प्रसिद्ध हुआ वायु पुराण में लेख है कि शिव महाराज उशीन् के तीसरे पुत्र थे जिनके नाम पर शवी जाट गौत्र चला शवी जाट उनको अपना पूर्वज मानते हैं। जाट नेता वीर भद्र पूर्वज पुरवंशी 7 गोत्र की कथा शिव पुराण अध्या 20 से 28 तक एक कथा है कि शिवजी की सत्री सती जी राजा दक्ष कंखल वाले को पुत्री थी राजा दक्ष शिव और सतीजी से रुष्ट थे इसी कारण उनको यज्ञ में नहीं बुलाया जब सती जी बिना बुलाई यज्ञी भी गई तो उसका सत्यकार नहीं किया गया और दान दक्षिणा का भाग भी नहीं दिया गया तो सतीजी अपमान सहन ना करके हवन की अग्नी में गिर कर भस्म हो गई शिव महाराज को इस घटना का बड़ा शोष और कलेश हुआ उसने क्रोधित होकर जटा खसोट डाली और एक लटा को प्रर्बत पर पटका तो जसके दो भाग होगए एक में से बीर भद्र पैदा हुआ दूसरे भाग में से गण अर्थात् सैना पैदा हुई उन्होंने राजा दक्ष के मृत्यु दन्ड दिया सीस उतारलिया।

भाव अर्थः राजा वीर भद्र पुरुवंशी उसी पूर्व देश का शाष्क था जो गंगोत्रो पर्वत कहलाता हुवा शिव की जटा स्थान भी प्रसिद्ध है शिवजी की पुकार से प्रभावित होकर उसने और उसकी जनता ने कनखल पर चढ़ाई करदी रानाधौल पुर की वंशावली में भद्र वंश का विशेष बृतान्त है जाट जाति के पुरुवंशी 7 मुलगोत्र जख भद्र पौन भद्र कल्हन भद्र ब्रह्म भद्र अती शुरभद्र दही भद्र और अन्जना जटा शंक्र वीर भद्र के पुत्र गोत्र है पुरुवंश की पृथ्मराज धाणी तलखापुर निकु हरिद्वार थी राजा हस्ती के सभ्य हसतनापुर और पाण्डु काल में इन्द्र प्रस्त रही।

प्राचीन मीढ जाट

एक कथा प्राचीन मीट जाट फ्रिको की बाकिआत 5000 साल मजमुल तवा रीख के हवाले से काल का रंजन कानूगो ने जाट इतिहास में लिखा है कि दुर्योधन के शासन काल में सिन्ध नदी के दोनों ओर के मीठ जाट फिरके परस्पर शत्रु थे। और

नावों से नदी को पार कर के मार काट और लूट मार करते थे। वे भयभीत, चौकन्ने और परशान रहते थे। एक बार बड़ी लूट मार और बरबादी के पश्चात् एक और के नेता ने दोनों ओर की सभा बुलाई। और समझाया कि यदि इस ईर्ष्या और विरोध को नहीं मिटाओगे तो दुखी रहोगे और बरबाद हो जाओगे। विचार विमर्श के पश्चात् यह समझौता हुआ कि दोनों ओर के मित्र मिल कर राजा दुर्योधन से विदेशी राजा की मांग करें। ताकि वह बलपूर्वक दोनों दलों को दबा कर शान्ती स्थापित करें और हमारा राजा बने। राजा दुर्योधन ने अपने बहनोई लंका के राजा जयद्रथ दुःशाला के पति को मीढों का देश सौंप दिया। राजा जयद्रथ ने सिन्ध पर शासन मिलने के पश्चात् महाराजा दुर्योधन को लिखा कि बहुत काल से देश में विद्रोह रहने के कारण जनता विद्याहीन और धर्महीन हो गई है तीस सहस्त्र वेद प्राकाण्ड पंडित भेजें। जिस से वे विद्या और धर्म का प्रचार करें। राजा दुर्योधन ने परिवार सहित पंडित भेज दिये। सिन्ध देश में राजा जयद्रथ की अनेक पीठियों ने वहाँ राज्य किया। और उसका वंश सिन्धु कहलाया। सिन्ध देश में मीढ जट अब तक भी बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। सब इस्लाम धर्मी हैं। सिन्धु वंश के अन्तिम राजा के एक बह्मण चज नामी ने उसकी दुराचारणी रानी से मिलकर मार दिया और स्वयं राजा बन गया परन्तु सिन्धु देश के सब जाट संघों ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को बड़ी कठिनाई से दबाया गया। जाट राज द्रोही घोषित कि गये। राज्य की सभी नौकरियों से हटारे गए और उन पर कड़ी पाबन्दी लगादी गई तथा अच्छे वस्त्र नहीं पहनेंगे, घोड़ों पर नंगी पीठ सवारी करेंगे। अच्छे शस्त्र नहीं रखेंगे। यदि कहीं काफिला लुट गया तो वह माल जाट जनता से प्राप्त किया जाएगा। जाटों को बहुत तंग कर दिया गया। राजा चज के बाद उसके उत्तराधिकारी राजा दाहार ने भी इन कठिनाइयों को चलते रखा जाटों के प्रारब्ध ने पल्टा खाया। बगदाद वालों ने जहाज सिन्ध के समुद्र में लूट लिए गये और बगदाद के हाकिम हिजाज ने अपने सेनापति खलीफा बिनकासिम को सिन्ध पर धावा करने के लिए भेजा। चज की सेना ने डट कर सामना किया घोर युद्ध हुआ सिन्ध देश की नदी के दोनों ओर के जाट खलीफा की सहायता पर लड़े। राजा दहार मारा गया और उसकी दो कुआरी कन्या सेनापति के हाथ आई जो लड़ाई में पकड़ी गई। खलीफा बिनकासिम ने चज के मंत्री से पूछा कि जाटों को इस सहायता का क्या परितोषिक देना चाहिये। उनको स्वतंत्रता देनी चाहिये अथवा नहीं। मंत्री ने उत्तर दिया ये लोग राजद्रोही हैं जाट के अतिरिक्त और किसी को चैन से राज्य नहीं करने देंगे। इनकी पाबन्दी ढीली नहीं करनी चाहिये। ये लोग सिन्ध नदी पार करके देवल के पहाड़ी जाटों से मिलकर लूट मार करते हैं। अतःएव स्वतन्त्र नहीं हुए।

2. सिन्धु जाट वंश के लोगों ने सिन्ध देश छोड़ना पड़ा। पंजाब के सिन्धु जाटों में कहावत है कि सिन्ध देश छूटने से ही सिन्धु नूबल हो गए। पंजाब में सिन्धु गोत्र की बड़ी खाप है।

3. राजा जयद्रथ लंका का राजा। दुःशाला का पति था।

बंगला बिसक्रोस

4. सिन्धु देश में, काठियाबाड़ गुजरात में जट नगर नाम का एक बड़ा खण्डहर है प्राचीन काल में जाटों की राजधानी रह चुका है।

जटित्का अर्थात जाट

महाभारत कर्ण पर्व में एक कथा है कि जब दोणाचार्य के मारा जाने पर कर्ण सेनापति नितुक्त हुआ तो उसने शियालकोट के मद्रक राजा शल्य को सार्थी चुना जो पाण्डवों का मामा था जब युद्ध क्षेत्र की ओर जा रहे थे तो मार्ग में कर्ण ने कहा कि बाणविद्या में पाण्डव दल में मेरे तुल्य कोई योद्धा नहीं। वे सब यह समझते भी हैं कि मेरी बाण वर्षा के सामने उनका डटा रहना कठिन ही है वे युद्धक्षेत्र से भाग निकलेंगे। राजा शल्य ने कहा कि लोग बाण विद्या में आपको अर्जुन के तुल्य नहीं मानते। और ठीक परीक्षा युद्धक्षेत्र में ही जायेगी। कर्ण ने अपना अपमान अनुभव करते हुए राजा शल्य के देश और जाति को ताना दिया ओह मद्रक शल्य आपकी जटित्का जाति के पांच नदियों के देश में बसने वाले लोग शूरवीरता की पर्ख को क्या समझें अड़ गान्धार दर्द चीमा तुशार मल्ह मद्रक संधु राष्ट्री केक्य लोग प्याज लहसन भी खाते हैं हमारे देश के एक ब्राह्मण ने पंजाब की एक जटित्का स्त्री को खड़े होकर मूतते भी देखा था इस कथा से पता चलता है कि पंजाबी जटित्का (जाट) कहलाते थे।

बाछिक नाग वंशी बाछकी जाट गोत्र की कथा

बाछिक नाग सांप नहीं जाट नेता था जो गवालों से झगड़ा हो जाने पर कृष्णजी के हाथ से मारा गया अथवा पीटा गया था।

24. मथुरा के देश में कालीदेह के गुहांड में बाछिक जाट बसते थे जो वर्तमान काल में भी हैं। बाछिक नाग नेता को कृष्ण जी ने वध किया था। कालीदेह बाछिकी गोत्री जाटों का ग्राम है 12 ग्राम बाछकी और हैं।

25. जटवा देश में जेठवाड़ अर्थात जाट कमेरी जाति बसती है। इसी कारण से वह देश जेटवाड़ जाट देश कहलाया। जाति भाषकर हिन्दी भाषा

26. कृष्ण जी के एक पुत्र का नाम सौराष्टर था उसका वंश राष्ट्र कहलाया राठी गोत्र भी राष्ट्री ही है।

27. चित्तौड़ का असली नाम जटौड़ था जो जटराना जाट राज्य की राजधानी थी चित्तौड़ पर गहलोत वंश का अधिकार हो जाने के बाद जटराना वंश के जाटों ने वर्तमान काल के जिले अलीगढ़ में छर्रौली नगर बसाकर राजधानी नियत किया। उनके लोग ग्वालियर देश में चले गए। लेख अनुसार अलब्रोनी अर्बी

28. जटराना वंशी जाटों को जटरौली से नूवाल जाटों ने निकाल दिया। और नूहवालो के राजा रतीराम को राजद्रोह के अपराध में इबराहीम लोदी ने निकाल दिया। टाड मिस्टर W कुर्क

29. गोरिया जाट वश का मेवाड़, अजमेर राज्य रहा। बूँदी सरोही उनकी राजधानी थी। उनका चारण लिखता है कि उनको चौहानों ने निकाल दिया।

30. शिलालेख उदयपुर राज्य की साघड़ी नामी ग्राम से मिला था कि क्षत्री-जाति में प्रसिद्ध गुप्त राजा धीपान, सौमराज, वर्धन के तुत्र गोरनरेश ने सम्वत विक्रमी थी 546 माघ शुदी में बनवाया। टाड

31. मेवाड़ देश पर सिसाग जाटों का राज्य रहा। उन्होंने मारवाड़ पर धावा किया और अपने राज्य में मिला लिया उनके पहलू नामी राजा ने पहलूकोट बनवाया। सिहाग राना कहलाते थे। सिहाग वंश के एक वंश की राजधानी बीकानेर राज्य में थी जिसको राठौरों ने पराज्य किया। टाड

32. चीनीयात्री ह्वेनसांग लिखता है कि जाट राजा यशोधर्मन को विष्णु धर्मीयों ने निकाल दिया था जब वह काश्मीर के राजा की सहायता से वापि सबहाल हुआ।

33. राजा यशोधर्मन विक्रमी स० 540 में काश्मीर पहुंचा। वहाँ के राजा की सहायता प्राप्त करके फिर मालवा की गद्दी प्राप्त की। राजा यशोधर्मन बिरक गोत्र का जाट था। सी. बी. वैद्य मेडिवल इण्डिया

34. मालवा से जाट राज्य समाप्त हो जाने के पश्चात वहाँ और कोई बड़ा राज्य स्थापित नहीं हो सका। छोटी-छोटी राजधानियों में बँट गया। सी .बी. वैद्य

35. हूंणों को जाटों ने विजय किया था। टाड वा: 5

36. राजा यशोधर्मन को कहीं-कहीं विष्णु (विश्नवर्धन) भी लिखा है उसकी बनवाई हुई लाट बयाना में है। इस लाट पर यशोधर्मन को किक्र जाट लिखा है।

37. सम्वत् 424 में राजा यशोधर्मन ने बयाना में लाठ बनवाई। ब्रजभास्कर

38. मालवा देश के मन्दसौर स्थान से एक शिलालेख मिला था उसमें राजा यशोधर्मन के राज्य की सीमा और हूणों की विजय का हाल लिखा था। उसकी राजधानी स्यालकोट अर्थात् साकिल नगरी भी थी।

89. 1420 ई० में कोटा राज्य के कनू नामी ग्राम से एक शिलालेख मिला उसमें जाट जाति के पूर्वज शिवजी की जटा की महिमा की है लिखा है कि जाट राजा की ईश्वर रक्षा करे।

40. इसी शिलालेख पर लिखा है कि महाबलशाली राजा जाट सिलन्दर रूपवान पुरुष थे। वे अपने बाहुबल से शूरवीर योद्धाओं के अग्रणी बने। जिस प्रकार चन्द्रमा पृथ्वी पर प्रकाश करता है उसने स्यालपुर राजधानी को दीप्यमान किया। सम्पूर्ण जगत जाट राजा की जय घोषणा करता है। उनका पुत्र दोगल हुआ। उसने यदु वंश की कन्या से विवाह किया। एक से वीर इन्द्र नामी राजकुमार हुआ। ये न्द्र सम्वत विक्रमी 597 में तावीली नदी के तट पर मालवा राज्य की सीमा प्रान्त पर वीरचन्द्र के पुत्र स्यालचन्द्र द्वारा स्थापित हुआ।

41. चित्तौड़ या जटौड़ में प्राचीन समय में तक्षक वंशी मोरी जाति की राजधानी थी। जिस पर गहलोत वंश ने अधिकार किया। अन्त में जाट राजा मानेन्द्र ने गोहा वंशी बापा को धर्मपुत्र मानकर यदुराज बनाया था। टाड उरद 255

42. जब बीका राठौर ने बीकानेर राज्य स्थापित किया। इस देश में जाटों की छः छोटी-छोटी राजधानियाँ थीं। गोदारा, जोहिया, पोनिया, बहनीवाल, सीहाग। उनकी पारस्परिक फूट के कारण सारी शक्ति बीका के हाथ आई। टाड विलियम 7 1123 1130 941

43. पंवार, मोरिया जाति की शाखा हैं, ऐसा भी एक प्रमाण है।

44. गुप्त वंश के इतिहास के खोजियों ने कार्सकर अर्थात् कूकर वंशी सिद्ध किया है। इस वंश में काकड़, बिलोच खोखर, काक, काकराइन जाट गोत्र इसी नाम से सम्बन्ध रखते हैं। डा० जैसवार

45. प्राचीन काल में उत्तर पश्चिमी पंजाब तूसारस्तान कहलाता था। उनके सेनापति की पदवी लल थी। बुराड़, गठवाला आदि लल गोत्र से हैं।

46. जब सुलतान महमूद गजनवी सोमनाथ मन्दिर की लूट का धन ऊंटों पर ले जा रहा था तो मुलतान के जाटों ने धावा बोलकर धन छीन लिया और महमूद की सेना को भगा दिया। महमूद के दिल पर बड़ा धक्का लगा। उसने दो वर्ष पूर्ण तैयारी करके मुलतान के जाट देश पर धावा किया। लड़ाई नदियों के पानी में हुई। असंख्य जाठ मारे गए और बेघर, बरबाद होकर देश छोड़ गए।

टाड 1226

47. तैमूर ने भटनेर के निकट हजारों जाटों को वध किया जब जाटों ने उससे युद्ध किया। टाड वालियम 7, 1165 वा मलफुजात तेमुरी

48. सिकन्दर की सेना का मलक, मदरक, कठ योद्धा मलहय, जटरोटी

बिजैरणाया आदि जाट गण राजाओं की सेनाओं से युद्ध हुआ। अर्थात् वर्तमान काल में वे सब जाट गोत्र हैं। एरियन

49. बिजैरणीयां जाटों का राज्य 1300 वर्ष रहा। लुधियाना का कोट बनवाया और बिजैरणीया नगर बसाया। एक राज्य को अलतमस, और नादिरशाह ने समाप्त किया।

50. मिस्टर स्मिथ के लेख के अनुसार भटिन्डा का राजा जयपाल भट्टी जाट बंसी था।

51. ईराक देश के शासक अमीर महोया ने 20000 जाटों को भारतवर्ष से लाकर ईराक में बसाया और भिन्डी, तौरी हिन्दुआना सब्जियों के नाम उनके ले जाए हुए अब तक बोले जाते हैं। सुलेमान नदवी

52. युधिष्ट्री सम्वत् 3008 की घटना लिखी है कि जब उनके बड़े (पूर्वज) गजनी से निकाले गए और भारतवर्ष में आए तो सिन्ध नदी के पार तक्षक जाति से युद्ध हुआ। गजनी जाबलस्तान काबुल देश में है हिस्ट्री आफ दि टाड वलियम 7. 1179 पृष्ठ में लिखा है लि जब साका लोगों ने भारतवर्ष पर धावा किया तो उस समय 200 के लगभग जाट राजधानियां थीं जिनमें उनके अपने सिक्के (मुद्रा) चलते थे एक सम्य पूरे भारतवर्ष पर श्वी नाग जाटों का शासन था मथुरा उनकी राजधानी थी मिसट्र महाजन का अनीसन्ट इन्ड्रिया में लेख है कि नैपाल में वर्तमान राजवंश से पूर्व ठुकरीला जाट का राज्य था उनकी राजधानी भातग्राम थी काशी के राजा हरीसिंह ते दिल्ली के मुसलमान राजा के दबाव से भागकर ठुकरीला राजा की शरण ली और धोके से राजा पर भी अधिकार जमा लिया नैपाल के इतिहास में भी यही लेख है। 'हिस्ट्री आफ दि टाड' में लेख है कि दहिया जोहिया योधया), काटी (कठ) आदि जाट संघ पांच नदियों के देश के शासक थे मूल स्थान (मुलतान) उनकी बड़ी राजधानी थी, प्राचीन भारत की भूगोल पुस्तक में सुखदियालसिंह शौक का लेख है कि प्राचीन काल में दहिया हेर बुल्लर सास्कार अर्वाज (जाटगोत्र) ईरान में भी बसते थे ईरान देश के बुशहर देश भाग में वर्तमान काल में भी हरयाणे की जाटनियों जैसा उनकी स्त्रियों के वस्त्र घाघरी ओढ़ना और पैरों के आभूषण हैं। 1919 ईसवी में मेरी रेजीमेंट 15 लां० सर के जाट जवान उन स्त्रियों के पहनावे पर चकित हो गए थे कि यहाँ हमारी स्त्रियां कहाँ आ गई हैं। जिला गुजरात में चिनाव नदी के साथ का देश जटात और हिरात भी कहाता है इसलिए कि कभी वे लोग अफगानिस्तान के हिरात देश में भी रहे थे, इस देश को भी हिरात कहने लगे। तेमूरनामे और हिस्ट्री टाड 1165 उर्दू में लेख है कि 600 ईसा पूर्व में इस देश के जाट राज्य में

निर्बलता आ गई थी तैमूर के समय में फिर उन्नति हुई। सन् 1330 में तैमूर के राज्य में चुगताइया (सकदाईया साकादीप) ताशकन्द (तकश खंड उत्तरार (उत्तर कोक) साट्रोपोल्स अल्खजेण्डरया शामिल थे इस समय तकशक जाति का देश चुगताइया (शक टाई या ही था तैमूर से पहले इस देश का शासक अमीर कोकलतास जाट था जो तकशक वंशी था टाड वालइम 7 पृष्ठ 1165 से 1183 अनुसार इसके राज्य काल में मूर्ती पूजा का भी रिवाज था उसने खुरा सान की विजय कर लेने के पश्चात ट्रनेर ओक्षयाना पर चढ़ाई की वहां का राजा भाग निकला परन्तु उसके भतीजे अमीर तेमुर ने क्षमा मांग कर अपने चचा को कैदी होने से बचालिया उस सम्य राजा कोकल ताश की सैना में एक लाख शूरबीर जाट थे और जनता का हृदय हाथ में था जब 1368 इसवी में कोकल ताश का देहान्त हो गया तो अमीर तैमुर ने गद्दी पर अधिकार प्राप्त कर लिया जो चुगताई या का हाकिम था और एक जाट राजकुमारी से विवाह कर लिया परन्तु जाट जनता ने तैमुर को राजा स्वीकार नहीं किया विद्रोह कर दिया वे गद्दी पर जाट राजा बिठाना चाहते थे युद्ध आरम्भ होगया तैमूर ने बहुत रक्त पात के पश्चात जाटों को हरा दिया तैमूर बहुत चालाक शूरबीर और योग्य हाकिम था परन्तु जाट भी युद्ध करने से नहीं हटे जब तक उनको नष्ट ना कर दिया गया अत समस्त जाट जाति को समाप्त कर दिया गया अथवा देश से भगा दिया गया तेमूर नामे में तैमर लिखता है कि उसने लाखों जाटों को कत्ल किया मैं जाटों को नष्ट करना नहीं चाहता था मेरी अभिलाषा यह थी कि में जाट शूरबीर जाति पर राज्य करू जाट संख्या में कीड़ीयों के दल और देखने में देवो के सदृश्य हैं।

अफगानिस्तानी (उप गुप्त स्थान) बिलोचिस्तान (बल उच्च स्थान) सदासे भारत वर्ष के देश भाग रहते आए कोइटा पेशावर (पुष्पपुर) माला कंद (मल्ह खंड) ग़ज़नी (गजनी) कंधार (गान्धार) सीस्तान (श्वी स्थान) समरकन्द (सुमेरु खन्ड) आदी नामों से भी यह जाना जाता है ये सब संस्कृत भाषा के नाम हैं उम्र बिन मुसाने इलाका अफगानिस्तान हिरात नदी देश के युद्ध में 3000 जाटों को कैदी बनाया था और उनके देश पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने हजारा वाले मार्ग पर लकड़ गाड़े हुए थे सैना की तरतीब बदलने सुचेत करने के लिये तुरई बजाते थे उनके एक नेता के बार बार समझाने पर भी वे धावे करने से रुके नहीं बिलोचिस्तान का मकरान सुबा खालिस जाटों का था सासानी बादशाह सापुर द्वितीय ने समुद्र गुप्त से मित्रता हो जाने पर मकरान सुबा और सन्ध देश जाट राजा को दे दिये थे उन दिनों गौर देश की सेना में बड़ी संख्या जाट सैनिकों की थी एक जनगिन्ना में मकराने

सुबे में 20000 संख्या जाट वंशी बिलोचों की पाईगई थी बिलोचिस्तान में एक बड़ा संघ काकड़ जई बिलोचों का है जिसका सम्बन्ध कक्कर और खोखर जाट गोत्रों से है।

युनान अरब इटली इराक आदी देशों में जाट वंशी कबीले पाए जाते हैं यह पता नहीं चलता कि वे राज्य प्रसार के लिये वहां गए या वहां की सैना में भर्ती जा हुए या भारत वर्ष से खदेड़े हुए उन देशों में जा बसे जो कुछ लेखों से एता चलता है निम्नलिखित हैं : संसार की कहानी नामी पुस्तक में शौचन्द कपूरका लेख है कि युनान का हेलन फ्रिक्रा भारती एशयाई है उसमें भरती नाम पाऐ जाते थे उस फ्रिके के पूर्वज 2000 इसा पर्व युनान में पहुँचे थे उन्होंने अपनी नई आबादी का नाम हेलास रखावे आर्याथे उनके साथ उनके प्रोहत और भाठ भी थे 80 इसा पूव्व इरानयों ने युनान को बिजय किया उस सभ्य सर्पाटा का राजा लियोनी दास था युनानी भारती आर्यो की भांती सूर्य चांद को देवता मान कर पूजा करते थे शेरया के निकट का इजप्ट देश जाट नाम से इजप्ट कहाया युनान देश का हरकुलिस सुवम को अट्वंश सिद्ध करता है यानी आत्रे वंशी येह हरी डोटसकालेख है युनानी कई कबीले कृष्ण जी के भाई बलराम को अपना पूर्वज मानते हैं वहां भी बलराम जी की मूर्ती के हाथों मेहल हैं जैसा भारत वर्ष में है युनान देश यवन के नाम पर है इसनाम से प्रसिद्ध हुआ यवन ह्रदुवंश की सत जीत शाखा में हुआ यदुवंशावली में उसका नाम यवन है अहीर भी इसी शाखा के लोग हैं 500 इसा पूर्व इटली के घरेलु युद्ध में जाटों ने बड़ा भाग लिया था जब होनद्र फ्रिरके ने इटली पर धावा किया तो नेसटर के मैदान में जाटों ने उनकी सैना के घर्रे उड़ा दिए थे जाटों की शूरवीरता के परीतोषक में इटली के राजा ने जाटों को डनयुब नदी के देश पर कब्जा करने की स्वीकृती देदी जो बलकायन देश बोला जाता था परन्तु 4 वर्ष पश्चात इटली के राजा से जाटों का झगड़ा हो गया जिसका नाम थिपो डोंस था इस युद्ध में भी जाटों को बिजय प्राप्त हुई और नकरेश और एशिया भायनर का देश दबालिया राजा थियो डोरस ने जाट लीडर से अपनी कन्या का बिवाह कर दिया : मित्रता होने पर जाटों ने इटली का कब्जाया हुवा देश खाली कर दिया और इटली से आगे बढकर सपेन पुर्तगाल के मध्य देश पर अधिकार करके वहां बस गऐ वहां 4 साल ठहरने के बाद 490 इसवी में फिर बड़ा युद्ध हुवा समस्त इटली पर जाटों का राज्य हो गया फिर 65 वर्ष पश्चात 553 इसवी तक राज रहा : जाट राज्य काल में इटली ने बड़ी उन्नती की परन्तु शूरबीर जाट नेता टोल्या केमर जाने पर लीडरी में निबलता आ गई जाट वहां से निकाल दिये गए और सपेन पुर्तगाल में से अबों ने उनको निकाला उनकी बुरी गति बना कर बखेर दिये गए।

मिश्र देश में संकंन्द्रया जाटों का नग्र था इस राजधानी पर श्वीतकशक जाट राज्य करते थे इन जाटों की पद्दी असई नाम की थी सिकंडे नेवया में इन की राज धानी का नाम असगढ़ था और हरयारण की हांसी राजधानी का नाम आसगढ़ था ।

अरब देश में अबासियों के शाषन काल में सिन्धु देश से जाटों को लाकर अरब में बसाया था सुलेमान नदवी तारीख तिब्री में लिखता है कि वह युद्ध में फौलाद के सिद्ध हुए थे जब हर्जत मोहोमद की बीवी आयशा रोगणी हुई तो उनके भतीजे ने एक जाट वैद को बुलाया था : खलीफा उमर ने अरब राज्य की सीमा की रक्षा हितार्थ जाटों को सीमा के साथ वसाया था खलीफा अलीने वगदाद के खजाने की रक्षा पर जाट लगाए थे खलीफा बलीदने इटली वालों से देश को बचाने के लिये जाट सैनिक लीडरों को ऊंचे पद दिये और जाट दल को सीमा पर बसाया ।

यूरुप के इतिहास यह सिद्ध करते हैं कि उनके पूर्वज सिथयन जट कबीलों के लोग थे जो एशिया से आए थे इरानी या तुर्कितास्नी थे हरी डोटस के लेख अनुसार भी यही माना गया है कि वे सब भीढ़ तकश्क श्वी थे सट्रेबु का भी यही मत है ऐगलो सकशन जो शेष नाग बंशी हैं जिन उनके नेताओं ने सिकन्डे नेवया बसाया था उनके लीडर हिंगन और होरसा नाम के थे हंगा गोत्र बर्तमान में अलीगढ़ जिले के जाटों का भी है पुराणों की कथा अनुसार सिकन्डे नेविया (सिकन्धनाम) का बसाने का 600 इसा पूर्व काल था ।

दुनियां की कहाणी नाम की पुस्तक में जो कालेजों के कोंस में शामिल है एक कथा है कि प्राचीन काल में ब्रतानियां पर रोमा इटली का अधिकार था जब उत्री सकाट लोगों ने इंग्लेन्ड पर धावे आरम्भ किए तो उन्होंने रोमा के बादशा हसे सहायता मांगी लेकिन रोमा सहायता देने की हालत में नहीं था गोल मोल सा उत्र मिला तब उन्होंने जर्मनी से यटी (जुट) जाति को बुलाया उनमें, एंलग्ल और सक शन जाट जातियां भी थी उन्होंने सकाट लोगों को तो खदेड़ दिया उनके धावे रोक दिये परन्तु वे उनके अपने जरम्नी सुखे देश को वापिस ना लौटा कर इंग्लेन्ड में ही बस गए श्री श्यौवन्द कपुर के लेख अनुसार वे तीनों जातियां मिलजुल कर एक हो गई ब्रतानिया पर रोमन लोगों का राज्य 25 इसा पूर्व से 400 इस्वी तक रहा इटली खतरे में पड़ने से रोम न सैना ब्रतानिया को खाली करके चली गई थी यही समय वहां जाट कबीलों के बसने का है यह लेख श्री अत्रचन्द कपूर का हे : जुट (यटी) लोगों की राजधानी कन्टन बर्ग रही ।

जिन जर्मन जातियों ने इटली को तहस नहस किया उनमें टियुटन नाम की आर्या जाति मुख्य थी रोमन राज्य पर उनकी नजर थी वे अवसर की बाट में थे 360 ई० पूर्व इटली पर धावा किया वह गाल (गिल्ल) फ्रिके के लोग थे दूसरी बार

325 ई० पूर्व धावा किया परन्तु रोमा के प्रसिद्ध राजा ज्युलिस सीजर ने उन को लिताड़ दिया आखिर राज्य सैना शक्ति हीन हो जाने पर इटली में बस जाने की छुटी कर देनी पड़ी वहां भी वे शान्त नहीं हुए मकदुनिया ग्रीस बलकायन राजों को विजय कर लिया इटली के नए नेता एलरियन ने उन गाथों को डन्युब नदी पार धकेल दिया जब इटली राज्य निर्बल हो गया तो जाट भी दो भागों में बंट गए पछमी और पूर्बी नामों के साथ पाचवी इसवी में एलरसू नामी नेता की आधिनता में पछमी गाथो (जाटो) ने इटली पर धावा बोल दिया 476 इसवी में इटली का राजा गद्दी खाली करके भाग गया और गाथो का राज्य हो गया सपेन देश पर पछमी गाथों का 410 ई० में और उत्री अफ्रीका में बानडाल जटी दल का 438 इसवी में लोमरीढ जाटों का और उत्री फ्रान्स में फिरंक गाथों का : 481 से 511 तक रोम की घाटी अर्थात् दक्षत्री फ्रान्स में बरगडियो का इंग्लेन्ड पर इंगल सकशन गाथो का जिनको वहां जुट जटी बोला जाता था 455 इसवी में वहां उनके तीन राज्य प्रसिद्ध थे एक राजा का नाम किलो विस था उसने 8000 सैना सहित ईसाई धर्म में प्रवेश कर लिया और फ्रान्स की जनता ने उसकी जटी भाषा को स्वीकार कर लिया फ्रान्सी भाषा हिन्दी से कुछ मिलती हुई है यानी मेहरवानी (मेरसी) बहुत (बोकु) आदी शब्द : भारती सैनिक सन् 14 से 19 तक पहां रह कर वहां की भाषा जल्दी सीख गऐ थे इतिहासों में गाथ गट गेटक जाट की बदल है युनानयीने जाट शब्द को 'ज' के स्थान पर G लगा कर लिखा है उनकी जिव्हा का उच्चारण भी दूसरा है।

चतुर्थ अध्याय

प्राचीन कथाएँ और ख्यात वंश

आर्य दलों ने कागज लेखनी को व्योहार में नाम मात्र ही लेने के प्राचीन काल में उनके पूर्वजों के साथ घटी घटनाओं और कठिन भाषा में वेद मन्त्रों को भी घोष घोट कर पीढ़ी दर पीढ़ियों याद रखा तिथि याद नहीं रही कहानी याद रखते रहे। भारतवर्ष में आर्यों के प्रवेश से पूर्व मध्य एशिया आदि किसी देश में उनके साथ डुबा की घटना घटी थी।

तोफाने नुह तथा मनु की जल प्रलय

अग्नी पुराण जल प्रलय भाग में कथा है कि ब्रह्माजी के नाराज होने से समुद्र में बाढ़ आया और जल प्रलय की घटना घटी जब सूर्य का पुत्र राजा कृत्य-माला (मनु) जल में स्नान करता हुआ सूर्य को जल अर्पण कर रहा था तो जल का बढ़ाव प्रतीत हुआ और एक छोटी सी मछली हाथ में आ गई साथ ही आकाश वाणी हुई कि इस मछली को सम्भाल कर रखिए राजा मनु ने शीघ्रता से अपने परिवार और पालतू पशु पक्षियों को नाव में बिठाया इतने में जल अथाह हो गया। नाव बह जाने से इसलिए सुरक्षित रही कि बड़ी मछली के हाड के खूंटे (सींगों) से बँधी हुई थी जो जीव-जन्तु नाव से बाहर थे सब डूब गए प्रलय समाप्त होने के पश्चात राजा मनु का परिवार सुमेरू पर्वत हिमालय पर जा बसा और वहीं से उस वंश का प्रसार हुआ यानी मनु के 9 बेटों का कबीला सरयू नदी के किनारे अयुध्या में आ बसा कोई कथा यह नहीं बतलाती कि इनका समकालीन बुध्द का परिवार उस बाढ़ से कैसे बच निकला और हरिद्वार देश में आ बसा।

तोफाने नुह

तौरीत, अंजील आदि धार्मिक पुस्तकों में कथा है कि झील नुह जो खतन काश्गर में है हजरत नुह को एक वही (आकाशवाणी) नाजिल हुई कि बन्दों पर खुदा का कहर नाजिल होने वाला है इस झील में तोफान (बाढ़) आने वाला है कि तबाही होगी अगर तू अपने परिवार को सुरक्षित रखना चाहता है तो पालतुओ जन्तुओं सहित नाव में रख इतने में तोफान आया जो जन्तु नाव से बाहर थे सब डूब गए इस तोफान की समाप्ति पर हजरत नुह का परिवार सीना नाम के पर्वत पर जाकर बसा और हजरत नुह की सन्तान का प्रसार वहीं से सब देशों में हुआ। इस कथा से

यह सिद्ध होता है कि मनु तथा नुह एक ही नेता के नाम हैं नुह तथा मनु के परिवार से भिन्न जो किसी न किसी भाँति बचे रहे अपना-अपना अलग मार्ग पकड़कर आपस में कटे रहे।

दो कबीलों आर्यों का भारतवर्ष में प्रवेश

विष्णु पुराण शिवपुराण अद्भुत पुराण की कथाओं से यही पता चलता है कि भारतवर्ष में आरम्भ में बसने वाले आर्यों के दो कबीले एक ही समय में आये और भिन्न-भिन्न स्थानों में बस गये बुधवंशी परिवार हरिद्वार देश में और इक्षवाकु परिवार सरयू नदी देश में उनको सूर्य चन्द्र वंश नाम भी दिये जाते रहे हैं। उनको समकालीन साथी मानने का बड़ा प्रमाण यह है कि अनेक कथाओं में बुध को इक्षवाकु का बहनोई लिखा है भारतीय आर्यों के पूर्वज वेदों का ज्ञान साथ लाये थे। वेदों की लिखत में उनके आने की कोई तिथि नहीं मिलती अनुमान ही किया जाता है।

वेदकाल कब बीता

भारतवर्षी हिन्दुओं का ये निश्चय है कि वेद ज्ञान सृष्टि रची जाने के आरम्भ काल में चार ऋषियों के हृदय में ईश्वर की ओर से प्रेरित हुआ। और वेदों का ज्ञान ईश्वरी ज्ञान है किन्तु इस लेख का उदेश भारतीय आर्यों के आने और वेद लिखत में आने का समय जानना है। वर्तमान काल के इतिहासों के बेता वेदों के इतने पुराणे कालीन होने को स्वीकार नहीं करते। उनका विचार है कि चारों वेद अलग अलग समय में एक के बाद एक लिखे गये उनमें सबसे पुराणा ऋगवेद है सर्वसमिति यह भी है कि वेदों जैसा सतयुग कभी नहीं बीता किन्तु मनुष्य उतपत्ती के आरम्भ काल में निरा जंगली था वेदों से पता चलता है कि वेदक काल के भारतीय आर्य सभ्य थे उनके शस्त्र-वस्त्र रस्म-रिवाज ऊँची कोटि के थे वेद काल के लिये खोजियों की भिन्न-भिन्न समतियाँ और उन्मान हैं।

यूरोपियन खोजियों की सर्व समिति में ऋगवेद काल 1600 वर्ष ईसा पूर्व हाग साहब 2000 ई० पूर्व लोक मान्य तिलक 4500 ई० पूर्व वैद्य जी 3100 ई० पूर्व पावगी 4000 ई० पूर्व अविनाश चन्द 25000 ई० पूर्व। अस्तु ऋगवेद 10-136-5 तथा 10-87-2 में जिन चार समुद्रों का वर्णन है जो लोप हो चुके हैं उनके स्थान पर अभी पृथ्वी के देश हैं उनके पुराने पन पर विचार करने से भुर्गभ वेतावो के मत से उन समुद्रों के लोप हुये 25000 वर्ष और अधिकाधिक 75000 वर्ष बीते होंगे। खोजियों की ये समति भी है कि ऋगवेद जब लेखबध्य हुआ तो उस समय आर्य गंगा नदी तक पहुँचे थे ऋगवेद में अफगानिस्तान की काबुल नदी सवात नदी

और गंगा यमुना के नाम तो हैं विंधयाचल पर्वत और नर्वदा नदी का नाम नहीं चावल और संघ का भी वृत्तान्त नहीं जो दक्षिण भारत की उपज है सूर्य वन्श और य्याती जी के 5 जथों के भी लेख हैं।

11 रामायण और महाभारत काल का अंतर

पौराणिक कथायें रामायण का समें त्रेता युग जिसको 8 लाख साल बीत चुके हैं और महाभारत के युद्ध का समे केवल 5000 साल गुजरा जाहिर करते हैं अस्तु प्रमाण इन दोनों के समय का अन्तर थोड़ी शताब्दियों का ही सिद्ध करते हैं दत्त आर सी जाकोवी और मेक डोनल तीन्यों की सम्मर्ता यह है कि रामायण को बालमीकी ऋषि ने गीत रूप में रचा नामालूम समय में परन्तु 300 ईसा पूर्व लिखित में आई और महाभारत को छोटे रूप में व्यास जी ने रचा यह 400 साल इसापूर्व से 400 ईस्वी तक लिखतम में आता रहा रामायण का युद्ध आर्यो अनार्यो में और महाभारत का घरेलू युद्ध था और इन दोनों घटनाओं के समय का अन्तर लाखों हजारों वर्षों का नहीं सिद्ध होता कुछ शताब्दीयों का ही है विष्णु पुराण और हिष्ट्री टाड में रामायण और महाभारत क नेताओं की बसावलियां एक साथ इक्षावाकु और बुध साला बहनोईयों से आरम्भ होती है और पीढी दर पीढी साथ साथ चलती रही है और इन दोनों वंशों के राजाओं की कथाएँ भी साथ साथ लगभग समय में चलती आई है फिर लाखों वर्षों का अन्तर रामायण और महाभारत के समय का कैसे मान लिया जाए।

रामायण आण्य कांड में लेख है कि रामचन्द्र जी बनोबास काल में ऋषी भाद्वाज के आश्रम में ठहरे थे ऋषि भाद्वाज राजा युशन्त का पोता राजा भरत का पुत्र य्याती वंशी युधिष्टर से 20 पीढी पहले हुवा और तप करता हुवा पुत्रों सहित राज त्यागकर ऋषी की पदवी प्राप्त की थी रामचन्द्र जी और युधिष्टर काल में बीस पीढी का अन्तर था जो 400 या 500 वर्षों से अधिक सिद्ध नहीं हो सकता है रामचद्रवंश के पूर्वज इक्षवाकु आदी 9 भाई अहल्या नाम की बहन थी जो मध्य एशिया से आकर सर्यु नदी के किनारे अयोध्या में बसे इनके पिता का नाम मनु लिखा है वंशावली निमन्न है :—

1 इक्षवाकु	2 वकाशी	3 प्रभानज
4 अप्रहन्द	5 दगन्धी	6 रोदरा
7 यवन	8 सरवास	9 दरेदसु
10 धनंदमार	11 दरदसु	12 हरयासु
13 सन्कुशप	14 वर्णसु	15 सेनजीत

17 पौनलो	18 मानधाता	19 प्रेचुसु
20 अरुना	21 त्रिधनुपः	22 अत्रोना
23 सेदावर्ण	24 त्रसोनख	25 हरिश्चन्द्र
26 रोहत	27 हर्त	28 जमीया
29 विजय	30 बरोंक	31 वर्कश
32 बहिक	33 सगर	34 केस
35 रसभजस	36 उनसमान	37 दलीप
38 भागीर्थ	39 सरनसैन	40 बगा
41 अम्बीष	42 अलुपीरन	43 नल
44 नरोह	45 सोतर्श	46 असन्तोक
47 बिलोक	48 सत्यवंत	49 एदवीर
50 वसवासा	51 खरभग	52 विर्षबाहु
53 दलीप	54 रघु	55 रज
56 दशरथ	57 रामचन्द्रजी	58 लौःकुश

सूर्य वंशी राजा इक्षवाकु और चन्द्र वंशी राजा समकालीन साथी और मित्र थे उदभुत पुराण में लिखा है कि इक्षवाकू की बहन अहल्या ने राजा बुध से बिवाह किया था जब अहल्या हिमालय तलहटी में चंद्रबंसयों के पास भरमण के लिए गई हुई थी शव पुराण बष्णु पुराणों में भी कुछ वृतान्त है राजा भागीर्थ दलीप का बेटा उन्समान का पोता इक्षवाकु की3 7 वी पोढी में हुवा जिसका बृतान्त गंगा नदी की कथा से है और गंगा को पीजाने या रोक देने वाला राजा भन्नु बुध की 36 वी पीढी में था जैसा कि दोनों वंशों की वंशावलीपों की पीढियां साथ साथ चली है राजा कोस का पोता गाध का पुत्र ऋषी बिश्वा मित्र बुध की 30 वी पीढी में था रामायण में इसका जिक्र कि बनोबास काल में रामचन्द्रजी ऋषी भाद्वाज के आश्रम में ठहरे जो बुध की 23 वी पीढी में हुए।

महाभारत काल

सर्व इतिहास के लेखक इस बात में एक मत हैं कि महाभारत के युद्ध की घटना का समय 5000 साल पूराणा है कुरुपाण्डु वंश चन्द्रवंशी ययाती जी की पुरु शखा में से था पुरुवंश की पृथम राजधाणी हरीद्वार के निकट देश में थी पुरुवंशी राजा हस्तीने गंगानदी के किनारे के साथ और निचे को बढकर हस्तना पुर नगर बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया था इनदिनों ययाती जी के पांच पुत्रों की सन्तान के दल सिन्ध पन्जाब और विदेशों तक फैल चुके थे महाभारत की कथावों से पता

चलता है कि वे सिन्ध अफगानिस्तान और पन्जाब के शाष्क और मालिक थे उन दलों के नाम जो व्रत्मान काल में जाट गोत्र है मीढ गान्धार दार्द चीमा तुषार सन्धु केक्य मल्हमद्रक आदी थे महाभारत की कथावों में बोहोत से ऐसे राज्य दलों का वृतान्त भी है जो परम्परा से लेकर व्रत्मान काल तक जाट गोत्र चले आ रहे हैं और वे गोत्र सिवाय जाट जाति के किसी दूसरी जाति में नहीं पाए जाते भारतवर्ष में जितने प्राचीन काल से वे गोत्र है जाट जाति उतनी ही पुराणी भारती है जाटों को केवल सिथियन सिद्ध करने वालों का सिद्धान्त इस प्रमाण के सामने मिथा हो जाता है महाभारत सभा पर्व में पाण्डु सभामें समलित होने वाले राज्य दलों के नाम है उनमें जाट गोत्र दल निम्नलिखित है मल्ह मालौ (मल्ही) (मल्हाण) गान्धर सन्धु महीत्य (माही और महे) (मल्हाण) शवी बाठ विर्क दर्द शालौ (शाल) मतस्य (मति) काक कुकुर (काकड़ खोखर) कर्सकर तकश्क शन्ड (सांड) (सन्डी) (संडराणा) बाहिक (बाही बाहेल। बिज्य बिजेरणया शौराष्ट्रा (राठी) मान अड़ सोहद (सोह सोहड़े) उठी राय (उठवाल) आदी कर्ण पर्व का हाल कथा सार संग्रह में लिखा जा चुका है पंजाबी दलों को जटितका कहा गया है भीष्म पर्व द्रोण पर्व में भी ऐसे दलों का व्रतान्त है जो जाट गोत्र है।

१२ ययाती वंश की वंशावली विषणु पुराण अनुसार

राजा ययाती

यदु | पुरु | द्रोहयु | अनु | अरदास

पुराणों की कथाओं में द्रोहयु और अनु प्रसिद्ध नहीं और कई जगह वंशाली चित्र में उनके नाम तक भी नहीं।

यदु

कृशना — जाट जाति घनष्ट गोत्रों का पूर्वज

दरोजसन
स्वाथी
अरमंग या ओसदर
वित्रथ
शिशुबन्ध
सखीरत

सतजीत

हे | बिवे | अहे

अहे — दयाद्रनेत्र — केतक — कोतज

(सतजीत को अहीर जाति अपना पूर्वज मानती है।)

अजाफोकय
उशीनर या अरहन
यट—यज्ञी, शबी आदि तीन भाई
|
मुरुत
कोमल
दरसु
रमकू
रेकस
प्रथुकम
होसमां
जमोग
सोहयाति
दोरब
केसक
लोमपाद
ब्रती
जमन्ता
रशबाहु
भीमरथ
दोरथ
सकतनी
करतनक
कुरु
देवरता
देवक्षेत्र
माधो
द्रदसु
वृहत
गनी
यदुप
झनतु
सतौती

(इसको तातारी अपना पूर्वज मानते हैं।)

| तक | ककर गोत्र का
हरजन्द | ककर | पूर्वज
|
भजन — वानसत
दोरतिया — बलोम
सुरा — कयोतराम
सैनी — अनु
भोज — अन्दक
रावक — धन्यतरी
देवसिध — विरोदत्त
वासूदेव — पुर्नवसु
श्री कृष्ण — अकोकय
अग्रसैन देवक
कंस

पुरु शाखा | वीर भद्र की
| | सन्तान के जाट
जनमेजय | गोत्रों का पूर्वज

प्राचीनवान
प्रौधान
प्रवीर
चारवेद
सधनवा
भोग्यो
सन्याति
अहयाति
रोद्रसु
घृणाचि
अतीनाद
तसु
बेती
अम्य

तीन नाम खाली हैं

दुष्यन्त | देश का
| भारतवर्ष नाम
भरत | प्रसिद्ध इनसे हुआ

भारद्वाज ऋषी | ब्रह्मण गोत्र का
| पूर्वज

मेतु
वृहत क्षेत्र
सहोत्र
हस्ती
(इसने हस्तिनापुर बसाया)

ययाती की दूसरी शाखा

हस्ति | कोरु पांडु और मीढ गोवों का पूर्वज

अजमीढ	देवमीढ	पुरुमीढ
सतचरत	यन	दर्बदासु
सोनीत	अक्षयी	वाहदान
पुरयास्प	बिलाक्ष	द्रहतकियो
वाचसु	कोसकसम्भा	जय
केमला	गाध | कोस्क	धदर
युनारा	विश्वामित्र | ब्राह्मणगोत्र	सेनजीत
दरेदसु	देवरत | का पूर्वज	वचरासु
मरीच	डन्क	ऋतुंसैन
मोकीला	सनिक	सीकन्त
देवदास		जसराज
सतपुत्र		ऋतवा
सोरकयातक		
सरन्जा		
धनु		
सोमदत्त		
जत्तजन		
हर्मबर		
समिध्य		
द्रोप्द		

अजमीढ की तीसरी शाखा

अजमीढ

अकशन
समोरन

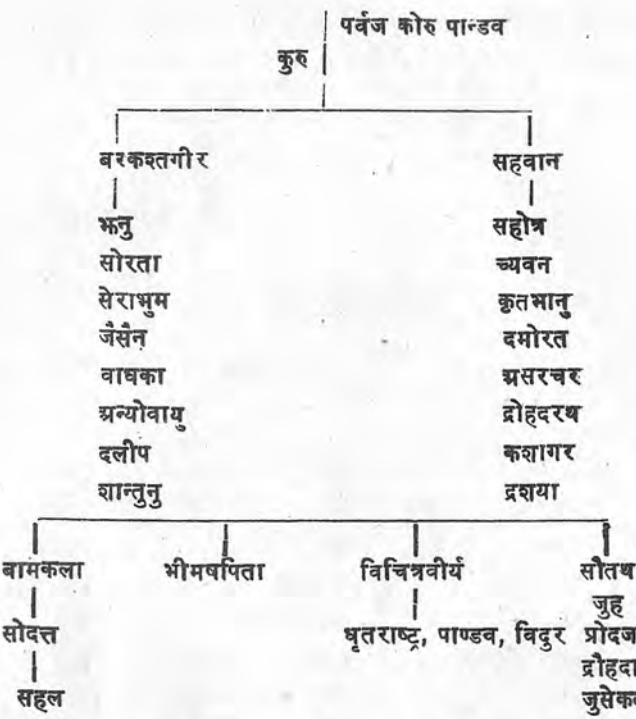

'पुरु' की एक शाखा जो चारणों की लिखित में है धौलपुर राज्य से मिली

आठवीं पीढी के पश्चात् सन्याति

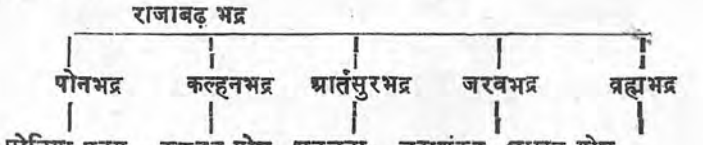

भाट की पोथी में लिखा है कि

1. पोनिया जटा शंकर की सन्तान हरियाणा, वृज तथा ग्वालियर देशों में फैली।
2. कलहन भद्र की सन्तान काठीयावाड़ गुजरात में फैली।
3. अतिसुर भद्र की सन्तान इसी नाम मे मालवा, मेवाड़ में फैली
4. जखभद्र की सन्तात—जाखड़ गोत्र के नाम से कश्मीर पंजाब में फैली
5. दहीभद्र की सन्तान पंजाब और दूर देशों में फैली

6. ब्रह्मभद्र की सन्तान, भीम रौलिया प्रसिद्ध होकर जम्मू, कश्मीर, हरिद्वार और पश्चिमी पंजाब आदि देशों में फैली। धौलपुर का राजवंश इसी शाखा से है

राजा ययाती की तीसरी शाखा

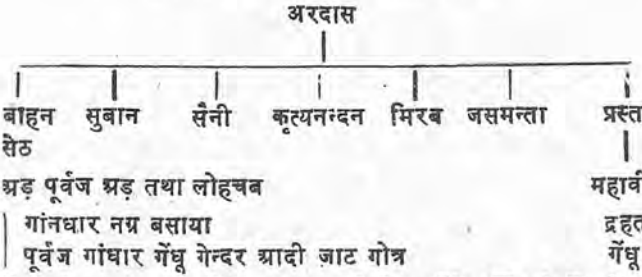

टिप्पणी :—ये ऊपर लिखित वंशावली चित्र मैंने (Tod Rajasthan) टाड राजस्थान से नकल किया है। परन्तु सन्गोंपांग नहीं। क्योंकि जाट इतिहास के लिए आवश्यक शाखा वही लिखी गई है जिनमें से कुछ नामों का जाट गोत्रों से सम्बन्ध था।

1. यदु वंश में उशीनर, शिशुबन्ध तक या तकशक सतौती, कृष्ण या कुशाना

2. पुरु शाखा में दुष्यन्त, भरत भार्द्वाज, हस्ती, अजमीढ, कौशिक, गाध विश्वामित्र आदी

3. अरदास शाखा में सेठ, अड़, गान्धार, गेन्दु, गेन्धर आदि नामों की जो वंशावलियां हैं एक के पश्चात् दूसरा गद्दी पर बैठने वाले राजाओं के ही नाम हैं। परन्तु दूसरे भाइयों दूसरे दलों के नाम नहीं। जो दूसरे प्रसिद्ध व्यक्तियों से ये चलते ही रहे होंगे।

प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि ययाती वंश की जन्मभूमि हरिद्वार देश है क्योंकि इस वंश के पूर्वज बोध का विवाह इसी स्थान पर हुआ। गाध के पुत्र ऋषि विश्वामित्र ने तप यहीं किया भागीरथ गंगा की कथा के वर्णन में है कि भागीरथ गंगा को भारतवर्ष की मैदान भूमि की ओर बहाये चला आ रहा था। तो ह्नु राक्षस ने उसका जल पी लिया था फिर उसकी जांघ चीर कर निकाला गया था। ह्नु ययाती वंशी राजा था। उसकी राज्य सीमा में कुछ खुदाई का काम करना पड़ा होगा। कुरुवंश की राजधानी यहीं थी। ययाती वंश यहीं से उन्नति करके फला और फूला। इस वंश की एकमात्र भूमि यही मानी जाती है।

यदुवन्श य्यातीजी के 5 जत्थे और जाट गोत्र

यदु य्याती जी का ज्यष्ठ पुत्र था। विष्णु पुराण में कथा है कि उसको अपने पिता का सिंहासन प्राप्त नहीं हुआ। वह पंजाब और ईरान की तरफ चला गया। यदु महाराज के पाँच पुत्र थे। जिनमें से सतजीत और कृष्ण की सन्तान चली। सतजीत के तीन पुत्र हुए। हहे, विवे, और अहे। अहे का वंश अहीर संघ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हे की सन्तान हेर गोत्र के जाट हैं।

2. कृष्ण के वंश में आठवीं पीढ़ी में राजा उशीनर के पुत्र राजा शिवी जी महाराज हुये। यह गृहस्थी योगी थे और तपस्वी थे। सती जी और पार्वती जी से एक के बाद दूसरा विवाह किया। उनसे गणपति (गणेश) और सामकार्तिक दो पुत्र उत्पन्न हुये। इन दोनों का जन्म हरिद्वार प्रदेश में हुआ। गणपति नाम नहीं था। पदवी थी वह जनता के चुने हुए और नियुक्त प्रधान थे।

शवी नाम का जाट जाति में एक बड़ा गोत्र है। शवी लोगों ने ईरान देश को शवी देश प्रसिद्ध किया है। ह्यवानसांग और फाहियान चीनी यात्रियों ने अपनी भारत यात्रा रोज नामचों में शवी देश लिखा है कि हम तातार काश्गर पामीर होते हुए शवी देश पहुंचे।

अभी तक ईरान में महाराज शवी को हजरत शीश कहा जाता है और उनका मजार (समाधि) दजला नदी के किनारे पर है। दूर दूर से लोग यहाँ यात्रार्थ आते हैं।

ईरान के एक प्रान्त का नाम शीशतान (शवीस्थान) है। यूनानी लेखक जेसटस, हरिडोटस और इस्ट्रेबू लिखते हैं। कि ईरान तुर्किस्तान के शवी लोग सकन्डेनेविया में जाकर बसे। उनके सब देवता और रिवाज हिन्दुओं जैसे थे। शिव गोत्र और उसकी शाखाओं के जाट गोत्र भारत देश में बड़ी संख्या में हैं। ईरान देश के जाट शवी वंशी और शवी गोत्री होने के कारण शवीस्थानी अर्थात सीथियन कहलाये। तुर्किस्तान का सीथियन लेखक अब्बुलगाजी स्वयं को जाट और चन्द्रवंशी लिखता हैं। और यह भी लिखता है कि सीथियन संघ की माता अहिल्या की बेटी थी।

तक्षक

शवी गोत्र की एक शाखा तक्षक है। पुरानी कथाओं में वर्णन है कि जब पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थ में पग जमाये तो तक्षक लोगों ने विरोध किया। महल तथा किले को गिराना आरम्भ कर दिया। उनके साथ युद्ध हुआ। हार होने पर उनको देश से निकाल दिया गया। उन्होंने वर्तमान रावलपिंडी से २० मील दूर उत्तर

की तरफ टेकशिला (तक्षशिला) को राजधानी बनाया और बसाया। ए गाइड टू टैकशिला) नाम की पुस्तक में जो खण्डहर दिखाने के लिये बनाई हुई हैं। में ऐसा ही लिखा है कि पाण्डवों के युग में बसाया गया था।

वर्तमान काल में वहाँ तकी जाति के मुसलमान जट बसते हैं और दिल्ली के निकट मुहम्मदपुर मनीरका आदि पाँच ग्राम टोकस जाटों के हैं। सिकन्दर महान की सेना का मुकाबला उन्हीं तकी लोगों से हुआ था। और जब गजनी का मद्रक राजा सभागसैन को शत्रुओं ने वहाँ से निकाल दिया, तो तक्षिला के तकी लोगों से युद्ध हुआ। तक्षक लोगों ने तक्षखण्ड (ताशकन्द) तक्षस्थान (तुर्किस्तान) बसाया। चौहान लोग तक्षकवंशी हैं। तक्षक गोत्र जाटों का प्राचीन गोत्र है तक्षक लोग महाभारत के युद्ध में पाण्डवों के विरुद्ध लड़े थे। एक तक्षक नाग ने राजा परीक्षित का बध किया था। यह भी पुरानी शत्रुता का बदला था।

बाछिक

बाछक गोत्र जाटों का पुराना गोत्र है। अब भी कालीदेह नामी ग्राम जिला मथुरा के आस पास 11 ग्राम बाछक जाटों के हैं। कृष्ण जी ने एक बाछक नेता को कालीदेह नामी ग्राम में कतल किया था। धराल आदि जाट गोत्र बाछक की शाखा है। तुर्किस्तान में एक सीथिया देश है। और ईरान में एक सूबे का नाम जटाली है। बाछकी संघ के लोग नाग पदवी से प्रसिद्ध रहे। मथुरा दिर्घ काल तक नाग लोगों को राजधानी रही। काश्मीर आदि दूसरे देशों में नागों की बस्तियां और राज्य होने के लेख मिलते हैं।

पुरु वंश

विष्णु पुराणों और महाभारत में लिखा है कि राजा ययाती जी ने दूसरे पुत्र पुरु को अपना युवराज बनाया था। तलखापुर, हरिद्वार, हस्तिनापुर तथा दिल्ली पर इसी वंश का राज्य रहा। तलखापुर के राजा हस्ति ने हस्तिनापुर को राजधानी बनाया। और पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया। और हजारों वर्षों तक इसी वंश के राजाओं की यही राजधानी रही। राजा पुरुज (पौरिस) भी इसी वंश से और पोर्सवाल (फलसवाल) जाट गोत्र इसी वंश से हैं। मील, मिहान, मुदगिल, और गिल गोत्र भी पुरुवंशी ही हैं। और दूसरे पुरु वंशी गोत्रों के विषय में जो वर्तमान काल में जाट जाति में ही अधिक पाये जाते हैं गोत्रों की वंशावलियों के वर्णन में लिखा गया है।

अरदास वंश

यह वंश भारतवर्ष और उपगुनस्थान (अफगानिस्तान) में फैला। राजा

सेठ का बेटा अड़ हुआ। इस वंश में राजा अड़ के बेटे गान्धार ने गान्धार नगर बसाया। उसको अपनी राजधानी बनाया। दुर्योधन की माता गांधारी इसी वंश की थी। इसी वंश में कई राजाओं के नाम गैंधु, गैंध्र और गैंधला हुये और ये सब गोत्र जाटों और गूजरों के ही हैं। अड़ गोत्र भी जाटों का ही है। गन्धार कंधार) नगर जाबलस्तान में हैं।

जाबिलस्तान में पठानों का गौर जई नाम का बड़ा कबीला है गौर गोत्र जाट जाति का है इसलाम धर्म अफगानिस्तान में पहुँच जाने पर : ग : गैन में बदल गया माहोमद गौरी गोर जई कबीले के थे बंगला वशू कोश में निगन्द्रनाथ बैनरजी ने लिखा है कि द्रयोधन का बहनोई लंका का राजा जैदर्थ था सिन्ध देश का राज्य प्राप्त होने पर उसकी संतना सन्धु प्रसिद्ध हुई जो जाट सन्धु गोत्र के नाम से विद्यमान है जो उरदास वंशी है।

द्रोहयु

यह वंश काश्मीर देश में फला। देऊ. द्रेहयु, सद्रेहयु, सिंधड़े, द्रेहवाल गोत्रों के मुसलमान जाट हैं। जो जम्मू कश्मीर, और सियाल कोट आदि जिलों में पाए जाते हैं।

अनुवंश

भारतवर्ष के इतिहास के लेखक भगवतदत्त बी. ए. ने बिलोचों को अनुबंशी सिद्ध किया है। बलउच्च, बलहारा, बल, बालाण, आदि गोत्र इसी वंश से हैं। और सब जाट गोत्र ही हैं। और काक काकड़जई, बिलोच कूकर काक, खोखर कारसकर जाट भी अनु वंशी ही हैं। बिलोचिस्तान के मकरान सूबे में कुछ वर्ष हुए तीस हजार बिलोच जाट माने गए थे। लोगरी क्षेत्र के बिलोचों को जाट वंशी वहां के इतिहास वा भूगोल पुस्तक में लिखा है।

१३ यदू की अहीर शाखा (वंश)

यह पीछे लिखा जा चुका है कि यदु के पुत्र सतजीत के पुत्र 'अहे, की सन्तान अहीर प्रसिद्ध हुई। दूसरे पुत्र हे, की सन्तान हेर जाट गोत्र है। मिस्टर कंधम लिखता है। कि आज से दो हजार वर्ष पहले तुर्किस्तान, ईरान, आदि देशों में हेर, भुल्लर, सिहाग, आदि जाट और अहीर साथ साथ बसे हुए थे। और यदू की दूसरी शाखा कृष्ण की संतान गूजर और जाट प्रसिद्ध रही। इस लिए गूजर, अहीर और जाट एक ही परिवार के लोग हैं। अहीर ययाती जी के केवल एक वंश के लोग हैं। जाट ययाती जी के पांचों बेटों की संतान हैं। अहीर और जाटों के रंगरूप डील डोल, आचार बिचार, खान पान, चलन, व्यवहार बोल चाल, तन, मुखाकृति,

एक जैसी है। और हर स्थान पर मिले जुले बसे हुए हैं। एक बात प्रथक है कि अहीर सिंध नदी के ओर पास कम पहुंचे। और दक्षिण भारत में अधिक पहुँचे। अहीर बम्बई, कलकत्ता, तक हर स्थान पर पाए जाते हैं। गुजरात, काठियावाड़ पराचीन काल में अहीरों का देश था। जिला मिरजापुर का प्रांत अहीर वाड़ा कहलाता है। गूजरो ने अहीरों को काठियावाड़ देश से निकाल दिया था। एक पहाड़ी गुफा से अहीर राजा का शिलालेख मिला है। राजा समुदरगुप्त के एक सूतम्य पर एक अहीर संघ का वर्णन है जो शक्तिशाली था। यूनान देश को बसाने वाला यवन सतजीत शाखा से अहीर वंशी था। अहीर वंशी खान देश में दूसरी जातियों में मिल जुल गए हैं। अहीर ब्राह्मण, अहीर पुजारी, अहीर जुलाहा, अहीर कोली, सुनार, मछेरा आदि जातियां हैं। हरियाने के अहीर दक्षिण के गवाल वंशी अहीरों को अपने से निम्नकोटि का मानते हैं। अपने को यदु वंशी और उनको गवाल वंशी मानते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है। वे भी यदु वंशी हैं। उन्होंने गऊ चराने, दूध बेचने, के अय अपनाए। और हरियाने वालों ने कृषि का धन्धा ही रखा। इस लिए उन से रिश्ते आदि बन्द कर लिए। और उनको नीचा कहने लगे। अहीर संघ ने राजशक्ति प्राप्त करने में अपने साथी जाट कुटम्बों की अपेक्षा कम उन्नति की और न ही किसी दूसरे संघ से मिले। एकमात्र अहीर ही बने रहे। गदर (क्रांतियुग) सन् 1857 रिवाड़ी के राजा तुलराम ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने में बड़ा भाग लिया। अंतिम श्वांस तक अंग्रेजों से लड़ता रहा।

अहीर गोत्रों की नामावली

अफरिया	हुडिनवाल	कंधाला
बचवाल	हरबाला	लामबा
बनर्मोया	हाडो	लाहोटिया
भगर्वाया	होडकवाल	लोहचब
बाल रोधिया	हरीवल	मुटियार
बघगरी	जादम	महला
बाछिस यावाछिक	झासिला	मेल्म मल्ह
भा कोला यश	झाडोदिया	मुह धरया
बोथोथिया	झगडोलिया	महाखन
चोंया	जांजरया	मोटाहिया
छाटीया	झाडा बराल	मानियां वाल
चीतोसया	खदोदिया	नुनी वाल
छावड़या	खोरिया	निजानिया

छरोरिया	खालियाव	नेनवाल
छीकना	खरवारिया	नानू
धार्ण	खोरमिया	नाहिनिया
दीवा	खोला	पन्हवार
डागर	काकडा लियान	पनवालिया
दंत्रता	खरसानिया	पाहनया
धोलीवाल	कोसल्या	पछेरिया
दलचर	खरवालिया	परथीवा
धामीवाल	कनयानवाल	रारालिया
डूमर वाल	कन कस	राबर
धाँदला	कोठ वाल	रोसवालिया
दुधेड़या	कुरोटी	ऐलेरिया
देशवाल	खरवालिया	शोवालिया
दहिया	खसवा	सीसोटिया
गोगद	कट्ठ	पसां
गामवाल	खेर वाल	सीलगी
गिन गनिय	करेविया	सीकवाल
गिराड	खिरानिया	सुनारिया
गजहाओ		सांवलया
छाराल वाल		सीसोधिया

१४ ग्याती (जाट) संघ के वर्ण और जातियां

जाट संघ ने वर्ण विव स्था को नाम मात्र ही माना है। इस बात का जीवित प्रमाण यह है कि संसार भर में जितना जाट संघ धना एकत्र बसा हुआ है और कोई दूसरी जाति इतनी एकत्र बसी नहीं पाई जाती जाट देश में बड़ी बड़ी गैर जाट जातियां भी जाट गोत्रों से ही बनी हुई हैं। जाट संघ प्राचीन आर्यों की रिति पर ही चलता रहा है।

थोड़ी संख्या में जो भारत के आदी बाशी जाट देश में टिके रह गए उनकी सन्तान दास (शुद्रों प्रसिद्ध हुई और उनसे कुछ पृथक जातियां बनी कई सेवादारी के पेशे अपनाए वर्त्तमान युग में भी रंग और चेहरे की बनावट से उनकी नसल अलय पहचानी जाति है किन्तु ग्याती दल में बहुत समय पश्चात ऋषीयो की

सन्तान ब्राह्मण और बाणजो की सन्तान वैश कहाने लगी जो वर्ण कहाए आरंभ काल में वर्ण भी कर्म अनुसार रहे जन्म अनुसार न थे ।

परन्तु उनकी संतान जिस कोटि की होती थी साधारण आर्य ही रहती थी मध्य ऐशिया से भारत वर्ष में आये हुए आर्यों के दो दल थे इक्ष्वाकु दल गंगा नदी के पूर्व की ओर आगे को बढता रहा था जो अनारियों को दक्षिण की ओर धकेलता हुआ युद्ध में उलझा रहा । धंधों के अनुसार उनमें चार वर्ण बन गये और वर्णों में से घनेरी जातियाँ बन गई तथा बनती रहीं जैसा कि पूर्वि और दक्षिणी देश जातियों की खिचड़ी जान पड़ते हैं । आर्यों का दूसरा जत्था जाट संघ (ज्याती संघ) दीर्घ समय तक अनार्यों से युद्ध में जुटा हुआ नहीं रहा । और वर्ण बनाने की आवश्यकता नहीं हुई वैदिक धर्म में दुर्बलता आ जाने पर देश धर्म का स्थान बौद्ध धर्म ने ले लिया एक हजार वर्षों तक बौद्ध मत जाट देश का श्रद्धालु धर्म रहा बौद्ध धर्म में जाति पाति ऊँच नीचता को स्थान नहीं था इस कारण जाति विस्तार नहीं हुआ राजपूती दौर में जब पौराणक मत को देश धर्म माना जाने लगा तो छुत छात ऊंच नीच जात पात का भेद भाव बढ़ता गया परन्तु जाट देश में पुराणक मत को नाम मात्र ही माना गया यह देश साधु मतों का अनुयाई बना रहा इसका जीवित प्रमाण यही है कि जाट देश में गैर जाट जातियां कम से कम हैं और जो ब्राह्मण बणया नाई चमार आदी है भी वे अकसर जाट परिवार ही हैं प्राचीन आर्यों में जब वर्ण प्रथा मानी जाने पर देर तक कर्म अनुसार मानी जाती रही वर्ण कर्म अनुसार बदले जाते रहे ऐसे कुछ प्रमाण विद्यमान हैं ।

15 पराचीन आर्यों में वर्ण पार्रवर्तित होते रहने के प्रमाण

1. सूर्य वंशी राजा मान धाता जी के हरत (हरत) और अमरीख दो पुत्र थे । हरत तप करता हुआ ब्राह्मण पद को प्राप्त हुआ । उस की सन्तान हरत गोत्र ब्राह्मण कहलाई । अम्बारीख की सन्तान क्षत्रिय वर्ण में ही रही वायु पुराण अं 14 अध्याय 3.

2. जाबाली ऋषि वैश्य के पुत्र थे । ब्राह्मण कहलाए वायु पुराण अंक 14 अध्याय 3.

3. चन्द्र वंशी राजा हस्ती के पुत्र कुरू के अजमील हुआ । उसका पुत्र मेधावी हुआ । उसके पुत्र किरायण और मुदगल की संतान ब्राह्मण कहलायी । और गिल क्षत्री भी हैं । विष्णु पुराण अं. 4. 15. 16

4. चन्द्र वंशी राजा कोष का पुत्र गाध हुआ । उसके पुत्र विश्वामित्र ने कौसकी नदी के किनारे 100 वर्ष तप किया और ब्रह्म ऋषि कहलाया, उसकी सन्तान कौषिक ब्राह्मण हैं । वायु पुराण अं. 14 अं. 3

5. क्षत्री राजा देवदास का पुत्र मित्रापू हुआ। उसके पुत्र सौममैत्रायण की सन्तान मैत्रायण ब्राह्मण हैं। वायु. पु. अ. 3

6. गर्ग गोत्री ब्राह्मण गर्ग नामी क्षत्रि की सन्तान हैं।

7. बाल्मीकि ऋषी भील जाति के थे। ऊंची कोटी की हस्ती थे। ऋषी थे।

8. बैदिक सम्मीत पुस्तक में गर्ग गोत्री ब्राह्मण मंगोल नसल के लिखे हैं।

9. राजा ययाती जी की 24 वीं पीढी में राजा भारद्वाज हुए। वह तप करते हुए आपने पुत्रों सहित ब्राह्मण वर्ण में शामिल हो गए। और ऋषि कहलाए। टाड राजस्थान उर्दू. पृ. 111 उफक लिखित।

सारे वर्णों में परस्पर विवाह होते थे

प्रमाण

1. श्रगी ऋषी को एक वेश्या के साथ राक्षसी विवाह करना पड़ा उस वेशा के पुत्र वशिष्ट गनिष्ट और नाभा तीन ऋषि हुए उन तीनों से ब्राह्मण गोत्र चले वायु पुराण अं: 14 अध्याय 3

2. महाबली परशुराम जी की माता क्षत्राणी थी और राज कवारी थी।

3. राजा दुशन्त ने शकुन्तला नाम की ऋषि कन्या से गांर्धव बिवाह किया जिसका पुत्र राजा भरत हुवा उसका राज्य भारत वर्ष नाम से जाना गया।

4. ग्याती वंशी राजा शन्तनू ने सत्यवती (मछोदरि) एक केवट (मल्लाह) की पुत्री से विवाह किया जो राजा धर्त राष्ट्र और पान्ड की माता थी

5. विद्रजी दासी पुत्र थे

पंचम अध्याय

जाट राज्य का तिथीवार दौर

20 दिल्ली पर ढिल्लों जाट राज्य 800 साल ईसा पूर्व से 350 इ: पूर्व तक

महाभारत काल के बाद 800 साल ईसा पूर्व तक का जाट इतीहास लोप है परन्तु ढिल्लों राज्य से आरम्भ करके राजा हर्ष बर्धन के शासन काल तक जाट इतीहास सिलसिलेवार और तिथीवार मिलता है यहीं से तरतीब में जाट इतीहास की तिथीवार रचना की गई है ।

मजमल अल तवारीख अर्थात् वाकआत पांच हजार साला जिस को श्री बांकेलाल ने ई. 1898 में उर्दू भाषा में उथल किया में लिखा है कि 800 इ: पु: से आरम्भ करके 350 इ: पु: तक दिल्ली राजधानी पर ढिल्लो बंस के 13 राजावों ने राज्य किया जो निम्नलिखित हैं 1 बीरम्हा 2 महाविल 3 शरदुल सरुपविल 4 बीरसैन 5 महीपाल 6 सिधराज कलुक 7 तेजपाल 8 जीतमल कालधन 9 शत्रु मर्दन 10 जीवणसिंह 11 हरी राव बीर भुजंग 12 वीर सैन दोयम 13 उदयभट्ट दत्यकेतु पंजाब में ढिल्लों सिख जाटों का बड़ा गोत्र है । ढिल्लों गोत्र का निकास दिल्ली का है ढिलों गोत्र जाटों के सिवा और किसी जाति में नहीं पायाजाता ।

आर्य लोग भारत वर्ष में आए और जब यहां की उपजाऊ भूमि में रहते सहते बहुत समय बीत गया, उनकी जन संख्या बहुत बढ गई थी । महाभारत घोर युद्ध के प्रभाव से राजशक्ति निबल हो गई थी । अमन और शान्ति के कम होने से धार्मिक प्रचारक भी शिथिल पड़ गए । कुरीतियां बढ गईं । पन्डितों ने कर्मकाण्ड को अधिक पेचीदा बना दिया । धर्म के नाम पर दुकानदारी प्रारम्भ कर दी थी । वर्णों के अनुसार व्यवसाय कार्य अनुसार जातियां बन गईं । जीव हिंसा, मास सेवन मदिरा-पान बढ जाने से समाज की दशा चिन्ताजनक हो गई थी । ऐसे विकट काल में देश और समाज सुधार के लिए जैन धर्म और बुद्ध धर्म मैदान में आए । उन्होंने देश तथा धर्म का कायापलट कर दिया ।

बुद्धमत के जन्मदाता सिद्धार्थ नामी राजकुमार कपिल वस्तु राजधानी में पैदा हुए । जिनको गोतम बुद्ध कहा जाने लगा । 557 वर्ष. ई. पू. उतपन्न हुए । उसने 80 वर्ष की आयु तक अनथक प्रचार जारी रखकर देश और धर्म का सुधार किया । और बुद्ध धर्म को स्वीकार कराने में बड़ी सफलता प्राप्त की । उनका 80 वर्ष की आयु में कसी नगर नामी स्थान पर देहान्त हो गया । उनकी मृत्यु के पश्चात् भी

एक हजार वर्ष तक बुद्ध धर्म भारत वर्ष में माननीय मत रहा। बुद्ध मत का शीघ्रता से सफल होने का एक बड़ा कारण उसके सरल नियम थे। उसके सन्यासियों का प्रचार संस्कृत कठिन भाषा के स्थान पर देश भाषा थी जिसे प्रत्येक मनुष्य सरलता से समझ सकता था। जात पात और छूआछात बुद्ध धर्म में नहीं थे। वे अहिंसा परमोधर्मः का प्रचार करते हुए मनुष्य मात्र और जीव मात्र की स्वतन्त्रता का अधिकार मानते थे। बुद्धमत एक हजार साल तक संसार का सबसे बड़ा धर्म बना रहा। बुद्धमत का प्रचार भारत वर्ष के बाहिर ईरान, अफगानिस्तान चीन, जापान, तिब्त, ब्रह्मा, आसाम, जावा सुमट्रा लंका आदि देशों में भी हुआ। महाराजा अशोक, कनिषक हर्षवर्धन ने बुद्ध मत की उन्नति प्रसार में बड़ा भाग लिया। बौद्ध काल में पौराणिक अर्थात ब्राह्मणी धर्म सर्वथा नष्ट नहीं हुआ था। वह दबी हुई अवस्था में जीवित था। परन्तु उसे मान्यता प्राप्त नहीं थी। क्योंकि ब्राह्मणों ने शुद्ध वैदिक धर्म को जीवित करने का कभी भी प्रयत्न नहीं किया। केवल इसी आशा और ताक में रहे कि अवसर मिले तो पाखण्डी धर्म को जीवित कर के दुकान चलाऐ। वे बुद्ध धर्म से द्वेष रखते रहे। परन्तु बौद्ध धर्म के अनुयायी राजाओं तथा प्रजा ने ब्राह्मण पंडितों का भी आदर किया। उनको किसी प्रकार भी कष्ट नहीं दिया। परन्तु जब कभी बीच में ब्राह्मण राजाओं का राज्य हुआ। उन्होंने बुद्ध मत की जन्ता और भिक्षुओं को बड़े कष्ट दिए। बुद्ध धर्म वालों में सहन शीलता थी अतः शान्ति और अहिंसा के आधार पर प्रचार जारी रखा। अन्त में बुद्ध धर्म में दो श्रेणियां बन जाने के पश्चात् नियम परिवर्तन होने से इसमें निर्बलता आगई बुद्ध धर्म के प्रचार से ऊंच नीच और छूआछात का भेद भाव मिट गया। देश में सुख शान्ति बनी रही। और कुछ विदेशी आक्रमणकारी भारत वर्ष में प्रवेश करके शासक बने और बुद्ध धर्म के अनुयायी बन गए।

बौद्धमत कालीन जाट राज्य

ईरानी शासक दारा प्रथम ने 500 वर्ष ईसा पूर्व सिन्ध के सीमावर्ती देश पर आक्रमण किया (दारा को कहीं कहीं औस भी लिखा है। तथा सिकन्दर महान ने जिस दारा पर आक्रमण किया, वह इस दारा से 200 वर्ष बाद होना सिद्ध होता है) सम्भवतः उसी वंश में दारा की पदवी हो और प्रथम द्वितीय आदि कई दारा हुए हों। भारतवर्ष के सिन्धु राजाओं से इसकी मित्रता थी। जिस दारा पर सिकन्दर महान् ने आक्रमण किया था। उसकी सेना में सिन्धु जाट सेना सम्मिलित हुई सिकन्दर की सेना में भी जाट थे। सिकन्दर का साथी एरियन लिखता है सिकन्दर की दहिया और दारा की सिन्धु जाट सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। उस समय सिन्धु देश के शासक और निवासी सिन्धु जाट थे। एरियन के लेख से

यह पता नहीं चलता कि दाहिया जाटों की सेना किस देश से बुलाई गयी थी। प्राचीनकाल में ईरान में दाहिया दलों का वृत्तान्त मिलता है।

नन्द राज वंश

320 वर्ष ईसा पूर्व उत्तरी भारतवर्ष पर राजा पदमानन्द का राज्य था उसकी राजधानी मग्ध थी। पुराणों में उसको शूद्रों का पुत्र लिखा है जैनियों ने नायन के गर्भ से लिखा है। और कहीं नाई पुत्र भी लिखा है यूनानी लेखकों ने भी नाई लिखा है। मानो यह मग्ध राजा की दासी से उत्पन्न हुआ था। मग्ध के राजा कालाश्यो की रानी पदमानन्द पर मोहित हो गई थी। उसने राजा और राजकुमार दोनों को बध कर दिया और सिंहासन पर बैठ गया। यह क्षत्रियों का शत्रु था। उसने अनेक राजा धोखे से मरवा दिये थे। चन्द्रगुप्त उसका सेनापति था। उसपर राजद्रोही अपराध सिद्ध होने पर वह मग्ध देश से निकाल दिया गया। अथवा भगौड़ा होकर पंजाब देश में चला गया था। वहाँ वह एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करने में सफल हुआ। इसका वर्णन आगे दिया जाएगा।

सिकन्दर महान का आक्रमण और पंजाब के गणराज्य

एरियन के लेख तथा कोटिलय अर्थ शास्त्र के अनुसार सिकन्दर यूनान के मकदूनिया देश का शासक था। बड़ा ही शूरवीर निडर और अच्छे विचार वाला था। यूवावस्था में ही उसने विदेशों पर चढ़ाई करनी आरम्भ कर दी। एक के बाद एक देश विजय कर लिया। उसने 322 वर्ष ईसा पूर्व भारतवर्ष पर चढ़ाई कर दी। उसकी सेना व्यास नदी तक पहुंची तब वह थक चुकी थी। अटक नदी पार करने के बाद उसकी सेना का युद्ध जाट राज्य गणों से हुआ।

सिकन्दर के साथी इतिहास लेखक एरियन ने लिखा है कि सिकन्दर को यह निश्चय हो गया था कि इस समय की जाट जाति के लोग सबसे बढ़कर शूरवीर योद्धा हैं।

1. आरम्भ में पुरु वंशी राजा पौरस की सेना से युद्ध हुआ। राजा पौरस की सेना परास्त हो गई। किन्तु राजा पौरस ने हृदय नहीं तोड़ा। पकड़ा जाने पर उसने सिकन्दर से निर्भयता से बात की। सिकन्दर के पूछने पर कि अब आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाय पर उत्तर दिया कि जैसा राजा राजाओं के साथ किया करते हैं। सिकन्दर ने पौरस को पुनः गद्दी पर बैठा दिया और मित्रता बनाली। एरियन लिखता है कि पोरस दो थे। और दोनों से युद्ध हुआ। उनके नाम पोरस नहीं थे। उनका वंश पुरूज था। अतः पुरूज यदवी थी दूसरे पुरूज से बापिसी पर युद्ध हुआ था।

2. आगे चलकर कठ जाट (गढ़वाल) गणराज्य से युद्ध हुआ। इस गण को लोग रावी नदी के पूर्व में बसे हुए थे। उनकी राजधानी सांगला नाम की थी। उनको यह अभिमान था कि वह पुरूज राज्यों को कई बार परास्त कर चुके हैं।

3. सोभोतीगण या सुभराओं—इस गण के राज्य की सीमा नमक (नूण) के पर्वत तक थी। इनका राज्य प्रबन्ध प्रशंसा योग्य था। इनमें स्वम्बर प्रथा विद्धमान थी। बच्चे के जन्म के दो मास बाद उसके स्वास्थ की परीक्षा होती थी। अंगहीन और कमजोर को मार देते थे। यह भी जाट गण था।

4. योधिया जाट गण (जोहिया)—उनकी अटल शूरवीरता की बातें सुनकर सिकन्दर की सेना दिल तोड़ गई। यह बात प्रसिद्ध थी कि उन्होंने विजय का मन्त्र सिद्ध किया हुआ है। इसी लिए वे किसी से हारे नहीं हैं। प्रसिद्ध था जोधिया विजय मन्त्र धारणमु। इनकी बहुत बड़ी सेना थी। उनकी राजसभा में 5000 सभासद होते थे। प्रत्येक सभासद प्रधान को एक हाथी भेंट में देता है। इस गण से लड़ाई नहीं हुई। यह सतलुज के देश का शासक था।

5. जट्टक गण—जब सिकन्दर की सेना वापिस लौटी तो जट्टक गण की सेना से युद्ध हुआ। इनके साथ मद्रक और मल्ह जाट गणों की संख्या एक लाख थी। इन दोनों गणों में शत्रुता थी। केवल सिकन्दर के मुकाबले के लिये मेल हुआ। और इस मेल पर 200 विवाह आपस में हुए।

6. कशान गण—इस गण की संख्या 40000 थी। डट कर युद्ध हुआ।

7. जेष्ट और जट्रोटी गण—इस गण से घोर युद्ध हुआ जब उनको विजय की कोई आशा न रही तो अपने बच्चों को बध करके कट मरे। कुशान बाद में गुज़र प्रसिद्ध हुये इस गण से वापसी पर युद्धहुआ।

8. पाटन और नियासा गण सेना से युद्ध हुआ।

9. झेलम और सिन्धु नदियों में सिकन्दर की सेना को जाट जाति के जहाज मिले। उन्होंने सिकन्दर की आधीनता स्वीकार करली।

10 एरियन के लेख अनुसार जाट जाति में सती होने की प्रथा भी है वे लोग सुन्दरता का अति सत्कार करते हैं। उनमें बड़ी संख्या बौद्धधर्म वालों की है ब्राह्मणों का भी सत्कार करते हैं। कुछ परिवार ऐसे देखे गये जो केवल जंगलों में ही रहते हैं। पशुओं की खाल तथा वृक्षों की छाल से तन ढकते हैं। जंगली अन्न और फलों पर निर्वाह करते हैं। पीपल की पूजा भी करते हैं। अनेक विवाह प्रथा भी प्रचलित है। आगे चलकर सिकन्दर की सेना ने 3000 बैल ईरानी सौदागरों से छीन कर यूनान को रवाना कर दिये। वर्तमान काल में भी मलह, मद्रक, मलक, कठ, योधा जट्रक गोत्र केवल जाट जाति में ही हैं।

मोरिया जाट राज वंश

महाराजा चन्द्रगुप्त

चन्द्र गुप्त को भी नन्द वन्शी कहा जाता है क्योंकि महाराजा अशोक कट्टर बुद्धप्रचारक और सहायक रहा। इसलिये पौराणों में उसके वंश को सुन्दर लिखा जाने की चेष्टा की गई। परन्तु यह सिद्ध हो चुका है कि मौर्य वंश उत्तर के पर्वत देश में एक पुराना वंश था। पूरी शक्ति लगाने पर भी राजा नन्द इन पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ रहा था। उसके दिल में इस बात का बड़ा दुख था। अन्त में बुद्धिमान मन्त्री सकटार की युक्ती से विजय हुई। मन्त्री की चतुराई से उस वंश का विध्वंश हुआ। वह सभस्त परिवार वध कर दिया गया। केवल एक गर्भवती रानी बची और वह भिक्षुका के भेष में मग्ध में आ रही थी। एक रात्रि में उसके गर्भ से एक बच्चे का जन्म हुआ। चोर की तरह उसने एक मैले वस्त्र में लपेट कर एक कुम्हार के घर के सामने कूड़े के ढेर पे रख दिया। रोने की आवाज सुनकर कुम्हारी ने उसको सम्भाला। और पालन-पोषण किया। चांद की चांदनी में उसका रूप चन्द्रमा जैसा देखकर उसका नाम चन्द्रगुप्त रख लिया। उसकी माता सेविका बनकर नन्द के राजमहल में रह रही थी और बच्चे की खबर भी सुनती रही। उसके हृदय में मौर्य राज फिर प्राप्त करने की आशा जागती रही।

चन्द्रगुप्त गधों का पाली बनकर भी उस हालत में बड़ा होनहार और चंचल सिद्ध हुआ। श्री चन्द्र शेखर लिखता है कि नन्द वंशी से पहले राजगीर नाम की राजधानी शेषनाग राजाओं की थी। उन्होंने उस राजधानी को छोड़ कर गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलीपुत्र राजधानी स्थापित की। उसके अन्तिम शक्तिहीन राजा को मारकर नन्द ने राज्य अधिकार कर लिया था।

जब बजीमल्ह आदि कौशल राज्य स्वतन्त्र हो चुके थे उनको नन्द ने फिर विजय कर लिया। पर मौर्य राज्य को विजय करने में असफल रहा। संदेह यह हो गया कि शकटार मन्त्री विकटार का बेटा उसका लगाव विजयी राजाओं से है। उससे किसी दिन कोई धोखा मिल सकता है। इस कारण शकटार पर एक अपराध लगाकर उसको एक निर्जल कूप में डाल दिया। इस घटना से अगली प्रातः एक नई घटना घटी। किसी विचार से राजा को हँसी आ गई और साथ ही दासी भी हँस पड़ी जो मुँह धुला रही थी। राजा ने उसको मृत्यु दण्ड सुना दिया। बड़ी विनती से यह कह कर क्षमा करने का वचन दिया कि वह बताये कि राजा को हँसी क्यों आई थी।

बांदी रात को जल और भोजन लेकर अन्धे कूप पर आ गई। शकटार

भूखा प्यासा था आशीर्वाद देने के पश्चात पूछा दयालू आप कौन हैं ? बांदी ने सारा वृतान्त बताया। शकटार ने प्रश्न का उत्तर बदल दिया। राजा ने बांदी से कहा सत्य बताओ कि यह उत्तर किसने बतलाया। बांदी ने शकटार का नाम बता दिया राजा ने सोचा ऐसा बुद्धिमान मन्त्री नहीं मिल सकता। उसको कूप से निकाल कर फिर मन्त्री नियुक्त कर दिया। परन्तु शकटार के हृदय में द्वेष पैदा हो गया था राज को नष्ट करने के यत्न सोचता रहा।

2. राजकीय संस्कृत पाठशाला में टैकसिला विद्यालय का पठी बड़ा विद्वान पंडित जो राजनीति पढ़ाने में भी परिपूर्ण था। अध्यापक था उसका नाम विष्णुदत्त तथा पदवी कौटिलय वा चाणक्य नाम से प्रसिद्ध हुआ। परन्तु वह अति कुरूप था। उसके पग में विद्यालय के मैदान में डुबशूल चुभ गई। वह डाब को निर्मूल करवा रहा था। देवयोग से शकटार वहां से जा रहा था उसने देख लिया और कहा आप कष्ट न उठायें मैं राज्य मजदूरों से निकलवा दूँगा। उस दिन उनसे मित्रता हो गई। देवयोग से कौटिलय का भी बड़ा अपमान कर दिया। राजा के पिता के श्राद में कुरूप चाणक्य को धक्के देकर निकाल दिया गया। कौटिलय ने भी राजा के नष्ट करने की मन में ठान ली थी। एक राजकुमार को ऐसी शिक्षा देने के लिये ढूँढ़ लिया था उसको वह राजनीति पढ़ाने लगा था। अपने प्रयोजन सिद्धि के लिये सुलगन। एक दिन चाणक्य जा रहा था चन्द्रगुप्त नामी कुम्हार के लड़के को पालियों में न्याय करते और बात करते देखा। वह दंग रह गया। उसको सामने बुलाकर कुछ प्रश्न किये उत्तर यथा योग्य मिले। कौटिलय ने उसको भी कुम्हार से ले लिया और पहले प्राप्त किये हुये राजकुमार से तुलना की। चन्द्रगुप्त पर पूरी आशा हो गई कि वह उसके प्रयोजन को सिद्धकर सकेगा। राजनीति और शस्त्र विद्या में परिपूर्ण बना लिया और शकटार मन्त्री के विचार से वह युवक राजा पदमानन्द की सेना का सेनापति बन गया परन्तु उसको तो राजा पदमानन्द के सिंहासन पर अधिकार करने की शिक्षा मिली थी। शीघ्र ही प्रजा और सेना का हृदय प्रिय बन गया। उसकी तेज चाल से राजा भयभीत हो गया। भेद खुल जाने पर चन्द्रगुप्त और चाणक्य देश छोड़ गये और पंजाब में चले गये। दोनों ही राजनीति में निपुण थे। पंजाब पर सिकन्दर के आक्रमण से निर्बलता के बुरे परिणाम को जांचा और यूनानी शासक सलोकस के विरुद्ध एक शक्ति बना ली। छोटे-छोटे राज्य उसको निकालने में असमर्थ थे। चन्द्रगुप्त ने देश सेवा को सामने रखा और उन सबका अग्रणी बन गया और आक्रमण द्वारा सलोकस को पराजित किया। उसने हैलन राजकुमारी से विवाह करके चन्द्रगुप्त के साथ मित्रता बनाली। और सलोकस यूनान को वापिस चला गया। और पंजाबी सेना भर्ती करके यूनान

में ही बसाने को अपने साथ ले गया यूनान में उन सैनिकों ने एक नई बस्ती का नाम मोर्या रखा और एक टापू का नाम जटोनी रखा मोर्या मोर और मुराना गोत्र जाटों के ही हैं यही प्रमाण है कि मोर्या वंश जाट है और जाट था।

चन्द्रगुप्त ने यह बड़ी योग्यता प्राप्त की वह चाणक्य (कौटिलय) मन्त्री की सहायता से पंजाब और मग्ध दोनों राजधानियों का शासक बन गया। चन्द्रगुप्त का बेटा बिन्दुसार साधारण योगयता वाला था 272 ई० पूर्व में मारा गया।

महाराजा अशोक वर्धना

महाराजा अशोक का राज्य प्रबन्ध अपने दादा चन्द्रगुप्त से भी बढ़कर था। उसने अपने राज्य में समस्त भारतवर्ष को शामिल कर लिया और चक्रवर्ती राजाधिराज बन गया और कलिंग की लड़ाई के पश्चात जब उसका हृदय घोर युद्ध के नरसंहार से कांप उठा तो बौद्धधर्म का अनुयायी हो गया। उसने बुद्धधर्म के प्रसार में बड़ी सहायता दी और उसके शासनकाल में बौद्धधर्म की तृतीय महासभा हुई। बुद्धधर्म के कट्टर विरोधी ब्राह्मण पंडितों का बड़ा आदर सत्कार करता था। उसने पशु पक्षियों के बध और बलिदान राज्य भर में बन्द कर दिया। उसने मांस खाना, गाना सुनना और नाच देखना त्याग दिया। भारतवर्ष का यह पहला राजा था जिसने पशु पक्षियों तथा मनुष्यों के लिये चिकित्सालय बनवाए। बड़े मार्गों पर मील-मील पर कूएं बनवाये और वृक्ष लगवाये। महाराजा का एक राजकुमार और एक राजकुमारी भिक्षुक बनकर विदेशों में प्रचार करने गये किन्तु उसके उत्तराधिकारी इतने अच्छे सिद्ध नहीं हुये। उनका बेटा कुनाल अन्धा था। पौत्र दशरथ और समवर्ती शक्तिहीन थे। राजमन्त्री पुष्पा मित्र ने उनको बधकर दिया। और सिंहासन का स्वामी बन गया।

ब्राह्मण राजा पुष्पा मित्र

यह बहुत निर्दयी कठोर हृदय था। उसने बौद्धमत वालों को बहुत कष्ट दिया। देवविधान पुस्तक में लिखा है कि सकाला नामी स्थान में आज्ञा जारी की कि बौद्धमत के साधू और भिक्षओं का बध किया जाये। प्रत्येक साधु के सिर के बदले 100 दीनार पारितोषक दिया जायेगा। इसकी सन्तान के राजाओं ने 112 वर्ष राज्य किया अन्तिम राजा को कनु नामी ब्राह्मण ने बध कर दिया और उसकी सन्तान ने 45 वर्ष राज्य किया।

दक्षिणी भारत के शासक

सतोधंन और अन्धरा ब्राह्मण ये दोनों वंश भी बौद्ध धर्म के कट्टर विरोधी थे। पुराणों में लेख है कि इनकी शाका क्षत्रियों के साथ युद्ध होते रहे। इसने

महाबली परशुराम के सदृश्य शाका क्षत्रियों का बध किया। शाका क्षत्री बौद्ध धर्मी थे। इसी कारण वे अपने-अपने देश के ब्राह्मणों को कोई कष्ट नहीं देते थे। शाका क्षत्रियों का राज्य 22 वर्ष ईसा पूर्व से 200 ई० तक रहा।

भारतवर्ष के उत्तरी सीमा के शासक

पारथिया और बारबतरिया देशों में डीगोटस और इन्टीकोर्स आदि राजाओं के राज्य थे 206 ई० पूर्व इन्टीकोर्स ने कन्धार (गान्धार) के राजा सभागसैन को जो राजा वीरसेन के बाद सिंहासन पर बैठा था। गन्धार से निकाल दिया। जो भटी आदि जाट गोत्रों का पूर्वज था। कुछ समय पश्चात यूनानी यूची डेमस ने इन्टीकोर्स वंशियों को अफगानिस्तान और कन्धार से निकाल दिया। इन्टीकोर्स के बेटे देमत्रेस ने हिन्दूकुश पर्वत को लांघ करके अपनी राज्य सीमा को भारतवर्ष की ओर बढ़ाया और सिन्ध नदी के देश पर अधिकार कर लिया। पुराणों में उसका नाम दत्ता मित्र लिखा है। इनकी जाति युची (यटी) थी। देमत्रेस का बेटा दत्ता मित्र, पौत्र मानइन्द्र हुआ। उनके राज्य की सीमा काबुल से लेकर पांजाल देश नागौर, चित्तौड़, अयोध्या, पंजाब और सिन्ध देशों तक थी। उनकी राजधानी स्यालकोट थी। मथुरा उनके राज्य में शामिल था। भाष्य उद्योग पुराण में इनका वर्णन मिलता है। भारत के कुछ उत्तर पश्चिमी भाग पर पहलु और पार्थियन संघ राज्य करते थे। यह सब क्षत्री कबीले थे।

महाराजा कन्कत्त (कनिष्क)

इस राजा को अनेक लेखक गूजर कुशाना (कृष्ण) वंशी सिद्ध करते हैं। इसने ईसवी 45 के लगभग 23 वर्ष राज्य किया। यह बौद्धमत का अनुयायी था। इसने बौद्धमत के सुधार और प्रसार में बड़ी सहायता की। इसका राज्य चीन के दक्षिण भाग से लेकर समस्त उत्तरी भारत पर था। इसको चीनी इतिहास में युची (युटी) लिखा है। उसके उत्तराधिकारी वर्सक और होसक वासुदेव हुये। सन 95 ई० तक इस वंश का राज्य रहा। इसके अन्तिम राजा ने बौद्धधर्म को छोड़ कर विष्णुमत ग्रहण कर लिया और काबुल देश हाथ से निकल गया। चौथी शताब्दी तक इस देश पर निर्बल राज्य रहे। चौथी शताब्दी ईसा में नाग वंशी राजाओं ने इनको विजय कर लिया और मथुरा नागों की राजधानी बना यह वंश गूजर कहाने से पूर्व यटी था।

गुप्त वंश जाट (कशिकर) (कुक्र)

गुप्त वंश का जन्मदाता राजगुप्त था। डाक्टर जैसवाल ने अपने अंग्रेजी इतिहास के पृष्ठ 115 और 116 पर गुप्त वन्श को कारसकर जाट जाति सिद्ध

भारशिव नाग वंश १५० से २८४ ईसवी तक

पुस्तक अंधकार युगी भारत विषय १० में मत्स्य पुराण की कथा अनुसार भारशिव नाग वंश ने 100 वर्ष धर्म भ्रष्ट (बौद्ध धर्मी) रहने के पश्चात् गंगा जल से पवित्र होकर विष्णू धर्म में प्रवेश किया क्योंकि मध्य भारत में विष्णू धर्म प्रबल था। गणतन्तरी बौद्ध धर्मी वंशों को राज्य स्थापित करने और पुराणों की कथाओं में स्थान पाने की आज्ञा न थी। कथा है कि जब इस वंश ने विष्णू धर्म स्वीकार कर लिया और सनातन धर्म मर्यादा को पुनः उजल करने अर्थ दस अस्व मेद्ध यज्ञ किये हैं तो कथा के वर्णन से इसे कैसे पृथक रक्खा जाये भार शिव नाग जाटों की राजधानियां मथुरा पदमावती कान्तीपुर थीं नागवंश मद्रक जाट गौत्र यदू की शिव शाखा से थे। और शिव को अपना इष्टदेव मानते थे। जैसे तक्ष बाछिक भड़ाइच किलकिल नाग जाट गोत्र हैं। पदमावती वाला वंश टाक टक तथा टक्क कहाता था। टांक जाट गोत्र के 24 ग्राम सोनीपत के निकट खेवड़ा आदि है। अंधकार युगी भारत के विषय 29 में टांक के पूर्वज का नाम राजा गजवकत्र लिखा है। विषय 42 में लिखा है कि भालो जाट गण राज्य पूर्वी पंजाब में गंगा नदी तक और योध्या गण राज्य मरू भोमी (राजस्तान) में फैला हुआ है। नागोर नगर नागों का था और नागर ब्राह्मण नागर जाट यहाँ के बसन्ता थे। पौराणों की कथाओं में बौद्ध धर्म के विरुद्ध द्वेष पाया जाता है। इस लिये बौद्ध धर्मीयों को धर्म भ्रष्ट लिखते रहे। जिस 2 जाट वंश ने विष्णू धर्म स्वीकार कर लिया पुराणों में उन को हो सोर्ण हिंदू लिखा गया ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

लछवी जाट राज्य वंश पहली ईसवी से ३४० ई० तक

डाक्टर काशी प्रसाद जैसवाल के अंधकार युगी भारत के लेख अनुसार जो नागरी प्रचार्णी सभा वाराणसी ने प्रकाशित किया उसमें भू गर्भ से मिले शिला लेखों मत्स्य पुराण वायू और ब्रह्मांड पुराण आदि की कथाओं के अनुसार पाटली पुत्र (पटना) मगध आदि राजधानियों पर पंजाबी मद्रक वंशी लछवी गण ने और भारशिक वंश ने राज्य किया। राजा जयदेव द्वितीय के नैपाल में मिले शिला लेख अनुसार उनके पूर्वज लछवी मद्रक वंशी ने पंजाब से आकर पाटली पुत्र को राजधानी बनाया था। लछवी का जन्म पुष्प पुर (पेशावर) में हुआ था। इसके वंश का यहां पहली शताब्दी से आरम्भ होकर 100 वर्ष राज रहा और वे 300 ईस्वी तक कई बार शासक और बेदखल होते रहे। तीसरी सदी के आरम्भ में मगध की गद्दी पर कोट वंशी राजा सुन्दर शासक था।

गुप्त वंश की उतप्ति

चौथी सदी के आरम्भ में पाटली पुत्र (पटना) के कोट वंशी राजा सुन्दर वर्मन जो कि बे औलाद वृद्ध और विष्णू धर्मी था। उसने बौद्ध धर्मी लछवी राज वंश के चन्द्र तथा चन्डसैन नाम के कवर को अपना दत्त पुत्र ले लिया। इसी दौरान में उसकी अपनी रानी से भी कुंवर ने जन्म ले लिया। गद्दी का असली अधिकारी उसी को माना गया चन्द्र को छुट्टी दे दी। चन्द्रसैन ने लछवी गण को सैना लेकर राजधानी पर कब्जा कर लिया सुन्द्र वर्मन को कत्ल कर दिया। जनता और दरबारियों ने इस धींगा धींगी को अप्राद्ध मान कर यह प्रचार जारी किया कि यह दिल से सनातनी नहीं है इसकी जाति कास्कर पंजाबी जाट है धर्म का शरधालु नहीं अन्याई है पिता का घातिक पापी है। उन्होंने ने वकाटक ब्राह्मण राजा कल्याण वर्मन का आक्रमण कराकर चन्द्रसैन को भगा दिया 340 ई0 में। परन्तु लछवी शक्ति के बल पर 344 ई0 में पाटली पुत्र को फिर विजय कर लिया और गुप्त पदवी धारण करली। राजनीति की चाल से विष्णु मत स्वीकार कर लिया। यही गुप्त वंश पुराणों की कथाओं में धर्म को पूरी उन्नति कराने वाला सोर्ण हिन्दू लिखा गया है।

हीम चन्द्र की खोज अनुसार यह लछवी गण कार स्थान से आने के कारण कारसकर कहाया काकड़ यही है। शालौ शाल बाही बाहिक सब सियाल कोठिये मद्रक वंशी हैं। संस्कृत भाषा के शब्दों में इनकी जाति जत्र जत्रक अर्थात् जट लिखा है आज इनको जाट ही बोला जाता है। यह भी लिखा है कि अगर कारसकर ओछी जाति होती तो राजा सुन्दर वर्मन चन्द्र सैन को दत्त पुत्र स्वीकार न करता। वे जाट गण तन्त्री हैं वे राजा बनने के अधिकारी नहीं जो पूर्वी सभ्यता को अमान्य है। महाभारत की कथा में मद्रको को इसी विचार से निन्दनीय बताया है कि पंजाबी जटिकाओं में केवल एक ही जाति है।

किया है कारस कर ककर और खोखर एक ही नाम के उपभ्रन्स है खोखर जाटों की बड़ी खाप मुलतान देश में रही जिन्होंने मौहम्मद गौरी का रास्ता घेरा था और उसका सिर काट लिया था इसी देश से मिले हुये बिलोचिस्तान में बिलोच जाति का काकड़ जई नाम का कबीला बड़ी खाप रूप में है बिलोचों में बड़ी संख्या जाट वंशों की पाई जाती है बन्या गुप्त वन्श भी गुप्त राज्य वन्श से माना जाता है एक ब्रह्म गुप्त नाम का ब्राह्मण प्रसिद्ध ज्योतिषी भी हो गुजरा है गुप्त राज्य वन्श के पूर्वज राजा गुप्त ने 275 ई० से 300 ई० तक 25 वर्ष राज्य किया इसको श्रीगुप्त भी कहते हैं इसके पश्चात इसका पुत्र घटोतकच सिंहासन पर बैठा गुप्त वन्श के रिस्ते नाते मालवा थानेश्वर जटराज्य वन्शों के साथ रहे ।

घटोतकच सिंहासन पर बैठा

चन्द्रगुप्त प्रथम और समुद्र गुप्त

ये 320 इसवी में सिंहासन पर बैठा, और राज्य बढाकर अधिराज बना लछवी गण की राजकुमारी से बिवाह किया । लछवी गण की राज्य सीमा पुराणों की कथानुसार बिहार और संकेत तक थी । इसके बाद इसका बेटा समुद्रगुप्त सिंहासन पर बैठा । इसने पंजाब के राजगणों को बिजय किया ।

1. मालव (मलह) गण :—इस गण का राज्य मालवा देश पर था इसीके नाम से देश मालवा कहलाया ।

2. अर्जुन यायान :—इनका राज्य मेवात और वर्तमान देश जयपुर पर था ।

3. योधिया :—इन का राज्य वर्तमान काल के बीकानेर, भावलपूर देश पर था ।

4. मद्रक :—इन को राजधानी स्यालकोट थी ।

5. अभीर गण अहीर :—इनका राज्य बदायों, बेतवा नदी के मध्य में था जो आजकल अहीरवाड़ा कहलाता है ।

6. वीर अर्जुन गण :—इन का राज्य नरसिंह पुर के मध्य भाग पर था ।

7. सन्कानीक :—इन का राज्य वर्तमान गवालियर देश पर था ।

8. कारसकर या काक गण :—इन का राज्य मथुरा, अलीगढ देश पर था । यहां काक जाटों के 80 ग्राम आबाद हैं ।

9. खरयारक :—राजा समुद्रगुप्त ने सारे भारतवर्ष को विजय किया । शाका और कुशान वंशी क्षत्रियों को विजय किया । पुराने रीति रिवाज को जीवित कर के अश्वमेध यज्ञ किया । ये महा शूरवीर और कवि भी था । बीन बाजा बजाता था और विष्णु मत का अनुयायी था । सन् 375 ईस्वी में देहान्त हुआ ।

राजा राम गुप्त

यह कायर (भीरु) था। इसने शाका राजा से डरकर अपनी रूपवती रानी ध्रुव देवी उसके रणवास में भेज दी। परन्तु उस के भाई ने इस को निर्लज्जा सहन नहीं किया। दासी के वस्त्र पहनकर शाका राजा को रणवास में वध कर दिया और रामगुप्त को भी बध कर दिया तथा ध्रुव देवी को अपनी रानी बना लिया। उसके राज्य की जन्ता ने यह कार्य बहुत पसन्द किया और चद्रगुप्त द्वितीय के नाम से राजा बना।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)

इस ने पंजाब, बंगाल को विजय किया और मरहौली में लोहे की लाठ बनवाई इस ने शाकात राजा को जिन का राज्य गुजरात काठियपाड़, मालवा पर था। उनको विजय किया।

चीनी यात्री फाहियान

यह तीन साल पाटलीपुत्र में ठहरा। इस ने गुप्त राज्य प्रबन्ध की अति प्रशंसा की है।

राजा कुमारगुप्त यह ध्रुव देवी का पुत्र था सन् 414 इसवी में सिहासन पर बैठा। इस ने परि मितर राजा को विजय किया। इस के शासन काल में हूणों ने आक्रमण किया। सन् 454 इसवी में सकन्दगुप्त ने हूणों को हराया। किन्तु युद्ध जारी रहने से शक्ति हीन हो गया। इस राजा के शासन काल में बुद्ध मत के दो दल हो गए। धनबन्तरी वैद्य के गृन्थ और कालीदास के ड्रामे लिखे गए। इस राजा के शासन काल से 150 वर्ष आगे का इतिहास लोप है।

वर्क राजवंश मालवा

महाजन लिखित पराचीन भारतवर्ष में इस वंश को मोखरी वंश लिखा है इस वंश का जन्मदाता संघ वर्मा था। इस की राजधानी मन्दसोर थी। यह समुद्रगुप्त का समकालीन था इस के शासन काल का समय ईसा सन् 335 A D से 385 तक माना जाता है। इस के दो राजकुमार चन्द्रवर्मा और नर वर्मा थे। चन्द्रवर्मा ने मालवा छोड़ कर मार वाड़ की पुसकर्ण राजधानी स्थापित की। और नर वर्मा मन्दसौर के सिहासन का शासक रहा। गंगाधार से मिले शिलालेख के अनुसार इसका बेटा विष्णु मर्मा स्वतन्त्र राजा था। इसके बेटे बन्धु वर्मा और भीम वर्मा हुए। गुप्त राज्य की शक्ति बढ जाने पर भीम वर्मा उनका आधीन होकर कसुमर्मी का सावंत रहा जब कि शिकन्ध गुप्त का शासन काल था। मन्दसोर से मिले तीन शिलालेख जो कि संस्कृति भाषा में थे इनमें लिखा है जिसका निम्न लिखित अर्थ है।

1. जिन देशों को महाप्रार्क भी गुप्त राजाओं ने भी नहीं भोगा था और न ही हूण राजाओं का आक्षेप हो सका था। वहां यशोधर्मन का राज्य है।

2. पूर्व में लोहित नदी (ब्रह्मपुत्र) से पश्चिम में समुद्र तक उत्तर में हिमालय पर्वत से महेन्द्र पर्वत तक के सावंत जिस के चरणों में गिरते है।

3. जिस के चरणों में प्रतापी राजा मेहरकुल को भी शीश झुकाना पड़ा :— हूण कबीलों के आक्रमण जारी रहने से गुप्त राज्य शक्तिहीन हो गया था। और यशोधर्मन शक्ति प्राप्त कर चुका था। जो कि संघ वर्मा का पुत्र सिद्ध होता है। भानु गुप्त ने राजा यशोधर्मन से मिलकर हूणों पर आक्रमण किया परन्तु यशोधर्मन की स्वतन्त्र होने की याद में बनाई हुई बयाना की लाठ पर यशोधर्मन के पिता विशनु वर्धन की बाबत लिखा है कि उसने महाराणा की पदवी धारण की ऐसा ही नागरी प्रचारिणी पत्र का भाग 12 पृष्टि 342 में छपा है इस में हूण जाति के अत्याचार की चर्चा है। यह भी उपलब्ध होता है कि जाट जाति के नष्ट होने का कारण हूण हुए थे। योरुप और एशिया दोनों महाद्विपों में हूणों का मुकाबला जाटों से ही हुआ था।

परन्तु जाटों ने ही हूणों को निर्मूल नष्ट कर दिया। पृथ्वी पर कहीं भी उन का राज्य शेष न छोड़ा। वे भागते हुए योरुप को रोंदते हुए उन का एक दल इटली पहुँचा। इटली के जाटों ने जो वहां की भाषा में गाथ बोले जाते थे उन का मुकाबिला किया और उन को वापिस खदेड़ दिया। जब भारत को नष्ट करते आने बढ़े तो राजा यशोधर्मन ने उन को मारा और खदेड़ा हूणों को पराज्य करने के पश्चात् राजा शोधर्मन ने उत्तरी भारत को विजय किया।

प्राचीन राजवन्श भादों राज त्रिंगणी काव्य के अनुसार मिस्टर एलन ने लिखा है कि बालादिता ने तो मग्ध की ही रक्षा की होगी यशोधर्मन ने मेहरकुल को कैदी बना लिया। और कुछ समय उपरान्त उसे जाने दिया। अर्ली हिस्ट्री भारतवर्ष पृष्ठ 318, 19 में मिस्टर वेनिन्ट ने लिखा है कि मेहरकुल को यशोधर्मन ने कैद कर लिया था। यशोधर्मन का बेटा शिलादिता बौद्धधर्म का अनुयायी था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसकी बाबत लिखा है कि विष्णु धर्मी राजा ने इसको राज्य से निकाल दिया था जब कि वह काश्मीर के राजा की शरण में पहुँचा और राजा परोसेन से सहायता लेकर फिर सिंहासन प्राप्त किया। राजा शिलादिता के मरने पर राज्य के छोटे-छोटे भाग होकर समाप्त हो गया।

राजा हर्षवर्धन

राजा हर्षवर्धन थानेश्वर राजवन्श में हुआ। इसी राजवन्श का गोत्र भटी सिद्ध होता है। क्योंकि हर्ष के पिता प्रभाकर वर्धन ने परम भट की पदवी

धारण की थी। अर्थात महाबली राजा हर्ष से पहले इनके दादा और दादा मह का इतिहास लोप समझा जाता रहा जिसकी बाबत हर्ष चरित्र का लेखक कवी बाना के लेख से पूरा प्रकाश झलता है। मधुबन में मिली शिलालेख से राजा हर्ष के पूर्वजों की जानकारी मिलती है। चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने केवल हर्ष के राज्य प्रबन्ध को ही लिखा है। हर्ष के दादा का नाम नरवर्धन दादा मह राजवर्धन और दादा आदित्य वर्धन था इन सबकी राजधानी थानेश्वर रही। ये सब छोटे-छोटे राज्यों के मालिक रहे। हर्षवर्धन के पिता प्रभाकर वर्धन ने अपनी राज्य सीमा को बढ़ाया। गुप्त और मालवा के राजवन्शों से मित्रता बढ़ाई और विवाह सम्बन्ध किये। शक्ति बढ़ाकर परम भठ की पदवी धारण की। राजा प्रभाकर वर्धन की माता गुप्त राजा दामोदर मग्ध वाले की पुत्री थी। और प्रभाकर वर्धन का अपना विवाह मालवा के महाराजा यशोधर्मन की सुपुत्री यशोमती से हुआ था। उसने अपनी सुपुत्री राजेश्वरी देवी का विवा कन्नौज के युवराज गृहवर्धन से किया था। इसी प्रकार तीनों राजवन्श रिश्ते से बंधे हुये थे। इनके गोत्र कारसकर, विर्क और भठी जाट थे।

इम्पीरियल गजटीयर इण्डिया बम्बई प्रेजीडेंसी पहली पुस्तक पृष्ठ 16 पर राजा हर्षवर्धन के विषय में लिखा है कि इसने गुप्त राज्य वंशकी को फिर जीवन दिया यानी अपने रिश्तेदारों की सहायता करके राज शक्ती बढ़ाई इसकी दादी गुप्त वन्शी राजा दामोद्रसेन की पुत्री थी।

जाट इतिहास के पाठकों को सूचित किया जाता है कि हर्षवर्धन काल तक उत्तर से लेकर दक्षिण तक जाट राज्य विद्यमान थे। ईसा सन 605 में प्रभाकर वर्धन की मृत्यु हो जाने पर उसका बड़ा बेटा राज्यवर्धन सिंहासन पर बैठा। उसको कन्नौज से समाचार मिला कि मालवा का राजा देवगुप्त सासानी का राजा से मिल गया। दोनों ने कन्नौज पर धावा करके राजेश्वरी के पति विग्रह गुप्त को कत्ल कर दिया। राजेश्वरी उनकी कैद से बच भाग कर जंगल में जा छुपी हुई है। बड़े कष्ट में है। राज्य वर्धन ने बड़ी सेना के साथ चढ़ाई करके कन्नौज में सासानीका राजा को हराया और पीछे धकेल दिया। परन्तु उसके शत्रु ने धोखे की चाल चलकर राज्यवर्धन को वध कर दिया। यह समाचार पाकर थानेश्वर के सिंहासन पर राज्यवर्धन का भाई हर्षवर्धन बैठा। यह बड़ा ही साहसी और जोशिला था। अपने सेनापति को बड़ी सेना देकर कन्नौज के मुकाबले पर भेजा। और स्वयं एक जानबाज दस्ते के साथ उस जंगल में प्रवेश कर गया जिसमें उसकी बहन राजेश्वरी देवी कष्ट में छुपी थी। तलाश करने पर वह मिल गई परन्तु बड़ी

हृदयहारिणी दशा में मिली। जब कि वह चिता में कूदने को तैयार थी। राजेश्वरी को राज छिन जाने और पति के मारा जाने का तो पाश्चाताप था। वह अपनी मर्यादा की रक्षा हेतु भाग कर आई थी। जब उसको अपने प्यारे भाई राज्यवर्धन के मारा जाने का पता लगा तो सर्वस्व ही उसके लिये अन्धकार भय हो गया। चिता में जल मरने के अतिरिक्त उसे कुछ न सूझा। चिता तैयार हो चुकी थी उस समय भागते हुये घोड़ों की सरपट ध्वनि और उनकी तेजी से उड़ते हुये रेत दिखाई दिया। वह आवभात भूल गई। सहसा उसे भाई का तमतमाता चेहरा दिखाई दिया और समुद्र उमड़ आया। चीख लगा कर रोई। अब दोनों बहन भाईयों का एक जैसा हाल हो गया। राजेश्वरी को थानेश्वर चलने पर राजी कर लिया। इसके पश्चात राजा हर्षवर्धन ने सासानिका राजा को पराज्य करके राजधानी पर अधिकार कर लिया। और इसी राजधानी पर राज्य किया। राजा हर्षवर्धन ने पूरे उत्तरी भारत को और मालवा देश को विजय किया। और महाराजा की पदवी धारण की। इन दिनों दक्षिण में महाराजा पुलकेस सोलखी ने राजा हर्ष की देश की कामना की आका और बड़ी सेना के साथ भिड़ कर दक्षिण विजय का साहस तोड़ दिया। हर्षवर्धन ने बौद्धधर्म को फिर उन्नत किया। वह विष्णु धर्मी पण्डितों और बौद्धभिक्षु साधुओं में बड़ी २ सभाओं के मध्य में शास्त्रार्थ करा कर जनता के धर्मों में पैदा हुई विघ्नता को सुझाता रहा। महाराजा अशोक कन्कक्षक के बाद तीसरा राजा था जिसने बौद्धधर्म को विष्णुधर्म से अच्छा माना, और प्रचार किया। इसके मरने के पश्चात मन्त्री ने राज्य पर अधिकार कर लिया और उसके अधिकार से राज्य निकल गया था।

जाट राज्य का पत्न

राजा हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात जाट राज्य निर्बल होकर समाप्त होते रहे हर्षकाल तक जाट इतिहास का समय शानदार रहा महाभारत काल से हर्षकाल तक जाट अथवा चन्द्रवन्श ही उत्तरी और पश्चिमी देशों का शासक रहता रहा। राजा हर्ष की मृत्यु के पश्चात भारतवर्ष के बड़े-बड़े राज्यों पर गूजर और राजपूतों का कब्जा हो गया जाट संघ से राजसत्ता छिन गई जाट राजपूतों के दबैल होकर रहने पर बाध्य रहे उनकी आत्मरक्षा खाप और सर्वखाप पंचायतों के संघटन के बल पर ही रही। छोटे-छोटे जाट राज्य खापों की सहायता के बल पर दृढ़ रहेते रहे। मुगल राज्य का पतन होने पर फिर जाट राज्य उदय हुआ बृज में भरतपुर, धौलपुर, मुडसान राज्य और पंजाब में लाहौर और नाभा पटियाला जीद फरीदकोट आदि सिख राज्य स्थापित हुये यानी राजा हर्ष के 1000 वर्ष पश्चात जाट शक्ती ने फिर सम्भलना प्राप्त किया।

षष्टम अध्याय

जाट, गुर्जर और राजपूत

गुर्जर, जाट और अहीर जातियों की आदत, चलन, ब्योहार और खानपान का निकट सम्बन्ध पाया जाता है। पारस्परिक विवाह करने के अतिरिक्त वे एक ही जाति के रूप में मिलकर रहते हैं 70 के लगभग जाट गोत्र गुर्जर जाति में लीन हुए हैं। इन जातियों में बड़ी संख्या ध्याती वन्शी गोत्रों की है। उनमें ऐसे गोत्र सम्यिलित हैं जो भारत से एशियाई देशों में चले गये और कई शताब्दियों के बाद वापिस लौटते रहे। इन तीनों जातियों का निकटवर्ती होने का एक और बड़ा कारण यह है कि जाट और अहीरों ने बौद्ध धर्म त्याग कर पौराणिक धर्म स्वीकार नहीं किया। ये राजपूत दल में नहीं मिले। इसलिए राजपूतों के शत्रु बने रहे और कई शताब्दियों तक बौद्धधर्मी रहते हुये एक होकर रहना पड़ा पौराणिक धर्म स्वीकार हो जाने पर भी इन जातियों में बौद्ध धर्म के नियम जिवित पाये जाते हैं। मांस खाने से घृणा, छूआछात की कमी, जनेऊ न पहनना, ब्राह्मण का आदर नाम मात्र साधुओं का मान करना यह सिद्धन हो सका कि एक शक्तिशाली क्षत्री संघ एकदम गुर्जर नाम से क्यों प्रसिद्धहो गया। और आधे पश्चिमी भारत पर छा गया गुर्जर नाम के देश,शहर और राजधानियां प्रकाश में आईं। गुर्जर नाम के दल में भारतीय क्षत्री गोत्रों के सिवा कुछ एक हुण कबीले गोत्र भी सम्मिलित पाये जाते हैं इससे यह सिद्धहोता है कि हुण और भारतीय क्षत्रियों ने विदेशी हमलावरों के खिलाफ एक गुर्जर दल नाम की नई शक्ती संघटन की। इसी भांति बड़ी संख्या में जाट गुर्जर संघ में मिले। और सातवीं शताब्दी के आरम्भ से गुर्जर राजपूत इतिहास मिला जुला सिद्धहो रहा है। जैसे गुर्जर संघ राजपूत संघ में बड़ी संख्या में मिला और जो नहीं मिले वे जाट जैसे रहे।

गुर्जर इतिहास का लेखक सर ए कधंम गुर्जर जाति को हूण दल के लोग सिद्ध करता है जो निकाले जाने के उपरान्त भी भारत में ठहरे रहे और फिर शक्ति बढ़ा कर गुर्जर नाम से पुकारे गये थे। बौद्ध धर्मी थे। शुद्ध होकर राजपुरुष कहलाये सर ए कधम के मत की पुष्टी इस प्रमाण से होती है कि गुर्जरों के माननीय गोत्र तुरमन, जावला, छावड़ी आदि। और उन गोत्रों की शाखा गोत्र हैं। कुशान गोत्र को भी विदेशी सिद्ध किया जाता है। जो गुर्जरों का बहुत प्राचीन गोत्र है। वह

इसलिये कि राजा कनिष्क विदेशी कुल से माना जाता है। परन्तु इतिहासकार इस का खण्डन करते हैं कि सिकन्दर की सेना से पंजाब में कुशान राज सेना ने युद्ध किया था।

गौरसी (घोसी) गोत्र को जाबलिस्तान से आया सिद्ध करते हैं। आज भी जावलस्तान में गौर (जई) वंशी पठानों का देश है। भारत में भी गौर वंशी क्षत्रियों की कमी नहीं। ब्राहद्रां अजमेर में गौर राज्य रहते आये और यह जाट गोत्र और राजपूतों में भी है। त्रिकु गौर बीर रक्त शब्द का प्रयायवाची शब्द है जो अटल शूरवीरता के कारण प्रसिद्ध हुए पंजाब के गुंजरों में यह कहावत है कि कुशान त्रिकट और गौरसी (घोसी) पुराने या वास्तविक गुर्ज़र हैं। शेष दूसरी जातियों के आ मिले लोग हैं खटाणा प्रसिद्ध गोत्र को भी खोतानी कहा जा सकता है। मध्य एशिया के इतिहास से यह स्पष्टता सिद्ध होता है कि ईरानी, तुर्कीस्तानी सीथियन लोग चन्द्रवंशी शवी, तक्षक भारत से गए हुए परिवार हैं। और गुर्जन वास्तविकता में असल क्षत्रि और ग्याती (जटी) दल के लोग हैं। राजा हर्ष वर्धन से लेकर गुर्जर भारत के शाषक रहे। और बहुत से गुर्जर राजपूत कहलाए सर ए कंधम सिद्ध करता है कि कुछ राजपूत गुर्जर वंशी हैं। गुर्जर इतिहास के पृष्ट 213 से 218 तक लिखा है कि यदि हम सर् एकंधम के विचार से सहमत हों कि कन्नौज राजवर्ग तूमर गुर्जर थे। आरकयोजिकल सर्वे रिर्पोट जल्द प्रथम पृष्ट 132 और मिस्ट्र भण्डार करके विचार में तूमर गुर्जर थे। तो परिणाम यह निकलेगा कि शाहान कन्नौज गुर्जर थे। डाक्टर ए. एफ. रोडलफ हारनल इस परिणाम की पुष्टी करता हुआ तीन शिलालेखों का वर्णन करता है। वे निम्न लिखित हैं।

1. पे हवा (जिला-करनाल) का कुतवा राजा महेन्द्रपाल के समय का है। जो 885 से 415 इसा तक राजा रहा।

2. बिगरा राजा चौहान का कुतबा हरशा में 972 इसा का है जिसके अनुसार विजयपाल के शासन समय का वर्णन 950 से 975 तक का है। इन दोनों में तूमर का वर्णन है। बिगरा राजा के पितामह (परदादा) चन्दन ने एक तूमर राजा को हराया और चन्दन के पौत्र ने एक तूमर राजा पर आक्रमण किया। कुतबा पेहवा में तूमर वंश के तीन राजाओं का वर्णन जो निकटवंती राजा थे। यह भी लिखा है कि ये राजा जाबला की संतान हैं। जो पहले शाषक था।

3. तीसरे कुतबे पर जावला तुरमन का वर्णन है। रूहेल खण्ड में कहावत है कि गोपाल के सेनापति तूरमन कछवाहा ने 243 में ईरान पर आक्रमण किया, और ईरान से भोपाल तक के सारे देश विजय कर लिये। तूरमन के बेटे सूरसैन ने ग्वालियर विजय करके किला बनवाया। स. 285 में भूरसैन की संतान कछवाहा

कहलाई । जो सन् 933 ई. तक ग्वालियर पर शासक रही । उन से परिहारा ने ग्वालियर छीन लिया । इससे सिद्ध होता है कि कछवाहा तुरमन जावला की शाखा गुर्जर हैं । कुतबा पेहवा से यह सिद्ध होता है कि नवयी शताब्दी तक तुरमन जावला की संतान माने गए । बुन्देलखण्ड का चारण घर्करराय जो शाहजहां के काल में था । लिखा है कि तुरमन ईरान पर राज्य करता था । मिस्ट्र कंघम, भण्डारकर और बैनिस्ट यह सिद्ध करते हैं कि तूमर कछवाहा और पारहीर सब गुर्जर हैं । और जावला राजा तूरमान के संघ से था ।

30 राजा तूरमन हूण कबीले से था

अनेक इतिहासों से यह सिद्ध होता है कि हूण जाति का सरदार जावला था कुतबा मन्दसौर सन् 535 से प्रमाण मिलता है कि मेहरकुल तूरमन का बेटा था जिस को यशो धर्मन ने हराया था हूण राजा था । और हूण का अर्थ विदेशी का है । मिस्टर भण्डार करने गुर्जरों के वृतान्त में पृष्ट 15 पर यह सिद्ध किया है कि जिन्हें अग्निकुल कहा जाता है । परमार, परिहार वास्तव में गुर्जर दल के लोग हैं । इन में तूमर को गुर्जर कबीले के समान सामिल करना चाहिये । इस बात का कि कछवाहा गुर्जर हैं कई बार वर्णन किया जा चुका है । बघे वीर मजबूत सिंह ने बुन्देलखण्ढ के इतिहास में परिहार गवालियर वंश को गुर्जर सिद्ध करने में पूरा प्रकाश डाला है ।

बज़मान राजा प्रतिहार जिसका गवालियर पर राज्य था सन् 933 में लछमन गुर्जर सिंहासन पर बैठा । मिस्टर बैनस्ट स्मिथ भी उसको गुर्जर सिद्ध करता है । बज्रमन और इस वंश के राजा अपने शिलालेख में अपनी कछवाहा की पदवी प्रकट करते हैं : इससे सिद्ध होता है कि कछवाहा भी प्रतिहार ही है ।

कछवाहा अपनी वंशावली को श्री रामचन्द्र जी के पुत्र कुश से मिलाते हैं । कछवाहा वंशियों ने नरवर किले पर अधिकार किया । जिस की बुर्जों पर राजा नल के नाम की बत्तियां जलती थी । राजा नल की सन्तान मुगल राज्य के अन्त तक इस किले में बसती रही अन्त में मरहटों ने इस को छीन लिया । वहां राजा सींधिया का राज्य था । किसी समय यह देश राजा नल के आधीन था । दसवीं शताब्दी ईसा में कछवाहा वंशी एक शक्तिशाली राजा ने मीना और जाटों को निकाल कर मेरे नगर बसाया और उसमें वीर गुर्जरों को बसाया 12 शताब्दी ईषा में वह चौहानों के आधीन हो गया था ।

30 निम्न जाट गोत्र गुर्जर संघ से मिलते हैं

तक्षक, तक्र, टाक, अजना, उड़वाल, बागड़ी. बाठ, बाला, बासला, बांभु,

बांदर, चौरा, भठी, बाबर, बघयाउ, डलेसरा भडाण भिण्ड, भुरया, फलसवाल, पौनी, पोरसवाल, पहलड़, तितरवाल, तंवर, थन्द, ठुकरीला, जागल, जागलाण, जीडड़, जारीजा, चीची, चन्दोल, छोंकर, चलेकिया, दहल, दहडु, राठी, रिवासया, सांगु, सिंघल, संगल, सीधड़, जीदड़, भठीठ, केचर, कटारिया, खोखर, खैरे, खरल, गौरिया, गोमित, गहरवाल चंधस, लाबां, गिहेवाल, मीढ. मुडान, मुठसिरा, बार भलोत, आदि गुर्जरों के तीन गोत्र पुराने और असली गुर्जर माने जाते हैं। कुशान ब्रिकट, और गोरसी। इनमें कुशान दल की बाबत क्षिरवाजा चुका है कि वह यटी, युटी, युची कहलाता था। और सिकन्दर महान् से उन्होंने युद्ध किया। दूसरा ब्रिकट (वीर रक्त) अर्थात् शूरवीर यह नाम उनकी अटल वीरता को प्रकट करता है। तीसरा गौरसी (घोसी) यह गौर वंशी क्षत्रि है। यह गोत्र भारत वर्ष और अफगानिस्तान में फैला हुआ है। और क्षत्रियों के राज्य जिला हिसार और आजमेर देश पर रहे। जिन पर चौहानों ने अधिकार कर लिया। अफगानिस्तान ये इसूलाम धर्म प्रचालित हो जाने पर गोर के स्थान पर गोर बोला जाने लगा। जाबलस्तान में गौर गोत्र अब भी है।

महाराजा कनष्क की मृत्यु पस्चात मुजर संघ के कई राजा अपनी प्रज्यासहित राज्य शक्ती बढाने और शुद्ध क्षत्री घोषित होने के हेतु अग्नी कुन्ड यज्ञ में शुद्ध होकर राजपुत्र तथा अग्नी कुल क्षत्री बने, चाहे इनमें साकासिथियन हुण कबीले शामिल हो तो भी वे बिदेशी और स्वदेशी क्षत्री ही थे याउनमें जाट गुर्जर, अहीर मरहटों में नई शक्ति प्राप्त किए हुए लोग हैं। जाट गुर्जर, अहीर और राजपूतों का अन्तर और मतभेद बौद्ध और विष्णु धर्म को मानने या निभाने में है।

दूसरा अन्तर यह माना जाता है कि हूण कबीले राजा यशोधर्मन से परास्त होने के पश्चात् भारत में गरीब बनकर ठहरे रहे आप स्वयम् को निबलता से निर्वाह करने वाले गुजर कहते रहे। 200 वर्षों में फिर शक्तिशाली हो गए। वे विदेशी होने के कारण क्षत्रि नहीं माने जाते थे। राजा हर्ष की मृत्यु के पश्चात् ब्राह्मणों को अपनाया और चौहाण और चलो किया राजवंशों से मित्रता बढाई। एक बड़े आडम्बर को रचकर शुद्धी यक्ष में बौद्ध धर्म को त्याग दिया। मानों अग्नि में से उत्पन्त होकर दो जन्माक्षात्री अग्नि कुल राजपूत प्रसिद्ध हुए। और बुद्ध धर्म को शस्त्रबल से समाप्त करने की प्रतिक्षा की परन्तु एस धर्म और शक्ति को जिन लोगों ने स्वीकार नहीं किया राज द्रोही धर्म भ्रष्ट दल घोषित किया जाने लगा।

अग्नि कुंड शुद्धी यज्ञ राजपूत संघ की उत्पति

निम्नलिखित कथा अग्नि पुराण जातीय भास्कर हिन्द भाष्य और टाड राजस्थान उर्दू पुस्तकों के लेखों के अनुसार लिखी गई हैं। जब क्षत्री जाति बौद्ध

धर्मी रहकर निस तेज और पथ भ्रष्ट हो चुकी थी तथा बौद्ध राक्षस पृथ्वी पर फैल चुकी थी। वेद शास्त्रों का अपमान हो रहा था। ऐसी दशा में धर्म की रक्षा निमित क्षत्री जाति को नवजीवन प्रदान करने के लिए पण्डितों ने आबू पर्वत पर अग्नि कुण्ड की रचना की। उस स्थान पर पण्डित बड़ी संख्या में एकत्र हुये। ऋषि-मुनी पधारे। ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवताओं को अपने साथ लाये। पण्डितों न बौद्ध राक्षसों की पराज्य के हेतु अग्नि कुण्ड मे आहूतियां देनी आरम्भ की। प्रथम अग्नि कुण्ड में से एक मनुष्य निकला। उसकी आकृति शूरवीरों जैसी थी। फिर अग्नि कुण्ड में से दूसरा मनुष्य निकला। वह प्रतिहार प्रसिद्ध हुआ। तीसरी बार आहूति देने से हाथ की हथेली में से जो मनुष्य निकला। वह शूरवीरों के सदस्य था। वह चालुक्य कहलाया। फिर आहूति देन से जो शूरवीर निकला वह चौमुखा अर्थात चौहान कहलाया। उसका ऊँचा कद चौड़ी छाती, ऊँचा मस्तिष्क, चमकते हुए बड़े नेत्र और तेजस्वी था। उसके हाथ में धनुषबाण था। उसने बड़ी सख्या में बौद्ध राक्षसों का संहार किया। अग्निकुण्ड के समीप एक केले की डोडी पड़ी थी। उसमें से भी एक शूरवीर निकला। वह डोड राजपूत कहलाया। फिर इन सब अग्निकुल क्षत्रियों ने मिलकर बौद्ध राक्षसों का विध्वन्स किया। परन्तु उनके रक्त की जितनी बूँदे पृथ्वी पर पड़ती थी और राक्षस उत्पन्न हो जाते थे। यह देखकर उन शूरवीर क्षत्रियों की देवियों ने राक्षसों का रक्त पीना आरम्भ किया। तब उनकी उत्पति नष्ट हो गई। वे चार रानियां अपने-अपने कुल की देवियां बनीं। चौहानों की आशापूर्णाप्रिति अरिहारों की गाजन माता, चालुक्य की खियोनोच माता, परमार संर्चया माता।

बौद्धराक्षसों के बिध्वन्स के पश्चात जयघोष के नारे उच्चारण किए गये। आकाश से देकताओं ने पुष्प वर्षा की। सब देवी,-देबता प्रसन्न होकर अपने-अपने विमानों मे बैठकर आकाश को उड़ गये।

इतिहास के पाठक इस घटना को बड़ी चिन्ताजनक समझते हैं। इसमें अन्याय, अत्याचार और अधर्म सब प्रयोग में लाये गये। निहत्थे निःसहाय और निर्पराध बौद्ध जनता और भिक्षुओं को बड़ी शक्ति से भेड़-बकरियों की भांति (मूक प्राणियों के समान एकत्र करके बध किया गया। वहाँ ब्रह्मभोज हुआ। यह सब कार्य प्रजा के रक्षक राजाओं और नाविक पण्डितों के हाथों से हुआ। ऐसे अत्याचार को भी बिरता समझा गया। ऐसे धर्म को निश्चय और श्रद्धा से कौन मान सकता था। जो नहीं माना गया उसे शस्त्रबल से मनाया गया। ऐसे धर्म धारियों के मुख से कहना उचित नहीं कि इस्लाम धर्म शस्त्र बल से फैला है। अग्नि कुल राजपूत मध्यभारत और कई दूसरे देशों के भागों में सफल हुए। ब्राह्मणों की

लेखनी ने उनको शुद्ध क्षत्री भी सिद्ध कर दिया। परन्तु पंजाब आदि जाट देशों में उनकी दाल नहीं गली। जाट बौद्धधर्म पर ही डटे रहे। और कई शताब्दियों तक तक संगठित रहकर टक्कर लेते रहे। जाट, राजपूत की मतभेद वाली शत्रुता बनी रही। ब्राह्मण प्रचारकों को जाट प्रान्तों से खदेड़ा जाता रहा। ब्राह्मण जाटों को कोसते रहे। उनको धर्मभ्रष्ट, शूद्र और ब्राह्मण के दर्शन न करने वाले राक्षस पुकारते रहे।

जब बौद्ध धर्म के नियम भंग होते रहे तो वह अपनी मृत्यु को स्वयं प्राप्त हुआ उस समय वह जाट देशों से भी उठ गया। साधुओं के मतों के अनुयायी होते रहे। अन्ततः पौराणिक मत जाट देशों में ही फैल ही गया। ब्राह्मण उनके पुरोहित और जाट उनके यजमान बने। फिर भी मतभेद तो बना ही रहा। जाटों ने मूर्तिपूजा और अंधविश्वासी बातों को नहीं अपनाया। कर्मकाण्ड की पाखण्ड भरी बातों को आलोचना करते रहे। यजमान और पुरोहित का निभाव ऊँट और भेंसे जैसा हो रहा। जाटों ने भागवत की कथाओं से मुँह मोड़ कर सदैव साधुओं के सत्य उपदेश श्रद्धा से सुने। जाट और राजपूत दलों के लोग परिवर्तित समयनुसार मिलते रहे। जाट राजपूत दल में मिलने से राजपूत कहलाये। राजपूत जाट दल में मिलने से जाट कहलाने लगे। अन्त में पृथ्वीराज के शासनकाल तक जाट दल पराजय होकर राजपूतों की प्रजा बन चुका था। जाट और राजपूतों का इतिहास परस्पर गुँथा हुआ है। इतिहास के नेता यह सिद्ध करते हैं कि जाट, अहीर गुर्जर राजपूत सब एक ही श्रेणी के लोग हैं।

पौराणिक धर्म ने केवल राजपूतों को शुद्ध क्षत्रि घोषित कर दिया। इसलिये लिए अनेक जातियों के लोग स्वयं को राजपूत और राजपूत वन्शी कहलाने में अपनी महान्ता समझने लगे। सुनार, गड़रिये, छीपी, लोधे, कोरी, कुर्मी रवे गवार्यां बन्जारा और कहार आदि जातियां भी स्वयं को राजपूत कहने लगीं। राजपूत शासनकाल और इनके शक्तिकाल में जो दल उनके साथी तथा सहायक बनते रहे वे सब राजपूत कहलाने लगे।

अग्नि पुराण की कथा में बनावट

इतिहासकार अग्निपुराण की कथा को सत्य स्वीकार नहीं करते कि अग्नि में से नये क्षत्री उत्पन्न हुए। अथवा ऐसा होना सम्भव नहीं है। इतिहासकार अग्निकुन्ड की हृदय विदारक घटना को बौद्ध भिक्षुओं की जान से अधर्म का नग्न नृत्य सिद्ध करते हैं। प्रमाणों से यह सिद्ध नहीं होता कि किसी भी समय क्षत्री जाति निस्तेज और भ्रष्ट हो गई थी। और क्षत्रित्व से गिर चुकी थी। इतिहासकारों के सिद्धान्त के अनुसार क्षत्रि जाति वीरता तथा क्षत्रित्व में आदिकाल से वर्तमान

काल तक सदा जैसी वीर बनी रही है कोई निर्बलता अथवा अन्तर नहीं आया है। बौद्धधर्मी बुद्धभिक्षु राक्षस नहीं थे। वे अहिंसा परमोधर्मी के सिद्धान्त को मानते थे कोई इतिहास विशेषज्ञ केवल अग्निकुल या दूसरे राजपूतों को ही शुद्धक्षत्री वन्शी नहीं मानता। उनको दूसरी समीपवर्ती जातियों से पृथक हुये लोग और कुछ विदेशियों की सन्तान बताया जाता है।

आदि काल में भारतीय आर्यों के जीवन निर्वाह के तीन मुख्य साधन थे। कृषि करना, गाय, भैंस, ऊँट भेड़, बकरियों के रवड़ पालना और शस्त्र विद्या में परिपूर्ण होकर शत्रुओं से निपटने के लिये देश और परिवारों की रक्षा के लिये संघ रूप में रहकर जान देने के लिये तैयार रहना। कुछ समय बीतने के पश्चात आर्य लोग चार भागों में विभक्त हो गये। ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य, तथा शूद्र सेवा करने वाले परिवारो शस्त्र विद्या ग्रहण करना छोड़ दिया। देश की रक्षा और न्याय करने का भार केवल क्षत्रि परिवारों के ऊपर डाल दिया। लड़ाई झगड़ों से निश्चित रहकर सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। लड़ाई के समय दूसरे साधनों से क्षत्रियों की सहायता करने लगे। क्षात्र दल जिसको शस्त्र बल और वीरता का गर्व प्राप्त था। दूसरे दलों के अग्रणी और रक्षक बने रहे। दीर्घ कालोपरान्त ज्यों-ज्यों जनसंख्या में वृद्धि होती गई तथा रक्षा का दायित्व बढ़ता गया। राजा गणपति अथवा गणेश योग्यता अनुसार प्रधान नियत होने लगे। गणेशों के मान में वृद्धि होती गई। उनको पूजने भी लगे। जब जनसंख्या और आर्यों की आबादी (बस्तियों) का प्रसार दूर देशों तक फैल गया तो वेतन नियत होकर सेना भर्ती की जाने लगी। और जनता से करके रूप में आय का कुछ भाग लिया जाने लगा। क्षत्रि युवकों के लिये घरेलू धन्धे छोड़कर सेना में भर्ती हो जाने में सुविधा हो गई। भारतीय क्षत्रियों ने भारत को सदा विदेशी आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखा। पड़ौसी देशों की रक्षा में सहायता की। अन्य देशों में अपने नगर बसाये। वे विख्यात वीर प्रसिद्ध हो गये। 350 वर्ष ईसा पूर्व जब सिकन्दर महान ने भारत पर चढ़ाई की तो पंजाब के छोटे-छोटे गणराज्यों ने हर पड़ाव पर घोर युद्ध किया। 19 मास में बड़ी कठिनता से सतलज नदी तक पहुँचा। यदि वे सारे एकत्र होकर युद्ध करते तो सिकन्दर को सुगमता से मार भगाते। फिर भी सिकन्दर के साथी एरियन ने जाट दलों की वीरता की प्रशंसा की है एक बड़ी शक्ति की कमी को राजा चन्द्रगुप्त मौर्य ने अनुभव किया और उन सब गणराज्यों को अपने झण्डे के नीचे एकत्रित करके यूनानियों को भारतवर्ष से भगा दिया। महाराजा अशोक ने सेना के बल पर चक्रवर्ती राज्य किया।

पहली शताब्दी ईसा में राजा कन्कक्षक ने भारतीय सेना के बल पर

चीन, तुर्किस्तान, ईरान, अफ़गानिस्तान और उत्तरी भारत पर राज्य किया और चौथी शताब्दी तक कारसकर गुप्त वंश की सेना बड़ी शक्तिशाली रही। चौथी शताब्दी ईसा में मालवा और स्यालकोट के राजा यशोधर्मन ने जो सिर्फ जाट था बहुत से विदेशी अत्याचारी हूण आक्रमणकारियों को पराजय करके भारतवर्ष से ऐसा खदेड़ा कि उन्होंने पीछे फिर कर देखा तक नहीं। छठी शताब्दी सातवीं ईसा में हर्षवर्धन की सेना ने बड़े २ वीरता के कार्य किये। पूरे भारतवर्ष पर शासन किया और शान्ति स्थापित की। फिर अग्निपुराण की इस अप्रमाणिक कथा को कौन सत्य स्वीकार कर सकता है कि क्षत्रि जाति निस्तेज और पथ भ्रष्ट हो गई थी तथा बौद्धराक्षस ये राजपूतकाल मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल में भी क्षत्रि जातियों ने तो बड़े 2 वीरता के काम किये। परन्तु इस काल में कोई योग्य और तेजस्वी कोई बड़ा नेता नहीं हुआ। जो भारत की फूट पर काबू पाकर पूरी शक्ति से विदेशियों को रोकता। वर्तमान काल में भी जाट, अहीर, गुर्जर, राजपूत मरहठा प्रथम श्रेणी के शूरवीर सैनिक हैं। वर्तमान युग में भी उनके जीवन निर्वाह का साधन वही तीन मुख्य कार्य हैं। वे सब जातियाँ शुद्ध क्षत्रि परिवार हैं। सेना में बड़े चाव से भर्ती होते हैं। अग्नि पुराण की कथा सत्य को छुपाने और ब्राह्मण पंडितों की धूर्त करतूत पर परदा डालते हुये घड़ी गई।

जटवा राजपूत का मिश्रण

जाट और राजपूतों के कुछ गोत्र मिले-जुले पाये जाते हैं इसलिये इन दोनों जातियों का इतिहास गुँथा सा प्रतीत होता है राजपूतों का यह कहना चला आ रहा है कि सारी जाट, अहीर और गुर्जर जातियाँ जाति से खारिज किये हुये राजपूतों के टोल हैं जिन्होंने पौराणिक धर्म के नेम को भंग करके विधवा विवाह जारी किया परन्तु इतिहासकारों ने राजपूतों के इस दावे को असत्य सिद्ध कर दिया यह कि जाट जाति राजपूत जाति से अति प्राचीन है और विधवा विवाह की प्रथा शास्त्रों के अनुसार है और राजपूत संघ साका सीथियन हुण गुर्जर और आदि भारतीय आर्यों का मिला-जुला संघ सिद्ध हो रहा है।

जाटवा राजपूतों के गोत्र मिले-जुले होने के तीन कारण स्पष्ट हैं एक यह है कि गुर्जर संघ जाट परिवारों से मिलकर बना था और कुछ समय पश्चात गुर्जर संघ की बड़ी संख्या राजपूत संघ में बदल गई जब राजपूत संघ की शक्ती बढ़ती गई। और जाट परिवार राजपूत संघ में मिलकर राजपूत कहलाने लगे गोंदल डागर कटारा सरा दहीया छोकर जटरारणा जाखड़ शाल तिवारणा अंजोहा तक्षक बालक सांखो जोहीया गहरवार आदि जाट निकट काल तक राजपूत दल में आ मिलते रहे हैं जब मुसलमान शासन का गलबा हो जाने पर राजपूतों की कुवारी लड़कियाँ छीनी

जाने का भय हुआ तो बाल विवाह प्रचलित किये गये। धर्म शास्त्र में बाल विवाह को मान्यता दे दी गई परन्तु बालविधवा और विधवाओं की संख्या बढ़ती गई। यह वृद्धी कन्या बध और सती की हृदय बिदीर्ण प्रथा जारी करने पर भी रुकी नहीं परदे के भीतर घरों में बन्द रखकर भी उनकी कैदियों जैसी निगरानी आवश्यक थी जिन राजपूतों ने ऐसी कठिनाइयों को सहन न करते हुये अपने परिवारों में विधवा विवाह प्रचलित किये वे जाति से खारिज होकर जाट गुर्जर आदि जातियों में मिलते गये उनके नये गोत्र बने जो थोड़े ही हैं और निकटवृति हैं जाट और गुर्जरों में तंवर चौहान गोत्र दूसरे राजपूत गोत्रों की अपेक्षा विशेष है इसका खास कारण यह है कि इन दोनों वंशों के राज्य 1200 इसा तक जाट देश में रहें और उनके परिवार जाट देश में बस गये थे अनंगपाल और पृथ्वीराज के राज्य समाप्त हो जाने के बाद उनके लिये जाटों में विलीन हो जाने में ही भभिक्षत के लिये सुभीता थी राजपूत संघ बनने से पहले यह दोनों गोत्र तक्षक मोर्याया पाण्ड वन्शी जाट थे और राठौरों को हिस्ट्री आफ टाड में गहरवार (ग्रेवाल) ही लिखा है।

जाट राज्यों के स्थान पर राजपूत राज्य

इतिहासों में बिखरे पाये जाने वाले लेखों भूगर्भ से निकले हुये शिला लेखों से और भाटों की लिखी अनेक वंशावलियों के मुताबिक पश्चिमी व उत्तरी भारतवर्ष में ईसा 800 वर्ष पूर्व से राजपूती राज्य आरम्भ होने तक केवल जाट राज्य रहते आये थे वर्तमान काल में भी ढिल्लों मोर्या मोर सिन्धु दहीया मल्ह मद्रक योरया जोहिया मान मल्क कठ (कठला) जाखर राष्ट्री (राठी) चीमा दर्द रश्क तुशार लल्ल सरोहा अड़ गान्धार काकर (कारशकर विर्क भठी जट्रक तक्षक बाछक) पुराने राजवन्श सब जाट गोत्र हैं। महाभारत युद्धकी घटना से लेकर 800 ईसा पूर्व तक का इतिहास लोप है इन 2000 वर्षों राज्यों का ठीक हाल नहीं मिलता श्री स्वामी दयानन्द जी ने युधिष्ठिर की 30 पीढ़ियों तक के चलने वाले राजाओं के नाम लिखे हैं इनमें भी खानदान बदलते रहे दिखाये हैं मालवा जोधपुर बीकानेर उदयपुर जयपुर कन्नौज आदि देशों में जाट राजधानियों के चिन्ह और वृतान्त मिलते हैं। केवल यह बताना है कि वर्तमान राजवन्शों ने राजपूताने पर कब से अधिकार जमाया तथा राजपूत, जाट, अहीर, गुर्जर संघ ही बदले हुये नाम हैं। अजमेर में बहुत प्राचीन समय से तक्षक और गौर वन्शी जाटों के राज्य रहते आये। गौर वन्शी राजाओं का जाट जाति से होने के शिलालेख मिलते हैं। और चौहाणों को तक्षक वन्शी सिद्ध किया जाता है।

उदयपुर – अलओरी के लेख अनुसार चित्तौड़ पर जब जटराणा वन्श का राज्य था। जटौड़ कहलाता था। वहाँ का अन्तिम जाट राजा मानइन्द्र था। उसके

उत्तराधिकारी गहलावत राजपूत बने। जब बलभीपुर के मौर्य वन्शी राजा को शत्रु ने मार दिया तो उस राजा की गर्भवती रानी से पुत्र उत्पन्न हुआ। बड़ नगर की कमला नाम की ब्राह्मणी ने उसका पालन किया। उसका नाम गोहा रक्खा। उसकी सन्तान गहलौत कहलाई। गोहा के वन्श में बाप्पा रावल बड़ा शूरवीर हुआ युवा वस्था प्राप्त करने पर जाट राजा मानइन्द्र की सेना में भर्ती हो गया। और सेनापति बन गया। राजा मानइन्द्र के कोई सन्तान न थी। उसने बाप्पा को युवराज बना लिया। और राजा की मृत्यु पर वह राजा बन गया। राजा मानइन्दर का अपना जटराणा परिवार रुष्ट होकर देश छोड़ चला गया। बाप्पा ने काल भोज बाप्पा रावल की पदवी धारण की। उसके वंश के राजा राजपूत काल में राजपूत दल में सम्मिलित हो गये।

पंडित अमीचन्द जी जाट मीमांसा नामक पुस्तक में लिखते हैं कि चित्तौड़ के देश में सरसूबन जाटों की राजधानी थी। इस वंश के 14 राजाओं ने राज्य किया। जिनका वर्णन सांगवान गोत्र की वंशावली में किया गया है।

जयपुर—जयपुर राजवंशी कछवाहा केवल 933 ईसवी में जयपुर के प्रदेश में आये। इससे पहले इस देश में मीने और जाट राज्य थे। जयपुर देश में आने से पहले कछवाहा छोटा सा राज्य ग्वालियर में था। वहाँ से परिहार राजा लक्ष्मण ने इनको निकाल दिया। उसके पश्चात भेर (अम्बेर) नाम की राजधानी स्थापित की। जयपुर देश में एक नेहरा नाम की जाट राजधानी थी। जिसपर नरहरी देव की सन्तान के नेहरा जाट राज्य करते थे। इनको कछवाहों ने निर्बल कर दिया था और अकबर मुगल बादशाह ने इस राज्य का अन्त कर दिया। टाड राजस्थान में इनका वर्णन है।

जोधपुर—इस देश पर दाहिया जाटों का राज्य था। उनकी राजधानी राजगढ़ थी। इस वंश के एक राजा का नाम कड़वासरा राव था इसका खुदवाया हुआ एक शिलालेख जोधपुर राज्य में मिला था। उसके पौत्र जैन्तसिंह का 1215 ईसा का खुदवाया हुआ एक पत्थर भी मिला था। जिसका वर्णन इण्डियन इन दी कावेरी पृष्ठ 87, 88 पर लिखा है कि जोधपुर के प्रसिद्ध चारण महनुत नैनसी ने लिखा है कि दहिया राजाओं की एक राजधानी गोदावरी नदी के तट पर थालेसर गढ नाम की थी। जोधपुर राज्य के क्षेत्र में फालौर कोट दहिया राजा का बनाया हुआ है। इस देश पर राजा जयचन्द कन्नौज वाले की सन्तान ने 12वीं शताब्दी ईसा में राज्य स्थापन किया। जब कि मौहम्मदगोरी ने कन्नौज राठौर राज्य का अन्त कर दिया था।

बीकानेर—जोधा जी का बड़ा बेटा बीका जी और जोधा जी का भाई

कादल छापामार डाकू थे। बीका ने 40 वर्ष तक यह कार्य किया उस समय में बीकानेर राज्य के स्थान पर 6 जाट राजधानियां थी। 1. गोदारा 2. जोहिया 3. सारण 4. पोनियां 5. सीहाग 6. बहनीवाल। जोहिया और गोदारा में शत्रुता रहती थी। गोदारा रइस जोहिया से भयभीत रहते थे। उन्होंने बीका से याचना की कि आप जोहिया के विरुद्ध हमारी सहायता करें। तो हम आपको अपना राजा मान लेंगे। एक रुपया प्रति घर और प्रति पक्का बीघा करके रूप में देंगे। सदाने सिंहासन पर बैठने वाले राजा का राजतिलक गोदारा पूँजीपति के हाथ से होगा। भेंट में जो सुनहरी स्वर्ण मुद्रा आयेगी। शेखसर का रइस लेगा। और चांदी की मुद्रा पर रुदनया रसई का अधिकार होगा। बीका जी राजा नियत हो गया। परन्तु जोहिया ने उसका एक पग भी आगे नहीं रखने दिया। जोहिया का शूरवीर राजा शेरसिंह था। और उसकी राजधानी रंगमहल थी। जो वर्तमान काल के सूरतगढ़ के निकट खण्डहर है। शेरसिंह के मरने के पश्चात बीका ने सब राज्य समाप्त कर दिये। पोनिया ने अधीनता स्वीकार नहीं की। तबाह और बेघर होकर हिसार देश में बसे।

के 6 जाट राज्य

1. पोनिया:—300 ग्राम परगने बहादरा अजीतपुर, सेदमुख, राजगढ़ दरेवाहु सांखु।
2. बहनीवाल 150 ग्राम—परगने बोकरका, सुन्देर, मनोहरपुर, कुईबाई।
3. जोहिया 1100 ग्राम—परगने जैतपुर, कबातू, जेतपुर महाजन, पीपसर, उदयमुरव।
4. गोदारा—700 ग्राम परगने पुरनदास, गोसाई सर; सरकलां, शेषसर गरीबदीसर, जंगीसर।
5. सारण—300 ग्राम—केजर, फुवाग, कोचावास, सरकाल सवानीवारनु।
6. सीहाग—150 ग्राम—परगने रावतसर, ब्रह्मसर, वान्दुसर कंडाटली

अजमेर—मीरवाड़ा, बूंदीसरोही पर भी गौर वंशी जाट राजाओं का राज्य था उस वंश के राजा का 547 ईसवी का खुदाया हुआ शिलालेख उदयपुर की साधड़ी नामी ग्राम में मिला था। जिसका वर्णन टाड राजस्थान में लिखा है।

मेवाड़—देश में कोट खोखर राजा की राजधानी थी। पहलुत्रोट के जाट पलहू नाम के जाट राजा की राजधानी थी वहाँ पलहू गोत्र के जाट वर्तमान काल में भी बसते हैं।

हांसी—हांसी में गठवाला और भादरा पर; भादो गौर जाटों का राज्य था

मथुरा—मथुरा देश पर नुवाल जाट राजा राज्य करते थे। अब भी इस गोत्र के 90 ग्राम एकत्रित बसे हुए हैं।

सप्तम अध्याय

३० प्रसिद्ध जाट गोत्रों की वंशावलयां

जाट संघ में गोत्रों की संख्या लगभग एक हजार है उनमें मुल प्राचीन गोत्र थोड़े है जिनकी वंशावलयों के आधार पर जाट जाति की उतप्ती के खोज में सहायता मिली है बाकी घने गोत्र बड़े गोत्रों की शाखा है जिनका फटावनिष्ट तथा मध्य-कालीन है भारत में जातियों का विस्तार होने से प्राचीन गोत्रों में से नए-नए नामों की जातियां बनी हैं परन्तु गोत्र वही के वही हैं इतिहास रहने से इतिहास के खोज में यह जनना सहज हो जाता है कि कोन-कोन जातियां किस मात्र जाति के किन गोत्रों से बनी है गोत्रों से ही भिन्न जातियों में मिले हुए जा पेहचाने जाते हैं। जैसा कि बनया गुजर बैरागी नाई चमार आदि जातियों में जाट गोत्रों की संख्या बोहतात देखी जाती है।

कुछ प्रसिद्ध गोत्रों का थोड़ा-थोड़ा हाल और उन गोत्रों की उतप्ती के विष्म में लिखागया है जिन का कुछ हाल इतीहासों में बिखरा अथवा भाटों के लेखों में पायो गए हालात से बड़ी सहायता मिली परन्तु अनेक भाठों की लिखी वंशावलयों में बनावट भी पाई जाती है वंशावलियों में बनावट और हेर फेर करना भाठों ने अग्नी कुण्ड की शुद्धी यज्ञ के पस्चात राजावों और प्रोहित पण्डितों की राजनीतिक चाल के प्रभाव वंश और विशेष दान दक्षणा पाने के लोभ में आरम्भ किया राजपुती दौर में कुछ एक जाट नेताओं ने भी स्वयं को राजपुत वंशी लिखाया प्रीणामय यह हुवा कि एक ही गोत्र की पृथक-पृथक वंशावलियां लिखी गई जैसा कि मान सिहाग दहिया शरोमणी गोत्रों के आग्रनी नेतावों ने स्वम को राजपुत वंशी लिखा दिया और ग्रावट के तरीके पर परन्तु उनको नऐ खोजने मिथ्या सिद्ध कर दिया दहिया जाखडमान सिहाग आदी गोत्र जो 5000 साल से जियादा पुराणे सिद्ध हो रहे है उनकी उतप्ती बीस तीस पीढीयों के अन्त्र दिखा दी गई।

इस इतिहास में मुल प्राचीन गोत्रों का कुछ हाल लिखा जा सका है यदु पुरु द्रेहयु दर्द शबी तक्षक बाछक मल्ह मद्रम रश्क तुषार कारस्कर कुकर काक संधु नुहवाल मान राठी कठ मलक योध्यागिल हेंर मुल्लर पोन भद्र जखभद्र हंगा दही भद्र लो कल्हणभद्र ब्रह्मभद्र अंजना जटाशंकर जटक अतीशूर भद्र चोल चहार गिल चालाक्य बुद्धवार धारण महे माही विक दिल्लो मीढ अड़ गोंन्धार गौर लाबा आदी

यदुवंशी गोत्र

शंनशनीवाल छोकर भठी टिवाण जंजोहा सियाल सिद्धू बंगयाल भुर्याभुरया पर्वा धारीवाल धमाल योध्या (जोहीया) ढाका रण धावा काजला धेबासहो सोप सरोप सपरा कलवाल खरे कोरड़ सरोटा कल्याण घल्लु गद्धर गजरा लधर महर मण्ड भट्ट महोया मुलतानी नजरा होंजन हतयार रांभा खमन गदगर हाला सणि शौराण मुण्डा किलोरया कुहाड़ कलहारी खेलरी खट्टु गोंदल डागर तोले जस्पाल सण्डराण घोष राठी रुहल धन्खड धनोंहा आदरायण ठुकरीला सिहाग मान दलाल देशवाल हेर भुल्लर छैल छिम छीलर छिकारा साही साण्ड साज भगु मर्दक की मदरायण नुहवाल शवी तकक्षक बाछक टोकस बाछ काली धामण काली रामण किलकिलनाग कुक्कर कासकर काक कक्क काकरायण भड़ाईच चौहाण फौगाट बैंस मर्ड तेवथ्या मल्लकठ चाला लल्लय सरोहा तुषार टाक सगरोहा दुसर सिद्ध आदी और भी होंगे जो खोज ना जा सके।

मद्रक

पुस्तक महाभारत और हिष्ट्री टाड के लेखों अनुसार भद्रको की राजधानी सियाल कोट रहती आई जिसकी शाकिल नग्री भी लिखा जाता रहा है और गजनी और कोटा भी इसी वंश की राजधानी थी महाभरत कर्ण पर्व में राजा शिल को मद्रक कहा है और सियाल कोट उजुडकी खुदाई के एक शिला लेख में भी जिसका जिकर टाड साहब ने किया है उस पर राजाशिल्य को मट्द्र जाट लिखा है नकुल वा सहदेव की माता राणी मादरी शिल्य की बहण थी जाटों के मद्र मद्रायण गोत्र मद्रक ही है नील पुराण में एक कथा है कि ब्यास और सत भामा नदयों को पार करके मद्रक देश अरम्भ होता है उस देश में देवकानाम की (एक प्रसिध नाला) नदी बहती है प्राचीन कथावों मे रावी और चनाब के मध्य देश कों मद्रक देश लिखा है पुरानी इतिहासकार टालवी और अर्बी अलब्रोनी सियाल कोट और शाकिल नग्र एक ही मान्य है भठी गोत्र मद्रक वंशो है वह अपनी प्राचीन राजधानी सियाल कोट और गजनी दोनु को बतलाते हैं।

भठी

भठी सुबश बड़ावा पुराण गोत्र होता हुवा और बड़ी संख्या गोत्रों का पित्र है जैसलमेर का भठी राज्य वंश महाराजा रणजीत सिंह शेर पंजाब और बटयाला नाम आदी फुलकीयां सिद्ध राजवंश सब भठी गोत्री हैं।

इस गोत्र का भठी नाम हो जाने के बिषये में दो कथायें हैं एक यह कि भठी गौत्र का बड़ा नेता जब गजनी राजधानी से निकाला जाकर रेतले भठ देश में आकर

रहा इसी कारण भठी प्रसिद्ध हो गया दूसरी कहाणी जिसको सरजैमसटाड और जनंल जरूल सर कंधम भी लिखते है ये हैं कि खुरासानी बादशाह ने राजा सभाग सैन को गजनी से पराज्य करके निकाल दिया था उसने शियाल कोट को राजधानी बनाया उसके एक बेटे का नाम भठी राव था जिसकी सन्तान भठी प्रसिद्ध हुई यह भी पता चलता है कि गजनी को अन्तिम मद्रक राजा का नाम सभाग सैन था राजा साहसी भी भठी वंशी हैं और भठी गोत्र की शाखा 40 गोत्र और हैं।

हाला

हाला गोत्र के भाठ ने लिखा है कि राजा गज के एक पुत्र के एक परिवार ने जो राजा शालबाहन का भाई था गुजरात प्रान्त सोरठ को अपनी राजधानी बताया और उसकी बोहोत पीढीयों ने वहां राज्य किया दशवी पीढी में बड़ा शक्ती शाली राजा हालार हुवा उहकी 22 पीढीयों ने नासिक देशत का राज किया जिसमें बंगाल कर्नाटक गुजरात सिन्ध काशमीर शामल थे इस वंश का राज्य बिक्रमी 187 से आरम्भ होकर 226 बिक्रमी तक रहा इस देश को हालार कहा जाने लगा सुबा सिन्ध में हाला गोत्री मुसल्म जट और युपी वा पंजाब प्रान्तों में हालहिन्दु जाट पाए जाते हैं।

सारण

सारण गोत्र भठी की शाखा है इस गोत्र के बड़े का नाम सारण को राव था यह गोत्र बीकानेर के भुडदेश में पाया जाता है बीकानेर राज्य से राठोड़ों को पग जमने तक सर्ण की एक राजधाणी थी जिसका हाल राजपुत राज्यों के हाल में लिखा जाचुका है।

सिद्धु

यह गोत्र जैसलमेर वंश के भाईचारे से हैं इस गोत्र के जन्म दाता का नाम सिद्ध बुराड था सिद्धू की सन्तान में फुल बडी प्रब्धि वाला हुवा उसकी सन्तान के पटयाला नाभा जीद मलोध कपुरथला राज सब फुलकियां कहलाए उन का यह बिचार भी हैं कि हम राजपूत है यह इतिहास उनको याद नहीं रहा कि सब भठी मद्रक जाट है भटण्डा देश में सिद्ध गोत्र की बड़ी संख्या है जो सिरसातक फैली हुई है।

टिवारणा जन्जोहा श्याल

यह तीन्यो गोत्र सुवम को राजा रिसालु की सन्तान मानते है उनमें कहावत है कि राजा रिशालु को शत्रु ने प्राज्य करके मार दिया तो उसकी रानी तीन पुत्रों सहित निकल गई उनके छोटे नाम रखजिए टैहु सेहु जेहु जिनसे टिवारणा जन्जोहा

शाल गोत्र चले यह मुसल्मजाट है टिवारणा हिन्दु भी पाए जाते हैं मुसल्म टिवारणा राजपूतलिख ने लगे हैं पाकिसतान जिला शाहपुर में मिठा टिवारणा और हडाली टिवारणा फैमली के बड़े प्रसिद्ध ग्राम हैं फतेह खान मोतीयां वाला महाराजा रणजीत सिंह की सैना में माना हुवा शूरवीर था ब्रिटिश दौर में सर उम्रहयात वा सर खिजर हयात माननिय रईस और सरखिजर हयात पंजाब के चीफमिन्स्टर रहे जन्जोहा नुरपर्ल के देश में बसे हुए हैं और वे भी सुवम को राजपुत कहने लगे हैं।

सिहाग मान दलाल

इन चारों गोत्रों के भाठ इनको धनाराव राठोड़ की सन्तान सगे भाई लिखते हैं परन्तु इतिहास भाठ की लिखत को असत्य सिद्ध कर रहा है क्योंकि मान गणराज्य का नाम महाभारत सभा पर्व में है और सिहाग का भी मान और सिहाग गोत्रों का फैलाव पछमी पंजाव राजिस्तान और मान गोत्र पंजाब में बड़ी संख्या में है पंजाबी मान वासिहाग दलाल देश वाल को नहीं जानते भटन्डा के मान हेर भुल्लर गोतों को भाई मानते हैं हेर भुल्लर सिहाग गोत्रों का आज से दो हजार साल पहले इरान में बसा पाया जाता है सिहाग राजावों की मेवाड़ देश में कोट खोखर राजधानी रही और पल्हु कोट दूसरी राजधाणी थी और बीकानेर में तीसरी राजधानी थी इनके राजावों के नाम वीर राणा धीर राणा थे गोर्खसिंह की हस्तलिखत वंशावली में इनके विषय में लिखा है। जिला रोहतक में सिहागों के 25 ग्राम भावलपुर प्रान्त में बड़ी संख्या मान की है हिन्दु धर्मी कम और सिष धर्मी अधिक हैं होशारपुर जालन्धर जिलों में 1911 की मनुष गिन्ना में इनको संख्या 42 हजार थी भागा मुगलचक खुंढा मान रईस हैं मुगलचक का बडेरा सीदीपुर लोवाजिला रोहत ग्राम से लधा नामी गया था लधा पट्टी लोवा में अब भी कहलाती है और एक जोहड़ का नाम लधा जोहड़ है दलाल गोत्र मान सिहाग से जन संख्या में छोटा है रोहतक जिला में छारामांडोठी आसौधा बड़े ग्राम है और प्रतेक के साथ 12 ग्राम है कुचेसर जिला बुलंदशहर में दलाल का एक छोटा राज रहा देशवाल गोत्र भी छोटा है सीहाग गोत्र का महाभारत में जिक्र है सिहाग राजाने युधिष्टर के राजतिलक पर भेट दी थी यह गोत्र प्राचीन काल में इरान वा तुरकिस्तान में भी बस्ता रहा।

छोलर छिकारा साज सांड

इन गोत्रों को मान गोत्री माना जाता है छोलर छिकारा के रोहतक जिले में कुछ ग्राम हैं और भाई चारा दलाल के साथ मानते हैं छैल पंजाब में पाये हैं छैल तथा छोलर एक ही नाम प्रतीत होता है।

साही सण्ड 5000 साल पुराण हैं जिनका जिक्र सभा पर्व में है यह मुलतान मुजफरगढ़ गुजरात में पाये जाते हैं मुस्लिम जट हैं।

येहेर भंगु

हेर जाट तीनों धर्मों में से पाये जाते हैं हेर गोत्र हे यदुवंशी की सन्तान है ये अहीर जाति के भाई का वन्श सिद्ध होता है हुशारपुर जालन्धर में हेर और भंगु पाये जाते हैं भंगु गोत्र हेर की शाखा है ।

भुल्लर

भुल्लर भी सिष और मुस्लिम जाटों में बड़ा गोत्र है पंजाब में फैला हुआ पाया जाताहै भुल्लर गोत्र हेर गोत्र को अपना भाई गोत्र मानता है एक भुल्लर तथा बलहर नाम का उजड़ भावलपुर प्रान्त फुलडा के करीब 12 मील में फैला हुआ है यह अवश्य राजधानी रही होगी परन्तु कहीं जिक्र नहीं मिलता ।

शैरायण

इनके भाठ ने लिखा है कि गजनी के राजा गजके दो बेटे थे मंगलराव लाहौर का शासक और मसूरराव सियालकोट का राजा था इन दोनों कोम मरेज आदि ईरानी आक्रमणकों ने पराज्य करके निकाल दिया मसूर राव भुडदेश में भाग गया उसके उसके दो बेटे सारण राव और अभे राव की सन्तान भुर्या भटी कहाई और सारण राव की सारण

मंगलराव के छः बेटे थे मोजमराव गुऋषि मुलराज शौराज केवला और गुलरषी गिलोरिया मुलराज मुण्डा शोराज की शोरण और केवला फुला की सन्तान ने कुम्हार पेशा अपना लिया कुम्हार कहलाई इनमें शोरायण गोत्र का बिस्तार अधिक है लुहारु में 52 ग्राम दादरी तहसील में 25 हिसार में 26 ग्राम है मण्डा किलोरीया बीकानेर राज्य में पाये जाते हैं ।

कुहार कुल्हारी खेलडी खल्लू कल्हर

यह सब एक ही नाम से सम्बन्ध प्रतीत होते हैं राव कल्लहर की सन्तान हैं पृथक-पृथक देशों में जा बसने से नाम भेद होता रहा है ।

गोंदल

इस गोत्र के कुछ लोग स्वयं को चौहान भी जानते हैं परन्तु प्रमाण इनको कृष्ण जी से मिलते हैं टाड साहब ने लिखा है कि कृष्णजी की सन्तान में जड़ीजा और जडभान दो भाई थे । जडभान का राज्य काठियावाड़ गुजरात में रहा जामनगर धरोल राजकोट गोंदल मोर्बी 1947 तक इसी वन्श के राज्य थे वे स्वयं को राजपूत माने हुए हैं रावलपन्डी केमलपुर शाहपुर मियावाली जिलों में गोंदल जट ही कहलाते हैं बोसाल तोले जसपाल सण्ड राणा घोघ गोंदल की शाखा है गोंदल जिले का प्रधान स्थान है गोंदल डागर भाई गोत्र भई हैं टाड 1174

डागर

डागर डागर डीगरी डागली एक ही गोत्र के चार नाम हैं और पूरे पंजाब उत्तर प्रदेश में तीनों धर्मों में पाया जाता है दिल्ली प्रान्त में डाग्र गोत्र के 12 ग्राम हैं उनका कहना है कि वे गुजरात से यहाँ आए थे इस इलाके में डागर अहीर भी हैं जो इन्हीं में से अलग होकर अहीर जाति में मिले हैं इस गोत्रका पूर्वज नाभा जी का भतीजा और जड़ीजा का भाई यदुभान था यदुमान का राज्य शाहपुर और भेरा देश पर था इन स्थानों से यदुमान के सिक्के (मुद्रा) मिलते हैं इसी देश में तूण का पर्वत है जो डाँग (लाटी) की भांति आड़ा फैला हुआ हैं जो शत्रुओं से देश का बचाव करता रहा है यदु की डांग कहाता रहा है इस देश के वासी डांगर डागर प्रसिद्धहो गए ढागर गोंदल गोत्र का भाई है हिन्दुओं में डागरों के 24 ग्राम और भरतपुर राज्य में 25 ग्राम हैं।

राष्टी रुहल धनखड

राठी गोत्र जाट मराहठा और खत्रियों में भी पाया जाता हैं सभापर्व में इसका वृतान्त है राठ राष्ट्र कुट भी इसी वन्श से सम्बन्ध रखते है एक देश का नाम सोराष्ट्र है कृष्ण जी के परिवार में एक राजा का नाम शोराष्ट हुआ. जिसके नाम पर इसके वन्शधर राष्टी प्रसिद्ध हुए जिला रोहतक के बहादुरगढ़ और इस देश में करीब 10 ग्राम है और जमना खादर में राजलु राजपुर आदि 15 ग्राम हैं राजस्थान में 4 जिला मेरठ में 5 और बिजनौर में 6 ग्राम हैं।

धनखड गोत्र के रोहतक जिले में कई ग्राम हैं और फैला हुआ पाया जाता है रुहल हरयाणा पटियाला अमृतसर और बरेली आदि जिलों में पाया जाता है। राठोड़ गौत्र का राठी गोत्र से वन्श सम्बन्ध नहीं क्योंकि राठौर ग्रहवार गोत्र के लोग हैं तारीख मनमोहन चक्रवर्ती

आद रायण अध रायण अध लाण

इस गोत्र के छोटे राज का वृतान्त महाभारत सभापर्व में है और विष्णु पुराण में इस वन्श के 76 राजाओं का वृतान्त है इनकी राजधानी झिरका कल्हण थी इस वन्श का एक शिलालेख भी मिला है उस पर लिखा है कि बिन्दुसार ने अन्धरा राजाओं को विजय किया था मिस्टर सिमथ ने भी लिखा है कि इन्होंने पंजाब और कश्मीर में कई राज्य स्थापित किए सिन्ध बिहार दक्षिण में भी इन के राज्य थे मैसूर का बड़ीयार गोत्री राजवन्श आद रायण वन्शी ही रहा बडयार गोत्र के जाट जोधपुर राज्य में पाए जाते हैं अन्धरा देश में राज्य करने के कारण अंधरा नाम से प्रसिद्ध हुए।

छोंकर शन शनीवाल

यह भरतपुर राजवन्श का गोत्र है यह गोत्र यदूवन्शी है शनशनी के बासी होने से शन हुं शनीवाल प्रसिद्धहुए शननी वाल हिन्दुओं को औरंगजेब के जारी किए कष्टों से बचाने के लिए आगरणी हुए और भरतपुर राज्य स्थापन कर लिया इन गोत्रों के पूर्वज बृजराज ने बृज देश पर राज्य किया उसी के नाम पर वृज देश प्रसिद्ध हुआ वृज राजा के बड़ेरों ने द्वारका से वापिस आकर मथुरा पर 64 पीढ़ी राज्य किया वृजकी 64 वीं पीढ़ी के विजयपाल यादों ने 1100 विक्रमी में बयाना को राजधानी बनाया पालसी राव राणा धोलपुर जब संयोगता के डोले के युद्ध में मारा गया तो उसका पोता ब्रह्मदेव और उसकी माता रारणीचन्द्रकोम्दी को धर्म के बहण मानकर शरण में रक्खा जब कि शाहबुद्दीन मौहम्मदगोरी ने उनके राजा को मार दिया था राजाबिजेपाल गौरी का शत्रु बना रहा राजबिजेपाल को बेटा छिनपाल इसके बेटे धर्मपाल ने करोली राज्य की नींव डाली और छोटा बेटा बिछोर का राजा बना यह दोनों राज्य राजपूत दल में रह कर राजपूत कहलाते हैं टाड इतिहास में लिखा है कि छोंकर जाट होते हुए भी राजपूत कहाते है थिनपाल का तीसरा बेटा मदनपाल उसके बेटे सुहेपाल ने डीघ के किराड राजा को पराज्य करके राज स्थापन किया इसी वन्श मे शनशनी हुआ छोकर गोत्र सिक्खों में और उत्तरप्रदेश में भी पाया जाता है अलीगढ़ जिले में 10 ग्राम मथुरा में 12 ग्राम हैं।

ठुक रीला

यह गोत्र अपना पूर्वज कृष्ण जी के भाई बलराम जी को मानते हैं डाक्टर भगवानलाल एक शिलालेख के हवाले से लिखता है जो नैपाल राज्य मे मिला था कि नैपाल के वर्तमान राज्य वंश से पहले नैपाल पर ठुकरी जाट राज्य था ठुकरीला की तीन पीढ़ियों ने राज्य किया उनकी राजधानी का नाम भातग्राम था हरीसिंह कांसी का राजा तुगलक बादशाह दिल्ली का भगाया हुआ शरण में आया और धोखे से राज्य पर अधिकार कर लिया।

योध्या ढाका जोहिया बाठ

ढाका गोत्र जोहीया (योध्या) की शाख है और बाठ भी जोहीयां है योध्या गोत्र का वृतान्त महाभारत में और सिकन्दर के साथी एरियन के लेख और बीकानेर राज के इतिहास में मिलता है योध्या भी नामा जी को अपना पूर्वज बताते हैं जोहिया हिन्दू जाट भी हैं इस्लाम धर्मी विशेष हैं सतलज नदी के दोनों ओर के देश में बोहतांत से बसे हुए हैं बीकानेर राज में जोहिया का राज है जोहिया के

राजा शेरसिंह ने राठौरों को नाकों चने चबाये रखे जोहीया राजाओं के मुद्रा (सिक्के) तीन किस्म के मिलते हैं एक पर जय योध्या दूसरे पर सांड बैल तीसरे पर युद्धके देवता कार विकृये की मूर्ति अथवा योध्या गण लिखा मिलता है गिरनार पर्वत से मिले हुये एक शिलालेख जो शक राजा रुद्रसेन का खुदाया हुआ है लिखा है योध्या विजयमन्त्र धारण मुं समुद्र गुप्त की लाठ पर भी यही लिखा हुआ है।

लोहाणा लाहोर खत्री (क्षत्री)

यह गोत्र हरियाणा के जिलों में पाया जाता है राजकलश की सन्तान माना जाता है जिसका वृतान्त कल्हण की लिखी राज तिरेगणी में है कश्मीर राज समाप्त हो जाने के पश्चात इन्होंने कुछ काल लाहौर में पग रोपे इसी कारण लाहोर क्षत्री कहलाये इसी गोत्र की एक शाखा लोहाणा नाम की है जिला रोहतक में सोनीपत कोलाशी इसमायला आदि इनके ग्राम हैं लोहाणे सिन्ध देश में हैं जब जाटों का विद्रोह राजा चज के साथ हुआ तो यह चज के साथी रहे चज नामा में इनका वर्णन है।

नुहवाल

मतश्य पुराण में लेख है कि जिस राजा उशीनर यद्वंशी को 100 यग्य करने पर याट की पदवी मिली थी उसकी रासी का नाम नूहा था उसकी सन्तान नुहवाल कहलाई दूसरी कहावत यह है कि ये लोग खोतान देश की नुह झील देश से आए गुर ग्राम की बड़ी झील का नाम नुह की झील रखा नुह राजधानी बसाई और इस देश में बस गए और नुहवाल प्रसिद्ध हुए प्राचीन काल खोतान देश पर जाट राज्य था गरूसे लिखता है कि अंग्रेजी राज होने से पहले नुह जाट राजधानी था इस गोत्र के जिला मथुरा में 98 ग्राम एकत्र बसे हुए हैं हर्जत नुह की झील खोतान का शगर देश में है और नुह जाट झील गुड़गाँव जिले में है।

शवी

शवी महाराज्य याट को पट्टी प्राप्त करने वाले राजा उशीनर के तीसरे पुत्र थे गृहणी योगो थे शवी प्राचीन जाट गोत्र शवीजी से चला शव पुराण में वीरभद्र जाट राजा की कथा है जो शवजी की जटा देश का राजा था जिसने राजा दक्षको मृत्युदन्ड दिया था पुराणक पण्डतों ने कथावों में शवीजी को शव (इशवर) से मिला जुला दिया शबी महाराज के वंशधर जाटों के बोहुत गोत्र हैं तक्षक बाछक आदी इरान तुरकिस्तान शवी वंशी देश हैं झंगजिले का शोर कोटे शवी राजा ने बनाकर राजधानी बनाया था डन्मार्क सिकन्डे नेवया (सिकन्ध नाम) जटलैंडभी शवी गोत्र वालों ने बसाऐ जसटिस हरीडोटस सटबु ने इनका इरान देश से वहां जाना लिखा है।

तक्षक

यह गोत्र प्राचीन शवी वंशी जाट गोत्र है टोकस भी तक्षका बिगड़ा नाम है खांड प्रस्थ (इंद्रप्रस्थ) टेकसला ताश कन्द (तक्षखंड) तुरकिस्तान तक्षको की आबादीयां है तक्षक लड़ाकू अधिक थे नाग भी प्रसिद्ध हुए तक्षक नागने राजा परीक्षत को बध किया था तक्षक पांडवों के शत्रु रहे महाभारत में एक कथा है कि तक्षक राजधानी के पास ही इन्द्रप्रस्थ को राजधानी बनाया तो तक्षकों ने ब्रोद्ध किया उनसे युद्ध होते रहे वे यहां से बिकाले गए और टेक्सला को राजधानी बनाया एगाईडट टेक्सला ताम की पुस्तक में टेक्सला का बसना महाभारत काल में लिखा है।

वाछिक नाग

वाछिक गोत्र भी तक्षक जितना प्राचीन है बाछकों की राजधानी मथुरा रहती रही है कृष्ण जी ने एक बाछक नेता को काली देह ग्राम में बध किया था कालीदेह ग्राम मथुरा के निकठ अब भी है और वहां 12 ग्राम वाछिक जाटों के भी हैं धराल गोत्र के जाट वा राजपुत बाथक गोत्री है।

बैस बाछ बैसला बेसवा

इन गोत्रों के लोग बड़ी बड़ी संख्या में पाए जाते हैं ऐसा उनमान है कि यह बाछिक के ही बदले हुए नाम है।

किल किल भिन्ड नाग

रुहेल खंड देश में किल किल नाम की नदी है उसके देश पर भिन्ड गोत्री जाटों का राज्य रहा और भिन्ड भी एक स्थान का नाम है ये बाछक नाग ही है।

कक्क कुक्कर कार्सकर काक्कड़ खोखर

इस गोत्र के कई गण राजों का वृत्तात महाभारत सभा पर्व में कक्क कुक्कर काक नामों के साथ है गुप्त राजवंश को जैसवार जी ने कासिकर लिखा है खोखर नाम भी कासिकर का उप भ्रंस ही है कक्कर काकड़ जई बिलोचों की बोहोत बड़ी खाप इतिहास उनको जाट सिद्ध करता है ढाका देश में कुकड़ बोला जाता है।

काक गोत्र के अलीगढ जिले में 52 ग्राम हैं इनमें से जाकर 100 ग्राम दूसरे प्रान्तो में बसे हुए हैं यह सयमको नाग वंशी भी कहते हैं यदु वंशी भी कृष्ण जी के भाई बलराम जी की पूजा करते हैं।

खोखर जाट वा राजपूत पंजाब भर में फैले पाए जाते हैं मथुरा और अलीगढ में खोखर जाटों के 52 ग्राम हैं हलें अज्जा भालु भाला गोत्र खोखर की ही शाखा है पश्चमी पंजाब वा पाकिस्तान में मुसलम जाट राजपूत हैं।

बैनीवाल

बैनीवाल सवय को शवी गोत्री मानते हैं राजस्थान में बड़ी संख्या में बसे हुए हैं शिव को अपना इष्टदेव मानते है राठोड़ राज्य से पहले इनका छोटा राज रहा भावलपुर देश में इनके 35 ग्राम बीकानेर राज में 35 ग्राम बड़ी संख्या विश्नुव्वी मत की श्रद्धालू है।

भडाइच

भड़ाइच गोत्र प्राचीन है इतिहासों में इसके अनेक वृतान्त मिलते है यह लोग भड़ोच के शासक रहे हैं इपीग्राफका पुस्तक एक पन्ना 269 में लेख है कि चमक हस्ती बाला घाट से एक शिलालेख मिला था जिसपर लिखा था कि भडाइचो ने 10 अश्वमेघ यज्ञ किऐ और बनारस में यहां 10 घाट बनवाकर स्नान किए फरुखाबाद के जांघट नामी ग्राम से और पंजाब के कई स्थानों से मिले सिक्के और ताम्र पत्रों से जिन का वर्णन इनडीयन इन्टी कोवरी डिसर्कट लिस्ट आफ इनर्कपसन्स इनदी संट्ल आविनसन्स इन्डीया के पृष्ट 984.85 पर विश्वास करते हुए उनका शेर गढ पर राज्य करना लिखा है किसी समय नागौर आदी शहरों पर भी उनका अधीकार रहना 275 इसवी तक माना जाता है उनके लेख संस्कृत भाषा में मिलते हैं परन्तु हैवनसांग ने उनका होना उत्तर पश्चमी देश भाग में लिखा है वहाँ वे स्वतन्त्र शासक थे और उनका धर्म बौद्ध था 10 वी शतब्दी इसा के लगभग वे बड़े जत्थे के रूप में जेहलम नदी के साथ आकर बस गऐ और 13 वीं इसवी तक गखड़ जंजोहा और गुजरों से लड़ते रहे आज भी 850 ग्राम भड़ाई जाटों के बड़ी खाप में एकत्र बसे हुए हैं यह देश जट्टात प्रसिद्ध है कट्टर मुसलमान फिरोजशाह तुगल्क के राज काल में उन के नेता हरीया को इसलाम धर्म स्वीकार कराया गया उसका बसाया बड़ा ग्राम हरियावाला है उस नेता के प्रभाव से समस्त भड़ाईच खाप ने इस्लाम धर्म में परवेश कर लिया सगड़ और मर्द गोत्र भड़ारच की शाखा हैं।

तेवथया

येह शवी लोग हैं इन्होंने मुलतान से आकर गुड गांवा (गुरु ग्राम) जिले में तेवथी ग्राम बसाया इसके पश्चात बड़ा ग्राम भटोना बसाया तेवथिया राजा बलराम जी ने बल्बगढ राज्य स्थान्य कथिा और राजा सूरजमल से उसकी बहण किशोरी का बिवाह हुआ था।

चौहाण (तक्षक)

ये नाम अग्नी कुण्ड यज्ञ की शुधी पर आरभ हुवा चाहाण गौत्र तक्षक बंशी है चोहाण गोत्र की बड़ी संख्या पृथ्वीराज का राज्य समाप्त हो जाने पर जाट संघ

में मिलजुल गए कारण यह कि चौहाण परिवार जाट देहातों में फैले हुए थे हिष्ट्री आफदी टाड में चौहाण गोत्र को तक्षक ही लिखा है जाटों के फौगाट आदी कुछ गोत्र चौहाण वंशी है पृथ्वीराज से 39 पीढी पहले अनहल पृथ्म तक्षक गोत्री ही था।

फौगाट

फौगाट चौहाण हैं इनके 45 ग्राम दादरी के साथ एत्र बसे हुए हैं दादरी निवासी झाड़ू सरदार ने भाई चारे की सहायता से राजा मानसिंह की सैना को भोजन कराया था जबकि सैना के लिये और प्रबन्ध न हो सका था राजा मानसिंह झाड़ की सरदार की मान्यता दी।

तुष्यार (तुशार)

तुष्यार एक प्राचीन शासक गोत्र है महाभारत भीष्म पर्व और द्रोण पर्व में एनके गणराज्य का लेख है यह लोग दर्दों के पड़ोसी थे गजनी और सियाल कोट के मध्य देश को तुष्यार स्थान बोला जाता था ऐसा भी विचार है कि मर्दक और तुष्यार एक ही दल के दो नाग रहे हों यह भी हो कि तन्वर और तुष्यार का एक ही नाम से संबंध हो क्योंकि तनवर वंश जो स्वय को पाण्डु वंशी मानता है दिल्ली राजधानी के निकट अनंगपुर में प्रकट अचानक ही होता है पन्डत जैचन्द विद्या अलंकार ने प्रदेश नाम के इतिहास पृथ्म भाग पृष्ट 112. 113 पर लिखा है कि रश्कि और तुष्यार थिया थान नाम के पर्वत खतन का केश्या से टेकस्ला तक शाकिलनग्री मथुरा और अयोध्या तक का देश बिज्य कर चुके थे यह समय 175 इसा पूर्व का है चीनी राज्य इनका मित्र और सहायक था तुष्यारो के सैनापती की पट्टीलल्ल थी इनकी राजधानी गजनी थी तुष्यारो का मित्र रण्क दल था लल्ल सरोहा मल्क पट्टी थी और वतमान काल में इन नामों के गोत्र हैं मत्स्य पुराण और वायु पुराण में भी इनका वर्णन है।

लल्ल सरोहा मल्क

मल्क गठवाला टांक बुरा सरोहा यह एक वंशी गोत्र हैं गठ वाला मर्दक और भटी गोत्रों केप बार में से हैं इनका इतिहास भटी वंश के साथ साथ है गठवाला का भाठ लिखता है राजा सभाग सैन गजनी से निकाला जाने के पश्चात इनके बड़े सुलतान में ठहरे और फिर सतलुज के देश में आए उनके साथ भाठ और नाई भी थे हम भी उनके भाठ की सन्तान हैं कठ और मल्क गण राज्योंने पंजाब में सिकन्द्र की सैना से युद्ध किया था ये लोग भावलपुर से निकाले जाने पर हांसी के पास दिपालपुर को राजधानी बनाया कुत्बूदीन एबक ने वहां से भी निकाल दिया तो मल्क दल रोहतक मुजफरनगर जिलों में आ बसा करनाल के भिडाण नवबो से भिडते रहे कलानौर के बदचलण नवाब को पराजय करके बद्ध किया जिला रोहतक और

मुजफनगर में इनकी बड़ी खाप हैं रोहतक में 35 ग्राम एत्र बसे हुए हैं और मुजफर नगर में 52 ग्राम पंजाब और उत्तर प्रदेश में फैले हुए पाऐ जाते हैं जीद में 10 ग्राम हैं ।

टांक

इनमें कहावत है और इनका भाठ ऐसा लिखता है कि शेरगढ इनकी राजधानी रही यह छुटने पर शेरगढ पत्तन को पार करके मुलतान मेरा और शाहपुर में रहे वहां उनके दलने सुलतान महमुद के ऊटों पर धावा करके लुट लिया महमुद ने दो साल बाद उनके देश पर चढ़ाई करके बर्बाद कर दिया और देश से निकाल दिया वहां से निकल कर काठ ग्राम को राजधानी बनाया यह वंश राजपूती दौर में 36 राज कुलोकी परती में रहा हिष्ट्री ओफ दी टाड में इस वंश के राजावों के नाम रत्न पाल बहर पाल सहज पाल मदन पाल आदी लिखे हैं सोनीपत के पास इनके 24 ग्राम वसे हुए हैं ।

सगोहा सगरीहा

इस गोत्र के विषय में उपर लिखा जा चुका है इनके ग्राम कंमच बुढा खेडा जीद में बड़े ग्राम हैं और करनाल में भी खोसरा भादोड़ गिराना आदी 12 ग्राम हैं पटीयाला में 6 ग्राम और जिला बुलन्दशहर में बड़ा ग्राम सैंदपुर और 8 ग्राम और हैं बुरे बड़े सुन्दर सुड़ोल और शूरबीर माने जाते हैं ।

कसवा (कुशारण) शाहीवाल

बीकानेर राज्य में गोदारा से पूर्व सैंदमुख इनकी राजधानी थी जिसपर गोदारा ने अधीकार कर लिया था रत्नगढ चुरुइन के परगते थे बीकानेर देश में 360 ग्राम इनकी खाप एकत्र बसी हुई है इनकी सैना मे 2000 ऊंट असवार होते थे शाही गोत्र कसवा की शाखा होना मानता है इनके एक राजा अत्र राजने शाही की पट्टी घर्ण की थी शाही राजावों के सिक्के (मुद्रा) सारीपंजा में मिलते हैं और काबुल में भी उनपर कस्वा राजा ताम्स का नाम है जो 435 इसवी में गद्दी पर बैठा डाक्टर त्रपाठी ने शाही वंश का राज्य काबुल और पंजाब पर लिखा है और इनको कुशारण वंशी लिखा है अलबरोनी ने 973 से 1048 ईसवी में इनका बृतान्त लिखा है कि कस्बा कन्ष्क शाही की साठ पुश्तों ने राज्य किया शाही को शन्ड वंशी माना जाता है जो महाभरत के राज वंशों की गिनना में है सिद्ध होता है कि शण्ड शाही कुशाण औकंस्वां एक ही गोत्र के नाम है ।

काबुल में भीमशाही के सिक्के मिलते है इस राजा ने कोट कागड़ा के निकट भीम नगर बसाया इसके चाचा राजा सेवकपाल ने इस्लाम धर्म में प्रवेश कर लिया

था गजटीयर जिका जेहलम में इनको काबली लिखा है शाही वाल इनका नगर था भेरा राजधानी से शाही वन्शी राजा को महमुद ने वे दखल किया था शाही हिन्दू सिख और मुसलमान पाये जाते हैं।

हंगा चौधरी

युची रश्क तुष्यार राजाओं के सेनापति की पदवी हंगामस भी थी हंगामस शब्द विदेशी भाषा का प्रतीत होता है शायद शुद्ध शब्द कुछ और ही हो इस गोत्र का बड़ा हंगामस मथुरा का हाकिम रहा मानों वह तुष्यार ही था उसकी सन्तान हंगा कहाई मथुरा देश में इनके 80 ग्राम हैं।

पुरुवंश अत्रे

पुरु यदु का भाई गोंत्र हैं पुरु को उनके पिता जी का राज्य मिला इसके वंश ने अपना गोत्र आत्रे और पुरु रखा सिकन्दर महान की लड़ाई झेलम के पुरुवन्शी राजा से हुई ये पुरुवाल पोरस वाल फलसवाल भी कहाते हैं राणा धोलपुर की वंशावली में पुरु राजवंश जिसकी राजधानी हरिद्वार के निकट देश में तलकापुर रही। शिव पौराण में लिखा है कि राजा वीरभद्र का वृतान्त है वीरभद्र की सन्तान में बड़े-बड़े जाट गोत्र चले जो निम्न में लिखे जाते हैं।

वंशावली वीरभद्र यह लेख राणा धोलपुर की वंशावली से लिया गया

राजा वीरभद्र आत्रे गोंत्र मारधन्क्ष शाषा
राजधानी तलखापुर

पौनभद्र जटाशंकर पूर्वज पौनया गोत्र	कल्हनभद्र कल्हन गो का पूर्वज	अतीस्वरभद्र अंजना जटा शंकर अंजना गोत्र का पूर्वज	जखभद्र जाखड गोत्र का पूर्वज

ब्रह्मभद्र गोत्र भिम्भरोलिया का पूर्वज	दहीभद्र गोत्र दहीया

पौनभद्र की सन्तान पौनिया प्रसिद्ध होकर मारवाड़ और बृज देश में फैली कल्हण गोत्र गुजरात काठियावाड़ दक्षिण में फैला।

अतीस्वर गोत्र की सन्तान अजना अंजलन प्रसिद्ध होकर मालवा मेवाड़ मारवाड़ हिंडार देशों में फैली जाखड़ वंश जम्मू काश्मीर सिन्ध पंजाब में फैला ब्रह्म भद्र की सन्तान भमरोलिया गोत्र के नाम से जेहलम काश्मीर भीम्भर नदी के देश में फैली दहीभद्र की सन्तान पंजाब और विदेशों में फैली।

पौनिया

पोनिया गोत्र महाभारत काल से भी विशेष पुराना हैं तीनों धर्मों के जाट इस गोत्र में सम्मिलित है और बड़ी-बड़ी जनसंख्या में है इनकी आबादी बीकानेर भावलपुर लुहारु जिला हिसार में है बीकानेर में राठौरों से पहले इनका राज्य भी था जोधपुर प्रसिद्ध हो जाने वाले देश से दहीया लोगों को पौनिया ने निकाला था राजगढ़ देश में इनके 100 ग्राम एकत्र हैं डेरा गाजी खान और बन्नु में मुस्लिम (पुनिया) जट बड़ी जनसंख्या में हैं तहसील दादरी में 100 ग्राम और जिला अलीगढ़ में 10 ग्राम हैं।

अन्जना

यह गोत्र इस्लाम धर्मी शाहपुर मियांवाली आदि जिलों में पाया जाता है जेहलम जिले में भी इनके ग्राम हैं सिष जाटों में भी यह गोत्र बड़ी संख्या में हैं।

TOD VIII JAT TRIB

जाखड कादियाण सांगवाण

जाखड गोत्र बड़ी जनसंख्या में पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में अधिक है जाखड़ खाप जिला रोहतक में भी है कादियान और सांगवान जाखड की शाख हैं आईने अकबरी में लेख है कि रोहतक हरियाणा के जाखड़ नेता लाढसिंह ने मुगलों पठानों और दिल्ली के बादशाहों से युद्ध किये थे रोहतक में 12 ग्राम हैं बीकानेर भावलपुर और पाकिस्तान में बड़ी बड़ी संख्या में बसे हुए हैं कादियाण गोत्र जाखर की शाख ही है और बेरी के आस पास इनके 12 ग्राम है दूसरे इलाकों में भी फैले हुए पाये जाते हैं।

सांगवान गोत्र जाखड की औलाद में से हैं दादरी के देश में इनके 80 ग्राम हैं पण्डित अमीचन्द जी ने जाट मिमान्सा में सुरसु जंगल की राजधानी पर इनके 13 राजाओं का राज्य करना लिखा है उनके नाम ब्रह्मदत्त सोमनन्द अग्निकुमार मरीची सूर्य साल बाहन आदि थे फिरोजपुर पटियाला में सांगा नाम से मिलते हैं सांगा जेहलम गुजरात में भी पाये जाते हैं।उनके भाठ की लिखी वंशावली मिथा सिद्ध हुई है कि जादोनाम का राजपूत धनुष ना टूटने से लज्जित होकर द्वारका से आकर यहां जिला रोहतक में आ बसा क्योंकि जखभद्र गोत्र कृष्ण जी के समय से पहले का है।

दहीया

दहीया गोत्र राजा वीरभद्र की सन्तान है जाट गोत्रों में बहुत पुराण हैं महाभारत के युद्ध में दक्षा दल ने भाग लिया था उस समय ये चीन के दक्षिण में

बसते थे टाड हिस्टरी में जसटिस् वा हरी डोटस के हवाले से लिखा है कि 2000 हजार साल ईसा पूर्व दाहिया महाजटी दल ईरान के पूर्व में बसा हुआ था हेर भुल्लर सिहाग भी इनके निकटवर्ती देश में बसे हुए थे ईरानी बादशाह दारा और सिकन्दर के मावीन युद्धमें दहीसा सेना ने भाग लिया था राजगढ़ में दहीया राजाओं का राज्य रहा कुछ दहीया राजपूत दल में मिल कर राजपूत कहा रहे हैं जो राजस्थान में बसे हुए हैं रोपड़ के निकट दहीया मुस्लिम राजपूतों के 12 ग्राम थे जो पाकिस्तान चले गए रोहतक जिले के दाहियों को उनके भाठ ने 27 पीढ़ी से चौहान वन्शी लिख मारा जैसा किसी ने लिखा दिया होगा भाठ नहीं जानता था दहीया का इतिहास पुराण है डाक्टर योगइन्द्रपाल जी ने दधीचि बन्शी लिख दिया क्योंकि नाम राशि मिलती थी छः गोत्र बनियां दहीया वंशी है ओसंवाल दहीया चौचानी पिता दहीया माता दुन्त डाड बैश पिता दहीया माता भद्रकाली अग्रान्श गोत्री देव पुरा वैश पिता दाहीया कसुम्भी वाल माता अशोपती वाक वैश पिता दहीया हुगो जी माता मुसा यह लेख जाती भास्कर हिन्दी भाषा TOD V1 7476 से मिला है।

दहीया के रोहतक जिले में 40 ग्राम हैं महनुत नैनसी भाठ लिखता है कि दहिया की राजधानी गोदावरी नदी के साथ थालेसर रही। कड वांसरा हुडा डबास दहीया की सन्तान गोत्र है ढेहा पंजाबी दहीया हैं उनमें कुछ रिवाज मुस्लिम जैसे रहे मिट्टी के वर्तनों में भोजन करना आदि ये हिसार लुहारु जिलों में बसते थे।

कडवांसरा

ये दहीया वन्शी हैं इनका बड़ा राजा कडवांसरा राव हुआ इसके पोते का खुदाया शिला लेख जोधपुर के जिला मारोथ के मंगलाता ग्राम से मिला था उस पर उसको दहीया लिखा था यह 17 अप्रैल 1215 ई० खुदा इंडीय इंटी कावेरी पृष्ठ 87, 88 में इसका वर्णन है।

हुढा डबास

यह दोनों गोत्र दहीया की शाखा है ये दहीया के साथ हरयाणा में आए डबास दिल्ली प्रान्त में बसा हुआ है और हुढा के रोहतक के पास 24 ग्राम एकत्र बसे हुये हैं बड़े जोशीले लड़ाकू हैं प्रण के पक्के पालिक माने जाते हैं।

भिम्मरोलया

यह गोत्र राणा धौलपुर राजवंश का है इनके भाठने इनकी वंशावली को राजा वीरभद्र से मिलाया है उसने पीढीयों के नामों का बड़ा बिस्तार लिखा है कोई सन का प्रमाण नहीं दिया फिर भी तरतीबवार ही लिखा हैं जिसका पुराहाल धोलपुर राज्य के वर्णन्न में दिया गया है।

शोलंखी चालोकिया

इस वंश कों अग्नी कुण्ड शुद्धीयज्ञ से पूर्व चालोकिया ही बोला जाता रहा चालुक्य गण का राजा पाण्डुवों की अश्वमेध यज्ञ में शामिल था शोलंखी राजपूत दल में मिलकर राजपूत कहाये और सूर्यवंशी भी जनायेगए प्रान्तु जिलाधारबार के गदगर नामी ग्राम से वीर नारायण जी के मन्द्र से मिले शिलालेखपर चन्द्रवंशी लिखा है जिसमें 1063 ईसा पूर्व से 1022 ईसा पूर्व तक राज्य किया इन्डीयन का वेरी भाग 14 पृष्ट 63 वा 55 और इपी ग्राफ का इन्डीया भाग 4 पृष्ट 303 वा 309 में भी शोलंखी वंश को चन्द्र वंशी लिखा है एक और शिलालेख शोलंखी वंश के बिष्य में गुजरात प्रान्त के उजुड़ प्रसिद्ध बडनगर से मिला उसपर बड़ भद्रवंशी शोलंखी राजा ने इस को बसाया गुजर इतिहास में अबदुल मालिक ने एक शोलंखी राजवंश को गुजर लिखा है कि उस राज वंश की माता गुजरी थी पाल्म अदि दिल्ली प्रान्त में शोलंखी के 12 ग्राम है और जुण अहलावत आदी गोत्र शोलंखी की शाखा हैं।

अहलावत

उल्हा अहलावत ब्रहमायण पहलायण गोत्र शौलंखी हैं पांचवी शताब्दी इसवी से 12 वी ईसा तक वातापी और कल्याणी राजधानीयों पर इनके पूर्वज राज्य करते रहे इनकी सैना शंवती ने राजा हर्ष का मुंह मोड दिया था प्रस्तु इनका बड़ा शत्रु दक्षिण में राज राजा चोल था उसके पुत्र राजा राजन्द्र चोल ने 1000 ईसवी में कई लाख सैना के साथ सोलंखी के सातवे राजा सतेश राय पर धावा करके राज शक्ती को बखेर दिया राज्य के कई परतंत्र भाग सौतंत्र हो गए 1052 में शोलंखी की गद्दी पर बड़ा तेजस्वी अहुमल नाम का राजा बैठा जसने वद्दी राज राजा समेश्वर धार्ण की और अपने शत्रु राजन्द्रचोल पर बिज्य पाई उसको मार दिया और उसकी बेटी उमंगदेवी से बिवाह किया उसके राजपर अधीकार कर लिया उसने 18 साल समस्त दक्षिण पर राज किया तुंगभद्रा के तट पर वेंगई को राजधानी बनाया इसी राजा अहुमल की सन्तान अहलावत और उलहा कहाई और ब्रहमाण वा पेहलान गोत्रो के बडेरे भी अहुमल की सन्तान है यह चारों बासल देव जी के पुत्र थे।

जब शौलंखी राज्य समाप्त हो गया तो राजा अहुमल की सन्तान में बासलदेव जिला रोहतक के नान्हा खेड़ा पर ग्राम डीघल के निकट आ कर बसा यहां उसके चार बेटों के गोत्र उल्हा अहलावत ब्रिहमायण पेहलायण चले सांपला से लेकर डीघल के गिर्दा गिर्द इनके ग्राम हैं सर छोटुराम ऊल्हा गोत्र से थे ब्रहमाण के गुमाणा आदी कई ग्राम हैं।

इतिहास अनीसेंट इन्डीया में अग्रवाल ने लिखा हैं कि राजराजा चौल युद्ध में मारा जाने के बाद उसके बेटे राजन्द्र चौल ने बेंगई को फिर बिज्य किया और वहां

एक विज्य सिम्भ बनावाया परन्तु इस युद्ध में दोनुही थोक अपनी अपनी जीत सिद्ध करते हैं फिर राजन्द्र चौल के छोटे भाई वीर राजन्द्र ने अपनी बेटी शौलंखी राजा कुलुतुंग के भाई से ब्याह दी और दोनों राज्यों में मित्रता करादी जब वीरइन्द्र चोल का पुत्र मारागया तो दोनु राज्य एक हो गये।

जून वा मोड

राज राजा समेश्वर की मृत्यु पश्चात उसका बड़ा बेटा समेश्वर दिवतीय की पद्दी से राजा बना इसने 1०78 तक राज्य किया यह निर्बल सिद्ध हुवा इसको हटा कर उसका छोटा भाई बिक्रमान्क कलुतुंग राजा बना इसको बिक्रमादित्य चतुर्थ भी लिखा जाता है इसने पूर्व और दक्षिण को जीतकर उत्तरी भारत वर्ष को भी बिज्य कर लिया मिश्र बन्धु ने और कबीशर बिल्हन ने इसकी बड़ी परशन्शालिखी है इसने लम्बे समय तक राज्य किया इसके मरने के बाद राज निर्बल होकर समाप्त होता गया।

जुण गोत्र के भाठने लिखा है कि तुंग का बेटा भुप राजा उसका बेटा सासर्कण राजा उसका बेटा राव गजसिंह था इसकी मृत्यु के बाद इसकी राणी दौ याने बेटों अजुण और माड़े को साथ लेकर देश से निकली और बासल देव से जिला रोहतक में आमिली बासलदेव से बिवाह कर लिया गजटीयर जिला रोहतक में लिखा है कि एक बिदेशी स्त्री दो बेटों के साथ झील सांमर होती हुई आई और बासल देव से बिवाह किया जून रावने छोछी ग्राम बसाया यहाँ से जून के 15 ग्राम बने छोछी पत्थरहेडी कुकडोला खुंगाही लोहा छोटा नुना माजरा देशलपुर खुडलान समचाणा गढीबेडी छतहरा आभुपुरब्जड़ा मनी माजरा कबीर का बंगला।

चंदेला गण्वा भागौर

गहरवारों के शिलालेख से सिद्ध हुआ है कि चंदेले पुरुवंशी हैं चंदेले राजपूत भी है परन्तु ठाकुर बहादुरसिंह पटेदार बेदासर ने राजपूत ज्ञानसागर गुटिका में चन्देलों को जाट ही सिद्ध किया है गन्ड भागोर गोत्र भी चन्देल हैं।

गहरवार ग्रेवाल राठोड़

यह गोत्र चन्देल वंशी है खजराहों से मिले शिला लेख में इस वंश के 22 राजाओं का वर्णन है कई लेखकों ने उनको राठोड़ वंशी लिखा है परन्तु राठोड़ों को टाड हिस्ट्री VIXXXIV. ने गहरावल वंशी सिद्ध किया है जिला लुधियाणा में संगाल जाटों के 52 ग्राम हैं घुडवाल खरवार इसी के बिगड़े नाम हैं।

बुधवार गोत्र और उसकी संतान गोत्र

बुधवार गोत्र पुराना है जाट राज पुत्र मरहटा स्त्री बुधवार गोत्र में शामिल है बुधवार गण राज्य का वृतान्त महाभारत में मिलता है।

पश्चमी पन्जाब में मुसलिम जट गोत्र सट्रोया बधन बदन छत्र सियान गोछ गवाया मुण्डयाल बुधवार गोत्र की शाख है ।

गिल (मुदगिल) सिंहगिल (संगत) शेरगिल

पुरुवंश में राजा हस्ती का पोता मेधावी उसका पुत्र मुदगिल हुवा बिषणु पौराण अंश 14. 15. 16 में लिखा है कि मेधावी के पुत्र किरायण की सन्तान किरायण ब्रहमण और मुदगिल की सन्तान ब्रहमण तथा क्षत्री कहलाई गिल और शेर गिल जाटों के बड़े गोत्र हैं पठानों में एककबीला गिलगई और जर्म्नी फिरांस आदि देशों में गाल कहलाते हैं गिलगित गिल जाटों की राजधानी रहती आई थी जिसको महाराजा रणजीतसिंह ने खत्म किया था 1911 ईसवी की जन गिनना में गिल जाटों की संख्या थी दुन्या की कहाणी में लिखा है कि गाल लोग जर्म्नी में एश्या से पहुँचे थे और वहाँ के देशों में फैल गए ।

धार्ण धारीवाल

मुदगिल की एक शाखा धार्ण कहलाई जाटों में धार्ण धारी वाल दोनु गोत्र मिलते हैं सिखों की 12 मिसलों में राजा जैसिंह धारीवाल था ।

महे माहे मेहीवाल

यह मुसलिम जाटों का बड़ा गोत्र है महाभारत में इसका वर्णन है हस्ती के पुत्र मीढ की आठवी पीढी में राजा माहित हुवा उसकी सन्ता माहित कहाई पहली शताब्दी ईसवी के लगभग सुजान गढ के निकट दारुणापुर महे राजावों की राजधानी थी 1911 की जन गिनना में इनकी संख्या 7000 थी महाभारत में इनको महित लिखा है आल्हा राग में माहिल राजा के वर्णन है महे गोत्र मोहल मोल्हे मेहीवाल कहाते हैं ।

विर्क मिनहास

यह प्राचीन प्रसिद्ध गोत्र हैं महाभारत सभा पर्व के अस्वमेघ यज्ञ में विर्क राजा भी समलित था विर्क गोत्र को महे वंशी भी लिखा है और मिन हास को विर्क गोत्र का भाई मानते हैं अवदुल मालक की लिखी गुजरतारीख में इनका वर्णन है विर्क गोत्र के पूर्वज का नाम विक वर्धन था पातन्जली भाष्य 47-114 अष्टा अध्याई 1.6.155 महाभष्य 4.2.124 काशका वर्ती 1.1.75 के अनुसार राजा विर्क वर्धन वासरूप (मन्दसोर) शाकिल सोसफ (शालकोट) पाताल प्रस्थ नन्दीपुर कोक कंडेवा मुला देवदत्त करकर विर्कगढ आदि इनके कोठ थे इतिहास लिखने वालों ने वर्तमान शेखुपुरा को ही विकगढ माना है चौथी शताब्दी ईसवी के बाद मालवा देश पर विर्क राज्य रहा बृज इन्दर भास्कर में लिखा है कि 428 ईसवी में विर्क राजाने बयाना में बड़ा यज्ञ किया

और एक लाठ बनवाई उसपर भी उनको विर्क लिखा है राजा यशोमन विर्क था इनका और हाल राजा यशोधर्मन के वृतान्त में लिखा गया है देश के पारटेशन से पहले सर शहाबुद्दीन जाट सभा का सिक्रेट्री विर्क जाट था जंडयाला जिला अमृत सर में विर्क जाट गोत्री हैं।

ढिल्लों भरयार ढुल ढाली वाल

ढिल्लों गोत्र प्राचीन है ईसा से 800 साल पूर्व दिल्ली पर ढिल्लों वंश का राज्य रहा दिल्ली नाम ढिल्लों की याद गार है पंजाब में ढिल्लों बड़ा गोत्र है मिसल किरोडीयां इनहीं की थी भरयार गोत्र भी ढिल्लोबंशी है ढुल और ढाला ढाली वाल गोत्र भी पाए जाते हैं यह ढिल्लों के ही अप भ्रंस परतीत होते हैं।

मिढ मिढाण अजमील सहोत्स मील

यह उपर लिखत गोत्र राजा हस्ती की सन्तान हैं राजा हस्तीं जिसने हस्तना पुर बसा कर राजधानी बनाया था उसके तीन पुत्र थे जैसा कि वंश बृक्ष चन्द्रवंश में पीढीयों के नाम हैं देव मिढ अज्यमिढ पुरुमिढ उनके नाम पर मिढ गोत्र चले प्राचीन कथावों में और इतिहासों में इन गोत्रों का बृतान्त मिलता है मजमल अलतवारीख में यह कथा लिखी है कि दो जाट कबीले द्रयोधन के राज्य काल में सिन्धु देश में बसे हुए थे और द्रयोधन के दरवार में एक बिदेशी राजा की मांग लेकर गऐ थे यह कथा जाट कथा सार संग्रह में लिखी जा चुकी है और हिष्ट्री टाड में भी प्राचीन काल में असो और यज्ञो नाम के मीढ फ्रिकों का सिंधुनदी के किनारे के दोनु ओर के देशों में बसे होना लिखा है और सिंधुदेश से ही मीढ बिलोचिस्थान शेरया वा अरब देशों में चले गए यह गोत्र बोहोत पुराणा होने के कारण एशया भर में फैला मिढ मिढाण मान्ढण मिढलाण अनेक नामों से बीला जाने लगा है झंग मुलतान डेहरा गाजीखां मुज्जफर गढ मियांवाली शाहपुर जेहल्म आदी जिलों में मुसल्मि जट फैले हुए हैं मढाण गोत्र के राजपूत भी हैं दिल्ली प्रान्त में उनके 20 ग्राम हैं कुछ ग्राम जिला मुरादाबाद में भी है महोत्स गोत्र अजमीढ गोत्र की शाख है जिला करनाल में 24 ग्राम और बिजनौर में 5 ग्राम हिन्दु जाटों के है महाभारत में मीढ दल का बृतान्त है और सहोत्स दल का भी। करनाल का नवाब वंश मिढाण गोत्री था शाह जादालियाकत अली मिढाण गोत्र से था।

तवर (तुर) तुषार

तंवर गोत्र के भाठ इनकी वंशावली पाण्डों से मिलाते हैं हिष्ट्री टोड में एक स्थान पर इनको मोर्यावंशी लिखा है हो सकता है कि मोर्याभी पाण्डो वंशी हों दिल्ली में अनंग पाल का राज्य स्थापित होने से पहले इनके पूर्वजों का राज्य तुष्यार स्थान में

रहा इसलिए तंवर तुष्यार का ही बदला नाम सिद्ध होता है तंवर राज्य पन्जाब और दिल्ली में रहे यह दोनु ही जाट देश में थे तंवर राजपूत कहलाने के पश्चात्य भी जाट देश में ही रहे तँवर और चोहाण राज्य समाप्त हो जाने के बाद मुसल्मि दौर में उनके बिखरे हुए परीवार जाटों में मिलकर फिर जाट कहाने लगे इसी कारण जाट संघ में तंवर गोत्रों की खासी संख्या पाई जाती है।

राव रावत सहरावत सुलखण

यह ऊपर लिखत गोत्र तंवर हैं यह सब बारहवी शताब्दी के पश्चात के ही है यह छोटे छोठे राज्यबंश राज अधिकार समाप्त हो जाने के पश्चात गोत्रों के रूप में बदल गए और जाट संघ में मिलते गए जिला गुड़ग्राम में 80 ग्राम रावत जाटों के और जिला अखीगढ में 8 ग्राम है।

सहरावतों की राजधानी मुहीपाल पुर रही वहां एक पुरानी इमार्त महल के नाम से है इस इलाके में 12 ग्राम एकत्र और जिला रोहतक में दिपालपुर भदानी कैर कुलताणा और मेरठ में फैले हुए पाए जाते हैं सुलखण लायण गोत्र का बड़ा सुलक्षण पाल था यह दिल्ली छुटने पर समचाना फिर गोर्ड में बसा परिवार बढ जाने पर यमुना नदी पार करके बड़े उपजाऊ रकबे पर अधीकार जमालिया मेरठ जिला तहसील बागपत में 84 ग्राम एकत्र बसे हुए हैं।

ठेनवा थेनवा थनेवा रतंवर

यह सब गोत्र भी सुबय को तंवरबशी मानते हैं ठेनवा एक राज वंश है 1500 इसवी में इनके बड़े मखन सिंहने दरबार दिल्ली से 86 ग्राम की जागीर प्राप्त करली थी यह मन चला था बड़ी खाप खोखर जाटों में नाते करके शक्ती बढाली और सौतन्त्र राज सथाप्न करने पर उतरु हुवा शाह जहां बादशाह ने इसे बागी करार दे कर इस की जागीर को समाप्त करना चाहा यह पकड़ धकड़ का सिलसिला लम्बे समय तक चलता रहा मानो दिल्ली दरबार से लड़ाई ठन गई ये ठेनवा प्रसिद्ध हो गए औरंगजेब काल में मुड़सान राज्य सथाप्न इसके बेटे पोतों ने किया, राजा महन्द्र प्रताप इसी वंश से हैं।

भिन्डतंवर तुष्यार

भिन्ड गोत्र गवालयर के भिन्ड स्थान से आने के कारण परसिद्ध हुवा इस गोत्र की संख्या थोड़ी पाई जाती है इसकी एक शाख का नाम चाबुक तंवर भी है पिसावा जिला बुलन्दशहर का रईस और जिला जालन्धर का नोगजा रईस इसी गोत्र के हैं हिष्ट्री टाड में लिखा है कि भिन्ड को बसाने वाले तंवर नहीं थे एक दूसरा जाट परिवार था जिसका गोत्र भिन्ड था।

ताखर तुखार (तुष्यार)

यह गोत्र पश्चमी पंजाब के मुसल्मि जाटों में मिलता है जो खास तुष्यार स्थान रहा है यह लोग सुवय को तवर वंशी कहते हैं इससे यह जाना जा सकता है कि तंवर तुष्यार ही हैं तंवर तुष्यार एक ही नाम है तथा एक ही शब्द है।

आंतिल तंवर

इस गोत्र का नाम अंत्ल प्रसिद्ध होने के दोही कारण माने जा सकते यह कि यह वंश अन्तम राज्य अधिकारी था अथवा ये आंटिल हठी जिद्दी थे सोनीपत के पास इनके 24 ग्राम हैं और कहीं पाए नहीं जाते।

अर्दासु वंश

सिन्धु सिन्धड़

सिन्धु गोत्र प्राचीन है महाभारत सभा पर्व वा कर्ण पर्व में इसका बृतान्त है बंगला बिस्व कोश में निगन्द्रनाथ बनर्जी ने सिन्धु गोत्र के पूर्वज लंका के राजा जैदर्थ को अरदास वन्सी लिखा है सन्धु गोत्र के राज्य मध्य एशयाई देशों में भी रहे सिन्धु देश में बसे रहने से ये सिन्धु प्रसिद्ध हुए सन्धु सिष्य जाटों में बड़ा गोत्र है राजा जैदर्थ द्रयोधन का बहनोई था अरदाशु की 52 वी पीढी में दर्द भानु का पुत्र था सिन्धु देश में अलवर नाम की इसकी राजधानी थी माथेला शोराव भावो शेव स्थान आदी इसके कोठ थे 600 बर्ष ईसा पूर्व सिन्धु वश के राजा ने बिबेलो निया राज्य के बिरुद्ध साई पर्स राज्य की सहायता की थी परन्तु कुछ ब्रषों वश्चात साईपर्स के राजा ने सन्धु राजा पर चढाई करके देश से निकाल दिया था।

सिंधड़ गोत्र हिन्दु जाटों में पाया जाता है यह सन्धु का ही बदल नाम है।

गांनधार गैंधु गैंधर गैंधला

गांधार आदी गोत्र समस्त उत्री भारत वर्ष में फैले हुए पाए जाते हैं इस गोत्र का पूर्वज अरदासु वंश में अड़ का पत्र गन्धार था उसने अफगानिस्थान (उपगुश स्थान) में गांनधार नग्र बसा कर अपनी राजधानी बनाया द्रयोधन की माता गंधारी इसी वंश की थी महाभारत के युद्ध में गंधार दल पाण्डु दल के विरुद्ध लड़ा था एक गांधार नाम का खन्डहर जलाला बाद के निकट भी है गांधार गोत्र के बड़ी संख्या में मुसलिम जट पाकिस्तान में ही पाए जाते हैं जिला अलीगढ में हिन्दु जाट गांधार गोत्री हैं सियालपुर शोशहरा के इलाके में एक गांधार नाम का उजुड़ है जिसको गांधारी शोर लिखा है।

चीमा

यह गोत्र भी अरदासु वंशी है उरदाशु की 21 वी पीढी में चनुमा नाम का राजा हुवा महाभारत भीष्म पर्वा में चीमा गण राज्य को गांधारों और सन्धु राज्यों का पड़ोसी लिखा है यह दल अफगानिस्तान का शाष्क था पुराणों की कथावों में चिमा और दर्द जाटों की ब्राह्मण के दर्शन न करने वाला राक्षस लिखा है यह बुद्ध धर्मी बने रहे थे ब्रह्माणी मत के प्रचारिकों को खदेड़ देते रहे जेहलम जिले में चीमा जाटों की बड़ी खाप है और पन्जाब में चीमा सिष जाटों की बड़ी जन संख्या है ।

द्रेहयु वंश दर्द आदी

द्रेहयु ययाती जी का चोथा पुत्र था इसकी सन्तान के गोत्र दर्द द्रेहयु देऊ सद्रेहयु जमु काशमीर देश में पाए जाते हैं श्यालकोठ के उत्तर पर्वी देश में देऊ आदी बहुत गोत्र पाए जाते हैं अकसर हो मुसलमान हैं पान्ती की आष्टा अध्याई में दार्दी दार्दी सन्धु लिखा है यानी सिन्धु नदी दार्दी देश से वहकी है दर्द क्षत्रियों की अनेक कथा महाभारत भीष्म पर्व कर्ण पर्व वा दरोण पर्व में हैं टालवीने इनको अफगानिस्तानी लिखा है दर्दो ने पाण्डों दल में शामल होकर घोर युद्ध किया था काशमीर से मिलते हुए एक देश का नाम दर्द स्थान है पंजाब में दर्द गोत्र सिष जाटों का भी है सन्धड सज्रा साधले सन्धड़ाना आदी दर्द गोत्र की शाखा हैं ।

अनू वश

अनु वंशी जाट गोत्रों की बड़ी संख्या नहीं पाई जाति फिर भी अनुलखओंला अनुलाइम अंटावट अनुगोत्री ही हैं महाभारत सभा पर्व शलोक 26.28 में अनूलख का बृतान्त है 1911 की मनुष मिन्न में अनुला (ओंलो जाटों की पंजाब में जन संख्या 17000 थी अनुवंशी कुछ एक गोत्रों को सूर्य वशी माना जाने लगा परन्तु एतिहासिक लेख उनको य्याती की अनुशाख सिद्ध करते हैं ।

बल

बल गोत्र में राजपूत भी हैं वे स्वुयं को सूर्य वंशी भी मानते हैं परन्तु भगवतदत्त AB ने बल गोत्र को अनुवंशी सिद्ध किया है महाभारत आदी पर्वा अध्याय 59 में शलोक 17.20 तक राजा बली को राजा दक्ष का ध्योत्रा लिखा है देव संहीता नाम की पुस्तक में जाटों को राजा दक्ष की कन्यावों की सन्तान लिखा है शवी जी दक्ष के जंवाई थे और बहुत जाट गोत्र शवी महाराज को अपना पूर्वज मानते हैं अनेक इतिहासों के लेखकों ने राजा बली को य्याती वंशी ही लिखा है बलगोत्र जाटों में पूरे देश में पाया जाता है जिला अमृतसर में बोताला सिठयाला बड़े बड़े ग्राम हैं बलगोत्री अपना आना गजनी की और से जानते है ।

बलहारा

यह गोत्र भी सारे जाट देश में फैला हुवा पाया जाता है 900 ईसवी में पश्चिमी पंजाब में बलहारा का बड़ा राज्य था सुलेमान नद्दी जो बड़ा सौदागर और इतिहास का अरबी लेखक था तारीख तिब्री में बलहारा राजा का बड़ा हाल लिखा है यह कि वह संसार के चार बड़े राजाओं में से एक है अरबी बादशाह का मित्र है उसके पड़ोस में तक्षक और गूजर राज्य हैं 857 इसवी में बलहास की राजधानी मान कीर नाम की थी।

गहलोत

गहलौत गोत्र ने राजपूत बनने पर अपनी वंशावली रामचन्द्रजी से मिलाई गित्तौड़ का शूरवीर राजवंश गहलौत गोत्री है और गोधा गोदारा मुण्डतोड आदी जाट गोत्र भी गहलौत वंशी हैं एक जगह इस गोत्र का गुप्त वंशी होने की और इशारा मिलता है लिखा है कि बलवंशी भटटार्क ने फिर शक्ती प्राप्त करके गुप्त राज्य को निर्बल होने से बचालिया इसने समबत 512 बिक्रमी से 526 तक राज्य किया।

क्रप्स इन करप सन्स इन्दी केर पुस्तक 2 पृष्ट 169 के मुताबिक जो एक शिलालेख के हवाले से लिखा गया है जो 554 विक्रमे का खुदाया हुवा था भटटार्क गुप्त बल वंशी के चार पुत्र थे। ध्रुवसैन दरोण धरसैन और ध्रप्त यह चारों एक के पश्चात दूसरा गद्दी पर बैठे उनकी पट्टियां महा सामन्त महा प्रतीहार महा कर्तिक और महाराज की थी धृप्त का बेटा गोहसैन हुवा यह बिष्णु मत का अनुयाई रहा परन्तु बुध मत पर भी निश्चय रखता था इसी गोह दत्त की सन्तान गहलोत है ऊपर लिखत प्रमाण इनको गुप्त सिद्ध करते हैं गोहा और बापा रावल के बिष्य में कई कथाएं हैं, उनका वंश बल भी पुर से ही चलता है गोहा दत्ता कापिता शत्रुने मार दिया और बल भी पुर राज्य पर अधिकार कर लिया गोहदित्त का जन्म उसकी मात की गर्देश अवस्था में हुवा जब रानी भी मरगई उसका पालन बड नगर की कमला ब्राह्मणी ने किया वहां से एक भील रईस ने अपना दत्त पुत्र उत्तर अधिकारी बना लिया परन्तु गोहा वंश राजा को भीलों ने कतल कर दिया इसके याने कबर को भी एक भील ने पाला और पशु चराने के काम पर लगा लिया वह युवा होने पर बड़ा शूरवीर होनहार सिद्ध हुआ गित्तौड़ के जट राणावंशी मान इन्द्र की सेना में भर्ती हो गया सैनापती बन जाने पर राजा का बिश्वास पात्र सिद्ध होकर दत्तपुत्र बन गया और गद्दी का अधिकारी हो गया जट राणा राज्य परिवार स्थान छोड़कर दूसरे इलाकों में जा बसा अलीगढ जिले में जटोली को राजधानी बनाया टाड राजिस्ता में ऐसा लेख है गोधा एक गोत्र और एक जाति भी है ये सुबयं को गहे लोत मानते हैं।

गोदारा

गोदारा जाट गोत्र का भाठ लिखता है कि इस देश में मोहले राजपूत दुखदाई हो रहे थे एक ब्राह्मण ने मेवाड़ के एक राज कुंवार को गोद मांग लिया वह गोद आरा कहाया यह कहावत बेजोड़ सी है कि एक शूरबीर राज कुंवार ने एक ब्राह्मण के गोद होने की आवश्यकता हुई हो बीकानेर राज्य में गोदारा की बड़ी खाप है राठोड़ों ने इनको मित्र बना कर बीकानेर राज्य स्थापन किया पूरा हाल ऊपर लिखा जा चुका है गोदारा के भाठने यह नहीं लिखा कि ब्राह्मण का दत्तपुत्र होने तक वह गेहलावत राजपूत था फिर जाट जाति में कैसे मिला।

लौवंश लांबा

लांबा नाम का गोत्र प्राचीन है यह जाट राजपुत मरहटा और खत्रीयों में भी पाया जाता है इस वंश को श्री रामचन्द्र जी के पुत्र लौ की सन्तान माना जाता है दरोण पर्व शलोक 22-86 में राजा ब्रहदबल को लौ वंशी लिखा है प्रन्तु यह पर-माणिक बात नहीं है कि लांबा गोत्र कब से इस नाम से प्रसिद्ध हुवा है लौ से या किस समय से प्राचीन घटनाओं में लौ गोत्र का वृतान्त नहीं मिलत।

सिकरवाल

यह गोत्र भी सूर्यवंशी माना जाता है इस गोत्र में बड़ी जनसंख्या राजपुत है 12 ग्राम सिकरवाल जाटों के जिला मथुरा में हैं।

गौर जुड़ेल

गोर गोत्र सूर्य वंशी है वायु पौराण अंश 99-130 में लेख है कि राजा मानधाता की माता का नाम गौरा था वह चन्द्रवंशी थी राजा मानधाता को गौर नरेश कहा जाने लगा भगवत दत्त B. A. ने भारत के इतिहास में 376 पृष्ट पर गौर ब्राह्मणों और गौर क्षत्रियों को मान धाता की सन्तान लिखा है हर्त ब्राह्मण गोत्र मानधाता जी के पड़ पौत्र से चला अफगानिस्थान में मुस्लिम धर्म आने से पहले हिन्दु गौरवंशी राज्य था वर्तमान में भी जाबलिस्तान में गौर जई पठान बड़ी खाप है और गौरचानी रिन्द बिलोचों की एक खाप है और उनको असली बिलोच नहीं माना जाता बीकानेर राज्य का भागौर जाटों की राजधानी रही और भाद्रा भादों गौरों की राजधानी थी बलवंशीयों ने उनको समाप्त कर दिया फिर अजयमेरू के पर्वती देश पर गौर राज्य रहा उन गौरों को चुहाणों ने विजय किया मालवा और भिन्ड से गौर नरेशों के शिलालेख मिले हैं 36 राज्य दलों में इनकी गिन्ना थी भादों गौर गोत्र की शाख जुड़ेल भी लिखा है।

चाहार चाहल चोल

चाहार गोत्र काफी बड़ा है गुड़गावाँ जिले और भरतपुर में इनकी बड़ी खाप है भरत पुर की चार फौजदार जातियों में इनका शुमार है आगरा कमिशनरी में चाहार गोत्र के 242 ग्राम है समस्त पंजाब में फैला पाया जाता है चहल चाहल बदले हुए नाम है यह उन्मान है कि चोल राज्य वंश ही चाहार कहाने लगा है जो दक्षण में बड़ा पुराणा राजवंश रहा अनीसैन्ट इन्डिया इतिहास में चोल वंश का वृतान्त है ।

बहिक बाही बहेला

वर्तमान काल में यह गोत्र तीनों धर्मों में पाया जाता है पाकिस्तान में बाही और बहेला बड़ी संख्या में पाये जाते हैं महाभारत सभापर्व में बाहिक दल का वृतान्त है कर्ण पर्व में कथा है कि राजा शल्य बाहकों को आय का छटा भाग देता था नन्द-लाल डेने बाहिकों को मद्रकवंशी ही सिद्ध किया है जिला शेखुपुरा में आराट बाहिकों की राजधानी थी और हाशक क्रमम्क कालक करकर उनके शहर थे मेरठ जिला के दोराला प्रगने में 6 ग्राम बाहीयाण जाटों के हैं ।

सोहल सोहड़ सोहु

यह गोत्र भी चन्द्रवंशी है महाभारत सभापर्व में इसका भी राजादलों में वृतान्त है यह गोत्र राजिस्थान में बड़ी जन संख्या में सोहु पट्टी है पछमी पंजाब में सोहु मुस्लिम जट पाए जाते हैं गुड़गावां बसई आदि ग्रामों में सोहु गोत्र है सोहल और सोहड सोहु के बदले हुए नाम है ।

उठीराए उठवाल

यह गोत्र समस्त पंजाब में फैला हुआ तीनों धर्मों में पाया जाता है यह भी महाभारत में समल्त गोत्रो में से हैं । सभापर्व में इसकी राज्य दलों में गिन्ना है ।

बंगड़े बग बंगामर

इस गोत्र का वणन भी महाभारत में है यह लोग सुवयं को मठी गोत्र की शाख भी जानते हैं यह भुल ही है यह भठी से पुराणा गोत्र है और बिखरा हुवा पाया जाता है ।

नहरा नाड़ा भट्टा नाहर

इस गोत्र का पुर्वज नरहरीदेव था उसी के नाम से एक पर्वत का नाम नरहर प्रसिद्ध हुवा यह कहा जाता है कि ये सन्धु गोत्री हैं जैपुर राज्य में एक नेहरा नाम की राजधानी रही जिस पर नेहरा जाट राज्य था इस राज्य को शाहनशाह अकबर ने

समाप्त कर दिया था। कभी ये छोटे राज्यों से भेठ लेते रहे और भेठवान कहाने लगे कुछ लोग नहरा को नाड़ा कहने लग गए हैं परन्तु शुद्ध नाम नहरा ही है।

गुलिया

गुलिया गोत्र के विषय में उनके भाठ की लिखी वसावली है। जो एक दन्त कथा को उसके साथ समिलित किए बगैर अधूरी है। इसका कारण यह है कि भाठ ने घटना के कई शताब्दी बीतने के पश्चात भूल पड़ जाने पर लिखी प्रतीत होती है। यह कि लगभग आज से एक हजार वर्ष पूर्व बादली को बसाने वाला राजा बदरसैन चौहान था! उसके शासन काल में साइयद नाशिर हुसैन मसहदे शाइयद अता उल्ला मसहदे की सेनाएं बड़े पीर सईद हुसैन के नेत्रत्व में काबुल को लांघ कर इलाका हरियाना को तहस नहस कर रही थीं. बादली का राजा बदरसैन उसके साथ झड़प में मारा गया और बादली को उजाड़ दिया गया उस पर मुसलमान हाकिम का अधिकार हो गया। उसने रोड़ और कलाल कृष्क बसा लिए।

गुलिया गोत्र के पूर्वज पृथ्वीराज को सेना में सैनिक थे तरायण युद्ध क्षेत्र में पृथ्वी की हारी हुई सैना से सात बिक्ती भागे २ भुखे प्यासे बादली से तीन मील दक्षिण में एक तालाब के साथ ठाकुरद्वारे में पहुँचे। उसके निकट एक शराब की भट्ठी चालु थी। उनमें से 6 ने पानी जानकर शराब की गोलक में से शराब पीली। परन्तु उनको पश्चाताप हुआ कि ब्रह्मणतव नष्ठ हो गया। सिवाए एक के बाकी 6 ने जनेऊ उतार कर उसी गोल में डाल दिए और स्वयं को गुलिया जाट घोषित किया। वह देश मालवा के इन्द्रगढ निवासी उदेवचन्द ब्रह्मण गौंत्र कोशिश जैमुनी शाखां की सन्तान थे। उनके नाम दोसर, औसर, सोहल भाल थे। और उनके तीन पुत्रों के नाम आहल, माहल और रूहल थे। वह बादूली में मुसलमानों के कृष्क सवीकार होकर बस गये। यह घटना जेष्ठ शुदी तीज बीक्रमी 1250 सन 1193 ई० की है।

इस लेख में कई बातें अमान्य हैं जो दन्तकथा समलित करने से मूल सुधार हो जाती है।

यह कि इस तिथि तक पृथ्वीराज के शासन काल में बादली पर मुसलमानों का अधिकार अमान्य है। इन सात के नाम उनके बतलाए हुए पिता उदेयचन्द के समान सभ्य नहीं। बनावटी और डाकुओं के सदस्य थे। युद्ध स सुरक्षित जान बची रहने का समाचार अपने घर में दिए बगैर वह मालवे का सीधा मार्ग छोड़कर बादली में क्यों आए। उन्होंने पानी के धोखे शराब नही पीई अतएव जान-पूछकर पीई क्यों कि शराब का सवाद तलख और गन्ध तेज होती है। उस स्थान पर पानी का अभाव

ना था। तालाब था और मन्दिर का कुप था। मदिरा धन को सुना नहीं छोड़ रखा होगा। और उसके धनी ने जनेऊ शराब में नहीं डालने दिए होंगे। जाट जाती ने विदेशी ब्रह्मनों को एक दम से जाट स्वीकार नहीं किया होगा।

दन्त कथा यह हैं। कि बदरसैन चौहान पृथ्वीराज का सैनिक अफसर और बादली प्रगने का जागीरदार था। और इन्द्रगढ़ के चोहान वंश से था। इसके पुत्र पौत्र सब सैनिक थे। पृथ्वीराज का राज नष्ट हो जाने पर देश में विद्रोह हो गया और विद्रोही जाट और राजपूत थे। मुहोमद गोरी के सैनिक अफसर सईयद नासीर हुसेन और अताऊला विद्रोहियों को कुचलने पर नियुक्त थे। बदरसैन अताऊल्ला के साथ युद्ध करता हुआ मारा गया। और बादली के जाट राजपूत और बदरसैन का कुटम्ब वहां से भाग निकले बेघर होकर मारे मारें फिरने लगे बदरसैन की सन्तान कबूतरों के सदश्य बादली के झेरे में पड़ने पर उतारू थी। और सिर घसोने को स्थान ढूंढ रहीती थी। वह जाट तथा राजपूत के रूप में बादली में प्रवेश नहीं कर सकती थी। वह पान्डुओं के उदाहरण को याद रखते हुए गरीब ब्राह्मणों के भेष में पाण्डुओं जैसे बनावटी नाम धारण करके 1193 ई० की युद्धघटना के नामालुम कितने समय पश्चात बादली के जंगल में आए। सिवाए एक के जो उन का पिरोहित था 6 शराब पीते रहे और कलालो से भेदघाट लेते रहे। मुसलमान जमौदारु को कतल करने म सफल हो गये बादली के मुसलम परीवार और उनके कृष्क रोउ और कलालों को भयभीत कर दिया। तब उनके दयालु बनकर उनसे मिले और कहा हम विदेशी ब्राह्मण हैं आपकी रक्षा और सहायता करेंगे और खेती भी करेंगे। उनकी प्रार्थना स्वीकार हो जाने पर अपने कुटम्फ को भी बुलालिया और उनका कार्य सफल हो जाने पर जनेऊ उतार कर वस्त्र भुषण रखने की गोल में डाल दिये और कह दिया हम गुलिया जाट हो गये। बादली के गोहान्ड में यह भेद छुपा न रह सका था। कि यह बदरसैन का ही कुनबा है। अकसर चोहान राजपूत जाटों में मिश्रण हो चुके थे चोहान गोत्र कहलाने से पहले वे तक्षक जाट थे। इनमें जोश कायम रहा जब तैमूर रामसिसा के जंगल में कतल आम का तमाशा देख रहा था तो एक रणवीर नामी गुलिया ने उस पर बरछी से अटैक कर दिया था। यह बात सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड में सुरक्षित है। इनके 24 ग्राम बादली गोहान्ड में हैं। और रूड़की सेवती पुरुक में। और कुछ फैले हुए पाए जाते हैं। 12 ग्राम गंगा जमना नदियों के खादर में है। रामपुर, साजरा, सराय, बाढसां, नागंल, जटवाड़ा, चिरागदिल्ली, दुबीटा, आजपुर, पालमी, जियासराय, रामपुर, सो हरम, पस्तरा, पचगांव, जहुरा, आदमपुर, काजर हेरी, मुडसान, सलीमपुर, माजु और पपीका आदि।

जाट गोत्रों की नाम आवली

मैंने सारे जाट गोत्रों के नाम जमा करने में बड़ा परिश्रम किया है परन्तु दूर दराज देशों में मेरी जानकारी से बनचित कुछ नाम रह गये जो दूसरे अडीशनों में लिखे जाते रहेंगे।

अड़	आत्रे	कठय	कमल-कंवल
अधर	अटाबट	कोलडया	कंजल
अंधरा	उनाई	कसवां	कंजन
अंघला	अरार	कोयल	ककराल
अहलावत	औबार	कसीना	किंग
आदरायण	अर्बी	कधुरया	करवर
ओंला	अट्टा	करवड	करोंटा
अनुलख	अंटस	कोरड़	कसतुरा
आनलायम	ऊंग्रा	कनवाणीया	काघर
उलष औलख	ओंरा (औंला)	कुकणा	कालसर
उल्हा	कासन	कुवाला	कालया
उल्हन	काली रामरण	कसमी	कल्याण
असलाना	काली धामरण	कुहाड़	कादु
ओपल	कालीराए	कोजल	कंब
आकुदा	केट	काकरबाल	कांदल
औटाल	कुंडु	करवारा	कनेरा
उठवाल	कटार्या	कीचर	खैर
ओडी	काकराण	कन्धवाला	खैरा
ऊदवाल	काक	कंवोला	खर्ब
उठीराय	कुकर	कलाणी	खत्री (क्षत्री
अलवलपुरी	कारसकर	कोखन्दी	खोखर
अंजरा	कादयाण	कुकड़या	खखड़ी
अलमत	काजले	कसतवार	खुटेल
अंजना	कीन्दरा	कोहर-कोर	खल्लु
अंजलन	कंडवांसरा	करील	खलिया
अचर्या	किलोरया	कोर	खेलरी
इसरान	कलहन	कबोहिया	खेनवा
आंतल	कडवार्या	केकन	खंघा

खेरया	गौरायण	गहरबार	चन्देल
खागस	गठवाला	गारेवाल	चाटा
खांगर	गंडास	गारखल	चांदन
खटक	गोयत	गठर	चांगरी
खोबड़े	गोदारा	गन्धी	चज
खत्रीया	गोधा	गोंदल	चचा
खोखीना	गोदई	गादर	चाटर
खेत्री	गौराहा	गवोया	चौरास
खटमारीया	गजरणया	गठरवाल	चिठा
खेडा	गांधर गैर	गोछ	चगना
खीची	गैंधला गंधीला	घमरण : घुमरण	छोंकर
खोग	गानधार	घल्लु	छीलर
खोखा	गैंधवाल	घोघस	छेल
खाडीया	गरीर	घरण घस	छिकारा
खोरवाल	गहला	घलोर	छिम
खोई	गथना	घेबा	छोटाल्या
खखड़	गहले	चंदरायण	छग
खनवारा	गेलु	चन्देल	छन्दला
खोंध	गोट	चलकर	जूण जून
खीची	गोया	चरावे	जादों
खनगर	गोयल	चाहीयाण	जार्जया
खरल या खराल	गुलेर्या	चार्ज	जैसबार
खरड	गालुजा	चन्दड़	जोहिया (पोध्या)
गड़वाल	गुदड़या	चुहड़	जुड़ेल
गहुर वाल	गोंदल	चाहल	जैतवार
गदाव	गलसट	चाहर	जीवला
गुकरड़या	गरी	चौधराण	जाखड़
गिल	गरीया	चीमा	जटराण
गलहत	गन्दना	चन्दी	जागलारथ्य
गल्या	गंग	चोरट	जाघर
गहलौत	गजराल	चंग	जांघु
गौर	गढ़वार्या	चामड	जिन्ही

जन्दु	डागा	तक्षक	देवली
जारा	डालगी	ताहीयान	दीन्हा
जटाल्ली	डागल	ताहर	दांगी
जंगा	डबास	तिलोका	देऊ
जांगल	डडी	तरगर	द्रेहयु
जादर	डोडा	तातुर	दर्द
जन्ज जनजोहा	डाभ ढिल	ताथीयाल	द्रेहवाल
जाग	डिढाण	तोला	दहील
जलीहा	डेलु	तिहाल	दोध
जमन	डेला	तिथले	ददाण
जोगड़ा	डभ	थोरी	दहीयत
जोटा	ढुल्ल	थनवार	देहलाण
जोजली	ढिल	थलहड़	दनुया
जसपाल	ढिल्लों	थनंद	देलकर
जम	ढींडस	थेवान	दहीमा
जाली	ढोट	थ्योकर	दोस्द
जराल	ढोलिया	थातल	देवसर
झमट	ढडी	थोथाल	देवयाली
झुरिया	ढाका	दहीया	दखाण
झुरण	तारड	दोहल	दनीवाल
झंझ	तांगु	दुहण	दड़ाग
झुंझला	तेव थीया	दहला	देलक
झांदर	तारड	देशवाल	दहरया
टांक	तालातोड	दराल	दहला
टोकस (तक्षक)	तुमर	दलाल	दोदरा दोघड़ा
टीटा	तलढु	दलची	दुराहा
टिवाणा	तुंग	दियाल	धना
ठुकरीला	तुषार	दहड़	धनखड
ठाकरायण	तन्वर	दहीया	धनासरा
ठेनवा	तितरवाल	दहबा	धारीवाल
ठोसी	तोक्षी	दक्षत	धारण
डागुर डांगरी	तापर	दपेत	धारड

धत्रवाल	पौनिया	बुड़या	ब्रषभानु
धीगड़	पान्न	ब्राईच	बिन्धड़ा
धनोहा	पल्हुड	बाही बाह्रिक	दैनी
धोचक	पांग़र	बलया	बीरवाल
धीनसा	पढे	बुरेा	बिजेर्णया
धमाल	पंघाल	बल बलवान	बुटर
धाड़ीवाल	पोता	बालायण	बस्ता
धौल धोलिया	पावड़या	बादया	बार्थ
नाण्या	पोर्सवाल	बलहारा	बदन
नाहरा	पुरुवाल	बाला	बाहान
नाड़ा	पठुर	बांगरे	बहेला
निठार	पछाघा	बागडी	बोसाल
नुन्हर	पन्वार	बंगामबर	बघवीया
नांदल	पन्नु	बंगडयाल	बाबर
नागा	पावइया	ब्रहमाण	बुगल्या
नसवारीया	पधान	बसरा	भुरा
नढे	पालण	बुदीया	भेटवाण
नुहवाल	पलनिया	बांदर	भुभा
नरवार	पोतलया	बाजवा	भीम
नैन	पुरबर	बधोनीया	भलसरा
नोखा	पत्तु	बधोतीया	भडाईच
नांदीलया	फौगाट	बांसी	भुगड़ा
नूनर	फगेडन्या	बांभु	भुगोत्र
नसल	फालसवाल	बहणीवाल	भागी भागीवाल
नागल	फोका	बोडया	भारगर
नंधरा	फोर	बीरड़ा	भडी
नाग	फोग	बलयाण	भुमभला
नको	फफड़ा	बुराड़	बांबल
नौनस	बुधवार	बड़ोदा	बाज
नग	बड़, बाड़, बड़क	बैंसी	बडियार
नरना	बड़वाल	बाठ बाटी	भांकर
नीन	बलभद्र वीरभद्र	बंग	भंगु

भीकण	माही	मांढल	रजवन्ती
भागा	मोड़ा	मकीवाल	रांझा
भट्टी	मान	मांथ	रजका
भैंरावाल	मील	महर	राजर
भेलसरा	माड़	मलाण	रारणा
भादो	मलिक	मायर	राया
भाभु	मोर	यदु	रहंग
भड़ासरा	मोरीया	योल्या	रछाल
भोगडया	माथुर	यसपाल	रहसी
भज्जा	मांदल	रिवासिया	रहीर
भेढया	मंगला	रुहल रुहल्याण	रहाण
भुकर	मंगर	रकबाम	लोहमरोड़
भराला	मंग्त	रांढु	लठवाल
भेला	मिनहास	रुडा	लाठर
भिम्भ	मंजक	राठी	लोका
भेड़वाल	मीढ	राठड़	लांबा
भडेवाल	मिढाण	रोटल्ल रिट्रोल	लहरी
भुंभु	मांढल माढण	राए	लायकराम
भुंडरा	मुरायण	राव	लोधा
भुल्लर	मोर्थ	रात्व	लोट
भद्र	मुराल	राएदार	लुथर
भोक	मासला	रोभ	लुगणा
भाग्त	मनु	राएकंवार	लतवाल
भगवाल	मक्कीना	राढ राहड़	लत्याल
भलम	मट्टा मिठा	राजोरया	लोर
भकरील	मीर	रणवा	लेवरा
भीढलाण	मोहन	राणा	लोधरा
मदरक	मोहल	रंगी	लक
मल्हय	मालौ	रादर रोध	लथा
माहिल	मर्ड	रणधावा	लामी
माहां	महे माहे	राज्याण	लांगा
माहान	मांढ	रजु	लोहल

लंगरया	नागरवाल	समरा	सोहे
लडायण	सनसनीवाल	सरयारा	सन्न
लार	सुघडया	सीखु	साझ
लोहाण	सुभगवों	साधड़ा	साड
लोहर	सिहवाल	संगड	सजागा
लोहचब	सेजवाल	सोढा	सोढा
लंधड़ वाल	सिहाग	सेरिज	सहा
लोल्हे	सरा	सलाहु	हंगा
लुण	समरा	सयाल	हंगीला
लोपराल	सरयारा	सार्ण	हुंसावत
लधर	सहोत्स	सीधड	हुढ़ा
लोहद्रा	सांगल	संग्रवाल	हांड
विर्क	सींगल	साहीवाल	हेर
वाक	सांगवाण	संडरायण	हाला हालू
वर्या	सीण	सांसी साहसी	हरड
वारस	सकेल	सुपार	हडतित्तरवाल
वीडण	संबा	सपराय	हराल
वैस	समिढ	सहोत्री	हालु
वींगाह	सहरावत	सजरा	हांड
वेसन	सरोहा सरोही	सामणवाल	हड़
शवलंखी	सगरोहा	संडा	हींस
शौरायण	सेठि	संडरायण	हरीया
शामरता	सीवाज	सर्वाया	हेल
शीहमार	सीसरा	सिलकरी	हंजल
सिन्धु	सोहडु	सोर्मया	हांगरा
सिच्धु	सोहल	सोहन	होंजण
साही	सोहु	सेजवाल	हतयार
सोलंडा	सोमवाल	सगड	हांडु
सेलखरण लान	साकोर	सियाण	हयाल
सांई			

अष्टम अध्याय

इस्लाम धर्म का जन्म

इस्लाम धर्म का प्रचार 610 ई० में आरम्भ हुआ हजरत मुहम्मद साहब ने 40 वर्ष की आयु में यह दावा किया कि खुदा की वही (आकाशवाणी) मुझ पर नाजल होती हैं वे आयतों के रूप में लिखी जाने लगी। हजरत मौहम्मद 570 ई० में मक्का शरीफ में पैदा हुए थे आपका परिवार मक्का के मन्दिर का पुजारी था। उस समय अरब देश में मूर्तिपूजा पर विश्वास अधिक था। केवल खुदा (परमात्मा) पर निश्चय नहीं था। हजरत साहब को ईश्वरी ज्ञान की जज्ञासा उत्पन्न हुई। 40 वर्ष की आयु में प्रचार आरम्भ किया कि मूर्तिपूजा अधर्म है केवल ईश्वर की प्रार्थना धर्म है मनुष्य माल सब एक समान हैं। ऊंच-नीच का भेदभाव अन्याय है शराब पीना प्रस्त्री को बुरी नजर से देखना आदि गुना हैं इस्लाम धर्म प्रचार और शस्त्र बल से अर्ब ईराक अफगानिस्तान आदि देशों में शीघ्रता से फैल गया था। परन्तु भारतवर्ष में मुस्लिम शासन हो जाने पर 12 वीं ई० के पश्चात ही फैल सका इस्लामी देशों के सौदागर फकीर सब भारतीयों को इस्लाम धर्म की महानता का सन्देश देते आ रहे थे परन्तु इस्लाम धर्म को भारतवर्ष में महमूद आदि आक्रमणकों ने लूट मार और मार काट जारी रख कर अत्याचारी धर्म जना दिया था।

भारतवर्ष में मूर्तीपूजा पाखंड अंधविश्वास की कमी नहीं थी। फिर भी सन्त, महात्मा ब्रह्मज्ञानी पण्डित सत्य ज्ञान का प्रचार जारी रख रहे थे। इस्लाम धर्म एक ईश्वर की इबादत का प्रचार कर रहा था किन्तु हिन्दुओं को कई बातें हिन्दू धर्म के मुकाबले में अमान्य थीं और असहनीय थीं यानी गऊ को बध करना रसोई घर में शुद्धताई न रखना निकटवर्ती बहरणें से विवाह को मान्य करार देना और ईश्वर प्रार्थना में शान्ती से बैठा रहने की अपेक्षा कई आसण बदली करना यह बातें भारतवर्ष में इस्लाम धर्म की मानता में रुकाबट बनी रही जबकि हिन्दू धर्म के गया गुजरा होने में कोई कसर बाकी नहीं थी पाखंड और अन्ध-विश्वास धर्म को खाए जा रहा था। हिन्दूधर्म इस्लामी दौर में कच्चा धर्म कहा जाने लगा पण्डित मौलवियों के आगे मोन नि उतर थे वेदक धर्म से कोसों दूर भारत में इस्लाम धर्म फैलाने में बर्बता का व्योहार किया जाने लगा।

गऊ मांस खिलाया जाता रहा। जो बड़ा अच्छा शस्त्र सिद्ध हुआ। एक ही ग्रास भक्षण कराने से पण्डितों के मतानुसार हिन्दू धर्म में रह सकना असम्भव था पतित हिन्दू बहुत पीढ़ियों तक धर्म में स्वीकार होने के अभिलाषी रहे। परन्तु लिए नहीं जा सके।

सुलतान महमूद और जाट

सुलतान महमूद ने भारतवर्ष पर 17 धावे किए। शहरों और मन्दिरों को लूटा, और बरबाद किया। और बेशुमार धन लूटकर ले जाता रहा। वह गजनी से लूट और इस्लाम धर्म मनवाने का लालच देकर बड़े लशकर के साथ आंधी और बवूले की भांति चलता था और भारतवर्ष में धर्म मचाता रहा। महमूद के हमले राजपूतों की शूरवीरता और देशभक्ति को शरमन्दा करते रहेंगे। सफर से थकी बिदेशी मुठी भर सेना के सामने राजपूत राजा बिलों में घुसे रहे। यह उन में फूट का कारण था। इन 17 हमलों में से दो हमले जाट देश पर हुये। जिनकी बाबत टाड हिस्टरी में जाटों के हक में बड़ा सुन्दर लेख हैं। महमूद ने सोमनाथ के बड़े धनाढय मन्दिर को लूटने के लिये चढ़ाई की। यह अचानक घटना नहीं घटी थी राजिस्थान के राजपूत राजे सोमनाथ के मन्दिर को लूट से बचाने के लिए वहाँ एकत्र हुए थे परन्तु हार हुई। और मन्दिर को जी भर कर लूटा गया। कारण यह था कि सोमनाथ के बचाव के लिए राजाओं का जाना दर्दा मर्दी का नहीं था अपने कर्तव्य को धक्का देना था उन राजाओं में आपसी मिलाप न था वे अन्धविश्वासी भी थे बड़े पुजारी ने यह निश्चय करा दिया था कि युद्ध की आवश्यकता नहीं होगी। सोमनाथ जी मलेक्ष सेना को अन्धा कर देंगे। और राजपूतों को सुन्दर देव दासियों का नाच दिखाया जाने लगा जब युद्ध आरम्भ हो ही गया तो भी एक बड़ा राजा देवदासी के नाच में मग्न था युद्ध का परिणाम यह लिखा है कि बहुत से पंडे मारे गये। राजपूती सेना का खास नुकसान नहीं लिखा राजे भाग खड़े हुये और वापिस लौट गये। मन्दिर, का सोना ऊँटों पर लादा गया और गजनी का रस्ता पकड़ लिया।

जाटों का धावा हिस्टरी आफ टाड ने लिखा है कि जब महमूद का लशकर और बारबरदारी मुलतान के इलाके में से गुजर रहे थे तो मुलतान के जाट दल ने अचानक धावा करके लशकर को बुरी तरह बखेर दिया और ऊंटों का माल ले लिया। महमूद घबरा गया। लशकर को समेटा परन्तु खतरा दूर नहीं हुआ। गजनी दूर जान पड़ी। मन मार कर चलता बना और गजनी पहुंच गया।

महमूद ने दो साल तक भारतवर्ष पर आक्रमण नहीं किया जाटों की बर्बादी की तजवीज सोचता रहा और तैयारी करता रहा। पूरी तैयारी कर लेने पर महमूद दो साल पश्चात पंजाब में दाखिल हुआ तो जाट देश को नदियों से घिरा हुआ पाया। 7 महीने एक ही स्थान में डेरा डाले रहा। उसने नदियों के पानी में नावों में बैठकर लड़ाई लड़ने की तजबीज सोची। खास किसम की नाव बनवायीं गई जिनके आगे तेज भाले जड़े गये थे। ताकि जाटो को नावों में टक्कर से छेद हो जायें। और डूब जायें। नावों में बारूद के गोले रखे गये। ताकि जाट नावों पर फेंक कर बरबाद करदी जायें। और आगे के रुख नावों पर महराब बनाये गये। ताकि वे ढाल और ओट का काम दें। पूरी तैयारी होने पर पानी में मुकाबला हुआ। जाटों के मुकाबले पर यह नये हथियार थे। इसमें. जाटों की बड़ी बरबादी हुई। बगैर लडे डूब गये। फिर पूरा जाट इलाका उजड़ गया। हमेशा के के लिये देश छूट गया। हरयाणा में टांक डागर आदि कई गोत्र यह घटना याद रखे हुये हैं। कि उनके पूर्वज महमूद से युद्ध के बाद वहाँ से निकल कर आये थे।

मोहम्मद गौरी और जाट

मुहम्मद गौरी की आँख दिल्ली राज्य पर थी। वह लूटमार का भूखा नहीं था भारतवर्ष में राज्य स्थापित करना चाहता था। पृथ्वीराज के शत्रु राजा जयचन्द ने उसको सफलता की आशा बढ़ाई हुई थी। परन्तु पृथ्वीराज मामूली शत्रु नहीं था और पृथ्वीराज ने भी गौरी की सेना शक्ति को जान लिया था पृथ्वीराज ने जाट खापों और सर्व खापों की सेना की सहायता मांगी। जाट खापों ने 22000 शूरवीरों की सेना भेजी। उन्होंने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया। और मोहम्मद गौरी की सेना को हरा कर निकाल दिया। दूसरी बार मौहम्मद गोरी ने फिर चढ़ाई की। इस युद्ध में सर्व खाप पंचायत ने 18000 सेना भेजी। उसने 15 मील गौरी की सेना को पीछे धकेला। परन्तु पृथ्वीराज की सेना साहस छोड़ गई। और जीत मौरी की हो गई। यह लेख जाट सर्व खाप पंचायत के नेता श्री कबूलसिंह के रिकार्ड में है जो सोरम जिला मुजफ्फर नगर के हैं। जब मौहम्मद गौरी वापिस जा रहा था तो मुलतान के 25000 खोखर जाटों ने धावा करके उसका सिर काट लिया था। हिस्टरी टाड और भारत के इतिहास में भी ऐसा ही लिखा है। यह घटना 1192 वा 1193 ई० में घटी।

रजिया सुलताना और जाट

दिल्ली पर इस्लामी राज्य स्थापित हो जाने के 14 साल बाद. कुतुबुद्दीन

ऐबक की उत्तराधिकारी रजिया सुलताना को उसके अयोग्य भाइयों ने दरबारियों से मिलकर गद्दी से उतार कर भाग जाने पर बाध्य किया तब वह भटन्डा के सूबेदार की शरण में चली गई। और गद्दी पर फिर बहाल होने के लिये वहां एक जाटों लशकर एकत्र किया। और शाही सेना से युद्ध किया। बेतरतीब दल की हार होनी ही थी। और बड़ी सेना के मुकाबले पर छोटी सेना भी थी। परन्तु जाटों ने शूरवीरता को मना दिया। यह वाका भी हिस्टरी टाड VI में लिखा है इन घटनाओं से यह जाना जाता है कि जाट लड़ाई के शौकीन बने रहे हैं।

कुतुबुद्दीन ऐबक और जाट

1205 ई० में हांसी के हाकिम को जाटों ने घेर लिया। और किले को विजय करने की ठान ली। कुतुबुद्दीन सेना के साथ रातों रात हांसी पहुँचा। और कठोर मुकाबला हुआ हिस्टरी टाड में लिखा है कि दोनों सेना लोहे की पहाड़ों से जो टकराई और कठिनता से जाटों को धकेला जा सका। जैसा कि टाड राजिस्तान में लेख है।

इलाउद्दीन खिलजी और जाट

इलाउद्दीन खिलजी हिन्दू जनता के लिए कठोर बरताब करने वाला बादशाह था। उसने रानी पदमनी की मांग करके चित्तौड़ को बरबाद कर दिया था और अपने ओछे शस्त्रों को जना दिया था उसका साहस भी बढ़ चुका था उसका सेनापति मलिक काफर था जो हिन्दू धर्म से गिराया जाकर मुसलमान हुआ था यह पंजाब का सैनी पहलवान था भंगन को घर में रखने से पतित हुआ था। यह हिन्दू मात्र से द्वेष रखता था। इलाउद्दीन ने मलिक काफूर की साजिस से हिन्दू जनता पर जजिया नाम का कर लगाया और हिन्दू विवाहों पर सरकारी निगरानी आयद करदी। इन बातों को सहन न करते हुए खानपुर जिला मेरठ में सर्व खाप पंचायत का अधिवेशन बुकाया गया और युद्ध का निमन्त्रण दिल्ली को भेजा गया। घोर युद्ध करके बादशाह के फरमान को रद्द कराया गया। बादशाह को जाट सर्व खाप से क्षमा मांगनी पड़ी। और युद्ध का खर्च भी दे दिया। कारण यह था कि पंजाब पर तैमूर ने धावे शुरू कर दिये थे यह घटना भी सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड में है। यह भी लिखा है कि मलक काफूर की सेना को दो दिन के युद्ध के पश्चात मैदान से भगाया गया।

अमीर तेमुर और जाट

मलफुजात तैमुरी में लिखा है कि अमीर तेमुर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया तो उसने बहुत जाटों को कत्ल किया क्योंकि वह जाट जाति का कट्टर शत्रु

था जाट नाम से ही उसको दवेष था वह चुगताया (सकटाया) का हाकिम था उसके वंश की राजधानी ट्रनेर ओकस्याना थी उनका पड़ौसी 1360 ईसवीं में जाट जाति का बड़ा राजा कोकलतास था उसने खुरासान पर चढ़ाई की और विजय किया फिर टरनेर ओकस्याना पर चढ़ाई की तो वहां का राजा भाग निकला परन्तु उसके भतीजे अमीर तेमुर चुगताई ने क्षमा मांगली और आधीनता स्वीकार कर ली जाट राजा कोकलतास की सेना में 100000 एक लाख शूरवीर जाट थे और जनता का दिल हाथ में था 1380में राजा कोकलतास बे औलाद मर गया गद्दी का कोई उत्तराधिकारी नहीं था राज गद्दी पर अमीर तेमुर का अधिकार हो गया जो बड़ा होशियार चालाक सफल कारसाज शूरवीर था परन्तु जाट जनता ने उसको राजा स्वीकार नहीं किया विद्रोह हो गया जाट जनता जाट राज्य की दावेदार थी अमीर तेमुर ने सेना के हाथीं मार काट आरम्भ कर दी नग्रों को जलाया धन लूटा और कत्लआम किया विद्रोह कठिनता से समाप्त हुआ परन्तु जाटों से बेफिक्र नहीं हुआ आखिर 1388 तक उस देश की जाट जाति को तलवार के घाट उतार दिया या देश छुटा दिया उस समय पंजाब में जाट जाति शक्तिशाली थी और तेमुर को उसकी ओर से बेफिक्री न थी उन दिनों लाहौर में मुसलिम हाकिम था तेमुर नामे में लिखा है कि जाट जाति बहुत ही शूरवीर है मेरी अभिलाषा जाट जाति का शासक बना रहने की रही तेमुर लिखता है जाट देखने में देओं जैसे संख्या में चींठियों (किड़ियों) के तुल्य मलफुजात तेमुरी पृष्ठ 429 तेमुर ने लिखा है कि जब उसने 1390 में भारतवर्ष पर धावा किया तो धाघर के जाटों ने उसका मार्ग रोका उसने हजारों जाटों को कत्ल किया हिस्ट्री To D और तुजक बाबरी में भी बाबर ने लिखा है कि भटनेर के इलाके में उसकी सेना की जाटों से मुठभेड़ हुई थी उसने जाटों को कत्ल किया To D

शेरशाह सुरी हमायु और जाट

शेरशाह सुरी ने जब हमायु के साथ युद्ध किया तो उसने जाट खापों से सहायता प्राप्त की थी क्योंकि हरयाणा देश के जाट हमायु के विरोद्ध युद्ध करने के लिए उतारु थे कारण यह था कि हमायु ने किसी बात से नाराज होकर अपने हाकिम मुल्ला शकीबी कों ग्राम ढांढर्स प्रगना गोहाना को घेरा देकर बरबाद करने को भेजा था कई जाट खापों ने मिलकर उसका मुकाबिला किया था और उसकी सेना को परेशान करके हटाया गया था हमायु जाटों को पूरी तरह दबाना चाहता था इतने में शेरशाह से बडाई छिड़ गई शेरशाह ने जाटों से लाभ उठाया।

शहनशाह औरंगजेब और जाट

औरंगजेब एक कट्टर मुसलमान शासक था उसने हिन्दुओं पर जजिया लगाया जो अकबर के समय से मुवाफ था मन्दिर बरवाद करने आरम्भ किए मूर्तियों को

तुड़वाकर आगरा और दिल्ली की मस्जिदों की पैड़ियों के नीचे दबाया जाने लगा हिन्दुओं को दफतरों और माल के महकमों से निकाले जाने का फरमान जारी किया हिन्दू मेले बंद किये हिन्दू सौदागरों के मुकाबले पर मुसलमान सौदागरों की चीजें मंहगी बिकवाई जाने लगी चाहे उसने ऐसी पालिशी धर्म से अन्धा होकर अपनाई हों परन्तु वह हिन्दू धर्म को मिटाने में असफल रहा और इस असफलता को कबर में साथ ले गया।

जब महाराष्ट्र में हिन्दू जोश के साथ शिवाजी लड़ रहा था और राजा यशवन्तसिंह के काबुल युद्ध में मारा जाने के पश्चात राठोड़ों की तलवार म्यान से बाहर आ चुकी थी 1669 ई० में दिल्ली राजधानी की छाओं में रहते रहे जाटों ने शाही हाकिमों के अत्याचारों से तंग आकर बगावत आरम्भ कर दी मथुरा का फौजदार मुरशदअली खाँ सुन्दर स्त्रियां प्राप्त करने के हेतु देहात पर छापे मारने लगा और हिन्दू लिवास में हिन्दू मेलों में घुसकर सुन्दर स्त्री पकड़वा लेता था और उनको जमना में तैयार खड़ी नाओं में सवार कराकर दिल्ली भेज देता था इस्लामी राज्य के दौरान में यह पहला अवकर था जब जईद शाही सेना के खिलाफ जाटों ने लड़ मरने की शपथ खाई चिड़ियों ने बाज को ललकारा।

नौवम अध्याय

मुगल राज्य का पतन और जाट राज्यों का उदय

तिलपत का युद्ध

औरंगजेब ने कट्टर मुसलमान अबदुलगनी खान को मथुरा का हाकिम नियुक्त किया इसने औरंगजेब की पालिशी को दिल में रखकर मन्दिरों की मूर्तियों को तोड़ना और हिन्दुओं को लूटना आरम्भ किया। 10 मई 1666 को जाटों ने गोकल लीडर के नेत्रत्व में शाही सैना के साथ घोर युद्ध किया गोकल ने देहात में पगड़ी फिराकर 20000 शूरवीर जाट एकत्र कर लिये वे उन्होंने प्रगना सहइदाबाद को लूट लिया उनकी धमकी ऐसी डरावणी थी कि मुगल दरबार ने इस शर्त पर क्षमा मांगी कि लुटा हुआ माल वापिस कर दिया जाएगा परन्तु गोकल ने इस शर्त को अस्वीकार कर दिया। औरंगजेब ने रदनंदादखांन और हसनअलीखान के नीचे एक बड़ी सैना जाटों के विध्वन्स के लिये तिलपत के मैदान में भेजी और शहनशाह स्वयं भी युद्ध क्षेत्र में पहुँचा हसनअली खांन ने जाटों के कई किला बन्द ग्रामों पर आक्रमण किए बीस हजार जाटों के दल ने मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया उनमें से कुछ एक जौहर की रस्म पूरी करके घरों से आऐ थे वे ऐसे साहस से लड़े कि उनकी यह शूरबीरता जाट जाति को सदा के लिए गर्व प्राप्त कराती रहेगी इस युद्ध में मुगल सेना के चार हजार और जाट तीन हजार मारे गए गोकल लोंडर पकड़ा जाकर आगरा पहुँचाया गया वहां आगंरा कचहरी के चबूतरे पर उसका एक एक जोड़ बेदर्दी से काटा गया गोकल पकड़ा जाने के तीन दिन पश्चात तक जाट युद्ध क्षेत्र में जमा रहे और शाही प्रगनों को लूटते रहे गोकल का रक्त बिरथा नहीं बहा उसने जाटों के जोश को जगा दिया और जोश पैदा करता रहेगा।

भरतपुर राज्य वंश

फोजदार राजाराम 1686 से 1688 तक

गोकल के कत्ल किए जाने के 12 साल पश्चात्य सनसनी ग्राम निवासी राजा राम लीडर प्रकट हुवा उसने सागरवास के जाट नेता रामचेरा से मित्रता करके शक्ति बढ़ाई एक सैना संग्रह करके बारुद वाले शस्त्रों से सुसज्जीत की, उसकी सिखाई अच्छे फौजी तरीके पर की गई पहाड़ियों तथा जंगल के छुपे हुए स्थानों में गढ़ियां बनाईं और छापे मार कर शाही माल खजाने की लुटमार आरम्भ करदी सड़कों पर शाही

गांदों माल असबाब का आना जाना बन्द हो गया उसका साहस बढ़ता गया, शफीखान हाकिम आगरा को घेरे में ले लिया और अकबर के मुकब्रे को नष्ट करने की घोषणा (इलान) कर दी आगरा के सैनापती अबुल फजल ने घोर युद्ध करके शफीखान और मुकब्रे को बचाया जो सिकंद्रा में था, कुछ दिनों पश्चात्य राजाराम ने धौलपुर के निकट खान बहादुर के कैम्प पर छापा मार कर उसके ज़माई और 80 सैनिकों को मार दिया, और शाही सैना का माल असबाब छोड़े और उनकी स्त्रियों को भी निकाल ले गए यह शाही हाकमों के अत्याचारों का बदला लिया जा रहा था, औरंगजेब को जब यह समाचार पहुँचे तो वह बड़ा दुखी हुआ, वह दक्षिण में मरहटों से उलझा रह कर बड़ा तंग था औरंगजेब को जाट शक्ति की याद ताजा हो गई जब वह 1686 में जाटों के बरखिलाफ जफरजंग को कलतास को भेजकर जाटों का लोहामान चुका था, जौलाई 1687 ईस्वी में औरंगजेब ने शाहजादा आजम के बड़े बेटे बदरबख्त को सेना का कमाण्डर बनाकर भेजा उसके साथ बड़ा अफसर खानजहां था, परन्तु इस सैना के पहुँचने से पहले ही राजाराम ने मीर इब्राहीम उर्फ महाबत-खान के कैम्प पर धावा करके उसके 190 सैनिकों को मार दिया तथा घायल कर दिया जबकि मीर इब्राहीम पंजाब की ओर बढ़ रहा था और यमुना के किनारे के साथ उसका कैम्प था, यह कैम्प लुटने के शीघ्र ही पश्चात्य अकबर के मुकब्रे को बर्बाद कर दिया तथा लुट लिया और शाईस्ताखान हाकिम आगरा से युद्ध किया बदरबख्त वापिस दिल्ली को लौट गया और मुगलों को जाटों के विरोध बहुत भड़काया इसके बाद राजाराम चौहान राजा की मदद में मुगल सेना से लड़ा जब मुगल शेषावत राजपुतों को शस्त्र देकर चोहाणों के विरुद्ध लड़ा रहे थे जब यह घोर युद्ध हो रहा था तो राजाराम अचानक एक मुगल सैनिक के हाथ से मारा गया वह सिपाही एक वृक्ष की खोख में छुपा बैठा था राजाराम ने केवल दो साल की थोड़ी सी लीडरी में अतो साहस के साथ बढ़ चढ़कर काम किए औरंगजेब जैसे जिद्दी (हटी) अभीमानी बादशाह को लोहा मना दिया वह साहस में शिवाजी से कम ना था शिवाजी की सहायता के लिए पर्वतों से घिरा देश था राजाराम समतल मैदान में दिल्ली राजधानी के निकट लड़ाई लड़ रहा था।

फौजदार भज्जासिंह

सन 1688 से 1691 तक

राजाराम मरने के बाद उसका पिता भज्जासिंह जाट दल का लीडर बना, लूटा तथा धावे मारने का काम जारी रखा औरंगजेब ने जैयपुर के नये राजा बिशन सिंह को जो मिर्जा राजा जयसिंह का पोता था। मथुरा का हाकिम नियुक्त किया

उसको सनसनी की जागीर देने का लालच दिया उसने भज्जासिंह की गढी को नष्ट करने की सौगन्ध खाई ।

शाहजादा बदरबख्त ने सनसनी का घेरा डाला जो जंगलों से घिरा हुआ था। उसकी सेना पर बाहर से जाट धावे करने लगे । भोजन सामग्री मिलना कठिन हो गया । चार महीने जंगल को साफ करने के बाद गढी की दीवार तक पहुँच सके । दीवार में बाहर की ओर से सुरंग तैयार की गई । जाटों ने अन्दर से इतने मिटी पत्थर डाल दिये कि सुरंग बाहर की ओर उड़ी और मुगल सेना और तोपों को नष्ट कर दिया ।

1690 ई० में दीवारा सुरंग लगाकर दीवार तोड़ी गई और गढी पर अधिकार कर लिया गया । बहुत से जाट मारे गये शेष ने आक्रमण करके 200 मुगल 700 राजपूत काट दिये और आप भी मारे गये । इस घटना के पश्चात भज्जासिंह सागर पास की गढी में चला गया 21 मई 1691 ईस्वी को जब राशन जमा कर रहा था और गढी का द्वार खुला था राजा बिशनसिंह घोड़ों को सरपट दौड़ाकर गढी में दाखिल हो गया भज्जासिंह मारा गया 500 जाट कत्ल हुये तथा पकड़े गये ।

फौजदार चुड़ामन

सन 1695 से 1721 तक

भज्जासिंह की मृत्यु के पश्चात उसका पोता राजाराम के छोटे भाई का पुत्र चूड़ामन गद्दी पर बैठा । वह प्रत्येक उद्देश्य में सफल होने वाला शान्त चित्त, बुद्धिमान समय को परखने वाला, शूरवीर योद्धा था उसमें मेलजोल बढ़ाने का विशेष गुण था । और मरहठों की भांति छल नीति से काम निकालने में भी पूर्ण था । वह सईद रफी उलदीन की शिक्षा को धारण कर चुका था कि किसी दूसरे धर्म वाले पर विश्वास नहीं करना चाहिये कोई अचानक दुख या सुख तथा धारमिक जोश उसके शान्त चित्त को डाँवांडोल नहीं कर सकता था । वह जाटों में पहला नेता था । जिसने जाटों के सोये भाग्य को जगाया और जाटों की यह शक्ति 18 वीं शताब्दी में जानी गई । उसने 500 सवार और 1000 पैदल भरती कर लिये । हाथरस और मुरसान के गढ़पति नन्दराम को साथ मिला लिया शाही प्रगनों और खजाना को लूटना शुरू कर दिया जंगल और दलदल में कच्चा दृढ़ कोठ बनाया । गहरी खाई खुदवाई । जो भरतपुर नाम से प्रसिद्ध हुआ जब उसकी सेना 12000 हो गई तो कोटाबूँदी तक धावे करने लगा वह धन प्राप्त करने के स्थान पर शस्त्र समूह करता था बादशाही माल असबाब खजानों को सड़कों पर आना जाना बन्दकर दिया 1708 में सनसनी की गढ़ी मुगलों से छीन ली

जब औरंगजेब के बेटों बहादुरशाह और आजम के मध्य युद्ध हो रहा था तो चूड़ामन ने दोनों की सैनाओं को सामूगढ़ के स्थान पर लूट लिया फिर भी अपना सहायक बनाने केलिये विजयी बादशाहने 500 सवार और 1000 प्यादोंकी सरदारी सौंप दी लेकिन उसने अधिक समय तक उनके आधीन रहना अपने काम में रुकावट समझा और स्वतन्त्र हो गया। वह मुगल राज्य के निर्बल होने की दिशा में चम्बल नदी तक कि हिन्दु प्रजा की रक्षा का दावेदार हाकिम था। वह दिल्ली के तख्त पर दृष्टि रखता था वह जहानदारशाह की सहायता के बहाने से निकट पहुँचा और आगरा के पास उसको लूट लिया। जहानदारशाह को इस कायरता पर फर्रुखशेयर रुष्ट हो गया। छैलाराम आगरे का हाकिम और शमशुदौला के द्वारा चूड़ामन को क्षमा मांगने पर राजी कर लिया और वह दरबार में हाजिर भी हुआ परन्तु उसके साथ कट मरने वाला एक दल था। बादशाह ने दण्ड देने के स्थान पर दिल्ली से चम्बल तक टैक्स प्राप्त करने की आज्ञा दे दी, अब चूड़ामन एक आजाद बादशाह समझा जाने लगा राजपूत मुगलों के रिस्तेदार और तलेहट्ट थे। तो भी किसी जाट को अपने बराबर का होने में अपनी राजपूती शान में अन्तर आना मानते थे।

अतः चूड़ामन उनके लिये डभ शूल का कांटा ख्याल किया गया सवाई राजा जयसिंह ने दरबार दिल्ली से बड़ी धनराशी युद्ध के लिये प्राप्त करके महाराजा भीमसिंह हाड़ा अधिपति कोटा बुधसिंह हाड़ा बूंदी का राजा और राजा गजसिंह राठौर मारवाड़ी को साथ लेकर चूड़ामन पर चढ़ाई करदी सन् 1716 में अप्रैल से नवम्बर तक थिन के किले का घेरा रखा। चूरामन के बेटे मोहकमसिंह और भतीजे रूपसिंह ने बाहर से जाटों की सहायता लेकर जयसिंह की सैना का बहुत बुरा हाल कर दिया।

जयसिंह की सहायता के लिये शूरवीर सरदार अब्दुल समद को लहौर से बुलाया गया। वह सईयद अब्दुला का मूखालिफ था। सईद उसकी सफलता सहन नहीं करता था। चूड़ामन से पत्र व्यवहार करके 30 लाख रुपया शाही खजाने में और 20 लाख सईयद को देने का वचन कर लिया। जाटों ने थिन के किले को खाली कर दिया और वहां किसी की भी विजय नहीं समझी गई। चूड़ामन सय्यद भाइयों का विश्वस्त मित्र बन गया फरुखश्यिर के मरने के बाद सय्यद हुसनअली के साथ शामिल होकर जब नेकूशाह आगरे के दुर्ग में घिरा हुआ था बड़ी वीरता का युद्ध किया हुसनअली ने चूड़ामन को राजा की पद्वी देने का बचन दिया हुआ था। उसका देहान्त हो गया 1620 ई. सी. में जब सय्यद अब्दुला ने मोहमदशाह से लड़ाई की तो चूड़ामन ने मोहमदशाह के कैम्प पर आक्रमण करके सब कुछ लूट लिआ। इसके बाद चूड़ामन स्वयं को स्वतन्त्र राजा समझने लगा था। चूड़ामन ने अपने भतीजे को

कैदी बनाकर शत्रु बना लिया था। वह राजा जय मिल गया। चूड़ामन ने अपने पुत्रों के झगड़े से तंग आकर विष खा लिया और फिर मर गया। राजा जयसिंह 14000 सेना लेकर तथा राजपूत जनता भी साथ हो गई कुल संख्या 50000 हो गई थी चूड़ामन के बेटों पर घेरा डाल दिया चूड़ामन का भतीजा बदनसिंह राजा जयसिंह का सहायक था।

दो महीने घेरा रहने के बाद बदनसिंह के भेद देने से गढ़ी विजय हो गई। और राजा चूरामड़ के बेटे अजीतसिंह बुन्दी वाले की शरण में चले गये।

ठाकुर बदनसिंह

राजा जयसिंह ने बदनसिंह को ठाकुर बदनसिंह की पट्टी देकर चूड़ामन की गद्दी पर बैठा दिया। परन्तु वह लम्बे समय तक कछवाहों का आधीन नहीं रहा उसने शक्ति बढ़ाकर जयपुर और अजमेर की आधीनता से छुटकारा पा लिया मेवात के भीणों को साथ लेकर जयपुर राज्य पर आक्रमण शुरू कर दिये तंग आकर राजा जयसिंह ने 1800000 वार्षिक आमका प्रान्त बदनसिंह को देकर प्रसन्न कर लिया उसने वेर की गढ़ी बनाई। नादरशाह के आक्रमण के समय मुग़ल राज्य के कई दुर्गों पर अधिकार कर लिया अभयसिंह तथा अजीतसिंह राठौर राज्यों से मित्रता करली उनसे बृजराज की पट्टी मिली।

राजा सूरजमल

राजा जयसिंह की मृत्यु पर राजेसयुयज्ञ के अवसर पर सूरजमल को राजा की पट्टी मिली। इसकी आकृति बड़ी तेजस्वी थी। उसने बड़े 2 उत्साह से राज्य सीमा को बढ़ाया। वह राजा होते हुए भी जाट किसानों जैसे सादा वस्त्र पहनता था और ग्रामों जैसी बृज भाषा बोलता था। फुर्तीला चुस्त चालाक और अग्म दुद्धि सैनापति था। दिल्ली दरबार में उसको आसिफ जाह बहादुर के तुल्य योग्य माना जाता था दिल्ली की गद्दी प्राप्त करना उसका दृष्टि कौण था उसने एक झगड़े के कारण जय पुर राज्य पर एक सफल आक्रमण करके अपनी शक्ति को मनवा दिया परन्तु जयपुर के पुराने सम्बन्ध ने बिरोध में बाधा करने से रोके रखा राजा जयसिंह के देहान्त के पश्चात उसका उत्तर धिकारी नियत होने के लिये झगड़ा छिड़गया जेयष्ट कुंवर ईश्वरीसिंह था दूसरा कुंवर माधोसिंह था जिसको अपने मामा सीसो धिया के बल पर घमण्ड था। बल पूर्वक गद्दी पर बैठना चाहता था। उसने मलहार राव हुलकर गंगाधर तांतिया महाराणा मेवाड़ जोधपुर के राठौर और कोटा के हाड़ा राजाओं की सैना बुलाकर भारी संख्या एकत्र करली। ईश्वरीसिंह का साथी केवल राजा सूरजमल था।। 20 अगस्त 1748 को इतवार के दिन बाग़रू के स्थान पर

मुठभेड़ हुई। पहिला दिन तोपों के युद्ध में बीता। दूसरे दिन शिवसिंह बहादुर की मृत्यु से ईश्वरीसिंह की सैना में शिथलता प्रतीत हुई।

तीसरे दिन जब ईश्वरीसिंह थक गये तो राजा सूरजमल को सैना की बागडोर सौंप दी। और स्वयं पीछे हो गया गंगाधर तातियां की सैना पर झपट कर तोप खाने वाले सब मार दिये और तोपों में डाट ठीक दी। राजा सूरजमल ने मरहठों पर हमला किया। दो घन्टे युद्ध होने के बाद गंगाधर की सैना रणक्षेत्र से भाग निकली राजा सूरजमल ने उनका पीछा किया। और अपनी तलवार से 108 जख्मी किये तथा 50 को मृत्यु के घाट उतारा राती को अधिकारी ने बीच बचाव किया। चौथे दिन माधोसिंह ने पराजय स्वीकार करली। और 5 प्रगने लेने पर राजी होकर जनसाल चला गया। वाकात रजिस्तान पुस्तक द्वितीय में यह वर्णन है।

राजा सूरजमल मुगलों का भयानक पड़ोसी था। मुगल बादशाह की दृष्टि भरत पुर राज्य को विजय करने पर लगी हुई थी। उनके सेनापति ने रामसिंह मारवाड़ों पर चढ़ाई के बहाने से कूच किया। और भरतपुर की एक गढी पर कब्जा कर लिया।

और मनवादी करवादी कि सूरजमल की हार हो गई है राजा सूरजमल को यह सूचना मिलते ही मुगल सैना के सामग्री एकत्र करने वाले जत्थे को नष्ट कर दिया और बुरी तरह भगा दिया। फिर अगले ही दिन कैम्प का घेरा डाल दिया। तीन दिन घेरा रहने के बाद सेनापति सआदतखां निकल भागने में सफल हो गया और अपने अपराध की क्षमा मांगली, सुलह करली तथा भरतपुर के राज्य से निकल गया 1729 ई. में बलमगढ के चौधरी चरण दास को शरण में रख लिया जब कि वह फरीदाबाद के हाकिम मूरताजखां को बद्ध करके गया था। शाही दरबार से फरमान जारी हुवा कि चरण दास को दरबार में उपस्थित किया जाये। सूरजमल ने युद्ध स्वीकार कर लिया। परन्तु रुहेला नबाब जो सूरजमल का मित्र था उसने बड़े वजीर सफदरजंग को लिख भेजा। कि जाट राजा से लड़ने में सफलता नहीं होगी। कुछ काल पश्चात जब सूरजमल के राज दरबार से अच्छे तालुक हो गये। फरीदाबाद परगना चरणदास को दिला दिया। जब बड़े वजीर सफदरजंग को पद से हटा दिया गया तो वह राजा सूरजमल की शरण में आ गया दोनों ने मिलकर दिल्ली को घेरे में ले लिया और शाही खजाने को लूट लिया। इसको जाट लूट कहा जाता है बादशाह ने राजा माधोसिंह को बीच में देकर सूरजमल से सन्धि करली और सफदर जंग को बड़ा वजीर बना दिया। इस प्रकार गाजीउदीन राजा सूरजमल का शत्रु बन गया जो बादशाह का भतीजा था।

कुछ काल पश्चात गाजीउदीन फिर बड़ा वजीर बन गया उसने भरतपुर को

बरबाद करने की ठानली सन् 1758 में रुघनाथ सब मरहठा और गाजीउदीन गे सैना ले जा कर भरतपुर को घेर लिया।

तीन महीने बीतने पर किला बचने की आशा नहीं रही तथा जोहर की रसम (करके मर मिटने) की ठान ली किन्तु बुद्धिमान रानी किशोरी ने अपनी कार साजी दिखाने का समय मांगा। उसने एक पगड़ी और बेल बृक्ष के तीन पत्र सरदार जिया जी राव मरहठा के पास भेजे जिससे मरहठा कैम्प में हलचल मच गई सबने यह समझ लिया कि सूरजमल मरहठों से मिला हुआ है। इसी कारण दुर्ग विजय नहीं होता।

गाजीउद्दीन ने यह हालत देखकर शाहन्शाह को भारी तोप खाना शीघ्र भेजने के लिये लिखा। राजा सूरजमल ने भी बादशाह को पत्र लिख भेजा कि तोप खाना भेजने की भूल न करें। गाजीउद्दीन की नियत बिगड़ चुकी है। वह दिल्ली विजय करके गद्दी प्राप्त करेगा आप अपना और भी प्रबन्ध करलें। बादशाह ने तोप खाना भेजने से इन्कार कर दिया और अलीगढ जाकर सैना की भरती आरम्भ करदी। गाजीउद्दीन ने भी भरतपुर का घेरा छोड़कर बादशाह को लूट लिया।

अहमदशाह अबदाली

आलमगीर सानी के मरने के बाद दिल्ली दरबार में गाजीउद्दीन और नजीब, दोला दो मुकाबले के हाकिम थे। दरबार के कर्मचारियों ने अहमदशाह अबदाली को काबुल से बुला लिया और उसने गाजीउद्दीन को वजारत से हटा दिया और एक करोड़ रुपया हरजाना प्राप्त कर लिया। अहमदशाह अबदाली ने 29 जनवरी 1757 को अपना सिक्का चलाना शुरू किया था गाजीउद्दीन और उसके साथी भगोड़े होकर भरतपुर चले गये। अहमदशाह ने एक करोड़ रुपया जुर्माना रूप में अदा करने को सूरजमल को लिखा। नहीं तो युद्ध के लिये लड़ाई के लिए त्यार हो जाओ राजा सूरजमल ने युद्ध स्वीकार कर लिया और अपने राजकुंवार जवाहरसिंह को दृष्टिगत रखने के लिये बल्लभगढ़ भेज दिया। उसने दुर्रानी की भोजन सामग्री। संग्रह करने वाली सैना को मार दिया 12 फरवरी 1757 को दुर्रानी की सैना ने भरतपुर राज्य में तबाही मचादी। साधु सन्यासी और दूध पीते बच्चे भी बध कर दिये मथुरा में 3000 सैनिक मारे गये। परन्तु डीघ और भरतपुर के किलो को विजय करने का साहस नहीं हुवा। इस मारकाट के अवसर में दुर्रानी की सैना में विशूचिका (हैजा) फैल गया और वह जाट प्रदेश से निकल गया इतनी बड़ी बरावादी अपने शत्रु गाजीउद्दीन को शरण में रखने से हुई जो आर्य सभ्यता का नमुना मानी गई।

पानीपत की लड़ाई

अहमदशाह दुर्रानी ने अपनी कारसाजी के लिये मुस्लिम हिन्दू में भेद भाव उत्पन्न कर दिया। उधर मरहठा नेता ने जोश में आकर निबटेरा करने वाले युद्ध की रचना बनाई। समस्त राजपूत राजाओं के पास पेश्वा भेजे। कि वह मिलकर हिन्दू धर्म की रक्षा करे। परन्तु गोल मोल उत्तर मिले। केवल एक राजा सूरजमल अपनी सैना लेकर मरहठा दल में आ मिला। तथा दुर्रानी की सहायता के लिये सारे नवाब आये। उसने वजीर गाजीउद्दीन को भी लिख भेजा। कि बजारत के पद पर फिर बहाल कर दिये जायेंगे। राजा सूरजमल ने उसको चले जाने की भी आज्ञा दे दी। परन्तु वह अहसान से दबा हुआ था।

मरहठा नेता ने आगरा में सब साथी राजाओं की सभा की और युद्ध करने की विधि तथा नीति की सम्मति ली। राजा सूरजमल ने बड़ी दुरदर्शक सम्मति दी। जिसकी भारत के इतिहास में बहुत सराहना है कि युद्ध एक बड़े शक्तिशाली शत्रु के साथ होना है जिनके सहायक बड़े-बड़े नवाब भी हैं। और आपका साथी मेरे सिवाय कोई हिन्दू राजा नहीं है आपको इस युद्ध में सफलता की बड़ी आशा नहीं हैं सफलता प्राप्त करने की अच्छी स्कीम यह हो सकती है कि आप अपनी। स्त्रियों और बाल बच्चों को चम्बल नदी के उस पार भेज दें अथवा मेरे किले डीघ में भेज दें। जो आपकी सैना के लिये उत्तम है। फिर हम जमकर लड़ाई लड़ने से बचकर चारों तरफ से छापे मार कर उसको तंग कर देंगे।

अगली गर्मी और वर्षा ऋतु में जब उसकी सैना बेचैन हो जाएगी तो हम उस पर टूट पड़ेंगे। और उसकी सैना का सब समान हमारे हाथ आ जायेगा। और हमारी विजय निश्चित होगी। सब मरहठा सरदारों ने मिलकर राजा सूरजमल की सम्मति की प्रशंसा की। परन्तु रघुनाथ राव जो मरहठो का नेता था ऐसा करने से अपना अपमान समझा, तथा राजा सूरजमल की राय को ठुकरा दिया कि हम किसी दूसरे के भरोसे पर युद्ध करने नहीं आये भीषण युद्ध करेंगे। किन्तु सूरजमल को यकीन था कि मरहठों को सिवाया पराज्य के हाथ कुछ नहीं आयेगा। परन्तु उसने साथ नहीं छोड़ा। गाजीउद्दीन की सैना सहित उसकी सैना 18000 थी जौलाई सन् 1760 में मरहठों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया गाजीउद्दीन वजीर नियुक्त हुआ और एक शाही वंश के शाहजादे को ताज पहनाया गया। परन्तु शीघ्र ही राजा सूरजमल की इच्छा के बिरुद्ध गाजीउद्दीन को बजारत से हटाकर एक मरहठा सरदार को किले का हाकिम बना दिया। दीवान आम की सोने की छत को उतरवाने की आज्ञा दी राजा सूरजमल ने कहा कि यह सदा के लिये शोभा की चीज है। पांच

लाख मेरे से ले लो और इस कोने उतरवाओ। परन्तु जसने उसे उतरवा ही दिया जिससे केवल तीन लाख का सोना प्राप्त हुआ।

राजा सूरजमल ने इन सब बातों को अपना अपमान समझा और भाऊ की सहायता के लियें लडना बृथा समझकर रात्री के अन्धेरे में बिना आज्ञा लिये अपना कैम्प खाली कर दिया और भरतपुर को कूच कर दिया अब सूरजमल के दोनों शत्रु हो गये। जिसकी जीत होगी वही राजा सूरजमल से भिड़ेगा। राजा सूरजमल के प्रोहित पण्डित रूपराम कटारी ने कहा कि आगे की आगे देखी जायेगी। पानीपत के मैदान में मरहठों की बुरी तरह से हार हुई वह गाजर मूली की भांति काटे गये। वे अपनी स्त्रियां बाल बच्चे खजाने शत्रु के हाथ में छोड़कर सिर पर पांव रखकर भागे। और इस युद्ध में बड़ी कायरता दिखाई भूखे नग्गे, धड़ंगे मरहठा सैनिक दुखित होकर राजा सूरजमल की सीमा में प्रविष्ट हुये। राजा सूरजमल ने उनकी अवस्था पर बड़ा त्रस आया। अपनी सैना भेजकर उनको एकत्र किया कई दिन ठहरा कर पेट भर भोजन दिया। तन ढापने को वस्त्र दिये प्रति सैनिक तथा मनुषों स्त्री बच्चों को एक रुपया एक-एक सेर चना उनको देकर उनके देश में भेज दिया इस कार्य में सूरजमल का 10 लाख रुपया व्यय हुआ।

दिल्ली और फर्रुखनगर पर चढ़ाई

राजा सूरजमल की दृष्टि हरियाना के उपजाऊ देश को प्राप्त करने पर लगी हुई थी। इस उद्देश को पूरा करने के लिये एक बहाना मिल गया। फर्रुखनगर के बदचलन नवाब मसावीखान ने अपने राज्य के एक ग्राम की रुपवती जाट कन्या से विवाह की मांग करदी इस घटना से हरियाणा की जाट जनता में जोश फैल गया। और राजा सूरजमल के दरबार में दुहाई मचाई कि आप जाटों की आबरु बचाने में सहायता करें राजा सूरजमल ने उत्तर दिया कि राजा को जाति पाति की मेर नहीं होती। तुम मेरी प्रजा भी नहीं हो मुझसे सहायता नहीं मिलेगी। सूरजमल यह जानता था कि नबाब का सहायक दिल्ली राज्य है परन्तु हठी कुंवर जबाहरसिंह ने हरियाणा के जाटों से सहायता पर पहुँचने का बचन दे दिया।

और विवाह की तिथी के दिन फर्रुखनगर का घेरा डाल दिया। और रात के अन्धेरे में घुस कर काट मार भी मचादी। सूरजमल ने सैना का एक दल फर्रुखनगर को भेज दिया और छोटे कुंवर नाहरसिंह को जमना पार छापे मारने की भेज दिया उसका दूसरा कार्य नबाब रुहेला का रोकना था।

दो महीने घेरा रहने के बाद नबाब ने दरवाजा खोल दिया, तथा कैदी बनाकर भरतपुर लाया गया। इन दिनों दिल्ली का शक्ति हीन बादशाह वजीर

नजीबउदौला से भयभीत होकर अवध के नबाब की शरण में आया हुआ था और नजीबउदौला ने सूरजसल के बढ़ते हुये साहस को दबाने के लिये अहमदशाह दुर्रानी को दूत भेजा हुआ था सूरजमल पहले ही इस स्थिति को जानता था नजीबउदौला को लड़ाई का निमन्त्रन भेज दिया और सरष्ट उतर ने मिलने पर दिल्ली को घेर लिया कई युद्ध होने के बाद एक दिन राजा सूरजमल घोड़ा बदली करता हुवा मारा गया। अतः उसकी सैंना भरतपुर वापिस चली गई। राजा सूरजमल का बिना शीस का शिव जलाया गया।

यह पता नहीं चला कि उसका किसके द्वारा वद्य किया गया था मुगल सैना को भी कई दिन पश्चात राजा के मारा जाने की खबर मिली थी अन्दाजा यह है कि वह किसी कारण घोड़े से गिर गया किसी शत्रुने पड़े हुए का शीस काट लिया।

सवाइ महाराजा जवाहरसिह

भारत इन्द्रा

जवाहरसिंह फजूल खर्च और दबंग था। अधिक जोशिला था। अपने पिता से उसकी नहीं बनती थी सूरजमल का यह विचार था कि वह इस राज्य का अन्त कर देगा। वह छोटे कंवर नाहर सिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहतः था। सब दरबारी इस चिन्तित में थे कि बड़ा कंवर जवाहर सिंह फर्रुखनगर में है जो चुप नहीं रहेगा दरबारियों ने नाहर सिंह को गद्दी पर बैठा दिया। यह समाचार सुन कर जवाहर सिंह चर्म सीमा से बाहर हो गया। और एक पत्र दरबार भरतपुर को सांडनी सवार के हाथ भेजा कि वड़े दुख की बात है आश्चर्य तो यह है कि पिता की लाश तो सिर के लिये तड़फ रही है। और उसकी सन्तान को छीना झपटी लगी है। जवाहर सिंह शीघ्र आता हैं। वह राजपाट कुछ नहीं चाहता। अपनी मुठ्ठी भर सैना को लेकर सीधा दिल्ली को जायेगा। यदि शीस का बदला लेने में सफ़लता हो गई तो वापिस आकर देखेंगे कि राज्य कीं गद्दी पर वैठने के लिये कौन योग्य है यह पत्र दरबार में पहुंचा और शीघ्र ही यह सूचना भी फैल गई कि जबाहर सिंह सैना सहित डीघ के कौले में आ गया और बुर्ज पर अपना झण्डा लहरा दिया कंबर नाहरसिंह बरबादी के आसार देखकर बच्चों समेत करोली के राजा की शरण में चला गया। परन्तु सुरजमल के साले राजा बलराम ने जो सैनापति था भरतपुर के किले के द्वार बन्ध करके युद्ध के लिये सैना लगा दी। परन्तु हालात जवाहर सिंह के हक में थे। आखिर बलराम ने क्षमा मांग ली अकतुम्बर 1764 को जवाहर सिंह की सैना ने दिल्ली की ओर कूंच किया जिसमें 200 तोपें 60000 सैनिक अपने तथा 25000 हूलकर मरहठा की और 15000 सिखों की सैना थी। कई मास घेरा रहने के बाद भूख से

तंग होकर नजीबऊदोला वजीर ने सन्धि पत्र देकर दूत भेजा। जवाहर सिंह ने उत्तर दिया कि फैसला युद्ध से ही होगा। जवाहर सिंह नजीबअदोला का सिर चाहता है। कई दिन के बाद फिर कई अफर रूहेला नबाव जालेखान के साथ शाहदरा कैम्प में भेजे राजा हुलकर की सहायता ली उसने जवाहर सिंह को मनाया कि शाहजादी का डोला और युद्ध का समस्त खर्च नजीबअदोला का सिर है। स्वीकार कर लीजिए संन्धि स्वीकार हो गई और वह सब सरदार एक २ मन अन्न घोड़ों पर लादकर वापिस आ गये।

19 फरवरी 1765 को साठ लाख रुपया और शाहजादी का डोला देकर संन्धि हुई। वह लड़की फ्रांसीसी कप्तान समरु की बेगम बनी जिसने दिल्ली मुगल राज्य के बड़े २ राजनीतिक कार्य सिद्ध किये। इस सन्धि में हुलकर मरहटा ने घूर्त पालीशी से काम लिया स्पष्ट होने पर जवाहर सिंह उसका शत्रु हो गया महाराजा सवाई जवाहर सिंह भारत इन्द्रा की पदवी धारण करके गद्दी पर बैठा। उन्ह सब राजदरबारियों को एक २ करके सबको दण्ड दिया जिन्होंने विरोध किया था। उसके चाचा के पुत्र जो स्वतन्त्र हो गये थे वे आधीन किया नाहर सिंह ने करोली और मरहठों से सहायता लेकर युद्ध किया। उसको हराया धौलपुर के राजा को मरहुठों से स्वतन्त्र करवाया और इस्ट इन्डिया कम्पनी से मित्रता करके मरहटा नेता रुघूनाथ राव को धमकी दी। राजा बलराम अपने मामा को बध करवा दिया।

राजा सुरजमल जयपुर के राजा माधोसिंह के साथ जो भरतपुर राज्य का शत्रु था कृत्तिम मित्रता निभा रहा था। जवाहर सिंह ने उसको स्पष्ट कर दिया नाहर सिंह की मृत्यु के बाद उसकी रानी और बच्चों को जो जयपुर चले गये थे। जवाहर-सिंह ने उनको भरतपुर बुलाना चाहा। माधोसिंह ने उन्हें नहीं भेजा। इसके उत्तर में जवाहर सिंह ने जयपुर के भगोड़े सरदार (मचेहेडी) वाले प्रताप सिंह को शरण में रख लिया और जयपुर के परगना कामां की मोल की मांग कर दी जो भरतपुर राज्य से मिला हुआ था। राजा माधोसिंह के पिता सवाई राजा जयसिंह के तुल्य पदवी धारण करके उसको चिडा दिया। और माधोसिंह को अपना शत्रु बना लिया।

पुष्कर स्नान

सुरजमल की रानी किशोरी जिसने जवाहर सिंह को गोद लिया था। वह राजनैतिक कार्यों में बड़ी चतुर थी। वह इस बात से दिल में दुखी थी कि जवाहर-सिंह अपने परिवार और दरबारियों को दण्ड देने में दूरदर्शी नहीं। वह युद्ध जारी रहने से ही शान्त रह सकेगा जबकि राजपूत जाट राजाओं को अपनी समानन्ता होने को सहन नहीं करते। उनके खांड़े से खांडा नापना चाहिये दोनों बातों की चिकित्सा

युद्ध हो है। रानी किशोरी ने अपने घमण्डी बेटे से पुष्कर तीर्थ स्नान करने की अभिलाषा प्रकट की। जवाहर सिंह ने कहा कि पुष्कर मेरे कटर शत्रु राजा माधोसिंह के राज्य में है वह लावलश्कर के साथ आपका वहां जाना सहन नहीं करेगा। अगर आपने पुष्कर स्नान करना ही है तो पन्डत रूपराम जी को साथ लेकर स्नान कर आवें। रानी ने कहा मैं तो जवाहरसिंह की माता और सुरजमल की रानी हूं। सेठाणियों जैसा स्नान मेरे गर्व में बाधक है मैं तो राजपूतों की रानियों के साथ बीच में स्नान करूंगी और उनके तुल्य दान पूण्य करूंगी मैं सहन नहीं करूंगी कि राजपूती भूत सदा जाटों के सिर पर सवार रहे। जवाहर सिंह समझता था कि पुष्कर पर अवश्य रक्तपात होगा। जवाहर सिंह ने बड़ी भूल यह कि की जयपुर राज्य के बागी सरदार जो उसकी शरण में था। प्रतापसिंह मचेडी वाले को भरतपुर की रक्षा के लिये छोड़ा। जिसको बड़ा भरोसे वाला राज का शुभ चिन्तक समझे हुये था बड़ा धोखा मिला। साठ हजार घुड़सवार, एक लाख पैदल और दो सौ तोपों के साथ कूंच किया। बाजा बजाते झण्डा लहराते सत्तर कोस जयपुर राज्य की सीमा में कूंच किया पुष्कर के रेतीले मैदान में सबसे ऊंचे और सजीले तम्बू लगाये। उसके कैम्प की शाम नीराली थी। राणी किशोरी ने अपने बराबर सोना तोलकर सब रानियों से बढ़कर दान किया। इससे बढ़कर किसी ने नहीं कियोरे। साथ ही प्रतापसिंह ने भरतपुर को सूना छोड़कर राजा माधोसिंह के कैम्प में पगड़ी पटक मारी और जोर से हुक मारी। जाट ने राजपूती सिर बढ़ा लियोरे। उसके लिये जयपुर राज्य में लोट आने का यह अच्छा अवसर था उसने राजा माधोसिंह को और भड़का दिया पुष्कर में राजपूत राजाओं की सभा हुई। उसमें जाट राजा को नहीं बुलाया गया। राजा माधोसिंह ने सभा में कहा अब तो जाट ने राजपूत की मूंछ काटली हैं ना।

मारवाड़ी राजा विजयसिंह ने कहा कि महाराज आप बुद्धिमान हो आखिर वह भी हिन्दु है तीर्थ पर जिसकी इच्छा हो उतना दान दो इसमें अनादर की कौन सी बात है। हम सब भाई हैं माधोसिंह ने कहा। भाई तो राम लक्ष्मण ही थे अब तो लहू के पीवे हो गये मूंछों पर ताव देकर उठा माधोसिंह ने कहा कि थे आराम करो। वह कुछ राजाओं को साथ लेकर तैयार हो गया यह समाचार जवाहर सिंह तक पहुंच गया माधोसिंह ने एक पर्वत की घाटी को रोक लिया जो मार्ग में कठिन घाटी थी। जवाहर सिंह ने तुरनावती के छोटे मार्ग से कूच किया था मार्ग पर्वत से घिरा तंग था सेना लम्बे लारे से चल रही थी। सबसे आगे कप्तान समरु का हाथी था। उसके पीछे फ्रांसीसी तोपखाना था फिर रिसाला और पैदल पलटन। सबसे पीछे रानियों के डोलों के साथ जवाहर सिंह था और उनके पीछे राजदरबारी थे, घाटी में नंगी तलवारों की चमक दृष्टिगत हुई। समरु ने राजा को आगे बुला लिया तीन ओर से

राजपूत टूट पड़े घमशान का युद्ध हुआ कप्तान समरु ने जंजीरी गोले फेंके । ऐसा भी कहना है कि तोपों में ताम्बे के मसुरिया टके भरकर फैर किये जिससे राजपूतों की बहुत हानि हुई रात्रि होने पर युद्ध बन्द हुआ राजा माधोसिंह के कुटम्ब में 12 अल्पायु बच्चे शेष बचे जवाहर सिंह की बार बरदारी मीनों ने लूट ली युद्ध समेत 25000 जवान वर्षा और शरदी से मर गये और रोगी हो गये वह दुर्दशा में भरतपुर पहुंचे । इस युद्ध में राजपूत और जाट अपनी विजय बतलाते हैं । यह बात सिद्ध है कि जवाहर सिंह की शक्ति में अन्तर नहीं आया । अपितु जयपुर राज्य फिर नहीं सम्बला 1768 में जवाहर सिंह शिकार के वक्त अनजान के हाथ से कतल हुआ ।

जवाहरसिंह के उत्तराधिकारी रणजीतसिंह

जवाहर के लड़का नहीं था । उसका अयोग्य भाई रतनसिंह गद्दी पर बैठा । वह व्यभिचारी था । मथुरा तीर्थ पर एक मदारी के हाथ मारा गया । उसका पुत्र केहरीसिंह शिशु अवस्था में ही चेचक से पीड़ित होकर मर गया राज गद्दी के लिये जवाहर सिंह के भाइयों नवलसिंह और रणजीत सिंह में युद्ध होता रहा । नवलसिंह रोगी होकर मर गया अतः रणजीत सिंह राजा बना । परन्तु आपसी कलह में कोष रिक्त हो गया था दुर्बलता आ गई इन दिनों नपोलियन बोना पार्ट भारत वर्ष पर चढ़ाई की तैयारी कर रहा था । पांडीचिरी के फ्रांसीसी गवनंर ने कप्तान मेदक और समहरु को लिख भेजा कि ब्रिटिश के मित्र जाट राजा की नौकरी छोड़कर बादशाही दिल्ली की नौकरी कर लें जो जाट राजा का शत्रु है । वह दोनों भरोसे के सेनापति हाथ से निकल गये । जो भरतपुर की भूमि और राजनीति से परिचित थे भरतपुर की नौकरी छोड़कर दिल्ली चले गए दिल्ली के सेनापति मिरजा नजफखांन नेचढ़ाई कर दी मेदक और समरू की सहायता से रणजीतसिंह को हर स्थान पर हराया रणजीतसिंह को बिल्कुल राज से बे दखल कर दिया केवल रानी किशोरी की जीवका के लिये सात लाख सालाना आय का कुम्भेर का देश शेष छोड़ा परन्तु मिर्जा के मरने के बाद शाही सेना ने कुम्भेर का राज्य भी छीनना चाहा रणजीत सिंह कुछ सेना शक्ति बढ़ा चुका था । डटकर युद्ध किया । और विजय प्राप्त करके हाथ से चला गया हुआ देश भी वापस ले लिया और कुछ शाही प्रान्त भी विजय कर लिये उसने समस्त आय की चौथ देने का बचन देकर मरहठों को सहायक बना लिया । 1802 ई. में उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार से मित्रता का अहद कर दिया जिस में कुछ अंग्रेजी प्रान्त भी मिले । शक्ति और बढ़ गई । और मरहठों को चौथ देना बन्द कर दिया । इससे मरहठे उसके शत्रु बन गये सन 1802 में शीघ्र ही अंग्रेजों और मरहठों में युद्ध छिड़ गया । अंग्रेजी सेना की जीत गई । जिसका कमान्डर लीक था । यशवन्त राव हुलकर की सेना भाग निकली अंग्रेजी सेना ने

उनका पीछा नहीं छोड़ा। वह पटियाला जींद राजाओं के पास फिरा परन्तु किसी ने भी अंग्रेजों की टक्कर लेने का साहस नहीं किया वहां से भाग कर अपने शत्रु राजा भरतपुर के किले डीघ में घुस गया और जाट राजा ने उसको शरण में ले लिया। वहजानता था कि अंग्रेजों की टक्कर झेलनी पडेगी और सन्धि टूट जायेगी परन्तु मर्यादा ने उसको विवश कर दिया लार्डलीक का साहस बहुत बढ़ चुका था। उसने जाट और मरहठा सेना से घोर युद्ध करके डीघ से निकलने को विवश करा दिया। इसके बाद हुलकर भरतपुर के किले में दाखिल हो गया और दरवाजे बन्द कर लिये लार्डलीक ने मरहठों की शत्रुता और अंग्रेजों की सन्धि याद कराई और हानि से बचने को समझाया। परन्तु रणजीत सिंह ने हुलकर को शरण से निकालने को बिल्कुल इन्कार कर दिया। और अंग्रेजी सेना का तोप के गोलों से स्वागत किया। जनवरी 1805 को लार्डलीक ने भरतपुर को घेरे में ले लिया बार बार किले को विजय करने का प्रयत्न किया तथा बहुत से अफसर और सैनिक मारे गए लखनऊ और कलकत्ते तक का सब दारु गोला यहां समाप्त हो गया परन्तु किला विजय नहीं हुआ सवा पांच इन्च और आठ आठ इन्च दहाने की तोपों के फायर किले पर जारी रहे। दो दिन के पश्चात दक्षिणी दीवार एक स्थान से टूट गई। प्रवेश करने के लिये चार भारतीय पलटनों तथा 1500 गोरे सैनिकों ने मिलकर आक्रमण किया जाटों ने डटकर युद्ध जारी रखा और उनका मुंह मोड़ दिया इसमें करनल मैटलैण्ड और सैकड़ों जवान मारे गये तथा 800 घायल हुये और आक्रमण असफल रहा। इसके बाद 27 तोपों का फायर जारी किया गया दीवार में सुराख बन गया खाई के मार्ग से दीवार पर चढ़ने का प्रयत्न किया गया लेकिन जाटों ने खाई को लाशों से भर दिया और आक्रमण कारियों को भाग जाने को विवश कर दिया जनरल स्मिथ और करनल मेकर जो इस आक्रमण के कमान्डर थे लार्डलीक से प्रार्थना की सन्धि करना हितकारक है परन्तु लार्डलीक सन्धि करना ठीक नहीं समझता था। सेना का साहस फिर बढाया बम्बई से ताजा दम सेना सहायता के लिये और मगवाई उस पर यशवंत राव हुलकर और अमीर खां नबाव रूहेला ने और रणजीत सिंह की सेना ने किले से बाहर निकलकर आक्रमण कर दिया जिससे अंग्रेजी सेना की बहुत हानि हुई। 11 जनवरी को किले पर भयंकर आक्रमण किया गया उसमें भी अंग्रेजों के 250 सैनिक मारे गये तथा 700 घायल हुये। फिर भी लार्डलीक ने कहा कि यदि भरतपुर विजय नहीं हुआ तो अंग्रेजों के नाम पर सदा के लिये धब्बा रहेगा जान हथेली पर रखकर फिर भाग्य अजमाओं मद्रास और बम्बई से ताजा सेना पहुंच गई और जोर दार आक्रमण शुरू हो गये किले की दीवार पर चढ़ती हुई सेना पर लकड़ी के लट्ठे बुढकाये तेल में रुई के पहल भिगोकर जलाकर फेंके गये फिर भी शत्रु किले पर चढ़

आये तो जाट जयकारों के साथ उन पर टूट पड़े दो दो को पकड़ कर एक एक जाट खाई में कूद पड़ा पूरे एक सहसर सैनिक मरने के बाद अंग्रेज पीछे हट गये रिपोर्ट में लिखा है कि तीन हजार सैनिक मारे गये कई हजार घायल हुये तथा बेकाम हो गये इसके बाद अंग्रेजों के कैम्प पर तोपों के फायर आरम्भ हो गये। लार्डलीक ने रणजीत सिंह को लिखा अगर सन्धि स्वीकार हो तो किले का घेरा हटा लिया जायेगा और सन्धि करली जायेगी डीघ का किला लौटा दिया जायेगा जाट राजा अंग्रेजों के किसी शत्रु योरुपीयन अफसर को अपनी सेना में नहीं रखेगा राजा का एक पुत्र वायसराय के दफ्तर में रहेगा रणजीतसिंह तो युद्ध चाहता ही नहीं था सन्धि स्वीकार करली। उनका मरहठों के लिये बलिदान और वीरता ने अंग्रेजों के हृदय में आदर और मूल्य बढ़ा दिया रिपोर्ट में लिखा है कि डीघ के किले के जाट तोपचियों ने जब तक फायर बन्द नहीं किये जब तक उनके शरीर को संगीनों से छलनी बना दिया तीसरा आक्रमण करनल डन साहब के आधीन शुरू हुआ तो नम्बर 75 गोरा रजिमेन्ट ने आक्रमण करने से इनकार कर दिया भारतीय रजिमेन्टों से हमला किया गया वह सब जाटों ने कतल कर दिये। और कुछ खाई में डूबकर मर गये अंग्रेज सैनिकों को परेड पर फालन करके बहुत शर्मिदा किया गया यह सब बार एन्डस्पोर्ट इन्डिया एण्ड आफिसर डायरी बाई लैफ्टीनेन्ट जूनवेस्टर्न पेज 388 पर लिखा है चौथे आक्रमण के समय राजा रणजीतसिंह गाढ़े की दोहर ओढ़े हाथ में मोटा लट्ठ लिये दीवार के ऊपर घूम रहा था और सैनिकों का हृदय उत्साह बड़ा रहा था भाइयो किला तिहारो ही है। सिपाहियों ने बार बार आड़ में हो जाने को कहा तो उत्तर दिया भइया जा के भाग्य की चिठी गोली के साथ धुर से बंधी आवत है उसी को लगत है। सारजन्ट सिम्थ लिखता है कि मैंने 60 गज की दूरी पर एक जाट सैनिक पर तीन फायर किये किन्तु उसने ओट में सिर नीचा नहीं किया। अंग्रेजी फौज के एक सैनिक ने हिम्मत करके झण्डा किले की दीवार पर गाड दिया जाटों ने उसको कतल नहीं किया बल्कि जूतों से खूब पीटा और खाई में धकेल दिया लार्डलीक की तोपें लगातार चलने से बेकार हो गई थीं। करनल निकलसन ने लिखा है। नेटू स्टेट इण्डिया में कि जो नीति राजा भरतपुर ने ग्रहण की उससे उस को माली घाटा तो बहुत हुआ, परन्तु उसको और जाटों को वीरता प्राप्त हुई। इसके बाद रणजीतसिंह की मृत्यु1805 ई. में हुई और कवर रणधीरसिंह गद्दी पर बैठा परन्तु थोड़ी आयु में स्वर्गवास हो गये गद्दी पर आपका भाई बलदेवसिंह बैठा बलदेवसिंह के देहान्त पर यूदराज कंवर बलवन्तसिंह का हक छीनकर उसका चचेरा भाई दुर्जनसाल राजा बन गया दुर्जनसाल के भाई ने डीघ पर कबजा करके दुरजनसाल को पराजय किया। लार्डमिट काफ ने भरतपुर पर चढ़ाई की गद्दी के असली वारिस याने बलवन्तसिंह को लोर्ड कोर सीयर ने गोद में लेकर

राजतिलक किया इसकी मृत्यु के बाद तीन वर्ष यानी कंवर जसवन्त सिंह गद्दी का वारिस बना। 1858 में आप का विवाह पटियाला के सनिरन्दर सिंह की बेटी से हुआ आप ने बहुत बड़ी उम्र पाई और चौथी पीढ़ी तक जीवत रही 1872 में कंवर राम सिंह का जन्म हुआ जसवन्त सिंह को 17 की बजाय 19 तोपों की सलामी बढ़ी। 1893 में आपका देहान्त हुआ कंवर रामसिंह राजा बने आपको मूसाहब दुराचारी मिले। 1900 में राजा ने एक नाई को गोली से मार दिया आपको गद्दी से हटाकर देवली कोठी में भेजा गया आपकी जगह एक वर्षयाना कंवर श्री कृष्ण सिंह गद्दी के वारिस बने आपका बिवाह राजा फरीद कोट की राजकुमारी से हुआ। 1928 में राजधानी का अधिकार मिला 1929 से बंध टूट गया आपकी जनता बाढ़ से पीड़ित होगई आपने नया बन्द बनवाने में भारी रकम खर्च की जिसको अंग्रेज़ गवर्नमेंट ने फजूल खर्च का जुर्म बना दिया जब कि 1928 में आपको पुशुकर जाट महा सभा का प्रेजीडेन्ट बनाया गया था आपको गद्दी से हटा दिया गया था। 1929 में आप का देहान्त हुआ और वियोग में रानी साहिब जी स्वर्ग सिधार गई। आपके चार कंवर याने थे युदराज ब्रिजइन्द्रसिंह मानसिंह जी गिन्द्रसिंह जी और गिराजसिंह जी।

हिज हाई निसजी को राज्य अधिकार मिलने के पश्चात राज्य में आई त्रुटियों के सुधार पर पूरा ध्यान दिया। और बहुत कुछ किया भी परन्तु आप भरतपुर राज्य के अनतिम सम्राट हैं आपको शासनकाल में एक बड़ी कठिन समस्या को हल करना पड़ा। 1947 में पारटेशन काल में अंग्रेज़ की फूट डालो राज करो की पालिशी की हवा मिलने से मेव जाति ने विद्रोह का ऊधम मचाया हुआ था अंग्रेज़ गवर्नमेंट झगड़ा और रगड़ा चाहती थी कोई मशोरा या मदद देना नहीं चाह रही थी राजा पर रियासत का डिफेन्स विद्रोह को दबाना एक सोतन्त्र सटेट जैसी करने की जिम्मेदारी थी, और साथ ही राज्य अधिकार को कांग्रेस राज्य के अधिकार में सोंपने का दबाव था जब भारत वर्ष का राज्य अधिकार कांग्रेस को मिल चुका तो रियासत के बगुला देश भक्तों ने जिनको रंगीले गीदड़ नाम देना बजा था राजा की देश और कांग्रेस से सत्रुता सिद्ध करने में जातियलाम समझा जवाबदेही की समस्यायें उलझा दिया इस विषय में एक जाट डिपुटेशन ने जवाब तलबी का कारण पन्डत जवाहरलाल जी से पूछा तो पन्डत जी ने बताया कि महाराजा भरतपुर का यह दोष है कि बहुत मेव मारे गये और उसने रोका नहीं इस पर डिपुटेशन के मेमब्रों में से एक ने विनय पूर्वक पूछा कि जब आप महात्मा गांधी जी और वायसराय कमान्डेन चीफ दिल्ली में थे, और दिल्ली में मार काट जारी रही रोकी नहीं जा सकी मेव तो रक्षा चाहने की हालत में नहीं थे वे तो डीघ में मुसलिम राज्य की मांग खड़ी कर रहे थे इस बातचीत से पन्डत जी प्रभावित हुए और मुस्कान के लहजे में कहा अच्छा ध्यान दिया जायगा

जब लफटन्ट राम सुरपवा रिसालदार धजाराम सटेट के डी, आई जी चौधरी जग्राम से मिले जो उनकी अपनी कोठी में कैदी जैसी पोजीशन में था और फिर ऐड मन्सटेटर श्री सप्रू साहब से मिले तो उनकी जवानी महाराज के विरुद्ध कई एक झूठे सुझाव सुने और जब हमने पूरी असलियत उनको समझाई तो उन पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा और जल्दी ही सब बन्दशों के तोड़ करवा देने का वायदा किया और हमसे फिर मिलते रहने और ज्यादा वाकफियत पैदा कराने की चाह की।

धौल पूर राजवंश

यह वंश अपनी वशांवली को पूरूवंश के आदि में होने वाले वीर भद्र से मिलता है जिसने राजा दक्ष का सिर काटा था यह कभी राजा ही जाते थे, कभी प्रजा 952 विक्रमी में नारनोल छोड़ कर विराट नगर आये। राजा जयदेव अन्गपाल तंवर के अधीन राजाओं में से था उसने मूस्लिम आक्रमण कारी गोस मोहमद को कतल किया जिसके बदले इनाम मिला। राजा जयदेव का बेटा पालंसी राव संजोगता का डोला लाने वाले दल में था वह कनौज में मारा गया। जप। दिल्ली में मोहमद गौरी का अधिकार हो गया तो राजा जयदेव के तीनों बेटे बागी हो गये बेगमो को अजमेर जाते हुये लूट लिया विराट नगर पर बादशाह ने कब्जा कर लिया। रानी कौमदी अपन किशोर कवर ब्रहम देव को लेकर जाट राजा विजयपाल बयाना की शरण में चली गई बयाना के राजा ने उसको धर्म बहन मान कर दो लाख आय की जागीर दे दी। ~~बलना~~ बादशाह ने बयाना पर चढाई कर दी कुछ काल बाद राजा रामदेव के पुत्रों ने बयाना के राजा से युद्ध किया और वहां से निकाले गये 600 सैनिकों के साथ आगरा के प्रान्त में जटाती गांव में कैम्प किया। वहीं आगरा के हाकिम मनीर मेमनत से मूठपेड़ हुई। वहां पर 470 सैनिक मारे गये। वहः चम्बल नदी के किनारे बजोड़ नामी ग्राम में तीन पोढ़ी चक्र में ही गुजारे अन्त में ग्वालीयर के राजा मान सिंह ने राणा लासन देव और उसके पुत्र सँघन देव को बादशाह अलाऊदीन के दरबार में 3000 का पद दिलवा दिया। विराट नगर की जागीर और उसके भाई बीरन देव को गोहद की जागीर दिलाई। औरगजेब के समय तक जागीर कायम रही। 1781 में मरहठों ने इस जागीर से स्थगित कर दिया 15 साल फिर चकर में रहे। आखिर 1803 इ. में लार्ड लीक और बलजली ने गोहद की गदी पर बहाल कर दिया।

तैवथया राजबंश बलमगढ

चौधरी गोपाल सिंह सीही में रहता था। मूगल राज की निर्बलता के

समय छापे मारने लगा। गुजरों को साथ मिला कर राजपूत चौधरी को बध कर दिया। फरीदाबाद परगने के हाकिम ने उसको चौधरी मान लिया परन्तु उसने सरकारी खजाने में रूपया भरना बन्द कर दिया ' इस अपराध में चौधरी चरणदास को बन्दी खाने में बन्द कर दिया गया। उसका बेटा बलराम रूपया दाखिल करने का वायदा कर के उसको छुडा लाया। रुपया उन्हों से न बन सका हाकिम मूर्तजखान को कतल करके दोनों पिता पुत्र राजा सूरजमल की शरण में चले गये। और अपनी बेटी का विवाह सुरजमल से कर दिया। राजा की सहायता से दिली दरबार में उनकी क्षमा मिल गई। शीघ्र ही बलम गढ का राजा बलराम हो गया। उसने राजा सुरजमल की सेना में बड़ी वीरता के काम किये इस वंश का अन्तिम राजा गदर 1857 को फांसी पर लटकाया गया।

ठेनमा वंश मूडसाण

चौधरी नन्दराम 87 गांवों का स्वामी चूढ़ामण के साथियों में से था। औरंगजेब के राज में पुलिस का बड़ा अफसर हुआ। वजीर सूआदतखान ने उस को कुछ परगने और दे दिये। राजा सुरजमल ने दिल्ली का सहायक रयने के कारण इस का राज छीन लिया 1758 ई. में मिरजा नजफखान ने भूप सिंह को राजा की पदवी देकर बहाल कर दिया। आखिर रियास्त हाथरस कई भागों में बट गई।

दलालवंश कूचेसर

इनके पुर्वज चार भाई निहाल सिह, जगराम, जीतमल, गुर्वा माडोठी जिला रोहतक से आकर बसे बड़े उत्साही जाट थे। गुर्वा ने चन्दोसी परगने पर अधिकार कर लिया। उसकी संन्तान वहीं बसती है। बहाल सिह के पोते चतुर सिह ने चट साणा परगाने के कुछ ग्रामों पर कब्जा कर लिया। उसके बेटे भगतीराम और रामधन बड़े बहादुर थे। राजा जवाहर सिह की सैना में मिला कर दिल्ली के युद्ध में बड़ो नाम किया। जवाहर सिह के चले जाने के बाद वजीर नजीब ऊदोला ने परगाने की जागीर देकर दिल्ली राज का सहायक बना लिया। 1773 में सियाबखांन ने संकरी के सौदागरों की शिकायत सुन कर कुचेसर सियाना सकराटी के किले' बरबाद कर दिये और उन को कैदी बना लिया। सन 1782 में वह फिर कूचेसर पर अधिकारी हो गये और 1790 में शाह आलम ने पूठथाना फरीदा सैदपुर आदि 80000 आय की जागीर दे दी।

दशम अध्याय

सिक्ख पन्थ का जन्म

भारत वर्ष में मूसलिम बादशाहों का शासन होने के बाद हिन्दु धर्म दबाया जा रहा था और वह इसलाम धर्म में प्रवेश करते जा रहे थे। ऐसी दिशो में बेलाग सत्य भाषी सन्त साधुओं के प्रचार और उपदेशों ने ही हिन्दु धर्म को जीवित रखा जो हिन्दु धर्म के पाखण्ड का खडन करते थे और एक ईश्वर का भजन को ही मुक्ती मार्ग बतलाते थे। इसलामी शासन काल में अनेक माननीय सन्त हुये जिन में गुरू नानक देव जी ऊंची कोटी के महात्मा हुये।

गुरुनानक देवजी

आप बचपन से ही ईश्वर भक्ति के रंग में रंगे हुए थे तीस वर्ष की आयु में साधू हो गये आपने पाखण्ड का खण्डन किया हिन्दू धर्म और मुस्लिम धर्म को एकता पर बल देते थे। लंका अफगानिस्तान अरब आदि देशों में गये वहां की जनता पर सत्य उपदेश तेज तप और योग शक्ति का प्रभाव डाला। बहुत से मुसलमान आपके शिष्य बन गये भाई बाला और मरदाना दोनों शिष्य सदा आपके साथ रहे। आपके उपदेश ने हिन्दू धर्म को नया जीवन दे दिया। आपके बाद नौ गुरुओं ने उपदेश को जारी रखा पूरे पंजाब में शिष्य धर्म फैल गया तथा समस्त जाट जाति शिष्य बन गई शिष्य धर्म के फैलने से पंजाब में इसलाम धर्म फैलने में रुकावट हो गई सत्य उपदेश में इस्लाम धर्म के विरुद्ध भी कुछ बातें कही जाती थीं। इस्लाम धर्मी परिवर्तकों ने सिक्ख धर्म को इस्लाम विरोधी करार दे दिया। पांचवे गुरु अर्जुनदेव जी को यह मालूम हो गया था कि निकट समय में एक शक्ति शाली दल बनाने की आवश्यकता होगी छठे गुरु हरगोविन्द जी के समय में सिखों ने धार्मिक जंग का रूप धारण कर लिया था नौवे गुरु तेग बहादुर जी को इस्लाम धर्म के विरुद्ध लेख लिखने के अपराध में दिल्ली दरबार में बुलाकर उनका शीश काट लिया गया शीश उतारने के स्थान पर दिल्ली में शीश गंज गुरुद्वारा बना हुआ है। गुरु तेग बहादुर के बलिदान ने मुगल राज्य की जड़ों पर कुल्हाड़े का काम किया सिक्ख जनता भड़क उठी और दसवें गुरु श्री गोविन्दसिंह ने अपने पिता का बदला लेने की प्रतिज्ञा करली। सिक्खों को अमृत छिका कर अमर हो जाने का निश्चय कराया पंच क्कार धारण करवा कर सिक्खों को सिंह बनाया गया गुरू जी ने एक कविता के रूप में उपदेश जारी किया।

सवा लाख से एक लड़ाऊं ।
चिड़िया को लै बाज तड़ाऊ ।
जब गोबिन्द सिंह नाम धराऊ ।

गुरू जी ने अपना कथन सच्चा करके दिखा दिया मुगलों की भारी सेना पर एक २ सिक्ख झपटता नजर आया । प्रतिदिन के आक्रमणों से मुगल बादशाह तंग आ गया । बार २ की लड़ाई से काफी संख्या में सिख मारे गये बेघर कर दिए गए बारहबाट हो गए ।

बलशाली बादशाह से जनता का युद्ध था चम्कोर की लड़ाई में गुरू के दो पुत्र और उनके सिख मारे गये । और दो पुत्र पकड़े जाने पर सरहिन्द के अन्दर दीवार में चुने गए । गुरु गोविन्दसिंह घायल हो गए तथा पंजाब में रहना उचित न समझ कर दक्षिण में नवेड़ चले गये । वहाँ उनकों एक माधो दास वैरागी मिला जो बन्दा बिरागी के नाम से प्रसिद्ध हुआ उसको अपने उद्देश्य की सफलता का पात्र जान कर अपनी तलवार उनको सोंपकर देवलोक को सिधार गये । पन्थ के नाम चिटी लिखी कि आत्मिक बल वाला बन्दा बैरागी आता है वह पन्थ का आग्रणी बन कर सफलता का काम करेगा । उससे खन्डा शहर में आकर मिलो गुरु के शिष्य 700 शूरबीर सिक्ख पंजाब से चलकर मध्य प्रदेश के खण्डां शहर में जहां बन्दा ठहरा हुआ था पहुंचे गये । वहां पर मुगल राज्य का तखता उलटने की मन्त्रणा रची गई कि पंजाब में शाही माल असबाब तथा सैनिकों और नबाबों पर छापे मारे जायें कतल किये जायें और खजाने लूट लिये जायें ।

इस जान बाज जथे ने दिल्ली होते हुए पंजाब में प्रवेश किया टोहाणा, कोट कर्थला को लुटता हुआ जाखल और भटिन्डा को जाकर लूट लिया । और मुसलमानों को कतल कर दिया कैथल के निकट बादशाही सैनिक खजाना लेकर दिल्ली की ओर जा रहे थे उनको कतल करके खजाना लूट लिया अब सिक्खों के पास लूट का माल काफी हो गया था घघर नामी नदी के किनारे पर ठहर कर सबको घर जाने का अवकाश दे दिया निश्चित कर दिया तथा और सैनिक बुलाने का आदेश कर दिया अब की बार 14000 सैनिक आ गये यह दल छोटे 2 नवाबों और कस्बों को नष्ट करता हुआ सूबा सरहिन्द पर टूट पड़ा और सूबे के हाकिम खान बहादुर को पकड़ लिया जिसने गुरू के लड़कों को दीवार में चिनवाया था जिनके नाम जोरावरसिंह और फतेसिंह थे । उसकी गुदा मे खूंटा ठोका गया तथा सांड बेल के गले में बांधकर भगाया गया फिर बड़े कष्ट से मारा गया उसके दीवान चन्दूलाल का मुंह काला करके गधे पर चढ़ा कर शहर की गलियों में फिराया गया कुत्तों के साथ भोजन खिलाया गया बन्दा बैरागी के नेत्रत्व में सिक्खों ने ऊधम मचा कर सरहिन्द से हरि

द्वार तक का देश खाली करा लिया और मुगल बादशाह सिक्ख शक्ति से भयभीत हो गया सिक्खों को नया जीवन मिल गया। बन्दा पर अप्राध लगाये कि सन्यासी होते हुये उसने विवाह कर लिया। और ग्यारहवें गुरु की पदवी धारण करके चर्णअमृत पान कराने लगा। जो गुरुओं के नियम के विरुद्ध था पन्थ से अपना भरोसा खो दिया। और पन्थ का स्वार्थ भी सिद्ध हो चुका था बन्दा बैरागी की आवश्यकता नहीं समझी जा रही थी विद्रोह फैल गया बड़े बड़े जत्थेदार सरदार पृथक राज्य स्थापित करने में सलग्न थे बन्दा की आधीनता से स्वाधीन होना चाह थे। सिक्खों ने बादशाही सेना के हाथ गिरफतार करवा दिया और वह शाही अपराध के रूप में कतल कराया गया।

सिक्खों की बारह मिसलें

बन्दा बैरागी की आधीनता से मुक्ति पाने के बाद बड़े-बड़े जत्थेदार रासरदारों ने अपनी 2 सेना के बल पर देश विजय किये छोटे 2 राज्य स्थापित किये जो 12 मिसलों के नाम से प्रसिद्ध हैं।

1 भंगयान मिसल का नेता सरदार हरिसिंह ढिल्लों था जो भांग बहुत पीता था उसकी मिसल भंगयान प्रसिद्ध हुई इसकी राजधानी अमृतसर थी इनका राज्य पोठोहार जेहलम पिण्डी घेप, भेरा खुशाब रावल पिण्डी हजारा, झंग जगाधरी दावदुरवेल धौलिया जान्दार भावलपुर, सुनहरा, संरहाली बीरवाल डेहरा इस्मायलखां करनाला आदि परगने थे। और चिनवट गुजरात सियालकोट शामिल थे।

2 मिसल कन्हैया का प्रान्त जम्मू और पठानकोट की तरफ था सालाना आय 80 लाख थी इस मिसल का नेता कन्हैयासिंह था।

3 मिसल निकयां की राजधानी भडेवाल थी साठ हजार सैनिक थे इस मिसल के आग्रणी सरदार नीका ग्राम के निवासी थे।

4 लिसल डल्ले वालियां का बड़ा सरदार तारासिंह गैबा था यह अग्म बुद्धि था इसने बहुत पहले कह दिया था कि इन सब मिसलों को रणजीसिंह समाप्त कर देगा अपनी आय दान पुण्य में लगा दी।

5 किरोड़ियां मिसल का नेता किरोड़ासिंह सिन्धु बर्की ग्राम का निवासी था इस मिसल की सालाना आय 400000 थी।

6 मिसल कलसयां किरोड़यां मिसल की शाखा थी।

7 मिसल फैजलपुरया का नेता सरदार दलीपसिंह विर्क पन्थ का सच्चा सेवक और श्रद्धालु था जिसकी आय 5 लाख थी।

8 मिसल रामगढ़या का नेता जस्सासिंह तिरखाण रामगढ़ निवासी था उसके साथी सब जाट सरदार थे।

9 मिसल निशानावाली के सरदार शूरबीर प्रसिद्ध थे धावे के समय पन्थ के निशान लेकर आगे चलते थे।

10 मिसल शहीदांवाली इस मिसल के बहुत से सरदार पन्थ की सेवा में मारे गये थे। इस लिये मिसल शहीदाँवाली प्रसिद्ध है।

11 अहलूवालिया इस मिसल के आग्रणी करोड़ा सिंह अहलूवाल निवासी था और उसके आधीन जाट थे।

12 मिसल सोखर चकिया इस मिसल का नेता बीवामल भटी था उसकी सन्तान में बूढ़ासिंह अमृत छिक के सिक्ख बना चढ़त सिंह के बेटे महासिंह सोखर चक निवासी ने यह मिसल बनाई बन्दूक की नाल फटने से घायल होने से मर गया। और अल्पायु कंवर रणजीतसिंह गद्दी पर बैठा। इसने सब मिसलों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। यह महाप्रतापी सिद्ध हुआ। और शेर पंजाब कहलाया।

महाराजा रणजीतसिंह शेरे पंजाब

रणजीतसिंह 12 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। उसकी माता राजकौर ने राज प्रबन्ध सम्भाला। उसके ससुर मिसल कन्हैया वाले जयसिंह का भी देहान्त हो गया था उसकी रानी सदाकौर बड़ी साहस वाली सिद्ध हुई। उसने मरदाने वस्त्र और शस्त्र पहने दोनों सेनाओं की बागडोर सम्भाली तथा दूसरी मिसलो के प्रान्त विजय करके राज्य में मिलाये रणजीतसिंह युवक होने तक राज्य शक्ति को बढ़ा लिया। अहमदशाह दुर्रानी के पोते शाहजमान ने 1794 तक आक्रमण आरम्भ रखे तथा लाहौर पर अधिकार कर लिया जब ईरानियों के आक्रमण का भय हो गया तो वापिस लौट गया लाहौर पर सरदार भंगयान ने अधिकार कर लिया शाहजमान की 12 तोपें जेहलम नदी पार करते समय रह गई थीं उनमें से 8 तोपें निकलवा कर रणजीतसिंह ने काबुल पहुंचा दीं रणजीतसिंह को राजा की पदवी मिली और लाहौर विजय हो गया साहसी रणजीतसिंह ने सब से पहले दोनों बड़ा मिसलों भंगयान और रामगढ़या को विजय किया उसके बाद सब मिसलों और नवाबों को समाप्त किया। अंग्रेज जो पंजाब के सिवाय समस्त भारतवर्ष में छा चुके थे। बड़े दूरदर्शी थे राजा रणजीतसिंह से मित्रता करली और उनको पूर्व की ओर बढ़ने से रोक दिया गया यह अहदनामा 25 अप्रैल 1809 को हुआ इसके बाद राजा रणजीतसिंह ने अपनी आयु पठानों से युद्ध करने में गुजारी और उनको अपना लोहा मनवाए रखा।

पठानी स्त्रियाँ हरिसिंह नलवे का भय दिवाकर बच्चों को सुलाती थी कि खुफता बच्चा हरिया रावड़ा (आया) महाराजा साँघुओं के सेवक और भक्त थे। उनका जून 1839 में देहान्त हो गया इनकी सेना हिन्दू मुसलमान सिक्खों की मिली जुली थी राज प्रबन्ध कार्यों में जाटों का हस्तक्षेप नहीं होने दिया। उसकी यह नीति उचित होते हुये भी एक बड़ी भूल की। एक ही परिवार के तीन डोगरा सरदारों को देश और सेना के आग्रणी और प्रबन्ध कर्ता नियुक्त कर दिया जिनके नाम ध्यान सिंह गुलाब सिंह और सुचेत सिंह थे उन्होंने रणजीत सिंह की सन्तान और परिवार को आपस में लड़ा कर राज्य का अन्त कर दिया अतः जम्मू कश्मीर का राज्य प्राप्त कर लिया महाराजा की मृत्यु के बाद बड़ा कंवर खड़गसिंह गद्दी पर बैठा जो बुद्धिमान नहीं था। परन्तु मन्त्री ध्यानसिंह की मनमानी बात नहीं चलाने देता था अतः ध्यान सिंह ने सरदार सुचेतसिंह द्वारा राजा को कमरे में मरवा दिया। राजा को मूर्ख और पागल सिद्ध करवा दिया रानी और कंवर नौनेहालसिंह से मिल कर राजा से अधिकार छीन लिये। राजा रोगी होकर 28 साल की आयु में मारा गया यह भी कहा जाता रहा कि उसको ध्यानसिंह ने मरवा दिया कंवर नौनिहाल सिंह ध्यानसिंह की चाल को ताड़ गया था उसको घृणा की दृष्टि से देखता था जब राजा खड़गसिंह का शव जलाकर वापिस आ रहे थे तो नौनिहालसिंह के सिर पर दरवाजा गिर पड़ा और वहीं मृत्यु हो गई यह काम भी पहले से तैयार करवाया हुआ था। इसके बाद ध्यानसिंह ने खड़गसिंह की रानी को बहकाया कि शेरसिंह को गद्दी नहीं मिलनी चाहिये। जो खड़गसिंह के बाद, अधिकारी था यह सूचना घोषित कर दी कि नौनिहालसिंह की रानी गर्भवती है और शेरसिंह के पुत्र प्रताप सिंह को गद्दी का अधिकारी माना जाये। तथा शेरसिंह अपनी पटियाले की जागीर में जाकर रहे। अतः ऐसा ही हुआ। शेरसिंह की अनुपस्थिति में सरदार सिन्धांवालिया और ध्यान सिंह ने अंग्रेजों से साजबाज आरम्भ कर दी।

यह सुनकर शेरसिंह ने बल पूर्वक गद्दी पर कब्जा कर लिया। रानी जिन्दा को बांदियों ने मार दिया। इस घटना के एक वर्ष बाद सरदार लहनासिंह व अजीत सिंह सिन्धांवालियां ने जो रणजीतसिंह के चचेरे भाइयों में से थे। शेरसिंह और प्रतापसिंह को धोखे से कतल करा दिया और रणजीतसिंह के छोटे कंवर दलीपसिंह को गद्दी पर बैठा कर अपनी अंगुली के रक्त से मस्तिक पर राज तिलक कर दिया। उसकी माता रानी चांदकौर सरपस्त बनी और मन्त्री ध्यानसिंह का पुत्र हीरासिंह मंत्री बना परन्तु सिक्ख सरदारों ने उसको वध कर दिया कंवर दलीपसिंह के बड़े भाई पिशोरासिंह ने यह समाचार सुनकर अटक के किले में राजा बनने की घोषणा कर दी ध्यानसिंह के पोते जवाहरसिंह ने सरदार चतुरसिंह अटारी वाले वाटिवाणा सरदार

फतेहखांन मोतियां वाले को उसके विजय करने के लिये भेजा उन्होंने पिशोरासिंह के सहायक होने का धर्म उठाया और लाहौर की गद्दी सम्भालने की कहकर साथ ले लिया रात्री को तम्बू में उसका गला दबाकर समाप्त कर दिया उन दोनों को भी सिक्ख सरदारों ने समाप्त कर दिया। बालक राजा दलीपसिंह की सेना ने विद्रोह का रूप धारण कर लिया और अधिक वेतन की मांग पेश कर दी। बुद्धिमाग रानी चांद कौर ने सेना को अंग्रेजों से उलझा दिया कि अंग्रेजों से सतलुज पार का देश विजय करो और अधिक वेतन प्राप्त करो उधर अंग्रेज गवरनर के पास पत्र भेज दिया मेरी बागी सेना आपके विरुद्ध आती है। अगर उसको विजय करके मेरे सतलुज पार के देश पर अधिकार करोगे तो मेरा कोई दखल न होगा।

दिसम्बर 1845 में मूद की युद्ध हुआ। इसमें अंग्रेजों की जीत हुई। दूसरा युद्ध फिरोशाह के मैदान में हुआ जिसमें दोनों सेना मैदान छोड़ गई। जब अंग्रेजों को सिक्खों के चले जाने का पता चला तो रोशनी के गोले चढ़ाकर तोपों पर अधिकार कर लिया और जीत का ऐलान कर दिया। 1846 में सर हैनरी स्मिथ ने अलीवाल के स्थान पर सिक्खों को हराया।

पुनः 1846 में स्थांन फिरोशाह पर युद्ध हुआ जिसमें सिक्खों के 4000 तथा अंग्रेजों के 2500 सैनिक मारे गये सिक्खों ने व्हास और सतलुज के मध्य का प्रान्त युद्ध के खर्च के बदले अंग्रेजों को दे दिया जम्मू और कश्मीर का प्रान्त, एक करोड़ रुपये के बदले गुलाब सिंह ने ले लिया इसके बाद मुलतान के हाकिम मूलराज ने दो अंग्रेजों को मरवा दिया। लार्डलीक ने 74 हजार सेना तथा 40 तोपें उसके प्रतिकार युद्ध में भेज दीं सिक्खों के सहायक मित्र मोहम्मद काबली था इस युद्ध में अंग्रेजों की 24 रजमेन्ट फायर के नीचे आ गई अनीब हानि हुई अन्त में सिक्ख हार गये राज्य अंग्रेजों ने अपने आधीन कर लिया तथा दलीपसिंह को बड़ी पेन्शन देकर विलायत भेज दिया उसने वहीं आयु पूरी की।

फुलकियां राजधानियां

फुलकियां राज्य वंशी गोत्र सिद्धू है इस गोत्र का पूर्वज सिद्धू बुराड़ नामी भठी गोत्र का था जैसलमेर राजवंश से इनका प्रथकपन है इनके इतिहास में लिखा है कि उनका पूर्वज गजनी से निकाला जाकर युधिष्ठरी सम्वत 3008 में भारत वर्ष में आया। वह या तो भठी गोत्र का जन्मदाता भठार्क था अथवा उसका पिता था भटण्डा भुटनेर उसी के नाम से प्रसिद्ध हुये हैं सिद्धू की सन्तान में फूल बड़ी प्रार्थ वाला हुआ उसकी सन्तान ने नाभा पटियाला जींद भदौड़ भलाडर नौधगढ़ फरीदकोट मलोप राजधानियां स्थापित की।

सिद्धू बुराड़ भठी जाट
वंशावली
"फूल सिद्धू जाट"

तिलोका रामा राधो चुनु झुंडू तखत मल
बिडेरा बेडरा बेडेरा नौधागढ़
नाभा जींद पटियाला
भरौड़
मलोध

उपरिलिखित राजधानियों के सिवाय कैथल सूबा सिद्धू वाल अरनोली अटारी फरीदकोट के राज्य सिद्धू की सन्तान के ही हैं।

पटियाला राज्य

यह राजधानी भारतवर्ष की चार बड़ी राजधानियों में से थी जब पन्थ के सरदार मुगल राज्य की निर्बलता से लाभ उठा रहे थे शक्ति प्राप्त करने के लिये मैदान में आये तो चौधरी रामा का बेटा आल्हासिंह भी उन्हीं में से था उसने अहमदशाह के साथ युद्ध किया उसमें उसकी सेना के 2000 सैनिक मारे गये किन्तु फिर भी साहस नहीं छोड़ा अहमदशाह ने उसको मित्र बनाये रखने के लिये उसका बड़ा प्रान्त वापिस लौटा दिया अहमदशाह के वापिस काबुल चला जाने के बाद सरहिन्द के और परगने कनोड़ और खमावों मोल ले लिये और भदोड़ का राज्य मिला।

आलासिंह का पोता राजा अमरसिंह गद्दी पर बैठा और उनका बेटा राजा साहबसिंह थे 1810 में इनको महाराजा की पद्वी मिली इनके बेटे राजा कर्मसिंह को 1814 में कैथलबघाट दो पहाड़ी रियास्तों के भाग मिले इनके बेटे राजा नरेन्द्रसिंह को कुछ नाभा सटेट का भाग अंग्रेजों ने दिया 1857 की सहायता में इनको झजर नवाबव का जब्त इलाका मिला और कानोंड प्रग्ना खरीद लिया 1862 में इनकी मृत्यु खे बाद महाराजा महेन्द्रसिंह CSI गद्दी पर बैठे सरहन्द नहर इनकी बड़ी याद गार है 1875 में महेन्द्र कालिज का पत्थर रखा 1876 में इनकी मृत्यु के पश्चात महाराजा राजेन्द्रसिंह गद्दी पर बैठे बड़ी पटड़ी की राज पुरारेल इनकी गादगार है 1879 की काबुल की लड़ाई में कन्टी जैन्द भेजते के सिले में शाही दर्बार में भेंट देना माफ हुवा और एक रिसाला और एक पलटन रखने की जुमेवारी डाली गई इनकी जगह 1900 में महाराजा भुप इन्द्रसिंह गद्दी पर बैठे यह ऐशप्रिय तो थे परन्तु ब्रिटिश

गवर्नमैंट इनकी ऊंची खुद दारी की कायल रही इनकी पोलोटीमों ने भारत और लन्दन में तैथलका मचाये रखा जिसमें सरदार चन्दनसिंह आदी पलेर थे मृत्यु के पश्चात महा राजा यादुइन्द्रसिंह जवान आयु में गद्दी पर बैठे यह होनहार डीलडोल में प्राचीन आर्यों और देओं जैसे लम्बे दड़ंगे स्वभाविक लीडर समाज प्रिय और पन्थ के सेवक है वह सबके भरोसे वाले शान्त स्वभाव खालिस पालीटेकस में हाथ रखने वाले देश भक्त है आपने गद्दी पर बैठते ही जनता को प्रभावित करने वाले तीन काम खास किये 1 राज्य महल को आदर्श बनाया दूसरा यह कि उनके पिता के जमाने में जिन जिन घरानों के साथ कुछ नाराजगी का सलुक था उनकी पीठ पर हाथ रखा और मित्रता अबल की तीसरा यह कि तर्नतार्न के तालाब की खुदाई के सिलसले में सरपर मिट्टी की टोकरी रखी आप हर सवारी और पैदल खेलों में राजाई घमन्ड को बालाए ताक रख कर भाग लेते हैं पटयाला सटेट के आप अन्तिम हिज हाईनिस हैं ।

जीद राज्य

इस राज का बड़ा फूल का परपौत्र सरदार गजपतसिंह था उसने अपनी लड़की सरदार महासिंह सोखर चकया से व्याही थी जो रणजीतसिंह की माता थी । 1772 में बादशाह शाहआलम ने उसको राजा की पदवी दी 1773 में सरहिन्द के युद्ध में विजय किया हुआ कुछ प्रान्त उसके भाग में भी आया था रोहतक तहसील [दादरी का प्रान्त भी उनको मिला तथा गदर की पुरस्कार में लार्ड लीक ने कई परगने गोहाने के भी दिये ।

	राजा गजपतसिंह (सिष)
जीद राज्यवंश की पीढिया	राजा भागसिंह
सिद्धू भठी	राजा फतेहसिंह
फुल	राजा सन्तसिंह बेओलाद
तिलोका	राजा सरूप सिंह
सुखचैन	राजा रघबीरसिंह
	राजा रणबीरसिंह पोता

नाभा राज्य

सरदार हमरीसिंह फूल की चौथी पीढ़ी में था उसको चौधरी तिलोका कि जागीर कपूरगढ और संगरुर मिले थे 1755 ई. में नाभा नगर बसाया सरहिन्द की विजय में मलोध गढ परगना इसके भाग में आया इस राज की सालाना आय 130000 रुपये थी 1783 इनकी मृत्यु पश्चात याना कबर जसवन्तसिंह गद्दी पर बैठा 1840 में इनकी जगह देव इन्द्रसिंह राजा बने यह अंगरेज सिक्ख संग्राम में सिखों

की मदद पर रहे इसलिये गद्दी से हटाए गए और बड़े याने कवर भरपुरसिंह को गद्दी पर बिठाया गया इनको गदर 1857 की में अंग्रेजों की मदद के सिले में भाजर नवाब के काटी बावल प्रग्ने मिले और कर्ज के एव्ज कानोड का प्रग्ना भी मिलगया 1863 में इनकी मृत्यु पश्चात राजा भगवानसिंह दत्तपुत्र राजा बने 1870 में बोहोत पीढी दूर से राजा हीरासिंह गद्दी पर बैठा 1893 में राजा राजगान की पदवी मिली

फीरद कोट

फरीद कोट राजवंश का पृथकत्व फूल से 12 पीढ़ी पहले हुआ। यह कैथल के रईसों में से था। 1600 में इनके पूर्वज कपूर सिंह ने राज्य स्थापन किया। उसके पौते हमीर सिंह ने राज सीमा को विस्तार दिया। राजा रणजीत सिंह से दो युद्ध किये। उनकी सालाना आय 354800 थी।

रणधावा रईस तलोड़ी

चौधरी रणधीर सिंह ने 1580 इस्वी में राजपूताना से आकर झण्डाही ग्राम बसाया और उसके पोते तरगा ने तलौड़ ग्राम बसाथा चौथी पीढ़ी से प्रधान चन्द का बेटा सन्तोष सिंह अमृत छक कर सिक्ख हो गया। सरदार जय सिंह के जथे में शामिल हो कर नंगला तलोड़ी ग्राम प्राप्त किये।

रणधावा रईस खुढ़ा

इस वंश का रणधावा नाम का राजस्थान में शूरबोर प्रसिद्ध हुआ। उसका बेटा काजल सिंह पटियाले में एक जत्थे का जत्थेदार बन गया। बड़ी शूरवीरता के काम किये। परगना नौशहरा जफरवाल खूंढा शाह पर अधिकार कर लिया।

मान रईस भागा

चौधरी अमर सिंह मान भागा ग्राम निवासी कन्हया मिसल के जत्थे में शामिल रहा। सोकलगढ सुजानपूर धर्मकोट धर्मपूर परगने अपने अधीन कर लिये।

मान रईस मूगल चक

इस बंश का चौधरी लधा मान किसी कारण सीदी पूर लोवा जिला रोहतक से आ कर प्रान्त गुजरां वाला में आया। मान नाम का एक छोटा सा ग्राम बसाया। उसके बाद 22 ग्रामों का चौधरी नियत हो गया। फिर सरदार महताब सिंह ने मूगल राज्य के निर्बल होने पर 52 ग्राम कब्जे में ले लिये। मिसल

भंगयान में शामिलर हा। सीदीपुर लोहा में लद्धा पटी और जोहड़ इसी लद्धा की याद दिलाते रहेंगे।

सिन्धु रईस सरांवाली

इस वंश के नेता हसन्न ने कारिया जाति के लोगों से युद्ध करके सिरों का ढेर लगा दिया था। अकाल से तंग हो कर प्रान्त गुरुदास पुर में जा कर बस गया। इस का पौत्र लाल सिंह जत्थेदोर बन गया। उसकी बिधवा बेटी का बिवाह रणजीत सिंह के बड़े बेटे कंवर खड़ग सिंह से हुवा। 36000 सालाना आय के मालिक रइस रहे।

सिन्धु रईस वड़ाला

इनके नेता चौधरी मोचल सिंह ने अमृतसर से आकर डसका के निकट मोचल ग्राम बसाया। कई पीढ़ी पश्चात चौधरी दुर्गा मूगल राज्य निर्बल हो जाने पर राज्य का चौधरी नियत हुआ। फिर सरदार महताब सिंह ने 52 ग्रामों पर अधिकार कर लिया। मिसल भंगयान का साथी रहा।

रईस कलास बाजवा

चौधरी मांगा प्रसिद्ध नेता था। मांगा की मढ़ी उसकी सन्तान के सिक्ख मुस्लमान पूजते हैं। बेटे कलास ने एक जासोर प्राप्त की। इस वंश के जय चन्द जोगी के बेटे दीपान सिंह ने अमृत छिका और मिसल भंगयान में बड़े भरोसे और वीरता के कार्य किये। इस लिये सरदार हरि सिंह ढिल्लों ने धर्म पुत्र बना लिशा। 1816 में सरदार जोध सिंह की पुत्री से रणजीत सिंह के कंवर खड़ग सिंह का विवाह हूआ।

ईकादश अध्याय

अंग्रेजी शासन और जाट

अंग्रेज इस्ट इन्डिया कम्पनी ने मद्रास बंगाल बिहार उडीसा आदि देशों पर अपना अधिकार जमा लिया। पुर्तगेज और फ्रांन्सीसी कम्पनीयों को पराज्य कर के पूरे दक्षिणी भारत पर राज स्थापन हो चुका था। मरहठा शक्ति को कुचल दिया था। निर्बल शाहनशाह देहली और शक्ती शुन्य राजपूतों को अपने मित्र बना लिया था। केवल एक छोटा सा राज भरतपुर ऐसा राज था जिसको पराज्य करने का गर्व अंग्रेजों को प्राप्त न था। भरतपुर का किला सर न हो सकने के कारण जाट राजा को बगेर किसी पाबंन्दी के अंग्रेजों ने आपना मित्र बना लिया था। पंजाबी सिक्ख जाट अंग्रेजी सैना से कई बार युद्ध करके अपना लोहा मना चुके थे इन्हीं कारणों से अंग्रेजों को पक्का विश्वास हो गया था कि जाट दृढ़ शूरवीर और अटल योद्धा हैं। गदर 1857 के बाद 70 प्रतिशत सैना में जाट हिन्दु मुसलमान और सिक्खों को रखा। सर एब्टसन गवरनर पंजाब ने अपनी रिपोर्ट में जाट जाति के विषय में लिखा कि जाट अपनी दूसरी साथी जातियों के अपेक्षा अधिक इमानदार मेहनती हैं और शूरबीरता में किसी भी शूरबीर जाति से कम नहीं उनके आचारण में निडरता सत्य बोलना साफ शान्त चित कायमू मिजाज खास बातें हैं।

रिकरुटिंग अफीसर मेजर वैगली ने हैंन्डबुक आफ दी जाट गूजर अहीर में लिखा है कि जाट सैनिक स्वास्थ में दृढ़ परिश्रमी ऊंची श्रेणी के शूरवीर सिद्ध हुऐ हैं। प्रतेक डिपुटी को समझते हुए भरोसे वाले हैं। परन्तु हठी भी है। अगर जाट सैनिक के साथ न्याय होने में चूक हो जाए तो बिगड़ जाते है और रोजगार तथा किसी लाभ की पंवाह नही करके नौकरी छोड़ बैठता है जिमेवारी को भरोसे से निभाता है।

(गदर) १८५७ इसवी

यह गदर किसी राजनैतिक साजिस का कारण न था। अपितु अंग्रेजों की अनिति से सैना बागी हो गई। एक नये ढ़ग के कारत्स विलायत से आये थे। जो चर्बी से चिकने किये हुये थे और वहाँ गऊ तथा सुअर की चर्बी का ही प्रयोग अधिक होता है। जिसको खुना था मूंह लगाना हिन्दु मूसलमान धर्म दोनो के लिये निषेध था। सैनिकों की इच्छा के विरुध परेड़ वर फालन करके दांन्त से

अगला हिस्सा तोडकर बन्दुकों में भरने की सिखलाई की आज्ञा दी। साफ इनकार करने पर उनका कोर्ट मारशलि करके कैद में ड़ाल दिया। सभी को यह भय हो गया कि सब का धर्म विगाड़ा जायेगा। उस बगावत में देहली के बादशाह और नवाब शामिल हो गये क्रियोंकि उनकी फिर से इस्लामी राज्य स्थापित हो जाने की आशा हो गई। परन्तु छोटे २ हिन्दु और सिक्ख राजा गदर में शामिल न हुये। उनको हिन्दु राज्य स्थापित होने की आशा नही थी। वह अंग्रेजी राज्य से इस्लामी राज्य को अधिक बुरा समझते थे। 700 वर्षों तक हिन्दु समाज को इस्लामी शासन ने दुखी रखा था। अंगरेजों ने हिन्दु तथा सिक्ख राजों से से सहायता पाकर गदर पर शीर्घ ही काबू पा लिया। उधर पंजाबी मूसलमान सिक्ख राज्य से कठिनता से छुटकारा पाये थे। वह भी अंगरेजी राज्य की ही अच्छा जानते थे। अंगरेजों कि सहायता करने को ही लड़े अंगरेजों ने फूलकियान राजों को रणजीत सिंह के चूंगल से बचाया था। वह अंग्रेजों के इस अहसान के नीचे दवे हुये थे। फुलकियां बंशी राजाओं और पंजाबी मुसलमानों ने गदर फिरो करने में अंग्रेजों की सहायता की।

बादशाह को कैदी बना लिया और उसके दो शहजादों को गोली से उड़ा दिया था नवाबों को मृत्यु दण्ड और राज्यों से बेदखल किये गये। गदर से पहले अंग्रेजों की सैना में पूर्बी और दक्षिण देशों के सैनिक थे कियोंकि अंग्रेजों का का राज्य बंगाल बिहार मद्रास आदि देशों में ही देर तक रहा। गदर के पश्चात अंग्रेजों की सैना में उत्तरी भारत वर्ष के सैनिक भरती करके सैना को अधिक सद्धढ और भरोसे वाला बनाना गया। उन्ह में जाट राजपूत पंजाबी मुसलमान और गोरखों की पलटन रसाले स्कवाडन और कम्पनी खड़ी की गई। कुल लड़ाका सैना में लगभग 70 प्रतिशत तीनों धर्मों के जाट थे और अंग्रेजी की भारतीय सैना ने ब्रहमा आसाम अफगानिस्थान सन 1914 के महायुद्ध और सन 1939 के बड़े युद्ध में भरोसे वाली रही परन्तु गदर से लेकर सन 1947 तक भारत में स्वन्त्रता की लहर और प्रचार चालु रहने से भारती सैना पर सदा के लिए भरोसा रखना अंग्रेजों के लिए कठिन बात थी। अंग्रेज सवझते ने कि सयासी बिद्रोह में भारती सैनिक शस्त्र उठाने से इन्कार कर देंगे।

आर्य समाज और स्वरज्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी। 1828 तदनुसार 1881 विक्रमी में पैदा हुआ वह ऊँचे संसकार लेकर उत्पन्न हुआ था तथा आपको पूर्ण ज्ञानी विद्वान गुरु भी मिला। पूरा ज्ञानी होने पर गुरु की आज्ञा का पालन किया मिथ्या मत मतान्तरों

का खण्डन किया आपने सारे जीवन को देश सुधार के लिये लगाया और आर्य समाज स्थापित करके उसके दस नियम बनाये जो निम्नलिखित हैं।

1 सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन्हें सब का आदि मूल परमेश्वर है।

2 ईश्वर, सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्व शक्तिमान न्यायकारी दयालू अजन्मा: अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वअन्तरयामी अजर, अमर, अभय: नित्य: पवित्र और सर्वकर्ता है उसकी उपासना करनी योग्य है।

3 वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4 सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वथा उद्दित रहना चाहिये।

5 सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिये।

6 समाज का उपकार करना समाज का मुख्य उदेश्य है। अर्थात् शरीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7 सबसे परीती पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिमे।

8 अविद्या का नाश और विद्या की वरि करनी चाहिये।

9 प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ठ न होना चाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

10 सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हित्कारी में सब स्वतन्त्र रहें।

स्वामी दयानन्द ने शास्त्रार्थ में सब मतो के पण्डितों को पराजित करके सिद्ध कर दिया था कि केबल वेद ही ईश्वर ज्ञान हैं और वैदिक धर्म ही ईश्वर धर्म है। पण्डित, मौलवी, पादरी कोई भी उनके सन्मुख नहीं ठहर सका योरुप से हर साल लाखों रुपया ईसाई उर्म के प्रचार और प्रसार के लिये आता था। उनकी सफलता में उनको निराशा हो गई। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने सब मत मतान्तरों का खण्डन किया जो वेदानुकूल नहीं थे। इसाई मत खण्डन के लिये 13वां समुलास लिखा गया ईसाईयों का शासन था पादरियों ने हार खाई और निराशा ही हाथ आई अत: आर्य समाज को राजद्रोही सिद्ध करने पर बल लगाया। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था कि स्वदेशी राज्य उत्तम होता है सब भाँति सुखदाई होता है स्वदेश सब मतों के लिये पक्षपात रहित हो सकता। स्वामी

है जो किसी राजनैतिक कार्य में भाग नहीं लेते थे वह केवल धर्म के सुधारक और प्रचारक थे। राजनीति धर्म भी उनके विचार में धर्म का ही अंग था। राजधर्म की व्याख्या करते हुये भी सत्यता को निर्भय रूप से प्रकट किया।

जबकि उस समय राज के विरुद्ध कोई बात कहना अथवा लिखना एक कठिन बात भी विप्लव (गदर) के अपराध में असंख्य मनुष्य मृत्यु का दण्ड भुगत चुके थे स्वामी जी वैदिक धर्म, स्वदेशी वस्तु, स्वराज्य और स्वभाषा (देवभाषा) जो आजकल राष्ट्र भाषा है। चारों के प्रचारक थे उनके बाद आर्य समाज के प्रचारकों ने भी उस प्रचार को जारी रखा जो अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध सिद्ध होते थे। अंग्रेजी राज्य वृक्ष के लिये डीमक सिद्ध होने वाले थे। स्वामी जी भारत वर्ष में प्रथम पुरुष थे जिन्होंने हजारों वर्षों के भूले भटके शुद्ध वैदिक धर्म को मिलावट से पवित्र करके मनुष्य मात्र को दिखलाया। प्रमाणों से सिद्धान्तों से मनवाया बताया फैलाया। स्वामी जी ने हजारों वर्ष से खोये हुये स्वराज्य के गुणों को दर्शाया। इसकी माँग और बीज भारत वासियों के हृदय में डाला। प्रचार द्वारा सिंचा जाता रहा 20वीं शताब्दी के आरम्भ में अंकूर निकले। आरम्भ काल में आर्य समाज का प्रचार बड़े 2 शहरों तक ही सीमित रहा और 20वीं शताब्दी इसा के आरम्भ में पंजाब के शहरों में बहुत माननीय हो गया। डी० ए० वी० कालिज लाहौर में देश की देहात के जाटों ने आर्य समाज को बड़ी श्रद्धा से अपनाया। पोराणिक धर्म के पाखंड का खंडन उनके लिये प्रभावशाली और रोचकथा प्रचारक था। प्रचारक प्रभावशाली भजन गायन करते थे ऐसे एक भजन का उदाहरण :-

भजन:— विद्या बिन भाईयों सुना हुवा देश तुम्हारा
विद्या से ही कल मशीन विद्या से चलती तारां
विद्या ही के कारण लोगों मार रेल चिघाड़ा
ब्रिटेन केवल छोटा देश है पकड़ा भारत सारा
30 करोड़ को हांके फिरते जयों पाली लगारा आदी।

आर्य समाज का उपदेशक लाला लाजपतराय जिसकी बलिष्ट आवाज को लाऊड स्पीकर की आवश्यकता न थी। उसका एक २ शब्द बम्ब की भाँति फटता था। स्वराज्य हमारा अधिकार है ले के रहेंगे इत्यादि। अंग्रेजों ने आर्य समाज को अपना प्रथम श्रेणी का शत्रु समझ लिया था। हरयाणा की जाट जाति लड़ाका और सैनिक जाति थी अंग्रेजों को यह सहन नहीं हो सकता था कि वह आर्य समाज की श्रद्धालू बन जायें। आर्य समाजियों के लिये सिविल की नौकरी बन्द करदी। उत्सवों में भाग लेने वाले नम्बरदारों और जेलदारों के पद तोड़े गये आर्य समाज के जलसे

धारीरिक रुटों की सेना में भरती बन्द कर दी गई। प्रतिवर्ष सेना में से आर्य समाजी विचार रखने वाले सरदारों ओहदेदारों तथा सिपाहियों को निकाला जाता रहा और यह बड़ा घाटा हिन्दु जाटों को ही सहन करना पड़ता था। सैना में प्रोराणिक धर्म के ही मन्दिर स्वीकार थे जिनमें भजन सन्ध्या के स्थान पर केवल मूर्ति पूजा और मूर्तियों के सामने सिर झूकाना ही था जो जाट सैनिकों को सहृदय स्वीकार न था वह मन्दिर में श्रद्धा से नहीं जाते थे पन्डित के बुलाने से जाते थे और एक भजन गाना शुरु कर देते थे जिसको पंडित ठाकूर जी की मूर्ति का अपमान समझते थे। अतः वह शिकायत किसी न किसी प्रकार अंग्रेज अफ़सरों के पास पहुँच ही जाती थी।

वह भजन निमिन लिखता था

अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥
करूँ किस तौर आवाहन कि तू मौजूद है हर जा।
निरादर है बुलाने को यदि घण्टी बजाऊँ मैं॥
लगाना भोग कुछ तुम को यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं॥
तेरी ज्योति से रोशन हैं सूर्य चांद और तारे।
महा अन्धेर है भगवान अगर दीपक दिखाऊँ मैं॥
भुजायें हैं न सीना है न मस्तक है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊँ मैं॥

ऊपर लिखित भजन निर्गुण उपासना था। परन्तु पंडित के तन बदन में अग्नि लग जाती थी और वह यह कहे बिना नहीं रहता था कि यह भजन मन्दिर के बाहर गाना चाहिए। ठाकुरजियों का अपमान होता है। ऐसी शिकायतें कमान्डिंग अफसर तक पहुँच ही जाती थीं। और हिन्दू जाट जाति के नाम पर गुप्त रिपोर्ट लिखी जाती थी। दोनों महायुद्धों में जाटों ने भरोसे वाले बने रहकर शूरवीरता के बढ़ चढ़ कर काम किए परन्तु आर्यसमाजी होने का सन्देह अंग्रेज अफसरों के दिल से दूर न हो सका। जब रिकुरटों की विशेष मांग हुई तो 1916 ई० में आर्य समाजी जनेऊ धारी रिकुरटों पर से पाबन्दी हटाई जाने का आरडर निकला। परन्तु 1935 ई० में फिर एक गुप्त सरकुलर जारी हुआ।

कि आर्य समाजीयों को सेना से निकाला जाएगा सीनीयर जाट रिसा लदा रहा और रि: मेजर की डियूटी कर रहा था कमान्डिग अफसर ने गुप्त रूप से मुझ से यह हुकम बताया और कहा रजमट में केवल जाट ही आर्य समाजी हो सकते हैं। आप उनके नाम पेश करो सबको निकालना होगा। मैंने अपनी सदा साफ कहने की आदत के मुताबिक कहा आपको सत्य बात सुनकर बड़ा अफसोस होगा। मैं स्वयं और सारा जाट सकार्डन आर्य समाजी हैं। और सारी सेना के जाट आर्य समाजी हैं। मुझको पूरा भरोसे वाला समझा जाता था कमानडिग ने नाराजगी के लहजे में कहा इतने सच की जरूरत नहीं है जब आप और हमारा जाट इसकार्डन पक्का लायल है मैं लिखूंगा मेरी रजमन्ट में कोई आर्य समाजी नहीं है।

सरदार अजीतसिंह सिन्धु जाट

सरदार साहब एक अच्छे सैनिक परिवार से थे पंजाब में यह पहला आदमी था जिसने अंग्रेजी राज्य की धींगा धींगी को अनुभव किया और रोका तथा खुले धड़ाके से जनता में गर्वनमैंट के बिरुद्ध प्रचार किया उसको राजद्रोही घोषित करके आयु प्रयत्न जेल में बन्द किए। यह सरदार भगतसिंह का चाचा था उसी समय बंगाल में पूर्ण जागृति थी वह अंग्रेजों को बम्ब केश और घातक वारदातों से भयभीत करके सदा काम रहने वाला जमीन का प्रबन्ध करा चुके थे। उसके बाद ही लायल दूर आदि जंगल प्रान्तों को आबाद करके सरकारी कालोनी बनाने पर विचार किया जा रहा था जिसके द्वारा टैक्स लगाने और जमीदारी अधिकारों में बदलियां करने की तजबीज थी सरदार अजीतसिंह की अपनी जायदाद इसी प्रान्त में थी इस तजवीज के खिलाफ सरदार साहब ने विरोध शुरू कर और जमीदारों को समझाया कि यदि डट कर विरोध नहीं करोगे तो सदा के लिए अधिकार से बंचित कर दिए जायेंगे। उसने एक जोशिला गीत बनाकर ग्राम 2 में गाया जिसकी टेक यह थी पगड़ी सम्भाल जट्टा पगड़ी सम्भाल। वे जनता में बड़ा जोश पैदा कर दिया। सरदार साहब जेल में रहे किन्तु वह तजबीज रोक दी गई। और उनका नाम जीवित रहेगा।

द्वादश अध्याय

राजा महेन्द्र प्रताप

आप रियासत मूड़सन के रईसों में से थे आपने 18 वर्ष की आयु में योरुप की यात्रा की। वहां से हृदय में स्वतन्त्र का प्रकाश हुआ। लोट आने पर गरीबों के लिए महाविद्यालय अपनी रियास्त में स्थापित किया जागीर को गुरुकुल के नाम करवा दिया और अछूतोद्धार करने का कार्य क्रियविन्तरुप दिया 1918 ई० में जब योरुप का युद्ध आरम्भ हुआ। भारतवर्ष को अंग्रेजों से मुक्त कराने की इच्छा से जर्मनी चले गये। आपके प्रोग्राम का पता चलने पर राजद्रोही घोषित कर दिया गया। 32 वर्ष तक जर्मनी रूस अफगानिस्तान, चीन, जापान आदि देशों में बिताये। भारतवर्ष स्वतन्त्र होने पर वापिस आ गये। वर्तमान में भी देहरादून प्रेम निवास में आर्य पेशबा के रूप में प्रचार कर रहे हैं।

योरुप का महायुद्ध तथा सेना की नई जागृति

सन 1914 से 1919 तक के युद्ध में शामिल होकर हिन्दुस्तानी रजमेंटों ने बड़ी शूरवीरता से युद्ध किया और भारतवर्ष का नाम ऊंचा किया। बहुत सैनिक मारे गये। घायल होकर तथा मोर्चों में बर्फ पर खड़े रहने से बहुत सैनिक बेकार हो गए। उससे भारत को एक बड़ा लाभ यह हुआ कि हमारे सैनिकों को बरतानिया फ्रांस आदि देशों में जो स्वतन्त्र थे चिरकाल तक रहने का अवसर मिला और स्वतन्त्र देशों के साथ युद्ध हुआ। तथा स्वतन्त्र विदित हो गया।

वहां से स्वतन्त्र की चाह से भरपूर होकर लौटे वहां उन्होंने अंग्रेजों की स्वार्थवृति अक्षपात तथा अन्याय का अनुभव हुआ। ऐसी बात को सहन करते रहना अपने देश की निर्बलता समझी। अंग्रेजी गोरा फौज और भारतीय फौजों के राशन, वर्दी कैम्पों के आराम के सामान में बड़ा अन्तर देखा जाता था गोरे सिपाही भारतीय अफसरों को सलूट, सलाम नहीं करते थे इसका कारण फ्रांस के लोग पूछते थे।

फ्रांसी सिपाही और जनता सूबेदार रिसलदारों के कन्धो पर लैफटीनैन्ट कप्तान के मेजरों जैसे ताज स्टार देखकर सलाम करते थे अंग्रेज इस बात से घृणा करते थे। फ्रांन्सियों को रोकते थे अंग्रेज सिपाही तथा भारतीय सिपाही के वेतन में पांच छः गुना अन्तर था। गोरा सिपाही का दर्जा भारतीय अफसरों

समान्य था। इसलिए वे सलाम नहीं करते थे उनके शासन में नहीं रह सकते थे अंग्रेजों ने प्रोपगन्डा (प्रचार) अमरीका और योरुप के देशों में कर रखा था कि भारतीय सैनिक गोरा सैनिकों से घटिया योग्यता के हैं तथा उनमें आधा जंगलीपन है। तोप मशीन आदि शस्त्रों के सीखने सम्भालने के अयोग्य हैं। जब उन देशों के सैनिकों ने अपने नेत्रों से आश्चर्य में डालने वाले कार्य ऊंचा आचार देखा तो अंग्रेज पर धिकार की आवाज कसने लगे। कि किस भांति एक सुथरे हुए देश को बदनाम करके गुलाम बना रखा है इन सब बातों को सहन करके भारती सैनिकों की आंख खुल गयीं। और उनके हृदय में स्वतन्त्रता की लगन उत्पन्न हो गई। साहस आ गया तथा ब्रिटिश अफसरों का रोब कम हो गया जिन बातों पर कुर्बान्नी द्वारा कहना अपराध समझा जाता था निर्भयता से सुनाई जाने लगी। अंग्रेजों ने इस परिवर्तन को बहुत महसूस किया तथा भरोसा न रख कर सन्देह रखना आवश्यक हो गया यह स्वराज्य के द्वारा में एक चरण समझा गया। अंग्रेजों ने ताक लिया कि अब भारत को दीर्घ काल तक आधीन रखना कठिन होगा लम्बा युद्ध होने से रिक रूट कम मिलने लगे तथा भरती बलपूर्वक की जाने लगी। केवल जाट जाति ऐसी थी जो अपनी रिजमेंटों के रिकरुट पूरे कर लेती थी तथा दूसरी जाति के रिक रुटों को भी पूरा करती थी। 1916 ई० में आर्यसमाज के जनेऊ धारी रिकरुटों से पाबन्दी हटाई परन्तु सन्देह दूर नहीं हुआ।

रौलट एक्ट और सिविल वार

महायुद्ध पश्चात् होने के पश्चात् रुलट ऐक्ट पास किया गया जिसके द्वारा भारत की उन्नति और मांगों के ऊपर प्रतिबन्दी लगाना था और भारतीयों के बढ़ते हुये साहस को दबाया जाये और महात्मा गांधी की मांग को दबाया जाये उस युद्ध के बाद जो कुछ अधिकार देने का बचन दिया था। मांग की आशा समाप्त हो जाये पालियामेन्ट में भारतीय सदस्यों ने इस बिल के पास होने देने के लिये इन्कार कर दिया इस एक्ट के विरुद्ध जनता में बड़ा जोश फैल गया। बगावत फैल गई। अंग्रेजी वस्तुओं का बाई काट हुआ। सरकार की आज्ञा भंग की जाने लगी रेल सड़क और तारें उखाड़ी जाने लगी सरकारी इमारतों को जलाया जाने लगा। विदेश से आये हुये कपड़ों की होली जलाई जाने लगी। दण्ड देने और रक्षा के लिये सैना लगाती पड़ती थी परन्तु सैना के लिए अपनों को मारना कठिन काम था। शान्ति के देवता महात्मा गान्धी जी ने इस भयानक आन्दोलन का रुख सफलता की ओर बदलने के लिये शान्त युद्ध की प्रणाली शुरु की।

वह इस प्रकार की प्रणाली के द्वारा पहले भी अफ्रीका गवर्मेन्ट को सीधे मार्ग पर ला चुका था इस प्रणाली से रक्त बहना रुक गया और शहरी गैर लड़ाका

जातियाँ जेलों में बन्द रहकर और पोलिस की लाठी की मार सहकर साहसी वीर बन गई ऐसी प्रणाली शहरों तक ही सीमित थी अनेक स्थानों पर वीर जातियों ने महात्मा जी की नीति के विरुद्ध ईंट का उत्तर पत्थर से देने की गलतीयाँ भी की उनको शीतल युद्ध में भाग लेने से रोकना पड़ा।

देश भक्त भगत सिंह सिन्धु

आपने 16 वर्ष की आयु में बी० ए० पास किया। विवाह से बचने के लिये घर से भाग गये। कानपुर प्रताप प्रेस में बलवन्तसिंह नाम से नौकरी की। वहाँ देश भक्त बी० के० दत्त जी से मुलाकात हो गई। 1925 ई० को दशहरा मनाने के स्थान पर बम्ब फटा। आप पर भी केस चला परन्तु छुट गये। 20 अक्टूबर 1928 को सायमन कमीशन के विरुद्ध जलूस के नेता लाला लाजपतराय एस० पी० स्काट की आज्ञा से लाठीयों से पीटे गये। अतः उसी चोट से मृत्यु हो गई इससे एक मास बाद एस० पी० सान्डर्स को गोली का निशाना बनाया गया तथा दिल्ली हाल (असम्बली की तमाशा देखने वाली गैलरी से बम्ब फैंका गया। सरदार भगतसिंह ने आगे आकर भरे हुये रिवाल्वर को फैंक दिया और गिरफ्तार हो गया। 30 अक्टूबर 1930 ईस्वी को लाहौर के बोर्सटल जेल में सुखदेव तथा राजगुरु के साथ फांसी दी गई और उनके शव को रात के अन्धेरे में सतलूज के किनारे गहरे जंगल में टुकड़े करके जलाये गये। सरदार भगतसिंह की अटल सुर वार्ता और बलिदान देश और जाट जाति के लिये जोश पैदा कराता रहेगा।

अकाली तथा बबर अकाली

सिख 20वीं ईस्वी शताब्दी के आरम्भ तक अंग्रेजों के विश्वास पात्र माने जाते रहे। परन्तु उनको अपना पुराना इतिहास याद था। जब उन्होंने अपने बाहुँबल से मुगल राज्य का तख्ता उल्ट दिया था वह उत्साही होने के कारण हिन्दुओं की भांति छुआ छूत के पाबंन्ध न थे तथा निडर भी थे। पंजाब से बाहर निकलकर सिंगापुर ब्रह्मा हांग कांग मलाया चीत मारशिश अफ्रीका और अमरीका आदि देशों में पहुँचे। मजदूरी मुलाजमत सौदागरी के कारोबार किये। सभ्यता में उन्नति हुई और धनाढ्य भी हो गये। स्वतन्त्र देशों में रहने से आजादी की वायु से स्पर्श किया उनके कुछ मनचले आदमी कामागाटा मारु जहाज में शस्त्र भर लाये परन्तु पकड़े गये अथवा बागी होकर पंजाब में जा कर जागृति उत्पन्न करदी गुरुद्वारों के नाम बड़ी 2 जागीर थी परन्तु उन की आय से पन्थ को कोई लाभ न हुआ महन्त और भाई जी उड़ा जाते थे उनमें कुछ तो सिख भी नहीं थे कुछ के आचार विचार अच्छे न थे गुरुद्वारे में बचा प्रशाद वह अपनी भैंसों को खिलाते थे। गुरुद्वारा सुधार की

एक प्रणाली जारी हुई। गुरुद्वारों को पन्थ के आधीन लाने के लिये पन्थ ने धन पर अधिकार करना आरम्भ किया। अंग्रेज पन्थ में जागृति होना नहीं चाहते थे। महान्तों की सहायता करने लगे गुरुद्वारा ननकाना साहब के महन्त नारायण दास ने 140 सिखों को गुरुद्वारा में कतल करवा दिया। इस घटना से पन्थ में बड़ी सनसनी फैल गई गवर्मेन्ट ने महन्त की सहायता की और इस को कुचलना चाहा इस तहरीक का नाम अकाली दल आंदोलन था सिख जिन्दा दिल जाति थी एक झण्डे के नीचे जमा होकर पन्थ की सेवा में मर मिटना उनका इतिहास भुलने नहीं दे रहा था।

अकालियों ने भी शान्त युद्ध किया। तहरीक बढ़ती गई जेलें भर दीं। अकाली उनके नेता बाबा खड़कसिंह पर बरबरता का व्यवहार किया गया। उसने सबको सहन किया गवर्मेन्ट को झुकना पड़ा और गुरुद्वारा ऐक्ट पास करना पड़ा। अकालियों को राजद्रोही समझा गया। सिक्खों में बड़ी संख्या जाटों की है इन्ही दिनों राजा नाभा को गद्दी से हटाया गया। जलयान वाले बाग अमृतसर में निहत्थे लोगों पर जनरल डायर ने मशीन गनों के फायर किये जिसमें बहुत से आदमी मारे गये। फिर गुरुद्वारा भाई जैतुमण्डी में प्रविष्ट होकर अखण्ड पाठ रोका गया और पीछे न हटने पर मशीन गन का फायर खोला गया पर वह दल छाती तानकर आगे ही बढ़ता गया उनके सामने भी सरकार अंग्रेजों को घुटने टेकने पड़े और वहाँ 100 अखण्ड पाठ लगातार रखे गये फिर अमृतसर गुरुद्वारे की चाबी खोली गई ऐसी स्थिति में लम्बे समय तक काबू न रहने से सिक्खों पर भी सन्देह हो गया।

त्रोदश अध्याय

योरुप का दूसरा महायुद्ध

योरुप का दूसरा महायुद्ध सितम्बर 1939 को आरम्भ हुआ इस युद्ध में भारत को सम्मिलित को कांग्रेसी नेता विरुद्ध थे और खुले शब्दों में कह दिया कि इस युद्ध में भारत का कोई सरोकार नहीं जर्मनी जापान आदि देशों से भारत की कोई शत्रुता नहीं। अंग्रेज भी यह जानते थे कि कांग्रेस का तात्पर्य केवल स्वतन्त्र होने का है इसलिए भारतवर्ष से मनचाही आवश्यक सहायता मिलने की कोई आशा नहीं थी भारतीय सेना अंग्रेजों को धोखा देने की हालत में तो नहीं थी परन्तु अपने हानि लाभ को भली भांति समझती थी अतः सैनिकों का हृदय देश भक्ति में रंगा जा चुका था अंग्रेज केवल भारतवर्ष की सेना के बल पर ही युद्ध में शामिल हो सकते थे क्योंकि इतना कम वेतन पर और बड़ी संख्या में आस्ट्रेलिया और बरतानिया से भर्ती नहीं मिल सकती थी वह हालात से बेबस थे। भारतीय सेना पर भरोसा करना ही पड़ा भारतीय सेना ने बद दिल्ली नहीं दिखाई। परन्तु ज्यों-ज्यों युद्ध लम्बा होता गया सेना पर से भरोसा कम होने का कारण बनते गए। पहला कारण यह था कि सिखों में एक साहस तोड प्रचार था एक गुरु बाणी के हवाले से कहा जा रहा था समय आ गया है अंग्रेज भारत में नहीं रहेंगे। एक रुपये का एक सेर अन्न बिकेगा। अंग्रेजों का स्थान मुसलमान ले लेंगे। और सिक्ख बारहबाट हो जायेंगे। इस बाणी को अटल मानते हुए दिलों में हलचल उत्पन्न हो गई। सिख रिकरुट खिचाऊ मिलने लगे। एक C.I.H. के सिक्ख स्कोऊडन ने जहाज में चढ़ने से इन्कार कर दिया और कैदी बनाया गया दूसरा कारण यह था कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने फैसला कुन अधिवेशन किया और महात्मा गांधी ने अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़ों का नारा लगा दिया सभी सदस्य जेल में भर दिये गये जिसके कारण जेल में करुणा तथा जोश फैल गया और विद्रोह हो जाने का भय हो गया तोसरा बड़ा कारण यह था कि फरट पर भारती फौजी कैदियों को शामिल करके इन्डियन नेशनल सेना का जनरल मोहनसिंह तथा श्री सुभाषजन्द्र बोस के नेतृत्व में खड़ा होकर अंग्रेजी फौजों के मुकाबले पर भीषण युद्ध करना था अंग्रेजों को विशेष समय तक भारत पर रहने की आशा न रही।

नेशनल इण्डियन आर्मी

इस आर्मी के नेता सुभाषचन्द्रबोस ने खड़ा किया। आपने आई सी एस

की परीक्षा विलायत मे पास की थी सर्विस छोड़ कर देश की आजादी के लिए मैदान में आये कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट चुने गए दूबारा 1938 में महात्मा गांधी जी तथा अन्य नेताओं के विरोध पर भी दूबारा कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट बने। मतभेद होने के कारण गांधी जी तथा उनके साथियों ने नेता जी से मिलकर काम करने से इन्कार कर दिया इसलिए नेताजी ने त्याग पत्र दे दिया गवर्नमेंट ने शान्ति में बाधक होने की घोषणा करके नजर वन्द कर दिया और आपकी कोठी पर पुलिस का कड़ा पहरा लगा दिया आपने विश्वयुद्ध जैसी युद्ध के मूल्यवान समय का हाथ से जाने देना उचित नहीं समझा पहरेदारों की आंखों में धूल डाल कर भारतवर्ष से लापता हो गये।

औरंगजेब की कैद से शिवाजी के निकल जाने की स्मृति को ताजा कर दिया। अफगानिस्तान से होते हुए जर्मन पहुँचे। नाजी सरगर्म नेता हिटलर से मिले। भारतीय कैदियों की नेशनल आर्मी बनाई। जिसमें जाट सैनिक बड़ी संख्या में शामिल हुए ब्रह्मा फरन्ट पर भारत के उत्तम अवसर था अतः पहुँच कर नेशनल एण्डियन आर्मी बनाई तथा जापान गवर्नमेंट से सहायता प्राप्त की। नेशनल आर्मी में उन्होंने देश भक्ति का ऐसा जोश भर दिया कि वह भूख प्यास मृत्यु की मामूली बात समझने लगे उनके हमलों ने अंग्रेजों को भयभीत कर दिया वहां भी जाट सैनिक भरोसे का कार्य कर रहे थे। उस आर्मी में जातपात का मतभेद मिटा कर सबको भाई बना दिया था यह सब बातें अंग्रेजों को विदुत होती रहती थीं।

अपनी सेना पर उनका प्रभाव आ जाने का भय बैठता जा रहा था जापान पर परमाणु बम्ब का हमला हो जाने के कारण उन्होंने बड़ी तबाही के भय से हार मान ली और इसी कारण नेशनल आर्मी ने भी शस्त्र डाल दिए तथा कैदी हो गई। नेशनल आर्मी विरोधी घोषित करके दण्ड देने का विचार अंग्रेजों का था इस बात की परीक्षा के लिए विशेष अफसरों पर मुकदमें चला कर दण्ड देना निश्चित हुआ भारतीय रजमेंटों के कमांडिंग अफसरों के द्वारा इस बारे में सेना की सम्मति गुप्त रूप से पूछी गई 85 प्रतिशत सम्मति यह मिली कि उनको क्षमा किया जाए। और उनको दण्ड देने का परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा। इस बात से भी यह अनुमान हो गया कि भारतीय सेना का रुख देश सेना की ओर है कांग्रेस ने इसी तरफदारी की जिम्मेवारी ली और सारे देश की की जनता का उदय उनका हितैषी दिखाई दिया कमान्डिर इनचीफ ने उनका फांसी की सजा क्षमा करते हुये लिखा कि सजा ठीक है तीनों अपराधी सिद्ध हुए हैं। परन्तु देश की स्थिति को सामने रखते हुए इनको क्षमा किया जाता है।

रहबरे आजम सर छोटूराम

आप गठी ~~मल~~ सांपला में एक मामूली किसान के बेटे थे आपने सदा समाज सेवा को ही अपना मुख्य कर्तव्य समझा। आप वकालत के कार्य से समय बचाकर समाज सेवा का काम करते थे आर्य समाजी थे आरम्भ में कई साल तक जिला कांग्रेस के प्रधान रहे। परन्तु परस्पर कांग्रेसियों में मतभेद होने से कांग्रेस से अलग हो गए। और कर्ज से दबे हुए गरीब किसानों की अवस्था सुधारने के काम में जुट गए बेचारा किसान नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें गवरमेंट से निर्भय होकर हाकिमों की लापरवाइयों तथा अधिकार चेष्टा खोलकर लिखी। आपने हिन्दू मुस्लिम सिख तीनों धर्मों के जमीदारों को संगठित कर दिया। पंजाब के बड़ें बुद्धिमान आपके विचारों को स्वीकार करते थे जो पक्के साथी हो गए थे। मियां सरफजल हुसेन सरशफी तथा सर सुन्दरसिंह मजीठिया सर सरीसिकन्दर हयात और सरखिजर हयात खास थे। उन्होंने अंग्रेजों के हथकन्डे पंजाब में बेकार कर दिए अतः छोटूराम को खतरनाक मुखालिफ समझते हुए भी उकसे बिगड़ते देश में अंग्रेजों की पहुंच से जगह 2 रामलीला ताजियों ईद की कुर्बानी के जलूसों पर झगड़े जारी हो गए परन्तु पंजाब में मुसलमान अधिक होते हुए भी यहां दाल नहीं गली शहीदगंज जैसे बड़े झगड़े को सिकन्दर हयात मुख्य मन्त्री के हाथों सिखों के हक में सुलझाया लाहौर में बड़ा बुचूइखाना बनना शुरू हो चुका था कई लाख रुपये का व्यय इमारतों पर आ चुका था अस्वीकार करवा दिया सर सिकन्दर से यह एलान करवा दिया।

कि मैं पक्का मूरमलिगी हूँ परन्तु मुस्लिम लीग का पंजाब में गलबार सहन नहीं करूंगा यूनिस्ट पार्टी के नेता जलसों में इस बात को दोहराते थे कि हम स्वतन्त्रता प्राप्त करने में कांग्रेस के साथी हैं। आजादी लेना चाहते हैं लेकिन जो कुछ मिलेगा हिन्दु मुसलमान सिख सब मिलकर लेंगे मुस्लिम लीग की तरफ से मिस्टर जिन्हा को कायदे आजम का खिताब मिला था पंजाब के मुसलमानों तथा हिन्दुओं से चौधरी साब को लायलपुर महा सभा के जिलसे में रहबरे आजम का खिताब मिला जिसमें हिन्दु मुसलमान सिखक्ख शामिल थे।

मिस्टर जिन्ना को पंजाब से लताड़

सर सिकन्दर हयात की मृत्यु के बाद सर छोटूराम की इच्छानुसार कम अनुभवी युवक सर खिजर हयात ढिवाणा को पंजाब का प्रधान मन्त्री निमुक्त किया गया। जिसका सहायक सर छोटू राम था। इस अवसर को जिन्नाह ने मुस्लिम लीग

का पंजाब में दखल स्थापित करने के लिये उत्तम अवसर समझा। सर खिजर हयात पर अपने अखबारों में लिखे व्याख्यानों और दूत भेजकर प्रभाव डालने पर बल लगाया मजहब और मुस्लिम औलियों की ओर से धमकी देनी आरम्भ की लेकिन छोटू राम ने अपने साथी मित्रों को सावधान कर दिया और खुलम खुला बात कह के फैसला कर दिया कि हम जिनाह की मजहबी द्वेष की चिकनी चुपड़ी बातों की परवाह न करके फैसले पर दृढ़ रहेंगे। सर छोटू राम जिन्नाह के कान खोल दिये जिस समय सर रिवजर हयात अपने पिता की मृत्यु के कारण अवकाश पर थे चौधरी शाह प्रधान मन्त्री थे।

पंजाब अस्म्बली का इजजास हो रहा था मिस्टर जिनाह मजहबी जनून की बातों को सामने रखकर लेजिस्लेटिव असेम्बली की हद के अन्दर प्रविष्ट हुआ और मुस्लिम मैम्बरों को मुस्लिम के झन्डे के नीचे लाने का प्रयत्न किया। गर्वनर मिस्टर गिलन्सी ने इस भय से चौधरी साहब को सावधान करके इजलास बन्द कर देने का मशवरा दिया। चौधरी साहब ने कहा कि मुस्लिम मित्रों की परीक्षा का यही समय है। मैं बनावटी मित्रता पसन्द नहीं करता जो जाना चाहे जाये। इजलास जारी रखा परिणाम यह निकला कि 73 मेम्बरों से 3 के अतिरिक्त 70 मैम्बर छड़े चित रहे गर्वनर हैरान रह गया और जिन्नाह का मान मारा गया। चौधरी साहब ने गर्वनर से कह दिया कि मिस्टर जिन्ना को उनके निवास स्थान पर हुक्म भेज दिया जाये कि लाहौर में आये एक सप्ताह पूरा हो जाने के बाद एक मिनिट भी अधिक नहीं ठहरेंगे अगर यह इतला मिलने के बावजूद भी ठहरे रहेंगे तो हवालात में बन्द कर दिये जायेंगे। यह बात सुनकर गर्वनर ने आश्चर्य प्रकट किया और इस हुक्म को वापिस लेने का मशवरा दिया कि जिन्हा महात्मा गान्धी के तुल्य मुस्लिम नेता हैं उसके अपमान से मुसलमान जनता में रोष और जोश फैल जायेगा और प्रेवि कौन्सल तक यह प्रश्न उठाया जायेगा। चौधरी साहब ने कहा कि इन सब बातों की जिम्मेवारी मुझ पर है मेरी तरफ से हुक्म पहुँचादें। गर्वनर साहब ने यह सूचना टेलीफोन द्वारा जिन्नाह को दे दी। इस पर जिन्हा साहब बहुत बिगड़े। कई बार दुहराया कि आप यह हुक्म सोच समझकर दें। छोटू राम मुझको पंजाब से नहीं निकाल सकते। गर्वनर ने कहा कि यह उनका हुक्म है और मेरा उनके हुक्म में कोई दखल नहीं। यह सूचना अखबारों में निकल गई। अतः समस्त भारत की जनता इसका अन्तिम परिणाम सुनने की प्रतीक्षा में रही।

उनके विचार में यह आसान बात सहज निबटने वाली न थी तथा आश्चर्य जनक थी एक सप्ताह समाप्त होने कुछ देर पहले ही जिन्नाह का बिस्तर गोल होकर लाहौर के रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। यह आसान बात न थी कि मुस्लिम बड़ी

संख्या प्रदेश पंजाब से जिन्नाह को इस भांति धक्के देकर निकाला जाये मुस्लिम लीगियों को बड़ी निराशा हुई इसके बाद छोटूराम ने दिल खोलकर कह दिया कि पंजाब में मजहबी दिवानों की दाल न गलने दी जायेगी। जो कुछ मिलेगा मिलकर लेंगे। यह प्रथम अवसर था चौधरी साहब के कट्टर विरोधी पंजाबी हिन्दुओं ने उनकी शक्ति को हृदय से स्वीकार किया तथा धन्यवाद दिया। यह बात यकीन के साथ मानी जाती है और कही जाती है कि अगर छोटूराम और अधिक समय तक जीवित रहते तो पंजाब का बटवारा नहीं होता अगर होता तो इतनी तबाही शर्मनाक झगड़े लेकर नहीं होता।

सर छोटूराम का इतिहास प्रिये पत्र महात्मा गांधी जी को

इस पत्र की आफिस कोपी छोटूराम जी की मृत्यु पश्चात् उनके रिकार्ड में पाई गई।

शिमला

15 अगस्त 1942 ई०

पूज्य महात्मा जी मुझे क्षमा करें इस पत्र में आपको जो कुछ राजा फार्मूले के विषय में लिखा जा रहा है मैं उसमें कुछ शामिल कराना चाहता हुँ।

मैं युनिस्ट पार्टी का एक सच्चा मेम्बर होते हुए यह कह दूं कि दलबन्दी का विरोधी हूँ। हालांकि मैं पहले पक्का कांग्रेसी था, और जो भी कांग्रेस ने मांग की, मैंने उनका विरोध भी किया।

अब जबकि आप मजहबी और सथानी (राजनैतिक) नाकाबन्दी को सुलझाने के लिये और उसका परिणाम तलाश करने के लिये आप लवलीन हैं। मुझको आज्ञा दी जाये, कि मैं भी आपको एक विचार भेज दूं जो कि पंजाब के समस्त गैर मुसलमानों का ख्याल है इतनी बड़ी जमायत की सम्मति को नजर अन्दाजा करके आपका केवल अपनी इच्छा पर फैसला कर लेना। इस बात से इन्कार करना मूर्खता ही होगी, कि पाकिस्तान का नारा आम मुसलमानों के ख्याल में समा चुका है, और इनमें इतनी योग्यता भी नहीं, कि वह पाकिस्तान बनने के बाद हिन्दुस्तानी मुसलमानों पर क्या असर पड़ेगा। उसका कारण यह है कि जोरदार प्रोपगन्डे से उनके दिलों पर निम्न लिखित यकीन पैदा कर दिया गया है।

1—हिन्दु कुदरतन (स्वभाविक) खुदगर्ज और लालची हैं।

2—मुसलमानों को हिन्दुओं से कभी अच्छे बर्ताव की आशा नहीं।

3—सेन्टर में बड़ी शक्ति हिन्दुओं को प्राप्त रहेगी। सिन्ध बंगाल, सरहदी सूबा पंजाब के सिवा सूबों पर उन्हीं का गलबा रहेगा। इस लिये सेन्टर के जरिये मुसलमानों को तंग किया जायेगा।

4—इसका इलाज यही है कि हिन्दुस्तान का बटवारा करके मुसलमानों की फीडरेशन पृथक बनाई जाये।

5—और मुसलिम देशों से मिलकर हिन्दुस्तान को विज्य कर लेंगे।

6—हर मुसलमान का फर्ज है कि झण्डे के नीचे जमा होकर ऐसीस्टेट बनाने में मदद करें, जो शरयत के लिहाज से चलाई जायें।

7. कांग्रेस केवल हिन्दू जमायत है और अंग्रेज उसके नेताओं के विरोधी हैं इसलिए वह मुस्लिम मांग की हिमायत करेंगे।

गैर मुस्लिम का ख्याल

पंजाब के हिन्दू और सिख मुस्लिम राज से बहुत डरे हुए हैं वह विचार करते हैं कि हिन्दूस्तान का बटवारा नहीं किया जा सकता अगर तकसीम (बटवारा) हो भी जायेगा तो सिविल वार का मैदान बना रहेगा। और बाहरी ताकतों का आसान शिकार बन सकेगा। हिन्दुस्तान में मुस्लिम राज का इतिहास जिसमें बुरी घटनायें बीती थीं। चाहे वह गलत भी लिखा गया हो, हिन्दू तथा सिखों को वह याद दिलाने से यकीन हो गया है कि मुस्लिम राज्य एक भयानक चीज है। और गैर मुस्लिम पर अत्याचार होगे। उनका धर्म सभ्यता, आजादी इज्जत और जायदाद विरासत के अधिकार शादी खतरे में पड़ जायगा।

राजा फार्मूला

अगर मामूली एतराजों को नजर अन्दाजा भी किया जाय, तो भी निम्नलिखित ऐतराज ऐसे हैं, किसी हालत में भी नजर अन्दाजा नहीं किए जा सकते।

1. राजा फार्मूला जिन्ना की दो कोमों को पूरी-पूरी ताईद करता है।
2. महजब जो मनुष्य की प्राइवेट जीवन में सम्बन्ध रखता है। यह फार्मूला उसको शासन की बुनियाद मानता है।
3. अगर किसी खास प्रान्त में बहुमत का राज स्थापित हो जाये तो फार्मूले की रूट से वह उनकी हुकूमत हो जाती है। वहां बहुमत सदा के लिए हाकिम बनी रहेगी। और कम संख्या वाले सदा गुलाम बने रहेंगे।
4. राजा जी का फार्मूला जिसको आपका आर्शीवाद प्राप्त है पंजाब और बंगाल के हिन्दुओं के साथ अति दुर्व्यवहार किया जायेगा।
5. पाकिस्तान से प्रभावित होने वाले सूबों के लोगों से यानी पंजाब और बंगाल से लोगों कोई मवशरा नहीं लिया गया है। इस फार्मूले को

मान लेने से पहले पाकिस्तान (पंजाब बंगाल) के गैर मुस्लिमों के लिए जिन्दगी और मौत का प्रश्न है।

6. इस फार्मूले का जन्मदाता चाहे कितनी हो योग्यता और मानी हुई मनुष्यता का मालिक हो। दलबन्दी तथा राज की बुराइयों को बहुत कम जानता है।
7. राजा फार्मूला सिद्ध करता है कि केवल जिन्ना ही मुसलमानों का नेता है, और समस्त देशभक्त मुसलमानों को लीगी भेड़ियों के आगे फेंकता है जिन्होंने हर कठिन समय में कांग्रेसियों का साथ दिया है।
8. राजा फार्मूला उस वायदे (बचन भंग) को तोड़ता है जो 1929 ई० में सिखों से किया गया था, कि उनके साथ मशवरा किए बिना कोई फिर का दाराना समझोता नहीं किया जायेगा।

राजा फार्मूले को स्वीकार करने का परिणाम

1. पंजाब और काश्मीर में मिस्टर जिन्ना का वकार बहुत गिर चुका है। इस फार्मूले के स्वीकार करने से उसका गिरा हुआ वकार फिर बहाल हो जायेगा।
2. मुस्लिम लीगियों का उत्साह ऊंचा हो जायेगा।
3. जो मुस्लिम जमायतें कांग्रेस का साथ दे रही है उनका उत्साह टूट जायेगा।
4. कांग्रेस से सिखों का भरोसा जाता रहेगा।
5. मिस्टर जिन्ना कांग्रेस और गवर्नमेंन्ट से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करेगा।

मिस्टर जिन्ना से कैसे निबटा जाये

मिस्टर जिन्ना की शखसियत मानों बहुत बड़ी और ताजीम के योग्य है। परन्तु यह तात्पर्य नहीं कि उनकी प्रत्येक इच्छा को पूरा किया जाये।

1. राजा फार्मूले को एक वर्किंग कमेटी के सामने विचारने के लिए रक्षा जाय, इससे पृथक हरगिज स्वीकार नहीं किया जाये।
2. वर्किंग कमेटी के फैसले पंजाब तथा बंगाल के हिन्दुओं से सलाह सम्मिति अवश्य ले ली जाये।
3. मिस्टर जिन्ना से निम्नलिखित बातों का उत्तर माँगा जाये।

अ—पंजाब और बंगाल में बनने वाले पाकिस्तान की भुगोलिक सीमा दिखाई जाये।

आ—पूछा जाये, कि पाकिस्तान में किस प्रकार की हकूमत होगी।

इ—समझा जाये पाकिस्तान में गैर मुसलमानों का क्या अधिकार होगा।

उ—मिस्टर जिन्ना को साफ शब्दों में बतलाया जाये कि भारतवर्ष में रह जाने वाले मुसलमानों के लिए मुलाजमत मखसूस नहीं होगी. बल्कि योग्यता के अनुसार मिलेगी। यह भी कि सिन्ध बिलोचिस्तान और सरहदी सूबों को हिन्दुस्तान से आर्थिक सहायता नहीं मिलेगी, और पाकिस्तान निवासी भारतीय सेना में भर्ती नहीं हो सकेंगे। और हिन्दुस्तानी अफसरों को अपने हिस्से की पेंशन पाकिस्तान अदा करेगा। मुझे आशा है कि इस पत्र को ध्यान देकर पढ़ेंगे।

आपका शुभचिन्तक
छोटूराम

डिवायड पालिसी और रक्तपात

युद्ध समाप्त होने तक उच्चकोटि के कांग्रेसी सदस्य तथा नेता कैद रहे, और देश में गवर्मेन्ट से जनता का विरोध जारी रहा। अन्त में कांग्रेस को स्वतन्त्र किया गया। ब्रिटेन की नई मजदूर सरकार ने भारतवर्ष को स्मराज देना स्वीकार कर लिया। सितम्बर 1946 ई० के अन्त में सरकार कांग्रेस और मुस्लिम लीग के सदस्यों का मिला जुला सन्त्री मन्डल बना। मुस्लिम लीग ने उसका बाइकाट कर दिया, उसको चलाने में सम्मिलित नहीं हुये। और कलकत्ते में छुरे घोंप कर असंख्य हिन्दू मौत के घाट उतार दिए। यह मुस्लिम लीग की बिचारी हुई स्कीम थी। यह मार काट भारत के समस्त शहरों में आरम्भ हो गई: समस्त दैनिक पत्र इन्हीं घटनाओं से भरपूर होते थे। इसकी रोकथाम का गवर्मेन्ट की तरफ से कोई ठोस प्रबन्ध न था। शहरी हिन्दू बड़े दुखी और भयभीत थे। जिला गुडगावां और रियासत अलवर और भरतपुर के देहाती मेवों ने अपने अलग राज्य की मांग कर दी। और निर्भय होकर हिन्दू जनता पर धावे मारने लगे। तथा ग्रामों में आग लगाने लगे। उनके मुकाबले पर जाट थे वह बदले लेने लगे और उनकी मोर्चा बन्दी की लड़ाई जारी हो गई। मोटर कारों में बैठकर अंग्रेज और भारतीय अफसर सिवलियन उनकी दशा मानो तमाशा देखने जाते थे केवल नाम मात्र कुछ पलटनों की कम्पनियां दिल्ली छावनी से भेजी गईं। उनको लड़ाई में दखल देने का अधिकार नहीं था कुछ आकाश में फायर कर देते थे गवर्मेन्ट की दृष्टि के नीचे दिल्ली राजधानी की छाओं में शर्मनाक दृश्य नौ मास तक होता रहा। मुस्लिम लीग का मतलब यह था कि देश का विभाजन अवश्य हो और शीघ्र

हो। अंग्रेजों की इच्छा भी यही थी कि हिन्दु भी विभाजन को स्वीकार करने पर लाचार हो जायें। तथा हिन्दू मुस्लिम में द्वेषता इतनी भड़क जायें कि अंग्रेजों के भारत छोड़ते ही भारी खून खराबा इस हद तक बढ़े कि दोनों अंग्रेजों को वापिसी बुलाने पर विवश हो जायें। अर्थात एक द्वार से जायें, और दूसरे से वापिस आ जायें। दिल्ली राजधानी शहर में जिन सड़कों और मुहल्लों में मुस्लिम आबादी अधिक थी वहां नित्य प्रति हिन्दू पथिकों के पेट तथा गलों में छुरे घोंपे जा रहे थे। और मुसलमान मात्र के दिलों में इन घटनाओं की दिलचस्पी पाई जाती थी मैं भी ऐसी अवस्था में मार्च 1646 ई० में लाल कुआं हमदर्द दवाखानों से दवाई लेने के लिए गया और देव इच्छा से गया भी मुसलमान आबादी की गलियों में से चक्कर काटता हुआ मेरे मस्तिष्क में फौजी घमन्ड था और हाथ में लोहे के तारों के रस्से पर चड़मा मढ़ा हुआ एक डण्डा था। दवाखाने के सब कर्मचारियों ने मेरी ओर कुछ ध्यान से देखा। एक ने प्रश्न किया आप कैसे आये। मैंने उत्तर दिया दवा लेने आया हूँ। फिर कहा फोजी प्रतीत होते हैं हां पेन्शवर हूँ आप अकेले ही हैं बुरे दिन हैं अकेले दोपहरी में आना चाहिए नहीं।

आ ही गया "आपके पास रिवाल्वर होंगा" डण्डा हिलाकर कहा बस यही है। वह सब मेरे पास आ गये और मुझको कुर्सी पर बैठा लिया, तथा मुझसे पूछा देहात की क्या हालत है और आप लोग हिन्दु मुसलमानों का मेल क्यों नहीं करा देते मैंने कहा शहरी मुसलमान बहके हुये हैं, इसका परिणाम बुरा निकलेगा। शहरी हिन्दु देहातियों की कदर नहीं करते, उनके सब हकूक हड़प करना चाहते हैं। यह भूल का फल है। देहाती गदर से नहीं डरते, अगर गदर हो जाय तो शहरी सरमायेदार हिन्दु मुसलमानों को लूटकर भूख मिटा लें। वह मुसलमानों के छुरों से नहीं डरते बल्कि उनके छुरे छीन कर उनके पेट में घुसेड़ना चाहते हैं। वह भूखे भेड़िया शिकार की प्रतीक्षा में बैठे हैं। आप इतनी बड़ी देहात का अनुमान नहीं लगाते। एक 2 बोटी भी बांटे नहीं आयेगी। हम तो फौज की गोलियों से डरे हुये हैं। अंग्रेज मुसलमान को सहारा दे रहे हैं। उन्होंने कहा आप ठीक कह रहे हैं, सब कुछ समजते हैं। सब मुसलमान भी ऐसे नहीं हैं। अच्छा साहब होशियारी से निकल जाये।

हिन्दू दूरदर्शी नेता अंग्रेजों की चाल को समझते हुये फिसाद (झगड़ा) को बढ़ जाने को रोके हुये थे। एक दिन रोहतक में 14 हिन्दु छुरे घोंप कर बध कर दिये गये। उस समय डिप्टी कमिश्नर लाल हुसैन था। रोहतक के आस पास के लोगों के हृदय में आग लग गई। मेरा गाँव रोहतक से 24 मील दूर था परन्तु मेरे बच्चे जाट स्कूल रोहतक में पढ़ते थे। सूचना मिलते ही दस बजे रात की रेलगाड़ी से गन तथा रिवाल्वर लेकर वहां पहुंचा। उस रात्रि को काफी संख्या में जाट हथि-

यार लेकर जमा हो रहे थे और चारों तरफ से धावा बोलकर मुसलमानों को समाप्त करने वाले ही थे कि कुछ जाट नेताओं ने (जिन के आगे डिप्टी कमिश्नर तथा फौजी पिन्शनर मुस्लिम राजपूतों ने हाथ जोड़े थे) जाट दलों के सामने पगड़ी फिराई और लम्बी चौड़ी बात कह कर वापिस कर दिया। 15 अगस्त 1947 ई० को आजादी मिलने की घोषणा हो गई। लेकिन अंग्रेज डेढ़ मास पहले ही चल दिये थे और खुले घड़ाके कतल गार्त की घटना आरम्भ हो गई। अब हिन्दु और सिख भी बदला लेने में पीछे नहीं रहे। गलियों, सड़कों, जगलों में लाश पड़ी सड़ रही थी। कोई पूछने वाला नहीं था। इधर से उधर रेलों के डिबे खून से तर तथा घायलों और लाशों से भरे आते थे। अनहोनी घटनायें घटी और गर्वमेंन्ट के होते हुये गदर जारी रहा। यह खूनी ड्रामा और अंग्रेजी अंदोहनाक पालिसी भारत वर्ष के इतिहास में अंग्रेजों के नाम पर बदनाम धब्बा रहेगा।

चौदश अध्याय

सैनिक जातियां और जाट

भारतवर्ष में सैनिक जातियां खास खास हैं। उन सबकी मूल प्रनाली एक है। सब क्षत्री हैं। राज्य सत्या की छीना झपटी की रस्सा खिचाई में अलग-अलग गुटों में बटे रहने से जातियों का रूप धारण करते रहे हैं। उनका सैनिक पेशा परमप्रा से चला आ रहा है। वर्तमान काल में सैनिक जातियां जाट राजपूत अहीर गूजर मराहठा गोरखा डोगरा गढ़वाली कमावनी आदि हैं। उत्तरी और दक्षिणी सैनिक जातियों में ब्राह्मण शामिल हैं। ब्राह्मण ज्ञान और बीरता का गुण रखते हुए राज सत्या पर हस्तक्षेप करते रहे दक्षिण में उनके शक्तिशाली राज्य रहे है। सैनिक जातियां परमप्रा से वही के वही दल चले आ रहे हैं। उनमें से कुछ लोगों ने वणज पेशा अपना कर सैनिक स्वभाव को बदला है। परमप्रा से वर्तमान काल तक उनकी वीरता में कोई कमी नहीं आई है। बल्कि उन्नति हुइ है। निकट समय के युद्धों में सैनिक वीरों ने पुरानी वीरता को मात कर दिखाया है। घोर संग्राम में जान झोकने के हिरदय विदीर्ण उदाहरण हैं। 18 वीं सदी के पश्चात युद्धवर्ती शस्त्रों में शीघ्रता के साथ उन्नति और परिवर्तन होता रहा है ऐसे नवीन किस्म के दूर मारे घातक शस्त्रों के मुकाबले में जान झोक

कर ऊंचे साहस के साथ वीरता की मिसाल कायम करना बहुत कठिन साधन है।

गदर सन 1957 के बाद अंग्रेज सरकार ने सैनिक जातियों के गर्व साहस और विश्वास के नए सिरे से जांच की उनकी अलग अलग युन्टें रखने के लाभ को समझा। और अंग्रेज अफसर जातिय यूनटों के विश्वासनीय सहायक मित्र बन कर रहे हैं। सेना की ऊंची सिखलाई की। प्रत्येक युद्ध में सफलता प्राप्त करते रहे। उनके हार्दिक वरे की मिसालें हैं जनरल मरी साहब जाटों के हार्दिक मित्र रहें। उनूने मरते समय आखिरी लेख छोड़ा कि जाट लान्सर मेरा वारिस है सब जाट यून्टों ने मिलकर उसकी यादगार दिल्ली जमुना बाजार में मरी जाट धर्मशाला बनवाई हुई है। 19 लान्सर के जाट सकार्डन का कमान्डर मेजर बैडली साहब के हैडपार्क म खेल के मौके पर जनरल मल्क सर उम्र हियात टिवाणा की यह बात सहन नहीं की कि जाट एक मामूली जाति है जवाब दिया कि मैं जाटों के मुकाबले टिवाणों को टू आना समझता हूं दोनों गर्म होकर लड़ाई पर उतार हो गए ये बात एक अंग्रेज अफसर ने सुनाई। जो वहां मौजूद था।

अभी सब आफिसर भारती हैं उनके लिए भी सफलता की कुन्जी वही है जो अपनी मातहत युन्ट की जाति के नाम पर मर मिटने को हार्दिक त्यार रहते हैं मेजर जनरल बुद्धसिंह बार MC ने दो बार राजपूत कम्पनी को राजपूती नाम के नाम पर जान हथेली पर रखने वाला युद्ध कराया और 19 ,2 अक्तूबर में चोशूल के हवाई अड्डे के युद्ध में अहीर कमाबनी और जाटों को इस जोश के साथ बलिदान कराया कि अगर पीछे कदम हटा दिया तो जातियों की नाक कट जायेंगी। जब खबरें बन्द थीं रेडियो पर प्रधान मन्त्री दो बार बोल चुके थे चीशूल हमारे कबजे में रहना कठिन है चला गया होगा परन्तु ये जानकर आश्चर्यजनक खुशी हुई कि उस फरन्ट का युद्ध निराला रहा है लफटन्ट जनरल दौलतसिंह बड़े सफल सिद्ध हुए जो लद्दाख फरन्ट के कमान्डर थे।

राजपूती व इस्लामी शासन दौर में जाट सेना में भारती न होते हुए भी सैनिक बने रहने पर बाध्य रहे। जब कि उनकी आत्म रक्षा और सम्पति रक्षा उनके अपने बल पर नम्र थी। वे अपने स्थानों पर मधुमक्खीयों और भिड़ों के छत्ते बने रहे। वे व्यक्तित्व और सामूहिक रूप में शत्रु से भिड़ते रहे। शहनशाह औरंगजेब की हिन्दू घातक पोलिसी ने जाटों की सेना के रूप में मैदान में आने पर बध्य कर दिया जब जाट शक्ती सारे भारत में जानी गई। अंग्रेज जाटों से न भिड़कर राज्य सीमा को बढ़ाना चाहते थे परन्तु भरतपुर और पंजाब में जाटों से युद्ध करने के कारण बन गए वे युद्ध जाटों और अंग्रेजों के लिए लाभदायक रहे। अंग्रेजों ने

जाटों की वीरता की कीमत को समझा और जाटों ने अंग्रेजों के साहस को माना।

गदर 1857 के पश्चात खास 2 सैनिक जातियों को भरती किया गया। जिनमें तीनों धर्मों के जाटों की नफरीजिया रखी गई। अंग्रेजी शासन काल में जाट यून्टों की वीरता और भरोसे का रिकार्ड शानदार रहा। प्रत्येक युद्ध के अवसर पर जाट रूचि से भर्ती हुए और वीरता मेडल प्राप्त किये। जाट यून्टों और जाट वीरों के खास-खास कुछ एक कारनामें उदाहरण अर्थ लिखे जाते हैं।

14 मरीज जाके लान्सर 1857 ई० के पश्चात मही साहब ने खड़ा किया मरीसाहब स्वयं को जाट कहने लगा था मरी साहब का डाढ़ी वाला फोटू जाट धर्मशाला दिल्ली में है। इस रिसाले ने बिचे हुये पठानों पर बारमबार अटेक करके उनको अपना लोहा मना दिया था। और जाट वीरता का भरोसा बढ़ा दिया या मरी जाट लान्सर के कहना में अटेक के समय जयकारा मारने का रिवाज जाट लान्सर ने शुरू किया जाटो का जयकारा शत्रु पर रौब गालिब कर देने वाला निराला होता है।

कन्हैयालाल की जय।

तलवार का धनी गैरत मन्द सरदार

जमादार गोंपाल सिंह I.O.M.–14 मरीज जाट लान्सर गोत्र गुल्या ग्राम बादली जिला रोहतक। यह गर्भीली कहानी बादली ग्राम के सब आदमियों को बिरसे में मिली है। सन् 1878 में काबुल के विरुद्ध दूसरे युद्ध में 14 रिसाले के C सक्-वार्डन ने एक मकई के खेत पर जोरदार फायर के मुकाबिले पर सवारी अटेक किया और पठानों का विधंष किया परन्तु जमादार गोपाल सिंह जो केस डाढ़ी रखता था के टुर्प के रास्ते में किचड़ आ गया जो फसल में पानी देने के कारण था वापसी पर टुर्प के घोड़े धंस गये और सारा टुर्प गोलियों और छुरों से मारा गया। जमादार साहब का ताकतवर घोड़ा निकल आने में सफल हुवा जमादार साहब ने मुड़कर देखा कि फसल से कोई साथी बच कर नहीं निकला। आप वापिस फिरे और पठानों के एक झुण्ड पर टूट पड़े सात के सिर तलवार से काटे और आप भी वीरगति को प्राप्त हुये। आपने विचारा होगा कि कौन मानेगा कि देवयोग से बचे हैं। ये भी कहा जा सकेगा कि वे गैर्त साथियों को खपा कर भाग आया। आपकी वीरता में आडर आफ मेरट मैडल मिला। जवानी मेजर चन्दन सिंह 14 जाट लान्सर।

लान्स दफेदार जगराम १४ लान्सर सीनाजोरी और नहले पर दहला

आपने एक अटेक में फौजी डिसिपलन के खिलाफ मेजर साहब के हुक्म को

पल्ट दिया और मेजर साहब को प्यारी धमकी दी। मेजर साहब ने उसको हस कर स्वीकार किया। मौके पर मदद का अहसान अनुभव किया। नवम्बर 1918 में मेजर बरमलो की जेर कमान C सकोर्डन ने पांच २ गज के इन्टरवल (अन्तर) में फैलकर तुर्की मोर्चों पर गेलप से एडवान्स किया करीब जाकर मोर्चे गहरे दिखाई दिये। मेजर साहब ने काशन दिया फाइल्ज एबाउट (अपनी २ जगह वापिस फिरो) जगराम ने ज्यादा ऊंची आवाज से कहा ऐजीवर (पहली हालत में रहो) और साहब के पास जाकर चिल्लाया नाश हो जायेगा शिकार की तरह मारे जायेंगे बदनाम हो जायेंगे मेजर साहब ने हंसकर कहा लाइन विल अटेक चार्ज। अटेक सफल रहा साहब को टुर्प लीडर सरदार और जगराम को मैडल मिले। जबानी मेजर भरत सिंह जाट लान्सर जगराम साहब रिसालदार मेजर बने।

आपने अपने छोटे रैन्क की पदवाहन करते हुए अफसर की मेर और जाति की इज्जत के जोश में फौजी इतिहास में एक नई मिसाल कायम कर दी।

(३) रिसालदार बदलू सिंह V. C. आप का ग्राम ढाकिला जिला रोहतक है। आप 1916 में रिसाला नम्बर 14 से रिसाला नम्बर 29 में डराफट में फ्रान्स भेजे गये थे वहाँ जर्मनी के तारदार मजबूत मोर्चे पर मौनटिड अटेक कराया गया था जो एक मील के करीब चौड़ाई में था जिनमें मशीन गन लगी हुई थी। मोर्चो के सामने का मैदान ऊंचा नीचा था वर्षा होने से कीचड़ भी थी प्रातः का समय भी था और कुहर भी पड़ रही थी अटेक में रिसाला नम्बर 20–29 वा जोधपुर लान्सर शरीक थे। इस केवलरी ब्रिगेड में रिसाला नं० 29 राइट फलेन्क पर और रिसालदार बदलू सिंह का टुर्प उसके दहने पर था। अटेक को मशीन गनों के फैर ने असफल बना देना और पूरे ब्रिगेड को भून देना था परन्तु शेर बदलू सिंह ने अपना टुर्प मशीन गनों पर झोक दिया गनों को मार कर गनों पर कब्जा कर लिया ब्रिगेड का अटेक तो सफल हो गया परन्तु बदलू सिंह टुर्प सहित वीरगति को प्राप्त हुआ। प्रधान मन्त्री की कोठी के पास चोराहे पर तीन मूर्तियों में आप की मूर्ति शामिल है। रिसालदार जयलाल उस समय फ्रांस में मौजूद थे उनकी जबानी।

(४) सारा गढ़ी का हृदय विदिर्ण घोर संग्राम

1889 में यह घटना घटी, 36 सिक्ख पलटन की एक पलाटून सारा गढ़ी नामी पोस्ट में थी जो कोहाट से बहुत फासले पर थल की ओर थी जो एक कच्चा किला था। अंगरेजी चोकियों पर छापे मारना राइफल अमुनेशन लूटना पठानों की मनोरंजक आदत थी लगभग 25 हजार पठानों ने गढ़ी के गिर्द जमा होकर बर्बाद करने की ठानी। दोनों ओर से फैर जारी हो गया पलाटून ने झन्डी के जरिये कम्पनी

हैड क्वाटर को खबर भेजी परन्तु मदद पहुँचने की हालत नथी । दूसरी खबर भेजी अमुनेशन खत्म है पठान सीढ़ीयां लगा कर दीवार पर चढ़ रहे हैं हम उनको बैन्टों से मार मार कर वापिसी गिरा रहे हैं तीसरी खबर यह थी कि पठान गढ़ी में दाखिल हो गये बैन्टों से घोर युद्ध हो रहा है चौथी आखिरी खबर यह थी सब सिक्ख मारे जा चुके । अब मैं भी झण्डी फेंकर राइफल सभालता हूँ और खबर नहीं मिलेगी ।

इस हृदय बिदोर्ण घटना का दुख सारे भारत वर्ष और ब्रिटिश राज भर में हुआ । लन्दन से मल्का विक्टोरिया ने दर्द भरा प्रशंसा का एलान किया उन सब 21 जवानों को आडर आफ मेर्ट मेडल मिले । अमृतसर और जालन्धर में उनकी यादगार बनाई गई । यह रोष का दिन प्रतिवर्ष मनाया जाता है ।

प्रथम विश्वयुद्ध में 6 जाट

6 जाट लाइट इनफैन्ट्री 1914 से 1919 तक के महा युद्ध में सारे योरुप में जानी गई । इस युद्ध में तीन भारती पलटनों का रिकार्ड ऊंचा होने का इलान हुआ था उनमें भी 6 जाट अब्बल नम्बर पर थी । इनमें ठाडे तगड़े जवान तथा पहलवान भरती किये जाते थे इसलिये रग्मा और कुश्ती में अब्बल रहती थी उनका बैन्ट फाइन्टिग गजब का था वे गोलियों की लड़ाई लड़ने को निसब्त अटेक ज्यादा करते थे । पहलबान सूबेदार नेकी राम मां डोठिया और पहलवान हरफूलसिंह माइने वाला आगिनी थे उनकी एक खास टीम ने योरुप भर को आश्चर्य में डाल दिया था और जर्मनी को खोप जदा कर दिया था जब पहलबानों ने जर्मनी के मोर्चे में कूद कर उनको बैन्टों में पिरो कर बाहर फैंक दिया जिस तरह किसान पूलियों को उठाते हैं यह देग्रों जैसा काग था । जब तक 6 जाट मोर्चों में रहती थी जर्मन चुप साधे रहते थे एक वार 29 लान्सर 4 केवरी और जोधपुर लान्सर ने 6 जाट की बदली की जर्मनों ने चक्र में बढ़कर उनको खतरे में ले लिया उनको बचाने के लिये फौरन 6 जार्टों को वापिस बुलाया गया । जयकारे सुनते ही जर्मनों के पैर उखड़ गये साथ ही अटेक करके उनका घम्साण कर दिया इस अटेक में सूबेदार नेकी राम पहलवान मशीन के गरूप से जखमी हुआ और टांग कटते समय मौत हो गई । 6 जाट पूरी लड़ाई मोर्चों में रही तीन बार मारी गई 10—12—48—96 रजमेंट डराफ भेज कर पूरी करती रही । जर्मन हमारे कैदियों से पूछते रहे कि 6 जाट बिरगेड है या रजमेंट । 6 जाट के कमान्डग खास 2 बौरतानों की सिफारश न करके इस बात पर अड़े रहे कि पूरी रजमेंट ही खास बहादुर है ।

मेजर रिसालसिंह MC 3|9 जाट रजमेंट गोत्र जूल ग्राम तूना मजरा जिला रोहतक

आप अपनी कोर और रजमेंट में अटलवीर प्रसिद्ध थे हमेशा मौत के पीछे दौड़ते रहे। पांच बार शत्रु से भिड़ कर घोर युद्ध किया दो बार सख्त झखमी हुये आखरी बार मारे गये VC के लिये शिफारश लिखी गई परन्तु शहादत में कसर रही। आपके ध्येय में तीन बातें थीं और आफिसरों से अच्छा सिद्ध होना जाट जाति के नाम को ऊंचा करना · विकटोरिया का हासल करना। वह निडर और साफ कहने वाला था। ऐड्जूटन्ट की ना वाजिब तरक्की पर कमानडिया अफसर से कह दिया कि या तो इन्साफी स्वीकार करो नहीं तो आप और सारे बिरटिश अफसर युद्ध क्षेत्र में शत्रु नम्बर एक बनने को तैयार रहें।

A मिडल इस्ट में आपकी मातहती में रजमेंट का अटेक कराया गया वह सफल रहा।

B जब ठीक हुक्म न पहुंचने के कारण पूरी रजमेंट शत्रु के घेरे में फस गई तो मेजर साहब ने अपनी मशीन गन कम्पनी को खतरे में डालकर फैर की मदद से रजमेंट को निकाल लिया मशीन गनों को भी निकाल दिया आप खुद टूक होने से खतरे में फस गया बड़े साहस से काफी फासले तक शत्रु की गर्दा गुबार में खोया हुआ चला और बच निकला।

C 9 मार्च 1944 को मागड् स्थान पर आपकी जाट कम्पनी को बड़ी तेदाद शत्रु को रोकने के लिए एक खास पहाड़ी पर सेजा आप भागो भाग केवल शत्रु से केवल तीन मिनट पहले पहुंचे फैर जारी की परन्तु अटैक हो हीं गया। हैन्ड ग्रिनेडों और बेन्टों से घोर युद्ध हुआ दोनों ओर के बहुत जवान मारे गये मेंजर साहब सख्त जखमी हो गये परन्तु युद्ध में जुटे रहे आखिर कई गुना जिया शत्रु भाग निकला आपको MC मेडल और दो हवलदारों को MM मेडल मिले। मेजर गुरुवचनसिंह बाल ने आपके पिता को पत्र लिखा धन्य हो ऐसे बेटे के लिए जिसने जाटों को शेर चीते बनाकर शत्रु पर झोंक दिया कबरों पर बाजों के झपटे दुरबीनों से देखकर कोर के अफसर अश 2 कर रहे थे।

D जब रजमट हवाई जहाजों के जरिये इमफल फरन्ट को भेजी गई तो हवलदार हीरासिंह ने बताया कि आपकी कम्पनी 23 अप्रैल को एक कठिन पोस्ट में भेजी गई जिसके सामने शत्रु बड़ी संख्या में बढ़ रहा था वहां कम्पनी का ठहरना नामुमकिन था परन्तु नफरी कम होने के कारण और मदद आने से इन्कार आ चुका था आखिर हुक्म मिला आखिरी दम तक वहीं रहना है। मेजर साहब ने एक जवान से राइफल बैन्ट और पोच मांगा और शत्रु की ओर चल दिए। एक सूबेदार

ने दौड़ कर पूछा कहाँ जाते हो। मेजर ने कहा कि मुझको भरोसा नहीं कि मेरी मरजी का युद्ध हो सकेगा। मैं कईयों को मारकर पहले ही खत्म हो जाने में इज्जत समझता हूं। कम्पनी में जोश बढ़ गया ऊंची आवाज से कहा आप वापिस आयें कल कर मर जायेंगे पीछे को कदम नहीं रखेंगे।

इतने में रजमट से मेसिज आ गया कि कम्पनी को वापिस ले आवे शत्रु ज्यादा हैं।

E 24 अप्रैल को आपकी कम्पनी देखभाल के लिए परेड कर रही थी अचानक शत्रु का बड़ा बंकर सामने आया। लड़ाई जारी हो गई बैकर पर अटेक किया गया उनकी मदद पर और शत्रु पहुंच गया मेजर साहब लड़ाई में आगे रहते थे सख्त जखमी हो गये मुँह छाती पर गिरनेड के जख्म आये बांया हाथ ना करारा हो गया। आपके पिता ने चिट्ठी लिखी। थोड़ा आराम करो। कुछ मेरा भी ख्याल करो उत्तर मिला आप गीता पढ़ा करें और मेरे लिये कुशल चाहा करें। अटेक में उपदेश याद नहीं रहता।

F 20 जून 1944 रजमट ने इमफल को हीमा मार्ग के साथ पहाड़ियों पर अटेक किया जो असफल रहा और A कम्पनी जाट मारी गई थी घायल हुई। 21 जून को फिर अटेक का आरडर मिला। कमान्डग अफसर गिरटी साहब ने मेजर रिसाल से कहा कल आपकी कम्पनी भी मारी जानी है कमान्डर योग नहीं मिलता। आप निर्बल हैं लाइन सिक है मुस्लिम कम्पनियों पर जाटों जितना भरोसा नहीं। मेजर साहब ने उत्तर दिया मैं डाक्टर का हुक्म तोड़ूगा मेरा एक हाथ ना करारा जैसा है। परन्तु दूसरा ठीक है दोनों पैर ठीक हैं 21 जून को मेजर रिसालसिंह ने अपनी कम्पनी को जो शीला भाषण दिया सौगन्ध दिलाई गीता और जाति की इज्जत की बात समझाई। दो जवानों के साथ सबसे आगे आप पीछे पीछे अडवान्स पलटन दम भर में शत्रु पर टूट पड़े दिन भर का काम घन्टों में कर दिखाया पहला मोर्चा विजय कर लिया। वायरलिस पर मेजर आया विडरा करो (वापिस निकालो) क्योंकि दीनों फलंक वाली कम्पनिया आगे नहीं बढ़ी हैं। मेजरसिंह ने कलोनल से वायरलेस में कहा कि आप फस्ट बटलियने के कमान्डग थे आपने कमजोरी दिखाई रैन्क तोड़ा गया था आज फिर वही अवसर है आप असफल रहकर शरमन्दा होंगे। मैं फलंकवाली कम्पनियों की प्रवाह नहीं करता। वापिस हटना ठीक नहीं समझता और आगे बढ़ता हूं दोनों तरफ गनों का फैर आ रहा था एक पलटन साथ लेकर एक मोर्चा जीता शत्रु को मार दिया तथा भगा दिया फिर दो पलटन साथ लेकर दूसरा मोर्चा विजय किया बेहद घायल था और स्कीम सोच रहा था अचानक मशीन गन का गरूप सिर में लगा और वीर गति को प्राप्त हो गया उसकी लाश वहीं जला दी गई।

जमादार मानसिंह M.C 7 केवलरी हाल कप्तान

गोत्र सांग वाग ग्राम राठी वास तहसील दादरी सन 1944 में ब्रह्मा फरन्ट पर 7 केवलरी का जाट टेन्क सकवार्डन एक्शन्ट्री की मदद पर लड़ रहा था। मानसिंह टेन्क के ट्रुप का कमान्डर एक गोरा कप्तान था और आपका टेन्क फलंक पर था। ट्रुप लीडर की मारफत इनफन्ट्री कमान्डर का हुक्म पहुंचा कि अपने टेन्क से गन उतार कर पहाड़ी पर लगाओ। ये हुक्म टेन्क की ट्रेनिंग के खिलाफ टेन्क को बे फायदा कर देने वाला था नहीं माना गया दूसरा हुक्म नाराजगी के लहजे में ये मिला कि अपने टेन्क को और फासले पर और आगे बढ़ाओ ऐसा किया गया उस पोजीशन के फरन्ट में शत्रु की 11 तोपें छुपी हुई त्यार थीं। शकदार जगह पर मशीन गन का एक बस्ट मारा तो गोलाबारी शुरू हो गई। पूरी पलटन सावधान होकर भारी मार से बच गई। एक गोला टेन्क में छेद बनाकर पार गया दूसरे गोले ने छोटी गन उड़ा दी तीसरे गोले ने बड़ी गन को तोड़ मौड़ कर जमादार साहब का कुर्च भर निकाल दिया उनके अध मरे शरीर कों साथियों ने मुश्किल से अलग किया। जमादार साहब ने हुक्म दिया मैं खत्म हुं मेरी बोडी को बाहर डाल दो। और टेन्क को पीछे ले जाओ ये हुक्म बड़े दुख से माना गया। एक वृक्ष की जड़ों में तड़प रहे थे आपका गनर टेन्क छोड़कर फिर आ गया पानी पिलाता रहा अंधेरा होने पर गोरा कप्तान आया अकेला छोड़ जाने कों अक्षमा मांगी और उठाकर ले गये जमादार साहब कई महीने हस्पताल में रहकर दूसरे जन्म में आ गए आपको MC मेडल मिला।

कनोनल रंजिन्द्र सिंह MC हाल मेजर जनरल

नोम्बर 1948 में श्री नगर से 64 मील लद्दाख की ओर 11000 फीट ऊंचा जो जीला नाम पर्वत को विजय करने का कठिन काम आपको सौंपा बया। आपके नीचे दो टेन्क सकोर्डन थे। पहाड़ बर्फ से ढका हुआ था और धुन्ध छाई हुई थी ऊपर ले जाने के लिए दर्रे का रास्ता टेन्क चलने के लिए ना मुमकिन था आपने बड़ी सर गर्मी से दो मील सड़क त्यार कराई और टेन्क आगे बढ़ा दिये। और सेना का काल्म भी आगे बढ़ गया 500 गज सड़क और बनाई टेन्क ऊपर जा पहुंचे शत्रु पर फेर खोलकर आस चर्म में डाल दिया और काल्म पर तीन ओर से शत्रु ने हमला कर दिया परन्तु टेन्कों ने उनको मार दिया तथा घायल कर दिया लद्दाख की बफर स्टेट पर हमारा कब्जा हो गया।

लैंस नायक करमसिंह परम वीर चक्र

आपका ग्राम मलिया वाली जिला संगरूर है। आप एक शरारती चंचल

झगड़ों और खेलों में रुची रखने वाले थे। झगड़े मोल लेना आपका शुग्ल था। पढ़े लिखे नहीं थे। ग्राम के लोग आप से तंग थे। सन् 1939 में जब युद्ध जोरों पर था आप 26 वर्ष की आयु में फर्स्ट सिक्ख बटालियन में भरती हो गये। रेजिमेन्ट अराकान कस्ट पर भेजी गई। प्रत्येक खतरनाक युद्ध में 8 जान झोंकना आपका मनोरंजक खेल था चार अटैकों में आपने बढ़ चढ़ कर वीरता दिखाई सख्त घायल होते रहे 1944 में आप को M. M. मैडल मिला और लैस नायक बने।

13 अक्टूबर सन् 1948 को पाकिस्तान की सेना ने कश्मीर पर चढ़ाई की तो आपकी कम्पनी बैंकर वाले मोर्चों में थी। आपको दो जवान साथ देकर एक पहाड़ी पर खतरनाक मोर्चे में आगे भेजा गया। आपके मोर्चे पर शत्रु के 30 आदमियों ने अटेक किया। आपने स्टैन गनों और गर्नेडों के फैर से शत्रु को मार भगाया आप तीनों जख्मी हो गये और एक साथी गिर गया इतने में शत्रु की एक प्लाटून ने फिर अटेक कर दिया तो आप तीनों जवानों ने घोर युद्ध किया और शत्रु को मार भगाया। दोनों साथी बेकार होकर तड़पने लगे परन्तु करम सिंह अपने जखमों पर पट्टियाँ बाँध कर अड़ा रहा मोर्चे को सम्भाले रहा। आखिर अमूलेशन खतम हो गया और तोपों का फैर जारी हो गया। आपकी कम्पनी दूर फासले पर थी। इसी लिये वापिस लौट आने के सिवा और कोई चारा न था। आपने बारी बारी दोनों जख्मी साथियों को पीठ पर उठाया और सुरक्षित स्थान में पहुँचाया ये देखते शत्रु उस पर टूट पड़े। करम सिंह ने हैन्ड गर्नेडो से उनका सफाया कर दिया और वापिस हटता रहा। शत्रु की दो सैक्शनों ने एक के बाद एक आप पर अटेक किया आपने बैनट के साथ उनको मार गिराया इतने में आपको एक गोली और लगी खून बह रहा था आप करीब वाले बैंकर में पहुँच गये। तोपों का फैर जारी था बैंकर लाशों और जखमियों से भरे हुये थे। आपने मरहम पट्टी में मदद की और उनका साहस बढ़ाया और मौत की परवाह न करता हुआ सब बैंकरों में गया। इसी दौरान में शत्रु ने चार अटैक किये और सिक्खों ने उनको मार भगाया। जब करम सिंह एक बैंकर से दूसरे बैंकर की ओर एक खन्दक में चल रहा था तो दो शत्रु नाली में होकर उसकी ओर बढ़ रहे थे नाली टेढ़ी मेड़ी थी उन पर फैर नहीं हो सकता था तो करम सिंह मोर्चे से निकला और दोनों को बैंट से मार दिया। करम सिंह की मौत नजदीक लगी हुई थी परन्तु वह उससे इतनी घबरा गई थी कि उनको छू न सकी। अन्धेरा होने पर शत्रु पीछे हट गया तब करम सिंह को जख्मों की पीड़ अनुभव हुई और पट्टियाँ बंधवाने पर राजी हो गया। आप को परमवीर चक्र मिला। आपने जाट जाति और भारतीय सेना का नाम बहुत ऊंचा किया। शायद आप

मामूली मौत में मरना पसंद नहीं करेंगे। इस रोज़ शत्रु ने 4000 हजार गोले बरसाये।

हवलदार मेजर प्रकाश सिंह फरंटियर फोर्स ने १९४७ में मुझको सुनाया था कि आपकी रजमट में अराका फरन्ट पर एक गौरा टैंक स्कोर्डन के साथ समुद्र के किनारे के साथ साथ होने वाले युद्ध में शामिल थी। पहले रोज भी हवलदार प्रकाश सिंह ने बड़ी वीरता दिखाई थी परन्तु वो दिकाई में नहीं आ सकी। दूसरे दिन के युद्ध में शत्रु के भारी फैर से गोरा स्कोडन का सख्त नुकसान हआ। उनका एक टैंक धंस गया और कुछ जख्मी वहीं रह गये। प्रकाश सिंह को हुक्म मिला कि कि एक गोरा ट्रक ड्राइवर के साथ जाये और जखमियों को लाये परन्तु गोरा जवान रास्ते में से वापिस भाग आया। हवलदार मेजर प्रकाश सिंह जब जखमियों को अपने ट्रक में ले रहा था तो शत्रु के 70 आदमियों ने उस पर अटेक कर दिया। पहले तो वह टैंक की आड़ में छुपा लेकिन साहस ने उसका साथ न छोड़ा। उसने टैंक में से एक गन मिल गई और शत्रु पर फैर कर दिया। या तो सब मारे गये या या जख्मी हो गये तो अपनी सफलता पर प्रसन्न जखमियों के साथ वापिस आ रहा था। एक पहाड़ी की चोटी पर जनरल साहब और उनका साथी अफसर दूरबीनों के साथ पूरी घटना को देख चुके थे। ट्रक को हाल्ट का इशारा दिया। पास आकर पूछा तुम्हारा क्या नाम है—प्रकाश सिंह। फैर किसने किया।—मैंने तुम्हारे साथ और कौन था—कोई नहीं। उसने मेरे लिये V. C. की सिफारिश लिखी। आप अभी मेजर हैं।

6 राजपूताना गरुफ में जाट वीरता के खास कारनामें

राजिस्थान प्रान्त में जाट राजपूत में मूँग मोठ में अन्त्र अनुभव किया जाता रहा इसका कारण राज सत्या का एक पलड़े में रहना था। डेढ हजार साल से वहाँ कमत्री ब्रतरी का प्रशन था। जाट राज भगत नहीं थे उनकी एक गरुप में साथ-साथ भरती करना सोर्ण के साथ चिमठी तोला जाने जैसी बात थी। जाट नाम के साथ सिंह लिखाना अखरता रहा जाटों की अटल वीरता ने ये अनुभव करा दिया कि वे दोनों ही टकसाली भाईचारे के लोग है। उनके रक्त में खालिस फौलादी प्रमाणे हैं।

सूबेदार रिछपाल राम V.C. 4/6 राजपूताना रैफज ग्राम डाल्नवास बाढड़ा जिला महेन्द्रगढ़।

आपने 7 फरवरी और 12 फरवरी 1941 के मोर्चे सर करने में निहायत दिलैरी का सबूत दिया। 7 फरवरी की रात को कीरन के इटली मोर्चे पर अटेक

के समय आप अपनी कम्पनी के नायब कमान्डर थे। आप जिद करके अगली पलाटून के साथ रहे। आपने 30 जवानों के साथ बैन्टों से अटेक कर दिया और शत्रुओं को मारकर कबजा कर लिया आप मशीनगन पर झपट पड़े। कम्पनी कमान्डर जखमी हो गये तब आपने कमान संभाल ली, और आखरी मोर्चे पर हमला कर दिया। पीछे से मदद मिलने का सिलसिला टूट गया था फिर भी 12 बजे से 4½ बजे के दरमियान शत्रु के छै अटेक पस्पा किये 12 फरवरी को आपकी कम्पनी ने उसी पुजीशन पर फिर अटेक किया। तोपखाने के फैर की गोला वर्षा में। भय को त्याग कर बढ़ता ही गया, आपने जाट कम्पनी में बेहद जोश भर दिया, आपकी दहनी टाग गोले ले उड़ गई और भी कई जखम आये फिर भी मोर्चे से पिछे ले जाने से नाह कर दी पड़े हुए यही कहते रहे मेरा फिक्र मत करो आगे बढ़ते रहो वही वीरगती को प्राप्त हुये आखरी शब्द यही थे हम मोर्चा विजय करेंगे।

कम्पनी हवलदार मेजर छैलूराम 4/6 राजपुताना रैफल

इस नान कमीशन आफीसर ने 19, 20 अपरैल 1943 की रातको डजीबल गियरीक स्थान पर 5 Indian इनफैन्ट्रीबिरगेड के हमले के दौरान में निहायत दिलेरी साहस और वफादारी का सबूत दिया आप सबसे अगली कम्पनियों में से एक के साथ थे। शत्रु की मशीनगनें ऊँची जगह पर से फैर बरसा रही थी, और आगे बढ़ने में रुकावट डाल रही थी। आपके पास टामीगन थी। आप तोप और मशीनों की गोली वर्षा को चीरते अकेले ही जा झपटे कई आदमियों को मार कर मोर्चे पर कब्जा कर लिया, और आगे बढ़ने में रुकावट दूर हो गई इतने में अगली कम्पनी का कमान्डर जखमी हो गया तो छैलूराम वही जा पहुँचा कम्पनी कमान्डर को संभाल कर उनकी जगह कमान संभाली और आगे बिखरी हुई मुसलिम कम्पनी की नफरी साथ मिलाली एकदम शत्रु का हमला जोरदार हो गया और अपना दारू गोला कम हो गया घोर संग्राम शुरू हो गया। छैलूराम ने अपने आदमियों का साहस इतना बढ़ा दिया कि बैन्टो से मार-मार कर शत्रु को पिछे को धकेल दिया। केवल एक ही नारा था कि जाट और मुसल्मान पीछे नहीं हटेंगे। फिर आपने दोनों कम्पनियों को आगे बढाकर शत्रु को भगा दिया जखमी हो जाने पर भी डटा ही रहा पिछे ले जाने से नाह कर दी साहस बढ़ाता रहा बेहोश होकर वही दम तोड़ गये।

17235 सिपाही गंगाराम जिला जैपूर और 13141 सिपाही बरदाराम के बारे में ब्रिगेडडियर रीस REES अपने मित्र JONAH को लिखते हैं कि मैंने जिन तीन बहादरों की लाशें पथरों में पड़ी हुई देखी जो बहादुरी के जोश में शत्रु के आखरी मोर्चों से भी बहुत पीछे निकल गये थे वे शत्रु के फैर से मारे गये शत्रु की

गोली गंगाराम की पाकिट बुक में से गुजर कर दिल में लगी थी और ब्रडाराम के गिर्द 70 के करीब गोलियाँ पड़ी थी तीसरे का नाम न मिला ऐसे वीरों के नाम पर रजमट देश और उनके लोग गर्व कर सकते हैं ।

ब्रिगेडियर हुश्यारसिंह जब नेफा फरन्ट पर चीनियों के ताबड़ तोड़ हमलों से हालात नाजुक होगये फौरन . 62 इनफैन्ट्री ब्रिगेड को ममान संभालने का आडर मिला । जोशीला मोर्चे पर था । आपने भारी तेदाद शत्रु को तीन दिन बढ़ने से रोके रखा आपके तोपखाने का कमान्डर मेजर, ब्रहम सत्य राठी जाट भापडौदा का नवासी था उनकी तोपोंने शत्रु का साहस तोड़े रखा जब तक आप मारे न गये । नं० 7 रिसाले का जमदार श्रीचन्द ने टन्कों के साथ मोर्चे को संभाले रखा । आप महन्दीपुर तहसील सोनीपत के हैं । आपके ब्रिगेड का सिलसिला कट जाने पर वापिस हटाने का आडर मिला और चिनियों ने एक तरफा लड़ाई बन्द करने का इलान कर दिया इस 27 नवम्बर 1962 को आप एक दस्ता फोज के साथ घेरे में फंसकर चीनी गोली से मारे गये आपकी वीरता साहस और देश भक्ती पर सारा देश गर्व करता रहेगा । चीन के साथ युद्ध में आपके ब्रिगेड क भारी संख्या शत्रु को रोके रखना उनके अटेको को असफल रखना मुकाबिले पर डटा रहना सारे साथी ब्रिगेडों में निराला था आपने योग्य लीडर की मिसाल कायम की आपकी जाति को आप पर निराला गर्व है ।

जमादार हुश्यारसिंह आडर आफ मेरठ 2 I.D.S.M. BZZE हाल कमान्डर 62 इनफैन्टरी ब्रिगेड शिला की पहली बीर्ता ।

आप राठी जाट दिल्ली से 18 मील रोहतक रोड सांखोल निवासी थे सन् 1936 में भर्ती हुई 1940 में जमादार यानी जूनियर कमीशन अफसर बने आपकी सर्विस का रिकार्ड इतिहास को उज्जल रखेगा आपकी स्वभाविक वीरता पर उनका परीवार जाति और देश गर्व करता रहेगा ।

जमादार साहिब हुश्यारसिंह की यूनट फलस्तीन कैम्प में थी जो फ्रान्सीयों का था जर्मनी फोजने घेरे में दे लिया । उनका बयान 19 जून 1941 को 8 बजे रात करनलजुनिस JONES ने बुलाया एक पेग विस्की पिलाने के बाद बताया कि ब्रिगेड HQ में चिट्ठी पहुँचानी है जिसकी लिखाई सैफर में है । और जबानी भी सुन लो ! शत्रु के घेरे में से जीवित बच निकलना नामुमकिन सी बात है । तीन अफसर आपकी मदद में, और भेजता हूँ जिनमें 2LT कोरदनिल शामिल एक है । हम चारों दिवार में किये सुराख में से बाहर बगीचे में निकले वहाँ पानी की नाली पार करनी थी हम किले की दीवार के साथ-साथ चिपके हुए सरक रहे थे थोड़ी दूर वाई ओर से टैन्क ने फैर किया शायद आहट सुनकर अन्धेरा हमारी मदद पर था हम बचते हुए दूसरे बाग में होते हुए एक ग्राम में पहुंचे वहां शत्रु के टेन्क गशत

कर रहे थे हम एक छत्त पर चढ़ गए दूसरी ओर कुदे तो मेरे पांव में मोच आ गई साथियों के सहारे से चला संत्री ने आहट सुनी और 20 गज से हम पर फैर किये हम बच गये अँधेरा था 10 बज चुके थे। हमें जोरदार फैर सुने जब हमारी 3/1st पंजाब कम्पनी पर अटेक हो रहा था हम नागफनों से गुजरकर मैदान में पहुँचे और 5 बजे ब्रिगे: HQ 5 में मेसिज पहुँचा दिया वहाँ से मदद रवाना की गई। फ्रान्स राज्य ने एक अच्छा मेडल दिया और I.O.M. भी मिला।

सरकारी गजट

जमादार हुशारसिंह 6 राजपूताना रैफल जो 7 फरवरी से 27 मार्च तक इनटेलीजेन्ट डिवटी पर था अपनी बहादुरी में माना हुआ अफसर था। उसने अपनी खास डिवटी समफल करने के इलावा 8 फरवरी की रात को अटेक के समय बिखर जाने वाली टुकड़यों को समेटने का प्रशनशीय काम किया और B कम्पनी के पोस्ट पर डटें रहने के बाद अपनी समझ से एक अबजरवेशन पोस्ट कायम किया जिसका काम जरूरी खबरें हासिल करना और पहुँचाना था। 15 मार्च के युद्ध में फिर यही काम किया P.O. अफसर मारा जाने पर उसकी डिवटी भी संभाले रखी और बटालियन को हटाने में साहस से सफल काम किया आप शान्त चित्त साहसी और निडर हैं। दूसरे साथियों के लिये एक नमूना है।

हवलदार मेजर पीरू सिंह परम वीर चक्र यानी V.C. शेखावत राजपूत ग्राम बेरी जिला जैपूर राजरफ रजमट आपकी वीरता जाति और देश के लिये बड़ी गर्वीली है। मुर्दा दिलों को फड़का देने वाली और कायरों को लजित कराने वाली है। जो इतिहास में सुनहरी रोशनाई से लिखा जाने योग्य हैं। आप 18 वर्ष की आयु में मई 1836 ई० में 5 फस्ट पंजाब पलटन में भर्ती हुए चुस्त चालाक सुडोल गठीला शरीर ऐसा था उस पर अफसर मुगध थे हाकी बासकिट बोल और दौड़ों के फेर थे और मारकस मैन भी थे हर लड़ाई में दरखास्त देने का चाव था। कुस्ती लीडर भी थे 1945 में हवलदार मेजर बने जापान भेजे गये वापसी पर 1/6 राजपूताना बटालियन में अटेच हो गये।

18 जुलाई 1948 को आप के नीचे A कम्पनी ने पाकिस्तानी शत्रु के मुशकिल मोर्चों पर अटेक किया पहाड़ी ऊँची थी बैन्करों में गन लगाई हुई थी उनपर अटेक ना मुमकिन जैसा था क्योंकि ढलान से ऊपर को चढ़ना था। पीरू सिंह ब्रिचे हुए शेर की तरह 11 जवान साथ में लेकर सड़ासड़ गोलियों की बोछाड़ में और चढ़ता ही गया पीछे से कावरंग (सहायक) फैर मदद दे रहा था इतने में आधे साथी मारे जा चुके थे शत्रु का बैन्कर (कूप जैसा) मजबूत मोर्चा)

नजर पड़ा जहाँ से मशीनगन का फैर आ रहा था (चीगरे हुए साण्ड की तरह उधर को दौड़ा सटेनगन चलाता हुआ बेन्कर में कूद पड़ा बैन्ट से सबको मारकर मशीन-गनों पर कब्जा कर लिया और पीछे इशारा दिया परन्तु मिलाप नहीं हुआ। इतने में एक गोला नजदीक फटा चेहरा बूरी तरह जख्मी हो गया और सटेनगन के कारत्स भी खत्म हो गये खून बहते हुए लेटकर कूहनियों पर आगे को दूसरे बैन्कर की ओर आगे को बढ़ा वहाँ भी मशीनगन से गोलियाँ वर्षा जारी थी उसके करीब पहुंचकर कई हेण्डगरनेड मोर्चे में फैंके शत्रु घबरा गया साहस टूट गया तब भयानक नारा लगाकर मोर्चे में कूद पड़ें और बैन्ट से सबको खत्म कर दिया उसकी ये सारी वीरता दूसरा कम्पनी कमाण्डर देख रहा था। शरीर का रक्त खाली हुआ जा रहा था परन्तु जोश ठंडा नहीं हुआ था एक तीसरे बैंकर में शत्रु का फैर हमारी सेना को रोक रहा था अभी पीरू सिंह के पास के वल क ग्रिनेड बाकी था मोर्चे में ग्रिनेड फेंककर सबको मार दिया सारे पहाड़ पर अपना कब्जा हो गया। इतने में एक गोली सिर में लगी वीरगति को प्राप्त हो गया।

सिपाही कमालराम V.C गूजर 8 पंजाब रजमट हाल सूबेदार

विकटोरिया क्रास मेडल प्राप्त करने वालों में आप सबसे अल्प आयु थे आपको एक मंचला होनहार शूरवीर कहना बजा है। आप मौत के डर को भूलकर लड़ाई को मनोरंजक खेल समझते रहे। आपके पलाटुन कमान्डर जमादार देशराम हाल कप्तान ने बताया कि दूसरे बड़े युद्ध में मिडल इस्ट फरन्ट पर एक जर्मन डवीजन के साथ मुकाबिला था और एक नदी दोनों के बीच में थी दोनों ओर से औट पोस्ट (रक्षा चौकी) लगे हुए थे जिनमें हमारी गूजर कम्पनी भी थी। सम्य रात्री का था मैंने एक सैकशन को भेजा कि शत्रू चोकियों के पिछे पहुँचकर उनकी चोकियों पर हैंडग्रनेट फैंकें। परन्तु सैकशन कमान्डर थोड़ा बढ़ने पर नाकारा हो गया फिर भी कमालराम और उसके एक साथी ने जान को खतरे में डालकर एक चौकी पर ग्रिनेड फैंके उनको यह पता नहीं था कि हमला करनिये कितने हैं। हथियार डाल दिये और कैदी बनाकर साथ लाये गये। इस युवक के साहस पर सब लट्टू हो गये कमालराम ने और ग्रिनेड लेकर फिर जाने की माँग की और एक जवान साथ लेकर चला गया। उसी तरह दूसरी चौकी पर ग्रिनेड बरसाये कुछ को मार दिया और कइयों को कैदी बना लाया उसके बच्चों जैसा खेल और शेरों जैसी बहादुरी में आपको V.C. मैडल मिला। जब आपकों अजमेर मिलीटरी कालिज के लड़कों ने सवाल किया उसने क्या वीरता की तो हंसकर कहाकि बात मामूली सी थी वे हमें मार रहे थे मैंने उनके घर में जाकर बदला लिया।